141वाँ नया उपन्यास

केशव पण्डित

गाँधी तेरे देश में रावण राम के भेष में

करोड़ों पाठकों की पसंद

धोखे से बचें! नक्कालों से सावधान!

धीरज पॉकेट बुक्स

उपन्यास : गांधी तेरे देश में रावण राम के भेष में
लेखक : केशव पण्डित
© : प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : धीरज पॉकेट बुक्स
अग्रवाल कॉलोनी,
रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
दिल्ली रोड, मेरठ-250 002 (उ० प्र०)
फोन : (0121) 2400092, 3257035
मुद्रक : विमल ऑफसैट
मेरठ।

गांधी तेरे देश में रावण राम के भेष में : उपन्यास : केशव पण्डित

गांधी तेरे देश में रावण राम के भेष में
के कुछ प्रमुख पात्र

गुंजन–रावण के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिये वो किसी तरह लंका से निकल भागी, लेकिन क्या वो मौत के चंगुल से निकल सकी और न्याय पा सकी?

स्वामी रामशरण दास–अध्यात्म, योग तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा के माध्यम से समाज, देश व दीन-दुखियों की सेवा करने वाले स्वामी पर ऐसा अरोप लगा कि हर कोई चौंक उठा।

राम माहेश्वरी–खादी पहनकर गांधी जी के मार्ग पर चलने की बजाय वो रावण के पद-चिन्हों पर चल रहा था–लेकिन क्या वो अपने उद्‌देश्य में सफल हो पाया?

राघव राजवंशी–देश को महंगाई, भ्रष्टाचार से मुक्त कराने के लिये वो राजनीति में आया था–लेकिन क्या उसकी राह फूलों से भरी थी, या कदम-कदम पर कांटे ही बिछे हुये थे?

किंग कोबरा–रहस्यमयी मुजरिम, जो स्वयं को रावण से भी अधिक शक्तिशाली समझता है। क्या उसका भ्रम दूर हो पायेगा?

दिमाग के जादूगर केशव पण्डित की
अनोखी व निराली रचना

गाँधी तेरे देश में रावण राम के भेष में

"गांधी तेरे देश में रावण राम के भेष में...ये तूने ही कहा था ना? तब तो मुझे पता नहीं था, लेकिन अब पता है कि गांधी के देश में रावण के भेष वाला रावण तू ही है। क्या सजा दूं मैं तुझे ओये भेड़ की खाल में छिपकर रहने वाले भेड़िये? तूने लोगों के विश्वास को छला है–इसलिये तेरे जिस्म में अनगिनत सूराख करके छलनी बना दूं? शराब को गंगाजल बताकर पीता रहा तो तुझे ढेर सारा तेजाब पिला दूं? मासूम अबलाओं के जिस्म में वासना के पैने दांत गड़ाता रहा–तो तेरे इस पापी जिस्म में बड़े साइज की नुकीली कीलें ठोक दूं? भले ही ये देश गांधी जी का है–लेकिन मैं हिटलर बनकर तेरी जिन्दगी के साथ तानाशाही करना चाहता हूं–तेरी सांसों को मौत के तेजाब में घोलकर तेरी गन्दी आत्मा को नरक की किसी खूंटी पर टांग देने का ख्वाहिशमन्द हूं मैं।"

एक ऐसे दुराचारी की हैरत अंगेज दास्तान, जो भेड़ की खाल में छिपा भेड़िया था। उसके दुर्भाग्य के दिन तब आरम्भ हुये, जब वो 'केशव पण्डित' नामक कानून के तूफान की चपेट में आ गया।

आदि से अन्त तक रोचक, अविस्मरणीय तथा फास्ट स्पीड वाला उपन्यास।

गाँधी तेरे देश में रावण राम के भेष में

गाँधी तेरे देश में रावण राम के भेष में

केशव पण्डित

स्वामी रामशरण दास!

उम्र हालांकि साठ वर्ष थी, लेकिन चालीस वर्ष के भी नहीं लगते थे। सिर व दाढ़ी के बाल एकदम स्याह व चमकीले थे।

गुलाबी आभा वाले गोरे तथा तन्दुरुस्त जिस्म की त्वचा ऐसी चमक वाली तथा चिकनी कि मानो शीशम की लकड़ी पर वार्निश या पॉलिश की गई हो।

कान्तिवान, आभायुक्त गोल-मटोल चेहरा।

उगते सूर्य-सा चमकता हुआ चौड़ा ललाट।

बड़ी-बड़ी व काले रंग की आंखों में पावनता थी, गंगा जल-सी शुद्धता थी।

पतले व गुलाबी अधरों पर सदैव मासूम-सी मुस्कान अठखेलियां करती रहती थी।

मुम्बई के निकट उन्होंने बीस वर्ष पूर्व पदार्पण किया था तथा घास-फूस का छोटा-सा आश्रम बनाकर रहने लगे थे। गांवों तथा कस्बों में जाकर लोगों को योग तथा प्राणायाम सिखलाते थे तथा अध्यात्म पर प्रवचन भी दिया करते थे। देशी जड़ी-बूटियों से रोगियों का उपचार किया करते थे।

उनके योग, उपचार तथा प्रवचन में इतना प्रभाव था कि उनके चाहने वालों की संख्या निरन्तर बढ़ती रही तथा उनकी ख्याति व प्रसिद्धि दिन दूनी रात चौगुनी होकर चहुं दिशाओं में फैलती चली गई।

उनके योग, उपचार से लोगों को ब्लड प्रेशर, हार्ट, डायबिटीज, मोटापा...यहां तक कि कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों में काफी लाभ हो रहा था–प्रवचनों से लोगों को मानसिक शान्ति प्राप्त हो रही थी, सो भक्तों की भीड़ बढ़ती ही चली गई। लोग उनसे गुरु-मन्त्र लेकर उनके शिष्य बनने लगे।

गंगा मइया के प्रवाह की मानिन्द ही दान-दक्षिणा का आगमन होने लगा तो कच्चे आश्रम के स्थान पर भव्य तथा विशाल आश्रम निर्मित हो गया। अनाथ आश्रम, महिला आश्रम तथा चिकित्सालय भी बन गया।

योग तथा अध्यात्म पर एक मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही थी तो स्वामी के प्रवचनों वाली बहुत-सी पुस्तकें तथा डी०वी०डी० भी बिक रही थीं।

चूंकि आश्रम में दूर-दराज के वो भक्त लोग भी आते रहते थे, जो कि काफी धनाढ्य थे–सो उनके लिये फाइव स्टार होटल की सुविधाओं वाला गेस्ट हाउस भी बनाया गया था–आम शिष्यों के लिये बढ़िया धर्मशाला भी बनी हुई थी।

आश्रम की महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने हेतु उन्हें पापड़, अचार, चटाई, जेम, सोफ्ट ट्वायज इत्यादि बनाना सिखलाया जा रहा था–। सिलाई, कढ़ाई व बुनाई भी सिखलाई जा रही थी–उक्त कार्यों से होने वाली आय उन्हीं के बैंक एकाउन्ट में जमा की जा रही थी।

अनाथ आश्रम में बच्चों की शिक्षा के लिये स्कूल था, जिसमें हिन्दी, संस्कृत व इंग्लिश माध्यम से शिक्षा दी जाती थी।

पांच सौ बेड वाले आधुनिक हॉस्पिटल का भी निर्माण कार्य चल रहा था।

आयुर्वेदिक औषधियों की फैक्ट्री का प्लान भी चल रहा था, जिसका शिलान्यास राज्य के मुख्यमन्त्री ने किया था–जोकि स्वामी जी के परम शिष्य बन गये थे तथा इस समय प्रवचन हॉल में उपस्थित थे–उनके साथ दिमाग का जादूगर केशव पण्डित भी परिवार समेत बैठा हुआ था।

❑❑❑

❑❑❑

"गांधी तेरे देश में–रावण राम के भेष में!

आज के समाज और वातावरण को देखकर ये तुकबन्दी एकदम सटीक बैठती है। हम ये नहीं कहना चाह रहे हैं कि हर कोई रावण है तथा वो राम का भेष बनाये घूम रहा है। परन्तु पग-पग पर ऐसे बहरूपिये मिल जायेंगे–जो दिखते राम का स्वरूप हैं, परन्तु वास्तविकता में वो रावण

के पदचिन्हों पर ही चल रहे होते हैं। डॉक्टर को लोग भगवान का अवतार मानते हैं–परन्तु उन कुछ डॉक्टरों को क्या कहेंगे, जो पूरी फीस के ना मिलने पर गरीब मरीज का उपचार करने से मना कर देते हैं। वो बेबस मरीज तड़प-तड़प कर, एड़ियां रगड़-रगड़ कर मर जाये...डॉक्टर पर कोई फर्क नहीं पड़ता है।

खाकी वर्दी वालों को समाज का रक्षक कहा जाता है। परन्तु उन कुछ पुलिसवालों को क्या कहा जायेगा, जो कि भ्रष्ट तथा रिश्वतखोर हैं–रिश्वत लेकर अपराधी को छोड़ देते हैं तथा किसी निर्दोष को झूठे आरोप में फंसा देते हैं। हम कल के ही समाचार-पत्र में पढ़ रहे थे कि गुण्डों से अपनी लाज बचाने के लिये एक अभागी पुलिस चौकी में गई तथा वहां रातभर वर्दी वाले उस अभागिन की लाज लूटते रहे। हां, आज के समाचार-पत्र में एक ऐसे डॉक्टर का समाचार दिया गया है, जो धोखे से मरीजों के गुर्दे निकालकर ऊंची कीमत पर किसी अमीर आदमी के शरीर में लगा देता था।

देश के कर्णधार, भाग्य-विधाता कहे जाने वाले नेताओं तथा मन्त्रियों पर भ्रष्टाचार तथा घोटालों के आरोप लगते रहते हैं–उन पर लगे आरोप सिद्ध भी हो रहे हैं! परन्तु हमें सबसे बड़ा आघात तो तब लगा, जब एक सन्त पर महिलाओं के साथ व्यभिचार करने के आरोप लगे तथा उसकी गिरफ्तारी भी हुई है। पूरे सन्त समाज का शीश मारे ग्लानि के झुक गया। लोगों की धार्मिक आस्था पर कुठाराघात हुआ है। साधु-सन्तों का परम कर्त्तव्य है कि वो लोगों को धर्म के मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करें–परन्तु इससे पूर्व वो स्वयं सत्य, त्याग, परोपकार तथा धर्म के मार्ग पर चलें। साधु-सन्तों का पाप, लोभ तथा वासना से तो कोई सम्बन्ध हो ही नहीं सकता। नहीं, वो सन्त नहीं है–वो पाखन्डी है। हमें ऐसे ढोंगियों से सावधान रहना चाहिये। यूं ही किसी पर अन्धविश्वास करके उसका अनुयायी या भक्त नहीं बन जाना चाहिये। बहुत सोच-समझ कर, जांच-परखकर ही किसी को अपना गुरु बनाना चाहिये। यदि लगे कि वो ढोंगी, पाखंडी है तो तुरन्त ही उसका तिरस्कार कर देना चाहिये–उस धूर्त को न्यायोचित दण्ड मिलना ही चाहिये...।"

एक अधेड़ा हाथों को जोड़े तथा आंखों में आंसू भरे हुये स्वामी जी के समक्ष पहुंचकर घुटनों के बल बैठ गई तथा याचनापूर्ण भाव से बोली–"मुझ अभागिन पर कृपा कीजिये। इकलौता ही बेटा है। उसकी शादी को सात साल हो गये–लेकिन बहू के पांव अभी तक भारी नहीं हुये हैं। वो मां नहीं बनी तो...मेरा वंश आगे कैसे बढ़ेगा? आप तो साक्षात

ईश्वर का अवतार हैं। बेटे-बहू को अपने साथ लाई हूं। आप उन दोनों के सिरों पर हाथ रखकर उन्हें मां-बाप बनने का आशीर्वाद दे देंगे तो चमत्कार हो... ।"

"कोई चमत्कार नहीं होगा... ।" स्वामी रामशरण दास सपाट भाव से बोले, "हमारे आशीर्वाद में ऐसी कोई शक्ति नहीं है कि तुम्हारी बहू मां बन जाये। हम साधारण मनुष्य हैं। थोड़ा जप-तप किया है और धार्मिक पुस्तकों के साथ ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों का अध्ययन किया है। जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसको प्रवचन के रूप में यहां आने वाले श्रद्धालुओं तक पहुंचा रहे हैं। कभी हमने दावा भी नहीं किया कि हमारे पास कोई दैवीय शक्ति या चमत्कार है। हम निर्धन को धनवान, निःसन्तान को माता-पिता तथा रोगियों को स्वस्थ नहीं कर सकते। हमसे निराश होकर चमत्कार का दावा करने वाले किसी साधु-संन्यासी, तान्त्रिक, ओझा, पण्डित के पास जाने की भूल भी मत करना बच्ची! इस कटु सत्य को स्वीकार करो कि पति तथा पत्नी के अंश के संयोजन से ही सन्तान की उत्पत्ति होती है। जिस तरह उपजाऊ भूमि में अच्छे बीज को रोपने से ही अंकुर की उत्पत्ति होती है-। संसार में ऐसा कोई चमत्कार, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, श्लोक, पूजा-पाठ, हवन, यज्ञ या धार्मिक अनुष्ठान नहीं है कि बिना भूमि तथा बीज के ही पौधे को जन्म दे सके। कोई भी ये दावा करे कि वो अपने आशीर्वाद से किसी नपुंसक को पिता या बांझ को मां बना सकता है...तो वो पाखन्डी है...धूर्त है...छलिया है। ऐसे किसी ढोंगी के फेर में पड़कर अपनी बहू की लाज मत लुटवा बैठना। किसी योग्य डॉक्टर को दिखलाओ बच्ची! वो तुम्हारे पुत्र तथा बहू की जांच करायेगा। दोनों में से जिसमें भी दोष होगा, उसका उपचार करेगा। तब तुम्हारी बहू अवश्य ही मां बनेगी तथा तुम्हारा वंश बढ़ेगा। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे बच्ची... ।"

"वाह...इसे कहते हैं सच्चा सन्त, पण्डित जी... ।"

हॉल में विराजमान प्रदेश के मुख्यमन्त्री बगल में बैठे केशव पण्डित से बोले, "...स्वामी रामशरण दास जी को हमने अपना गुरु बनाकर कोई भूल नहीं की—बल्कि समझदारी भरा कदम ही उठाया है। हमारी बात मानिये पण्डित जी...आप भी अपने परिवार के साथ स्वामी जी को अपना गुरु बना लीजिये... ।" मुस्कराया झील-सी नीली आंखों वाला। उसने अपने ही करीब बैठी अपनी धर्मपत्नी सोफिया, पन्द्रह वर्षीय पुत्र आशीर्वाद, शिष्य राजन शुक्ला तथा उसकी धर्मपत्नी चांदनी, शिष्य करतार सिंह तथा श्वेता गुप्ता पर दृष्टिपात करने पर मुख्यमन्त्री जी से कहा—

"स्वामी जी के बारे में बहुत से लोगों के श्रीमुख से सुना। टी०वी० के धार्मिक चैनल पर भी इनके कई प्रवचन सुने। आज इनके अनाथ आश्रम, महिला आश्रम तथा चिकित्सालय भी देखे हैं। मैं इनके व्यक्तित्व, इनके विचारों तथा सामाजिक कार्यों से बहुत प्रभावित हूं सर! अपने परिवार के साथ इनका आशीर्वाद प्राप्त करने की अभिलाषा से ही यहां आया हूं। इन्हें गुरु बनाकर मुझे गर्व की अनुभूति होगी। देखना ये है कि स्वामी जी मुझे और मेरे परिवार को अपना शिष्य बनाने के योग्य समझते हैं कि नहीं-?"

❑❑❑
❑❑❑

मुख्यमन्त्री ने श्रद्धापूर्वक स्वामी रामशरण दास के चरण स्पर्श किये तथा हाथ जोड़े हुये बोले—"हमारे योग्य कोई सेवा बतलाइये, स्वामी जी—!"

"आश्रम की बीस कन्याएं विवाह योग्य हो गई हैं मुख्यमन्त्री जी... !" मुख्यमन्त्री के सिर पर आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ रखकर कहा स्वामी जी ने, "हम चाहते हैं कि उनके लिये योग्य वर खोजकर उनके विवाह कर दिये जायें। आश्रम में ही सामूहिक विवाहोत्सव हो जायेगा... । आपकी उपस्थिति चाहेंगे हम— ।"

"अवश्य...क्यों नहीं, स्वामी जी! उस दिन हम अपने कार्यों से छुट्टी ले लेंगे। विवाहोत्सव में पूरा समय देंगे स्वामी जी। बस, आप योग्य लड़कों की खोज करके विवाह की तारीख निश्चित कर लीजिये। विवाह के सभी कार्यक्रमों की जिम्मेदारी हमारी। शानदार पण्डाल होगा...बढ़िया दावत होगी। सभी कन्याओं को भरपूर दान-दहेज भी दिया जायेगा। स्वामी जी...ये पण्डित जी हैं...केशव पण्डित—इन्हें दिमाग का जादूगर भी कहा जाता है। ये आपके परम शिष्य बनने के लिये पधारे हैं। इनके साथ इनकी धर्मपत्नी सोफिया जी, इनका बेटा आशीर्वाद भी है। इनके शिष्य राजन शुक्ला, करतार सिंह और श्वेता गुप्ता और वो राजन शुक्ला की धर्मपत्नी चांदनी हैं। इन लोगों को अपने आशीर्वाद से धन्य कीजिये स्वामी जी... !"

केशव ने श्रद्धापूर्वक स्वामी जी के चरण स्पर्श किये तो स्वामी जी उसके सिर पर दाहिना हाथ रखकर मधुर मुस्कान के साथ बोले—"चिरंजीव भव! ईश्वर तुम्हारे यश, तुम्हारी कीर्ति में लगातार बढ़ोत्तरी करें। तुम यूं ही अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होते हुये अपने धर्म का पालन करते रहो। तुम्हारे बारे में बहुत सुना है हमने बच्चा! देश, समाज तथा कानून को तुम जैसे लोगों की बहुत आवश्यकता है। तुम्हें और तुम्हारे परिवार को अपना शिष्य बनाते हुये हमें गर्व की अनुभूति हो रही है... ।"

"मैं भी आप जैसे गुरु को पाकर धन्य हो गया हूं स्वामी जी... !"

केशव स्वामी जी के दूध से गोरे पैरों पर दृष्टि स्थिर किये हुये बोला, "आपके उस वाक्य 'गांधी तेरे देश में–रावण राम के भेष में' ने मुझे काफी प्रभावित किया है। सच है ये...यथार्थ है। त्रेता युग में तो रावणों की भरमार ही भरमार है। कदम-कदम पर मिल जायेंगे। लेकिन वो रावण ज्यादा घातक हैं, जो राम का रूप अपनाये हुये हैं।"

"अगर इस जग में रावण हैं तो...राम भी हैं बच्चा! हम तुममें राम का ही रूप देख रहे हैं...।"

"मुझ तुच्छ प्राणी की मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम से तुलना मत कीजिये स्वामी जी! मैं तो उनके चरणों की धूल का कण मात्र भी नहीं हूं...।"

"हम जिन रावणों की बात कर रहे हैं, वो त्रेता युग वाले रावण नहीं...। उसके अवतार हैं। उन रावणों के संहार के लिये भी ईश्वर ने अपने माध्यम को पृथ्वी पर अवतरित किया हुआ है। हमारी दृष्टि में तुम भी राम जी के अवतार ही हो। प्रभु राम की भांति तुमने एक पत्नी का व्रत लिया हुआ है। अपनी मर्यादाओं का सदैव पालन करते हो। तुमने ना जाने कितने दीन-दुखियों की मदद की है तथा उन्हें न्याय दिलाया है। अनेकों अपराधियों तथा देश के शत्रुओं को स्वयं दण्ड दिया है या कानून के माध्यम से दण्डित कराया है। जो राम जी के मार्ग का अनुसरण करता हो, वो हमारी दृष्टि में उनका अवतार ही है। इसलिये हमें तुमको अपना शिष्य बनाते हुये गर्व की अनुभूति हो रही है।"

"ये तो आपका बड़प्पन है स्वामी जी...आप मुझे इतना मान-सम्मान दे रहे हैं। वैसे मैं सदैव ही मानवता, समाज, कानून तथा अपने देश की सेवा करता रहूंगा। जैसी कि परम्परा है कि शिष्य को गुरु दक्षिणा देनी होती है–मेरे लिये आपका क्या आदेश है–?"

"हम बिल्कुल भी लोभी या स्वार्थी नहीं हैं बच्चा! जो दान-दक्षिणा आती है, उसको लोगों की भलाई में लगा देते हैं। तुम यूं ही लोगों का कल्याण करते रहो। कानून तथा देश की सेवा में लीन रहो। निर्बल को न्याय दिलाते रहो तथा अत्याचारियों, पापियों, अपराधियों को दण्ड दिलाते रहो...यही हमारी गुरु-दक्षिणा होगी।"

केशव ने पुनः स्वामी जी के चरण स्पर्श किये और फिर दो कदम पीछे हट गया–ताकि बाकी लोग भी उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकें।

तब सोफिया, राजन, करतार सिंह, चांदनी तथा श्वेता ने भी स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

अन्त में केशव-पुत्र आशीर्वाद ने भी स्वामी जी के चरण-स्पर्श किये

तो स्वामी जी उसके सिर पर हाथ रखकर केशव से बोले–"ये तो बिल्कुल तुम्हारे जैसा ही है बच्चा! तुम जैसी ही कद-काठी तथा नैन-नक्श–सिर्फ आयु का ही अन्तर है। इसके बारे में हमने सुना है कि ये भी तुम्हारे ही पद-चिन्हों पर चल रहा है। इतनी कम उम्र में ये बड़े-बड़े कारनामे कर चुका है। ये न केवल निडर तथा वीर है, बल्कि कुशाग्र बुद्धि वाला भी है। केवल दस वर्ष की आयु में ही इसने अदालत में मुकदमा लड़ा था तथा विजयी भी हुआ था। लोगों ने इसकी बुद्धिमत्ता को देखते हुये ही इसको दिमाग का चैम्पियन की उपाधि दी है। ऐसे बच्चों की इस देश को सख्त आवश्यकता है। ये सिर्फ तुम्हारा ही नहीं, बल्कि समस्त भारत का पुत्र है। ईश्वर इसको चिरंजीवी करे। ये भी तुम्हारी तरह उपन्यास के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रहा है। हमारा आशीर्वाद है कि ये निरन्तर सफलता की सीढ़ियां चढ़ता रहे।"

"धन्यवाद...स्वामी जी...!" केशव हाथ जोड़कर बोला, "आपने हमें अपना शिष्य बनाया है, इसके लिये हम सभी आपके आभारी हैं...।"

"स्वामी जी...!" तभी सफेद साड़ी में लिपटी कोई पैंतीस वर्षीय, बला की खूबसूरत युवती वहां आ पहुंची, जो कि चिन्तित मालूम पड़ रही थी। वह झिझकते हुये बोली, "वो गुंजन...वो...वो आश्रम में नहीं है। लगता है कि वो भाग गई। आश्रम की तिजौरी से पांच लाख रुपये भी गायब हैं। आपकी आज्ञा हो तो पुलिस में गुंजन के खिलाफ शिकायत दर्ज करा दी जाये–?"

❑❑❑

❑❑❑

स्वामी रामशरण दास को चिन्तित व दुखी होते देख केशव ने पूछा–"क्या बात है स्वामी जी–ये गुंजन कौन है–?"

"महिला आश्रम की संचालिका गंगा देवी ही तुम्हें उस बच्ची के सन्दर्भ में बतलायेंगी बच्चा–!" कहने पर स्वामी जी ने खूबसूरत युवती को बोलने का संकेत किया।

"गुंजन हमारे महिला आश्रम की युवती है पण्डित जी! वो अनाथ थी। बारह वर्षों तक वो अनाथ आश्रम में रही थी। फिर नियमानुसार उसको अनाथ आश्रम से महिला आश्रम में स्थानान्तरित कर दिया गया था। पढ़ाई-लिखाई में काफी होशियार रही है वो। लेकिन वो आश्रम की महिलाओं के पैसे चुरा लेती थी और बाजार में जाकर चाट, नूडल्स, पेटीज, पेस्टी, अण्डे तथा आमलेट खाती थी। जबकि हमारे यहां शाकाहार का ही प्रयोग होता है। गुंजन को मैंने डांटा-फटकारा था और चेतावनी दी थी।

उसके आश्रम से बाहर निकलने पर पाबन्दी लगा दी थी। परन्तु एक वर्ष के पश्चात् पाबन्दी के हटने पर वो एक बार बाजार में बीयर का सेवन करते हुये पकड़ी गई थी। दण्ड के रूप में मैंने उसको पूरे आश्रम की साफ-सफाई पर लगा दिया था। एक वर्ष पूर्व जब वो सिर्फ पन्द्रह वर्ष की ही थी तो...!"

आगे बतलाते हुये गंगा सकुचाई।

"सत्य को छिपाना ठीक नहीं होगा गंगा देवी...!" स्वामी जी घायल किस्म की मुस्कान के संग बोले, "...किंचित मात्र भी ऐसा मत सोचो कि इससे हमारी...या आश्रम की गरिमा भंग होगी। तुम अपनी बात को पूर्ण करो बच्ची...!"

"जी, स्वामी जी...!" गंगा ने हाथ जोड़कर तथा सिर झुकाकर स्वामी जी का अभिवादन किया, फिर केशव से सम्बोधित होकर बोली, "पन्द्रह वर्ष की आयु में गुंजन आश्रम से भाग गई थी। वो तिजौरी से एक लाख रुपये चुरा ले गई थी। आश्रम की बदनामी के डर से पुलिस में रिपोर्ट नहीं की गई थी। गुप्त रूप से आश्रम के सेवकों ने ही गुंजन की खोज की थी। एक माह पश्चात् वो एक होटल से पकड़ी गई थी। उसके साथ तीन लड़के भी थे–परन्तु वो भाग निकले थे। गुंजन शराब के नशे में धुत्त थी और उसके तन पर एक भी वस्त्र नहीं था। कहते हुये लज्जा आती है कि गुंजन तीन लड़कों के साथ रंगरेलियां मना रही थी। मैंने तो उस चरित्रहीन लड़की को आश्रम से सदा-सदा के लिए निकालने का निर्णय कर लिया–क्योंकि वो आश्रम के वातावरण को प्रदूषित कर सकती थी...परन्तु...!"

गंगा ने सकुचाते हुये स्वामी जी को देखा।

"परन्तु हमने गंगा देवी को ऐसा नहीं करने दिया था केशव बेटा...! हम संकट में फंसे लोगों की ही मदद नहीं करते हैं–अपितु धर्म तथा कर्त्तव्य के मार्ग से भटके प्राणियों को अन्धकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश में लाना भी अपना परम धर्म समझते हैं। गुंजन मार्ग से भटक गई अबोध बालिका थी। उसको आश्रम से निकालने पर क्या होता? वो गलत संगत में पड़ जाती। वो अपराध के मार्ग पर चल सकती थी। या उसको दुष्ट लोग वेश्यावृत्ति के धन्धे में उतार सकते थे। उस बच्ची का भविष्य नष्ट हो सकता था। वो नारकीय जीवन यापन करने को विवश हो सकती थी। हमने उसकी मनोवृत्ति परिवर्तित करके अध्यात्म के मार्ग पर ले जाने का निर्णय ले लिया था। प्रभात तथा संध्याकाल में मन्दिर में होने वाली आरती में नियमित रूप से सम्मलित होना गुंजन के लिये अनिवार्य कर दिया था। उसको प्रतिदिन हमारे प्रवचनों को भी सुनना था। धार्मिक पुस्तकों का

अध्ययन करना था। ध्यान, योग तथा प्राणायाम की कक्षाओं में अनिवार्य रूप से सम्मिलित होना था। वो एक वर्ष से सभी गतिविधियों में सम्मिलित हो रही थी। उसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन होने लगे थे। लगता था कि अपनी त्रुटियों से शिक्षा लेकर वो सही मार्ग पर चल निकली है। परन्तु...गंगा देवी ने अभी बतलाया कि गुंजन के साथ पांच लाख रुपये भी गायब हैं। हमें उस बच्ची से ऐसी आशा बिल्कुल भी नहीं थी। उसने हमारे विश्वास को तोड़ दिया। हमारी शिक्षाओं का उस पर कोई अनुकूल प्रभाव नहीं हुआ। समझ में नहीं आ रहा है कि गुंजन ने ऐसी धृष्टता क्यों की...?"

मानो दुख की मकड़ी ने स्वामी जी के चेहरे पर वेदनाओं व व्याकुलता के धागों से जाल-सा बुन दिया।

उन्होंने पलकों को कसकर बन्द कर लिया, लेकिन बन्द कपाटों को धता बताकर आंसुओं के दो धारे कपोलों पर लुढ़कते चले गये।

"स्वयं को सम्भालिये, स्वामी जी...!" मुख्यमन्त्री जी हाथों को जोड़कर बोले, "इसमें आपकी तो कोई गलती नहीं है। आपने तो उस बिगड़ैल लड़की को सुधारने की पूरी कोशिश की थी। अगर वो नहीं सुधरी तो...इसमें भला आप क्या कर सकते हैं। हमारी आपसे विनती है कि आप अपना मन दुखी ना करिये। उस लड़की के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट अवश्य ही दर्ज कराइये। उसकी कोई फोटो हो तो...वो भी पुलिस को दीजिये।"

"मुख्यमन्त्री जी ठीक कह रहे हैं स्वामी जी...!" आशीर्वाद बोला, "आपको गुंजन के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट करा देनी चाहिये...।"

"ठीक कहते हो तुम बच्चा...!" स्वामी जी सहमति में सिर को हौले-हौले जुम्बिश देते हुये बोले, "हमें गुंजन के विरुद्ध पुलिस को सूचना देनी ही होगी। ना जाने वो अबोध बच्ची कहां होगी और क्या कर रही होगी–!"

❑❑❑

❑❑❑

काफी बुरा हाल था उस सोलह वर्षीय नवयुवती का।

यौवन के गलियारे में कदम रख चुके उसके गोरे-चिट्टे जिस्म पर फटे-पुराने वस्त्र थे–

काले रंग का कुर्ता व सलवार।

वस्त्रों के झरोखों से ताजे-पुराने जख्म बाहर झांक रहे थे।

बिना चप्पलों वाले नंगे पांव भी जख्मी तथा काफी सूजे हुये थे।

सुराहीदार गले पर नाखूनों की गहरी खरोंचें थीं तो चेहरे पर भी

खरोंचों तथा दंत-क्षत के गहरे निशान थे। होंठों पर खून की पपड़ियां जमी हुई थीं तथा सूजकर मोटे हो गये थे।

सड़क पर दौड़ते हुये वो बार-बार गर्दन व सिर घुमाकर भयभीत नजरों से पीछे की तरफ देख रही थी—मानो उसके पीछे मौत लगी हुई थी।

आंखों में भय भी था तथा नींद पूरी ना होने से होने वाली थकान भी भरी हुई थी।

लगातार दौड़ने के कारण वो थककर चूर हो चुकी थी। उसके कदमों में लड़खड़ाहट आने लगी थी।

सांसें लौहार की धौंकनी की मानिन्द ही तेज आवाज के साथ चल रही थीं—इसी कारण उसका अधखिला सीना तेजी के साथ उठ-गिर रहा था।

किसी वाहन की तीखी रोशनी जिस्म पर पड़ते ही वो गुलमोहर के वृक्ष के पीछे जाकर छिप गई और उखड़ती जा रही सांसों को समेटने की चेष्टा करने लगी।

सफेद रंग की कार के गुजर जाने पर वो वृक्ष की ओट से निकली और सड़क के किनारे-किनारे दौड़ने लगी।

पीले रंग की इमारत के बाहर चमचमाते पुलिस स्टेशन के बोर्ड को देखकर उसकी बुझती जा रही आंखों में आशा के नन्हें-नन्हें दीये जगमगाने लगे।

झुककर जख्मी घुटनों पर जख्मी हथेलियां टिकाकर उसने दो मिनट तक थककर चूर हो चुके फेफड़ों में बाहर की ताजा हवा को सांसों के माध्यम से पहुंचाया, फिर सीधी होकर लड़खड़ाते कदमों से पुलिस स्टेशन की तरफ लपक पड़ी।

गेट पर खड़े राइफलधारी कांस्टेबिल ने उसको देखा तो चौंका तथा बुदबुदाया—"ये-ये कौन है? इसकी हालत तो काफी खराब लग रही है। कहीं...ये गुण्डों के हत्थे तो नहीं चढ़ गई...?"

"हेल्प...मदद...।" किशोरी चार सीढ़ियां चढ़ने पर वरान्डे के फर्श पर गिर पड़ी तथा हांफते हुये क्षीण स्वर में बोली, "म...मुझे बचा लीजिये...मेरी जान खतरे में है...वो...मुझे...मार...बचा लीजिये...।"

फिर वो बेहोश हो गई।

कांस्टेबिल के हाथ-पैर फूल गये और वो अपने ऑफिसर को सूचित करने के लिये भीतर की तरफ दौड़ पड़ा।

"स...सर जी...सर जी...!"

विल्स नेवीकट की सिगरेट में कश लगाते बिल्लौरी आंखों वाले

इन्सपैक्टर अनिल यादव ने चौंककर कांस्टेबिल को देखा तथा पूछा, "क्या बात है महेश—इतना घबराये हुये क्यों हो—?"

"वो...वो लड़की...बाहर बरामदे में एक लड़की बे...बेहोश हो गई है...बुरी हालत है बेचारी की...ना जाने वो अभागी कौन है...!"

❑❑❑

❑❑❑

अनिल यादव तुरन्त ही उस किशोरी को पुलिस की गाड़ी में डालकर हॉस्पिटल ले गया।

चैकअप के पश्चात् लेडी डॉक्टर ने चौंका देने वाली जानकारी दी—"बच्ची के साथ बलात्कार हुआ है इंस्पेक्टर साहब!"

"ओह, नोह...!" वह चिन्तित व दुखी हो चला।

"ऐसा लगता है कि उसको कहीं पर बन्धक बनाकर रखा गया था। उसकी कलाइयों और पैरों पर डोरियों से कसकर बान्धने के गहरे निशान हैं। बड़ी ही बेरहमी के साथ उसको रेप किया गया—शायद चार-पांच दिन से लगातार। उसको भूखा-प्यासा भी रखा गया। अभी उसकी उम्र ही क्या है। वो अभी नाबालिग है—इसलिये भी उसकी दशा गम्भीर है। ब्लीडिंग अभी भी हो रही है। मुझे कई टांके लगाने होंगे।"

"क्या मैं उसका बयान ले सकता...?"

"अभी कहां इन्सपैक्टर साहब! वो अभी बेहोश है। सुबह तक ही होश में आ पायेगी। आपको कुछ पुलिस वाले तैनात कर देने चाहिये। वो शायद बलात्कारी के चंगुल से निकलकर भागी है। ऐसा ना हो कि बलात्कारी स्वयं को कानून की मार से बचाने के लिये उस पर जानलेवा हमला कर दे...।"

"मैं एक सब-इन्सपैक्टर और कुछ कांस्टेबिलों को यहां तैनात कर देता हूं डॉक्टर साहिबा! वो बच्ची जब होश में आ जाये और बयान देने के काबिल हो जाये तो आप मेरे स्टाफ को तुरन्त ही बतला दीजिये। क्या है कि बलात्कार के केस में बलात्कारी को जितनी जल्दी पकड़ लिया जाये...उतना ही ठीक होता है। अधिक समय गुजर जाने पर उसको मुजरिम साबित करने में दिक्कत आती है।"

"डोन्ट वरी, इन्सपैक्टर साहब! जैसे ही वो लड़की बयान देने की हालत में होगी—मैं आपके पास इन्फॉर्मेशन पहुंचा दूंगी। मैं भी चाहूंगी कि उसकी दुर्दशा करने वाला दुष्ट जल्द-से-जल्द पकड़ा जाये और उसको सख्त-से-सख्त सजा मिले।"

"सजा तो ऐसी मिलेगी कि उसके फरिश्ते भी कांप उठेंगे...।"

अनिल यादव मुट्ठियों को भींचकर फुंफकार-सा उठा, "बस, मुझे एक बार मालूम पड़ जाये कि वो दुष्ट है कौन–!"

❑❑❑

❑❑❑

सुबह आठ बजकर पांच मिनट पर इन्सपैक्टर अनिल यादव तेज कदमों से चलते हुये हॉस्पिटल के उस स्पेशल वार्ड में प्रविष्ट हुआ, जहां पर उस अभागी किशोरी को रखा गया था।

वह बेड पर लाल कम्बल ओढ़े हुये लेटी थी। उसका जख्मी तथा सूजा हुआ चेहरा थोड़ा पीला पड़ा हुआ था तथा आंखों में आंसुओं के साथ पीड़ा के भी भाव थे–जिस्मानी पीड़ा कम तथा मानसिक पीड़ा अधिक थी।

सिविल ड्रेस में था अनिल यादव–वो जानबूझकर वर्दी में नहीं आया था।

उसने सिविल ड्रेस वाले ही सब-इन्सपैक्टर तथा दो जेन्ट्स व दो लेडी कांस्टेबिल्स की ड्यूटी लगाई थी–ताकि किसी को उस किशोरी के बारे में मालूम न हो।

डॉक्टर को भी हिदायत दी थी कि वो तथा उसके स्टाफ के लोग उस किशोरी के वहां एडमिट होने की बात को छिपाकर रखें, ताकि मुजरिम को उसके बारे में जानकारी ना होने पाये।

लेडी डॉक्टर वहीं थी तथा किशोरी का रिपोर्ट-कार्ड पढ़ रही थी–जबकि एक नर्स किशोरी का ब्लड-प्रेशर माप रही थी।

"बी०पी० कम है मैडम जी!" बोली नर्स, "हन्ड्रेड और सिक्सटी...।"

"कोई बात नहीं सिस्टर! इंजैक्शन लगा दो...।"

"यस, मैडम...!"

"सुनो, बेटी...!" डॉक्टर किशोरी के सिर पर स्नेह से हथेली फिराते हुये कोमल तथा मृदुल स्वर में बोली, "ये इन्सपैक्टर अनिल यादव जी! तुम इन्हीं के चार्ज वाले पुलिस स्टेशन में पहुंचकर बेहोश हुई थी। रात को ये ही तुम्हें यहां...हॉस्पिटल में लाये थे। मैं पर्सनली इन्हें जानती हूं। बेहद ही नेक, ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ ऑफिसर हैं ये। तुमसे जो भी पूछताछ करें...उसका सही-सही जवाब देना। तुम इन पर पूरा भरोसा कर सकती हो। ये तुम्हें न्याय दिलायेंगे और उस दुष्ट को कड़ी-से-कड़ी सजा दिलवायेंगे। इन्सपैक्टर साहब, प्लीज...।"

डॉक्टर ने बेड के नजदीक रखे स्टूल को इंगित करके अनिल यादव को बैठने के लिये कहा।

"थैंक्यू...।" बोलकर अनिल यादव स्टूल पर बैठा तथा किशोरी से सम्बोधित हो बोला, "तुम्हारे साथ जो कुछ भी हुआ है, उसका अनुमान है मुझे छोटी बहन! मुझे उस दुष्ट के बारे में बतलाओ। भले ही वो कोई भी हो–उसके गिरेहबान से पकड़कर लाऊंगा और ऐसी सजा दिलवाऊंगा कि उसकी सात पुश्तें भी हिल जायेंगी। बतलाओ, वो दुष्ट कौन है–?"

किशोरी का चेहरा मलिन पड़ गया तथा आंखों की कटोरियों में मानो भय की नन्हीं-नन्हीं असंख्य मछलियां तैरने लगीं।

"न...नहीं...!" वह भयातुर हो बोली, "वो...वो बहुत खतरनाक है। वो ताकतवर भी है और उसकी पहुंच काफी ऊपर तक है। वो...वो मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगा...उसके गुण्डे मुझे बुरी मौत मार डालेंगे। मैं...मैं उसके बारे में कुछ नहीं बोलूंगी। रात मुझसे भूल हो गई थी, जो मैं पुलिस स्टेशन पहुंच गई थी। कुछ नहीं हो सकता उसका, कोई उसका बाल बांका नहीं कर सकता। आप तो आप...पुलिस कमिश्नर...सारे महाराष्ट्र की सारी पुलिस भी उसका बाल बांका नहीं कर सकती। मु...मुझ पर एक कृपा कीजिये इन्सपैक्टर साहब...मुझे चुपचाप रेलवे स्टेशन पर पहुंचा दीजिये। किसी ट्रेन में सवार होकर बहुत दूर निकल जाऊंगी। यहां उसके गुण्डे मुझे खोज निकालेंगे और मेरी हत्या कर डालेंगे...।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा मेरी बहन! कोई कितना भी शक्तिशाली और पहुंच वाला क्यों ना हो–वो कानून से बड़ा नहीं हो सकता। उसको उसके किये की सजा मिलेगी। तुम्हें न्याय मिलेगा...।"

"न...नहीं चाहिये मुझे न्याय। मैं...मैं उसके बारे में कुछ नहीं बतलाऊंगी। पुलिस उसको गिरफ्तार नहीं कर पायेगी। अदालत में उसको कोई भी जज सजा नहीं सुना सकेगा। उसको दोषी साबित नहीं कर पायेगा कोई। वो स्वयं को निर्दोष साबित करके बच निकलेगा–। मुझे अभी जाना है यहां से। मुझे रेलवे स्टेशन पर या बस अड्डे पर पहुंचाने की कृपा कीजिये...।"

"तुम नाहक ही घबरा रही हो मेरी बहन...!"

"मैं उसके बारे में कुछ नहीं बोलूंगी...।" कहने पर उसने कम्बल को खींचकर अपना चेहरा तथा सिर भी ढांप लिया।

अनिल यादव ने उसको समझाने की बहुतेरी चेष्टा की, लेकिन वो टस से मस नहीं हो रही थी।

दुविधा में पड़ गया अनिल यादव।

सूझ ही नहीं रहा था कि वो ऐसा क्या उपाय करे कि किशोरी बेखौफ होकर अपनी जुबान खोल सके।

❑❑❑
❑❑❑

उस लम्बे तथा तन्दुरुस्त अधेड़ ने काले रंग की पैन्ट तथा काला ओवरकोट धारण किया हुआ था।

उसका चेहरा ज्वालामुखी के मुहाने की मानिन्द ही दहका हुआ था तो आंखों में क्रोध का लावा-सा खौल रहा था।

फूलते-पिचकते नथुनों से ऐसी आवाजें निकल रही थीं कि मानो कोई चोटिल नाग जोर-जोर से फुंफकारें मार रहा हो।

सीढ़ियों को काले जूतों से बुरी तरह रौंदते हुये वो उस इमारत के अन्डरग्राउन्ड में पहुंचा।

हॉल में छह युवक हाथों में ए०के० छप्पन, ए०के० सैंतालीस, राइफल, पिस्टल, रिवॉल्वर तथा माउजर ताने खड़े थे।

उनके हथियारों का रुख जिन चार युवकों की तरफ था, वो फर्श पर डोरियों से बन्धे बैठे थे और बहुत अधिक घबराये हुये थे।

काले ओवरकोट वाले को देखकर तो उनकी घिग्घी ही बंध गई।

चेहरे यूं निचुड़-से गये कि मानों सन्तरों को दबा-दबाकर उनका सारा रस निचोड़ लिया गया हो।

रंग यूं फक्क पड़ गया कि मानो समूचे जिस्म पर मुल्तानी मिट्टी पोत दी गई हो।

उन मेमनों की मानिन्द ही वो थर-थर कांपने लगे, जो खूंखार भेड़ियों के झुण्ड में घिर गये हों।

काले ओवरकोट वाले ने चारों पर दायें पैर की ठोकर बरसा दी तथा खूंखार भेड़िये की मानिन्द गुर्राते हुये बोला, "हराम के बच्चों! खाली पड़े-पड़े मौज-मस्ती करते रहते हो। मनचाहा खाना और शराब मिलती है। किसी भी चीज की कमी नहीं। लेकिन जरूरत पड़ने पर तुम हमारे काम नहीं आ सके। बकरी जैसी उस लड़की की निगरानी नहीं कर पाये तुम लोग। उसे अपने हाथों से बान्ध गये थे, फिर भी वो यहां से निकल गई। उसको रोक नहीं सके...पकड़ नहीं सके हराम के बच्चों! रोकते या पकड़ते तो तब ना...जब होश में होते। मुफ्त की शराब को गले तक भर लिया था। होश में थे ही नहीं साले। उस हरामजादी ने स्वयं को बंधन-मुक्त किया और निकल गई...।"

"म...माफ कर दीजिये बॉस...आह...गलती हो गई...रहम कीजिये...आह...।"

एक ने रहम की भीख मांगी तो बाकी तीन भी रोने-गिड़गिड़ाने लगे।

एक युवक से ए०के० छप्पन छीनकर काले ओवरकोट वाले ने उसे नाल की तरफ से पकड़ा और उसकी मजबूत बट से चारों युवकों को अन्धाधुन्ध मारते हुये विचित्र भाव से चिल्ला-चिल्लाकर बोला, "...माफी...रहम...किस मुंह से मांग रहे हो हरामजादों? तुम चारों की गलती का खामियाजा तो हमें भुगतना पड़ेगा। ना जाने वो कुतिया इस वक्त कहां पर होगी! वो पुलिस स्टेशन पहुंच गई या मीडिया वालों के हत्थे चढ़ गई तो...क्या होगा? हमारी इज्जत गोबर में मिल जायेगी। चारों तरफ से मुसीबत हमें घेर लेगी। माना कि हम बहुत ही शक्तिशाली और पहुंच वाले हैं—लेकिन इन मीडिया वालों का क्या करेंगे? मीडिया वाले जिसके भी पीछे पड़ जाते हैं, उसको नंगा करके ही छोड़ते हैं। उसकी सात पुश्तों की भी जन्म-कुन्डली निकालकर दुनिया के सामने परोस देते हैं। कोई अमीर हो, बिजनेसमैन हो, पुलिस वाला या सरकारी अधिकारी, नेता या अभिनेता, सन्तरी या मन्त्री...किसी की बख्शीश नहीं करते हैं ये मीडिया वाले। सरकार तक को हिला डालते हैं। मीडिया वालों से पार पाना किसी के भी वश की बात नहीं है। हम बर्बाद हो जायेंगे—किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रह जायेंगे। सारी बची हुई जिन्दगी जेल में सड़ जायेगी। जो लोग हमें भगवान मानकर पूजा कर रहे हैं, वो ही हमें खुजली वाले कुत्ते की तरह मारने-दुत्कारने लगेंगे। नहीं, तुम लोग माफी या रहम के काबिल नहीं हो। तुम कुत्तों को हमारे गुस्से का सामना तो करना ही होगा...।"

वह मानो पागल ही हो गया था। उन चारों को तब तक मारता चला गया, जब तक कि उन्होंने तड़प-तड़प कर दम ना तोड़ दिया।

गुस्से का आलम ये था कि वो उनके निर्जीव जिस्मों को भी पैरों से कूटने लगा।

चेहरे पर वहशी किस्म के भाव लिये हुये वो चुपचाप खड़े छहों युवकों से बोला, "हालांकि हमने अपने कई आदमियों को उस कुतिया की तलाश में भेज दिया है। लेकिन तुम लोग भी उसकी तलाश में जाओ। कुछ भी करके उसको ढूंढो और कुतिया की मौत मार डालो। उसकी लाश के अवशेष भी बचने नहीं चाहिये। उसकी मौत ही हमें चैन और सुकून देगी। तुम लोगों में से जो कोई भी उसकी मौत की खबर लेकर आयेगा...उसको मुंहमांगा इनाम मिलेगा। देखते हैं कि कौन मुंहमांगे इनाम का हकदार बनता है! कौन शूरवीर उसे मारकर हमारी मेहरबानियों का पात्र बनता है—!"

❑❑❑
❑❑❑

"अपना नाम तो बतला ही सकती हो तुम छोटी बहना...!"

डॉक्टरनी के जाने पर अनिल यादव बोला, "क्या नाम बतलाने में भी कोई परेशानी है तुमको...?"

"कुछ नहीं बतलाना...मुझे...।" वह स्वयं को लाल कम्बल में छिपाये हुये बोली, "पहले नाम और फिर पता पूछेंगे–फिर सब कुछ जान जायेंगे। मैं आपके जाल में फंसने वाली नहीं हूं इन्सपैक्टर साहब! कुछ नहीं बतलाऊंगी मैं। अगर आप मुझे रेलवे स्टेशन पर पहुंचा देंगे तो बहुत कृपा होगी। नहीं तो मैं स्वयं ही छिपते-छिपाते हुये चली जाऊंगी। वैसे उस शैतान के आदमियों ने मेरी खोज शुरू कर दी होगी। बिलबिलाये कुत्तों की तरह ही मुझे इधर-उधर सूंघते फिर रहे होंगे। उनके आका ने आदेश दे दिया होगा कि मुझे देखते ही जान से मार डालें। वो कभी भी...यहां पर...इस हॉस्पिटल में भी आ सकते हैं।"

"नहीं–वो यहां नहीं आयेंगे। मेरे अलावा मेरे स्टाफ के कई लोग यहां पर तैनात हैं। वो आयेंगे तो पकड़ लिये जायेंगे। उनकी हड्डी-पसली तोड़ डालूंगा मैं। तुम नाहक ही घबरा रही हो बहन जी! तुमने उस दुष्ट के बारे में बतला दिया होता...तो मेरे हाथ उसके गले पर कस गये होते।"

"नहीं! आप या आपकी पुलिस उस राक्षस का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती।"

"अब मैं ऐसा कोई दावा करूंगा भी नहीं...।" ठण्डी आह-सी भरकर कहा अनिल यादव ने, "क्योंकि तुम्हारे कान पर तो जूं भी नहीं रेंगने वाली है। तुम विश्वास ही ना करोगी कि मैं उस दुष्ट को पकड़कर अदालत के जरिये सजा दिलवाने में बहुत सक्षम हूं। तुम नहीं समझोगी कि किसी ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ पुलिस ऑफिसर की वर्दी में कितनी पॉवर होती है। खैर, थोड़ी देर पहले मैंने जिस हस्ती को फोन करके यहां पर बुलाया है, तुम उस पर विश्वास करोगी।"

"मैं किसी पर विश्वास नहीं करने वाली हूं...।"

"आने दो उन्हें। तब देखूंगा कि तुम उन्हें सारी बातें बतलाती हो कि नहीं–!"

"किसी को भी बुलवा लीजिये आप। मैं किसी को भी कुछ नहीं बतलाऊंगी। थोड़ा तबियत सुधरे तो यहां से निकल जाऊंगी। मुम्बई में नहीं रहना है मुझे। यहां से बहुत दूर चली जाऊंगी...।"

"तुम थोड़ा आराम कर लो।" स्टूल से उठकर कहा अनिल यादव ने, "मुझे सिगरेट की तलब लगी है। कैन्टीन में जाकर थोड़ा धुआं उड़ाता हूं। इतनी देर में पण्डित जी भी यहां पहुंच जायेंगे। जानना नहीं चाहोगी कि ये पण्डित जी कौन हैं–?"

"जन्मपत्री या लोगों के हाथ देखकर भूत, वर्तमान और भविष्य की बातें बतलाते होंगे। लेकिन वो मेरा हाथ या माथा देखकर वो जानकारियां नहीं निकाल पायेंगे, जिन्हें जानने के लिये आप उत्सुक हैं...।"

लघु हंसी हंसकर कहा अनिल यादव ने–"मैं किसी ज्योतिषी की बात नहीं कर रहा हूं मेरी बहन! मैं तो दिमाग के जादूगर केशव पण्डित जी की बात कर रहा हूं...।"

"के...केशव पण्डित...?"

"हां–ये नाम सुना तो होगा तुमने?"

"वो ही ना...जो बहुत बड़े वकील और जासूस हैं? जिनके उपन्यास भी छपते हैं–?"

"हां–वो ही। बहुत ही पहुंची हुई हस्ती हैं वो। सिर्फ वकील, जासूस और लेखक ही नहीं हैं वो–बहुत ही बहादुर और वीर-योद्धा भी हैं। वो अकेले और निहत्थे ही हथियारबन्द फौज को धूल चटाने में सक्षम हैं। उन्होंने कई खतरनाक आतंकी संगठनों को नेस्तनाबूद किया है। पाकिस्तान की आई०एस०आई० के लोगों को उनके अन्जाम तक पहुंचाया है। कई गैंगस्टर्स, देशद्रोहियों और देश के दुश्मनों को नेस्तनाबूद कर चुके हैं वो। इतना ही नहीं, दूसरे देशों में पहुंचकर उन्होंने कई शक्तिशाली तानाशाहों के तख्ते पलटे हैं। पाकिस्तान में जाकर उन्होंने कई सफल मिशन को अन्जाम तक पहुंचाया है। वहां के हुक्मरान, वहां की मिलिट्री, आतंकी और आई०एस०आई० वाले उनको रोक नहीं सके, न रोक सके, न पकड़ सके, उनका बाल भी बांका नहीं कर सके। पण्डित जी वहां गये और अपना काम करके इतनी आसानी से निकल आये–जैसे मक्खन में से बाल निकल आता है...।"

"तो उन पण्डित जी की बात कर रहे हैं आप...।" वह चेहरे पर से कम्बल हटाकर बोली, "हां–मैंने भी उनकी बहादुरी और जांबाजी के कई किस्से सुने हैं। हे प्रभु...मुझे उनका विचार क्यों नहीं आया था? हां, वो मुम्बई के ही तो रहने वाले हैं। कोई भी मुझे उनका पता बतला देता। मुझे उनके पास जाना चाहिये था। उनसे मदद मांगनी चाहिये थी। दुनिया में वो ही ऐसे व्यक्ति हैं, जिन पर विश्वास और भरोसा कर सकती हूं मैं। वो मुझे न्याय दिलवा सकते हैं और उस दुष्ट को सजा भी दिलवा सकते हैं। मैं उन्हें सब बातें बतलाऊंगी। वो कब आ रहे हैं–?"

❑❑❑

❑❑❑

कैन्टीन जाने की बजाय इन्सपैक्टर अनिल यादव हॉस्पिटल के बाहर

वाले लॉन में पहुंच गया। उसने विल्स नेवीकट की सिगरेट सुलगा ली तथा अधीरता के साथ केशव पण्डित की प्रतीक्षा करने लगा।

इधर उसने सिगरेट का टोटा जमीन पर फेंका, उधर केशव पण्डित ने सफेद रंग की टाटा इन्डिगो कार से बाहर कदम रखे।

वह लपककर केशव के पास पहुंचा तथा हाथों को जोड़कर बोला, "नमस्कार, पण्डित जी!"

"नमस्कार, अनिल भाई! कैसे हो–?"

"आपकी कृपा से ठीक हूं पण्डित जी! अकेले ही आये हैं आप–?"

"हां–अकेला ही...। घर पर ऐसे ही आशीर्वाद के कहने पर अन्ताक्षरी का कार्यक्रम चल रहा था–जिसमें मैं सम्मलित नहीं था। सो तुम्हारा फोन आने पर मैं उन लोगों को अन्ताक्षरी खेलते हुये छोड़कर अकेला ही चला आया। मामला क्या है? फोन पर तुमने कुछ भी नहीं बतलाया। बस, इतना ही बोले कि बहुत ही गम्भीर मामला है और मैं तुरन्त ही सिटी हॉस्पिटल चला आऊं। क्या बात है–?"

"सोलह वर्ष की एक लड़की रात को मेरे पुलिस स्टेशन पहुंची और बरान्डे में ही बेहोश हो गई थी। उसकी दशा बहुत ही खराब थी। वस्त्र फटे हुये थे और बुरी तरह जख्मी थी। उसको रात ही हॉस्पिटल ले आया था। डॉक्टर शालिनी आहूजा ने चैकअप के बाद बतलाया कि उस मासूम के साथ किसी दुष्ट ने क्रूरतापूर्वक बलात्कार किया है। उसको बन्धक बनाकर कई दिनों से भूखी-प्यासी रखा है और टॉर्चर भी किया गया है। प्रॉब्लम ये है कि वो उस दुष्ट से भयभीत है और उसके बारे में कुछ भी नहीं बतला रही है। उसकी सोच ये थी कि पुलिस, कानून या अदालत...कोई भी उस दुष्ट का बाल बांका नहीं कर सकेगा और वो दुष्ट उसको बुरी मौत मार डालेगा। बार-बार यही जिद कर रही थी कि उसको रेलवे स्टेशन पहुंचा दिया जाये, ताकि वो यहां से कहीं दूर जा सके। आपको फोन करने के बाद जब मैंने उसे आपके बारे में बतलाया तो...वो बोली कि वो आप पर भरोसा करती है। वो आपकी प्रतीक्षा कर रही है पण्डित जी! वो आपको ही उस दुष्ट के बारे में बतलायेगी...।"

"ठीक है। एक-एक धूमपान दन्डिका फूंक लेते हैं अनिल भाई! भीतर तो स्मोकिंग होती नहीं। फिर चलते हैं उस लड़की के पास और मालूम करते हैं कि वो किस दुष्ट-पापी की हैवानियत की शिकार हुई है–!"

❑❑❑

❑❑❑

अनिल यादव ने विल्स और केशव ने चार मीनार ब्राण्ड वाली सिगरेट

सुलगाकर उसके धुएं को फेफड़ों के गलियारों में घुमाकर बाहर की तरफ चलता कर दिया।

सिगरेट फूंकने पर वो दोनों हॉस्पिटल के भीतर उस कमरे में पहुंचे, जहां वो दुखियारी किशोरी एडमिट थी।

"इनसे मिलो बहन जी...!" बोला अनिल यादव, "ये हैं अपने देश के सुप्रसिद्ध वकील, जासूस, लेखक और देशभक्त केशव पण्डित जी...!"

वह किशोरी आंखें फाड़े तथा मुंह खोले हुये केशव को कुछ क्षणों तक देखती रह गई–उस केशव को...जो नेवी ब्लू कलर का सूट अर्थात् कोट-पैन्ट पहने हुये था तथा जो आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी था।

"ये...ये हैं पण्डित जी...ये...?" वो आश्चर्य व अविश्वास के साथ बोली, "...हे प्रभु! मैं तो सोचा करती थी कि...पण्डित जी अधेड़ आयु के होंगे। परन्तु ये तो युवा हैं–एकदम फिल्मी हीरो के जैसे! नमस्कार, पण्डित जी...!"

"नमस्कार।"

"कृपया विराजिये...बैठिये...।"

केशव मुस्कराते हुये स्टूल पर बैठ गया तथा उस किशोरी से प्रश्न किया–"क्या मैं तुम्हारा परिचय प्राप्त कर सकता हूं? नाम क्या है तुम्हारा–कहां की रहने वाली हो तुम–?"

"मेरा नाम गुंजन है पण्डित जी...गुंजन...!"

"गुंजन...?" केशव की झील-सी नीली आंखें सिकुड़ गई और फिर चौंकने वाले भाव से फैलती चली गईं–वह अधीरता के साथ बोला, "कहीं...तुम्हारा सम्बन्ध स्वामी रामशरण दास जी के आश्रम से तो नहीं है–?"

अब चौंकने की बारी गुंजन नाम की उस किशोरी की थी–"आ...आप मेरे बारे में कैसे जानते हैं पण्डित जी–?"

"हुम्म...यानि तुम वो ही गुंजन हो...।" केशव ध्यानपूर्वक उसके जख्मी व सूजे हुये चेहरे को देखते हुये बोला।

"हां–प...परन्तु आपको मेरे बारे में कैसे ज्ञात है पण्डित जी? मेरा नाम सुनते ही आप चौंक गये थे। फिर आपने कहा कि मेरा सम्बन्ध स्वामी जी के आश्रम से तो नहीं है? कैसे–?"

"क्योंकि..." केशव उसकी आंखों में झांकते हुये बोला, "तुम्हारे खिलाफ आश्रम क्षेत्र के पुलिस स्टेशन में कम्पलेंट या शिकायत दर्ज कराई गई है गुंजन...!"

"शि...शिकायत...? मेरे खिलाफ शिकायत...?" वह चकित

भाव से बोली, "मेरे खिलाफ क्या शिकायत की गई है पण्डित जी? क्या किया है मैंने—?"

"तुम आश्रम की तिजौरी से पांच लाख रुपये चुराकर भागी हो ना—?"

❑❑❑

❑❑❑

गुंजन यूं ही चिहुंकी कि मानो केशव ने उस पर प्रश्न के बदले कोई जहरीला बिच्छू ही फेंक दिया हो।

"ये...ये आप...क...क्या कह रहे हैं...पण्डित जी...!" वह बौखलाकर बोली, "चोरी? पांच लाख रुपये की चोरी? मैंने? मैंने आश्रम के पांच लाख रुपये चुराये हैं? कहां से—?"

"महिला आश्रम की तिजौरी से—।"

"ले...लेकिन, महिला आश्रम में तो कोई तिजौरी ही नहीं है...।"

"क्या मतलब—?" चौंका हुआ स्वर अनिल यादव का था।

"हां—मैं एकदम सच बोल रही हूं। महिला आश्रम में कोई तिजौरी नहीं है। वहां की महिलायें लघु उद्योग चलाती हैं। पापड़, अचार, जैम, सॉस वगैरा बनाती हैं। सिलाई-कढ़ाई करती हैं। इन कार्यों से होने वाली कमाई को उन महिलाओं के बैंक एकाउन्ट में जमा कर दिया जाता है। किसी महिला के पास सौ, दो सौ रुपये हों तो हों—इससे अधिक कोई भी नहीं रखती। वहां पैसों की आवश्यकता ही नहीं होती है। खाना और नाश्ता तो आश्रम की रसोई में बनता ही है। महिला आश्रम तो क्या...शायद पूरे आश्रम में भी कोई तिजौरी नहीं होगी। सारा पैसा बैंक में जमा रहता है। आवश्यकता पड़ने पर चैक के द्वारा पैसा निकाल लिया जाता है। आश्रम से कीमती सामान चुराकर और बेचकर तो मोटी रकम प्राप्त की जा सकती है—परन्तु वहां पर नकद राशि नहीं होती। फिर भला मैंने पांच लाख रुपये कैसे चुरा लिये? मैं...मैं एकदम सत्य बोल रही हूं पण्डित जी! मुझ पर झूठा आरोप लगाया गया है। परन्तु आपको किसने बतलाया ये सब? क्या समाचार-पत्र में छपा है—?"

"नहीं, गुंजन! मैं कल अपने परिवार के साथ आश्रम गया था। हमारे सामने ही महिला आश्रम की संचालिका गंगा देवी ने वहां आकर स्वामी जी को बतलाया कि तुम पांच लाख रुपये चुराकर भाग गई हो...।"

गुंजन की आंखों में पहले जहर-सा भरा तथा फिर लावा-सा भर चला। सूजा हुआ चेहरा लाल-भभूका हो चला।

कांच की गोलियों का चूर्ण बना देने वाली सख्ती के साथ उसने

मुट्ठियां कसी तथा कड़वाहट भरे लहजे में बोली, "गंगा—झूठ बोली वो कमीनी औरत। मुझ पर झूठा आरोप लगाया गया है। अपने पापों को छिपाने के लिये ही मुझ पर झूठा आरोप लगाया गया है। ये कल शाम की बात होगी पण्डित जी—?"

"हां—शाम के सात बज रहे थे तब—जब गंगा देवी ने वहां पहुंचकर ये खबर दी थी। परन्तु गंगा देवी तुम पर झूठा आरोप क्यों लगा रही है गुंजन—?"

"उस कुत्ते स्वामी रामशरण दास के इशारे पर ही वो कुतिया गंगा झूठ बोली थी—।"

गुंजन के मुख से मानो कोई चोटिल नागिन ही फुंफकारी हो।

"ये-ये तुम कैसी भाषा इस्तेमाल कर रही हो...?" कक्ष में उपस्थित नर्स बुरा-सा मुंह बनाकर क्रोध के साथ बोली, "शर्म नहीं आती स्वामी जी के बारे में ऐसी गन्दी भाषा इस्तेमाल करते हुये? स्वामी जी तो साक्षात ईश्वर का अवतार हैं। वो दीन-दुखियों की सेवा कर रहे हैं। भक्तों में धर्म के प्रति आस्था बढ़ा रहे हैं। योग तथा उपचार के माध्यम से रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने अनाथ आश्रम तथा महिला आश्रम खोले हैं। हॉस्पिटल तथा स्कूल चला रहे हैं। धर्म तथा अध्यात्म का प्रचार कर रहे हैं वो। भक्तों से जो दान-दक्षिणा मिलती है, उसको जन-कल्याण में लगा रहे हैं स्वामी जी! और गंगा देवी जी भी उनका अनुसरण कर रही हैं। वो निःस्वार्थ भाव से आश्रम में मिली जिम्मेदारियों का निर्वाह कर रही हैं। वो भला तुम पर झूठा आरोप क्यों लगाने लगीं? तुमने सचमुच ही चोरी की होगी। पांच लाख रुपये चुराकर भागी तो गुण्डों-बदमाशों के हत्थे चढ़ गई। गुण्डों ने तुमसे वो पांच लाख रुपये लूट लिये और तुम्हारे साथ बलात्कार भी कर डाला। क्यों...सही बोल रही हूं ना मैं—?"

❑❑❑

❑❑❑

"नहीं—बकवास कर रही हो तुम...।" वह विक्षिप्त भाव से चिल्ला उठी, "कुछ नहीं पता तुम्हें। दूसरे लोगों की तरह तुम भी अक्ल की अन्धी हो। स्वामी के बिछाये मायाजाल में फंसी हुई हो। चांदनी में चमक रही रेखा को चांदी समझ रही हो। भेड़ की खाल में छिपे भेड़िये को शाकाहारी समझने की भूल कर रही हो। कसाई को बकरे का पालनहार मान बैठी हो। अजगर को घौंसले का रखवाला समझ रही हो। एक पैर पर खड़े बगुले को भक्त मान लिया है तुमने। खजूर के पेड़ को फल तथा छाया देने वाला जान लिया है। वो स्वामी एक नम्बर का अय्याश है। वासना का

भेड़िया...शराब से कुल्ली करने वाला। गंगा, देवी नहीं है, बल्कि चण्डालिका है। वो नदी तो है, परन्तु उसमें गंगाजल नहीं, वासना की मदिरा बहती है। स्वामी की रखैल है वो...।"

"मुझे लगता है कि ये पागल हो गई है...।" नर्स केशव तथा अनिल यादव से बोली, "पांच लाख रुपये छिन जाने और इज्जत लुट जाने के कारण इसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया है। तभी ये ईश्वर के अवतार को शैतान बताने की जुर्रत कर रही है...।"

"हो जाता है...।" केशव ने नर्स की कलाई पकड़ी तथा उसे दरवाजे की तरफ ले जाते हुये बोला, "वास्तव में ही इस लड़की की मानसिक अवस्था ठीक नहीं है। इस पर जो बीती है...उस कन्डीशन में कोई भी पागल-सा हो सकता है। तभी तो ये स्वामी जी के बारे में अन्ट-शन्ट बोले जा रही है। लेकिन इस समय इसकी बातों का विरोध करने से कोई लाभ नहीं होगा–। अभी तो ये होश में नहीं है। मुझे इससे एकान्त में वास्तविकता जाननी है। तुम कुछ समय का रेस्ट ले लो सिस्टर! इसका बयान लेने पर मैं तुम्हें बुलवा लूंगा...।"

"ठीक है पण्डित जी! मैं थोड़े समय के लिये कैन्टीन में जाकर बैठती हूं। आपके लिये चाय या कॉफी भिजवाऊं क्या–?"

"नहीं, धन्यवाद! प्लीज, इस बारे में किसी से कुछ भी मत कहना। बेमतलब में ही बात का बतंगड़ बनेगा। अभी ये होश में नहीं है। होश में आयेगी तो स्वामी जी तथा गंगा देवी की महानता के समक्ष नतमस्तक हो जायेगी। तुम ऐसा बिल्कुल भी मत समझो कि इसने तुम्हारी भावनाओं और आस्था को ठेस पहुंचाई है। बिल्कुल नॉर्मल मूड के साथ ही जाओ–जैसे कि कुछ हुआ ही ना हो...।"

नर्स को कमरे से बाहर भेजकर वापिस लौटा केशव तथा बेड के करीब वाले स्टूल पर बैठकर गुंजन से बोला–"तुम्हारे साथ ये दुर्व्यवहार किसने किया है गुंजन–?"

❑❑❑

❑❑❑

"मैं आपको बतला भी दूं तो...कोई लाभ नहीं होगा...पण्डित जी...!" गुंजन निराश व दुखी भाव से बोली, "क्योंकि आप मुझ पर...मेरी बात पर विश्वास तो करेंगे नहीं...।"

"क्यों...?" मुस्कराकर कहा केशव ने, "क्यों नहीं करूंगा तुम पर विश्वास–?"

"अभी-अभी तो आपने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया, पण्डित जी! आपने उस नर्स की बात का ही समर्थन किया।"

"तो और क्या करते पण्डित जी...?" अनिल यादव उसकी बात को काटकर बोला–"सत्य का समर्थन तो सभी करते हैं ना। गंगा देवी को तो मैं नहीं जानता हूं–लेकिन स्वामी जी को बहुत अच्छी तरह से जानता हूं। उनका परम भक्त हूं मैं। सिर्फ मैं ही नहीं, पण्डित जी भी स्वामी जी को बहुत मानते हैं। ये कल अपने परिवार के साथ स्वामी जी को अपना गुरु बनाने के लिये आश्रम में गये थे। इन्होंने स्वामी जी को अपना गुरु बनाया है। वहां पर स्टेट के चीफ मिनिस्टर साहब भी आये हुये थे। वो भी स्वामी जी के परम भक्त हैं। मैं ये तो नहीं कहूंगा कि स्वामी जी भगवान हैं, या भगवान के अवतार हैं–लेकिन वो चमत्कारी व्यक्ति हैं। उनकी वाणी में जादू है। उनके योग, उपचार में जादू है। वो राह से भटके लोगों को उनकी मन्जिल तक पहुंचा देते हैं। कलियुग में पापियों की संख्या बढ़ गई है। स्वामी जी लोगों में धर्म के प्रति आस्था बढ़ाकर पाप के प्रभाव को कम कर रहे हैं। वो नये भारत का निर्माण कर रहे हैं। ईश्वर ने चाहा तो वो इस देश का कायाकल्प कर देंगे। शर्म आनी चाहिये तुम्हें–स्वामी जी के बारे में कितनी गलत बात कर रही थी। गंगाजल को शराब और शुद्ध सोने को पीतल साबित करना चाहती हो तुम? अपनी गलतियों पर पर्दा डालने के लिये बेचारे स्वामी जी पर झूठे आरोप लगाने लगी हो।"

"ये-ये झूठ है...मुझ पर मिथ्या दोषारोपण कर रहे हैं आप इन्सपैक्टर साहब...!" वह मानो तड़पकर ही बोली, "मैंने आश्रम के पांच लाख रुपये नहीं चुराये हैं। नहीं जानती कि मेरे माता-पिता कौन हैं! जब से होश सम्भाला है–स्वयं को आश्रम में ही पाया है। पहले अनाथालय में थी तथा बारह वर्ष के पश्चात् महिला आश्रम में पहुंच गई थी। यही बतलाया गया कि कोई मुझे आश्रम के बाहर रखे पालने में डाल गया था। फिर भी मेरे माता-पिता तो होंगे ही। उन्हीं की सौगन्ध खाकर बोल रही हूं कि मैंने आश्रम में कोई चोरी नहीं की...।"

"क्या इससे पहले भी आश्रम में चोरी नहीं की थी तुमने गुंजन–?" पूछा केशव ने।

"क्या मतलब? आपके इस प्रश्न का तात्पर्य क्या है पण्डित जी?"

❑❑❑

❑❑❑

चेहरे पर गम्भीर भाव समेटकर ही कहा केशव ने–"मुझे आश्रम में बतलाया गया था कि तुम पैसे चुराकर आश्रम से बाहर जाती थीं और

वो पैसे खाने-पीने में उड़ा देती थीं। जब तुम पन्द्रह वर्ष की थी, यानि एक वर्ष पहले...तुम आश्रम से एक लाख रुपये चुराकर भाग गई थी। एक माह पश्चात् तुम एक होटल से पकड़ी गई थीं। तुम्हारे साथ तीन लड़के भी थे—लेकिन वो निकल भागे थे। तुम नशे में धुत्त थीं और निःवस्त्र थीं। यानि तुम उन तीन लड़कों के साथ रंगरेलियां मना रही थीं। गंगा देवी ने तुम्हें आश्रम से निष्कासित करने का निर्णय लिया था—लेकिन स्वामी जी ने तुम्हें सुधारने का निर्णय लिया था। वो तुमसे योग तथा धार्मिक कार्य कराने लगे थे। तुममें काफी परिवर्तन भी आया था, लेकिन फिर अचानक ही तुम पांच लाख रुपये चुराकर भाग गईं। इस बारे में क्या कहना है तुम्हें—?"

गुंजन काफी देर तक आश्चर्य मिश्रित दृष्टि से केशव को देखती रही। वो इतनी हक्का-बक्का थी कि मुंह खुला-का-खुला रह गया था। फिर वो कसमसाकर, छटपटाकर बोली—"ये...ये सब बतलाया गया था आपको? हे ईश्वर! ऐसा किसने बतलाया आपको? क्या उस दुष्ट-पापी स्वामी ने? या उसकी चेली गंगा ने?"

"दोनों ने ही। क्या ये सत्य नहीं है—?"

"न...नहीं। बिल्कुल भी सत्य नहीं है ये पण्डित जी—बिल्कुल भी नहीं। आपको मेरे बारे में बिल्कुल असत्य बतलाया गया। बकवास की गई है। अपने पूरे जीवन में मैंने कभी भी चोरी नहीं की है। कभी आश्रम से बिना बतलाये बाहर नहीं गई। ज़ीवन में कभी भी किसी लड़के को दृष्टि उठाकर नहीं देखा। किसी का एक रुपया चोरी नहीं किया। होटल को बाहर से तो देखा है—लेकिन कभी होटल के भीतर झांककर नहीं देखा। कभी कोई कोल्ड ड्रिंक पीकर नहीं देखा है—शराब की बात तो बहुत ही दूर की बात रही। मेरे बारे में बिल्कुल झूठ बोला गया है। कोरी बकवास की गई है! आप तो बहुत अच्छे जासूस हैं पण्डित जी! आप अपने स्तर पर छानबीन कर सकते हैं। आश्रम की किसी भी महिला या सेवक से मेरे बारे में पूछताछ कर सकते हैं आप। यदि कोई भी मुझ पर सूई की नोक बराबर भी आरोप लगाये तो—आप मेरा गला घोट देना—या फांसी पर चढ़ा देना।"

"तो फिर स्वामी जी और गंगा देवी नाहक की तुम पर इतना घिनौना आरोप क्यों लगा रहे हैं गुंजन—?"

"अपने पाप छिपाने के लिये—।"

"कौन-से पाप—?"

"मेरा हाल...मेरी दुर्दशा नहीं देख रहे हैं आप पण्डित जी? मेरी ये दुर्दशा उस स्वामी ने ही तो की है...।"

"क्या बकवास कर रही हो तुम...?" अनिल यादव भड़ककर बोला, "स्वामी जी पर ऐसा घिनौना इल्जाम लगाते हुये शर्म नहीं आती तुम्हें...?" एक सच्चे सन्त पर इतना घिनौना आरोप लगा रही हो तुम—?"

"आरोप नहीं लगा रही हूं मैं इन्सपैक्टर साहब...! आपको वास्तविकता का दर्पण दिखला रही हूं...।" वह मानो प्रेशर कुकर की मानिन्द ही फट पड़ी, "मेरी ये दुर्दशा स्वामी रामशरण दास ने ही की है। इस बुरे कर्म में गंगा ने भी उसका भरपूर सहयोग दिया है।"

"नहीं—झूठ नहीं बोल रही हो तुम। अपने गुनाहों पर पर्दा डालने के लिये बेचारे स्वामी जी पर घिनौना आरोप लगा रही हो तुम। भला स्वामी जी तुम्हारे साथ ऐसा घिनौना आचरण क्यों करेंगे—?"

❑❑❑

❑❑❑

"वाह...क्या प्रश्न किया है आपने इन्सपैक्टर साहब कि स्वामी जी मेरे साथ ऐसा घिनौना आचरण क्यों करेंगे—?" गुंजन कड़वाहट भरे भाव से बोली, "...नाग किसी को क्यों डसता है? भेड़िया भेड़ का शिकार क्यों करता है? बगुला मछली को क्यों गटक जाता है? मगरमच्छ शिकार को क्यों सटक जाता है? शराबी शराब क्यों पीता है? गुण्डा बदमाशी क्यों करता है? भ्रष्टाचारी रिश्वत क्यों खाता है? कसाई जानवर की बलि क्यों लेता है? इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है...उनका चरित्र ही ऐसा होता है। ये स्वामी रामशरण दास कोई योगी नहीं, भोगी है। वो धर्मात्मा नहीं, महापापी है। वो समाज सुधारक नहीं, समाज भक्षक है। वो साधु नहीं, शैतान है। शराब को गंगाजल बतलाकर पीने वाला...वासना का भूखा भेड़िया। नीच, भ्रष्ट, कमीना, पतित तथा हैवान—जिसने अपने वास्तविक चेहरे पर मुखौटा चढ़ाया हुआ है। वो एक भी दिन शराब और शबाब के बिना नहीं रह सकता है। उसे अपनी रंगशाला में प्रत्येक रात एक महिला चाहिये। उसके इस पाप की सहभागी है...उसकी रखैल गंगा!"

"यूं बातें बनाकर तू हमें भ्रमित नहीं कर सकती है गुंजन। क्या सोचती है कि तू कहेगी और हम स्वामी जी को पापी मान लेंगे...?"

"हो सकता है कि ना मानें! मैं तो पहले ही आपको कुछ नहीं बतला रही थी। आप ही उस दुष्ट का नाम जानने के लिये व्याकुल थे। उस दुष्ट का नाम जानने के लिये आपने ही पण्डित जी को बुलाया है। पण्डित जी पर विश्वास है मुझे—इसीलिये मैं उस दुष्ट के बारे में बतला रही हूं...।"

"मैं सुन रहा हूं गुंजन...!" गम्भीर भाव के साथ बोला केशव, "बोलो...तुम! सब कुछ बतलाओ। तुम्हारी बातें सुनकर ही मैं किसी निर्णय पर पहुंचूंगा...।"

"आप भी किसकी बातों में आ रहे हैं पण्डित जी! ये झूठ बोल रही है। बेचारे स्वामी जी पर झूठा लांछन लगा रही है ये...। एक महात्मा को शैतान साबित करने की चेष्टा कर रही है। राम को रावण बनाने पर तुली है ये। चलिये, माना कि बहुत-से लोगों के साथ मेरी आंखें और बुद्धि धोखा खा रही है। लेकिन आप तो इतनी आसानी से धोखा खाने वाले नहीं हैं ना? आपने जिन्दगी में पहली बार पूरे परिवार के साथ किसी को अपना गुरु बनाया है–। फिर स्वामी जी भला गलत कैसे हो सकते हैं–?"

"थोड़ा धैर्य के साथ काम लो अनिल भाई...!" केशव स्टूल से उठा तथा उसके कन्धे पर हथेली रखकर बोला, "धैर्य के साथ गुंजन की बात सुनो। स्वामी जी के भक्त या अनुयाई बनकर नहीं–बल्कि पुलिस इन्सपैक्टर बनकर। मत भूलो कि तुम ऑन ड्यूटी हो। तुम्हें गुंजन का बयान लेना है। गुंजन का बयान झूठा है कि सच्चा–ये एडवांस में ही कैसे जान सकते हो तुम?"

"क्योंकि ये स्वामी जी पर आरोप लगा रही है...पण्डित जी! मैं जानता हूं कि वो निर्दोष हैं। क्या आप नहीं जानते कि स्वामी जी निर्दोष हैं? चुप क्यों हैं आप पण्डित जी! क्या आप सूई की नोक बराबर भी ऐसा सोच सकते हैं कि स्वामी जी वासना के पुजारी हो सकते हैं–?"

"तुम्हारे किसी भी प्रश्न का उत्तर बाद में...अनिल भाई! पहले गुंजन की सुनो। गुंजन का बयान होना आवश्यक है। सुन तो लो कि आखिर ये क्या बतलाती है–!"

❑❑❑

❑❑❑

"ये कोई एक सप्ताह पूर्व की बात है...।" केशव का इशारा होने पर बोली गुंजन, "गंगा ने मुझसे कहा कि...मेरे लिये खुशखबरी है–स्वामी जी ने मुझे विशेष दीक्षा देने का निर्णय लिया है। मुझे स्वामी जी अपनी परम शिष्या बनायेंगे–जिसके लिये गुप्त स्थान पर पूजा-पाठ कराया जायेगा और कुछ मन्त्र भी सिद्ध किये जायेंगे। दीक्षा पूर्ण होने पर मैं धर्म व अध्यात्म के लिये देश-विदेश जाया करूंगी। मेरे नाम की जय-जयकार होगी। मुझे गुरु-मन्त्र देने का अधिकार प्राप्त हो जायेगा। मेरे भी शिष्य होंगे। आने वाले समय में मैं अपने नाम से आश्रम, महिला आश्रम, अनाथाश्रम, चिकित्सालय, विद्यालय इत्यादि बनवा सकूंगी। रात के दस बजे मुझे आश्रम

के ही नीचे वाले भाग में ले गई गंगा। मैं अचम्भित थी कि आश्रम के नीचे इतने बढ़िया कई कक्ष बने हुये थे।

एक कक्ष को पूजा-घर का रूप दिया गया था। वहां महाकाली की भव्य प्रतिमा के समक्ष पूजा-पाठ की सामग्री थी। देशी घी का दीया प्रज्जवलित था–धूप जल रही थी। एक छोटा-सा हवन कुण्ड भी था। मुझे स्नान के पश्चात् गंगा ने हवनकुण्ड के समक्ष एक मृगछाला पर बिठा दिया था। स्वामी आया तथा वो मेरे समक्ष हवनकुण्ड के उस पार सिंह की छाल पर बैठा। उसने पूजा-पाठ कर नौ ग्रहों, देवी-देवताओं का आह्वान किया तथा हवनकुण्ड में अग्नि प्रज्जवलित की। मन्त्रोच्चारण करते हुये वो तथा गंगा सामग्री की आहुति डाल रही थी तो मुझसे शुद्ध घी की आहुति डलवाई जा रही थी। फिर स्वामी के संकेत पर गंगा ने मुझे चांदी के कटोरे में चरणामृत पीने के लिये दिया था–मैं निःसंकोच प्रसाद समझकर उस पेय पदार्थ का सेवन कर गई थी जिसके सेवन से मुझे चक्कर-से आने लगे। सिर घूमने लगा था। आंखों के समक्ष अन्धेरा-सा व्याप्त होने लगा था। प्रत्येक वस्तु हिलती-सी लग रही थी। फिर मैं अपनी सुध-बुध खो बैठी थी–अचेत हो गई थी...।"

"क्या बात है...!" भुनभुनाकर बोला अनिल यादव, "काल्पनिक किस्सा सुनाने लगी है।"

"मैं कोई काल्पनिक किस्सा नहीं सुना रही हूं इन्सपैक्टर...!" वह तनिक क्रोध के साथ बोली, "मैं एकदम सच बोल रही हूं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि आप मुझ पर विश्वास क्यों नहीं कर रहे हैं। लगता है कि आपके मनो-मस्तिष्क में उस स्वामी का भूत पूरी तरह समाया हुआ है...।"

अनिल यादव ने कुछ बोलने के लिये मुंह खोला ही था कि केशव ने हथेली से उसका कन्धा दबाकर उसकी बोलती बन्द कर दी तथा गुंजन से कहा– "...तुम अपनी बात पूरी करो गुंजन!"

"इन्सपैक्टर साहब तो मुझ पर विश्वास ही नहीं कर रहे हैं। यदि आप भी विश्वास नहीं कर रहे हैं तो...मेरे बोलने या बतलाने का कोई लाभ ही नहीं। मैं यहां से चली जाना चाहूंगी। बहुत बड़ी दुनिया है–कहीं भी गुप्त-वास कर लूंगी। रहा प्रश्न स्वामी का...तो उसके पापों का दण्ड भगवान देंगे...। पहले आप ये बतलाइये कि आप मुझ पर विश्वास कर रहे हैं कि नहीं–?"

"अभी तुमने कुछ बतलाया नहीं है गुंजन! पहले अपनी बात को

पूरी तो करो तुम! फिर मैं किसी निर्णय पर पहुंचूंगा। तुम अपनी बात को पूरी करो...।"

गुंजन ने पहले अनिल यादव को उपेक्षापूर्ण दृष्टि से देखा, फिर वो केशव से सम्बोधित होकर बोली, "मुझे ना जाने कितनी देर पश्चात् चेतना प्राप्त हुई–होश में आई तो लुट चुकी थी। बर्बाद हो चुकी थी। मेरी अस्मिता...मेरी लाज लुट चुकी थी। मेरे शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था। पोर-पोर दुख रहा था। शरीर का रोम-रोम पीड़ायुक्त था। मुझे आभास हो गया कि मेरे साथ बलात्कार किया गया है। बलात्कार करने वाला वो दुष्ट-पापी स्वामी रामशरण दास ही था। उस शयन-कक्ष में स्वामी तथा गंगा उपस्थित थी। दोनों शराब का सेवन कर रहे थे। इतना ही नहीं, वो दोनों मुर्गे का मांस खा रहे थे। फिर गंगा उठकर मेरे समीप आई तथा बोली कि...आरम्भ में शरीरिक पीड़ा अवश्य होती है–परन्तु फिर आनन्द आने लगता है–मुझे स्वयं को धन्य समझना चाहिये कि स्वामी ने मुझे अपनी भोग्या बनाया है। बदले में मुझ पर स्वामी की कृपा होगी और मुझे अनेकों लाभ होंगे। उसने भी स्वामी की तन, मन से सेवा की तथा स्वामी की कृपापात्र बनी हुई है। वो सिर्फ महिला आश्रम की संचालिका ही नहीं है, वरन वो स्वामी की खासमखास है–उसकी बातें और इच्छा को स्वामी टालता नहीं है। मैं अपने सुन्दर शरीर से स्वामी की सेवा करती रहूंगी तो मुझे बहुत-से लाभ होते रहेंगे...कुल मिलाकर गंगा ने ये चेष्टा की थी कि मैं स्वामी की रखैल बन जाऊं...।" गुंजन के फूलते-पिचकते नथुनों से जोर-जोर की सांसें निकलने लगीं।

"शान्त हो जाओ, गुंजन!" स्टूल पर बैठकर केशव उसके माथे पर स्नेह से हथेली रखकर बोला।

"अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण रखो। वो गंगा ने तुम्हें बहलाने-फुसलाने की चेष्टा की थी। तुम्हारा उत्तर क्या था–?"

"ये भी कोई पूछने की बात है पण्डित जी!" वह कड़वाहट भरे लहजे में बोली, "कई थप्पड़ जड़ दिये थे उस कलमुंही के चेहरे पर। गला पकड़ लिया था। मेरा वश चलता तो उसके प्राण ही ले लेती। परन्तु स्वामी ने आकर गंगा को बचा लिया था। फिर स्वामी ने मुझे अपने रंग में रंगने की चेष्टा की थी। परन्तु मैं क्रोध से पागल हो उस पर भी टूट पड़ी थी। उसके सिर तथा दाढ़ी के बालों को नोच डाला था। उसके पेट पर जोर से पैर का प्रहार किया था। तब उस नीच का एक और रूप मेरे सामने आया था। उसकी आंखों में खून-सा भर गया था। मारे क्रोध के चेहरा भयानक तथा विकृत-सा हो चला था। मुझे बुरी तरह पीटते हुये वो गुण्डों

वाली भाषा में बोला था। बोला था कि वो शक्तिशाली तथा ऊपर तक पहुंच वाला है। वो मुझे बर्बाद कर डालेगा और उसका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। वैसे भी उसने एक सन्त वाली छवि बनाई हुई है। कोई भी विश्वास नहीं करेगा कि वो योगी नहीं...भोगी है। कुल मिलाकर वो मुझ पर दबाव बना रहा था कि मैं उसकी रखैल बनने के लिये तैयार हो जाऊं। परन्तु मैं तैयार नहीं थी। मैंने उसको चेतावनी दी थी कि उसका भान्डा फोड़ दूंगी तथा संसार के सामने उसका वास्तविक चेहरा ले आऊंगी।"

"हुम्म...फिर–?"

"बस, फिर क्या था–स्वामी ने मुझे बन्धक बना लिया था। मुझे बान्ध दिया गया था। स्वामी ने अपने कई हथियारबन्द गुण्डे मेरी निगरानी पर तैनात कर दिये थे। वो बोला था कि मन भरने तक वो मेरे शरीर को भोगेगा–फिर मेरी हत्या करके मेरे शव को ठिकाने लगा दिया जायेगा। अर्थात् ये निश्चित हो गया था कि मेरी मौत शीघ्र ही मुझे दबोच लेगी। इसके बाद स्वामी रात को गंगा के साथ आता था। दोनों शराब पीते थे। फिर स्वामी मुझे बन्धन-मुक्त करके मेरे साथ दुराचार करता था। मुझे नियन्त्रण में करने के लिये गंगा उसकी मदद करती थी। छह दिनों तक वो दुष्ट मेरे साथ पाशविक खेल खेलता रहा। रात बोला कि वो कल मेरे साथ अन्तिम बार दुराचार करेगा–फिर मेरी हत्या कर दी जायेगी।

स्वामी ने अपने गुण्डों को बोल दिया था कि मुझे खाना तो क्या पानी की एक बूंद भी ना दी जाये। मुझ पर पूरी निगरानी रखी जाये। मुझे उस रात तथा अगले दिन खाना तथा पानी ना दिया गया। मुझे ऐसा आभास हो रहा था कि मौत धीरे-धीरे मेरी तरफ बढ़ती चली आ रही है। मन-ही-मन ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि...मैं किसी चमत्कार से वहां से बच निकलूं–ताकि संसार के सामने उस दुष्ट, पापी, शैतान स्वामी की वास्तविकता आ सके।"

"ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थना सुनी थी–?"

"जी...पण्डित जी...!"

"कैसे हुआ था ये चमत्कार...?"

❑❑❑

❑❑❑

"मुझे शौच के लिये जाना था। पेट में दर्द था। काफी देर तक रोने-गिड़गिड़ाने पर वहां उपस्थित छः गुण्डों में से एक ने मुझे बन्धनमुक्त किया तथा शौचालय में पहुंचाया। वो गुण्डे शराब पी रहे थे। साथ ही वो सुल्फे वाली सिगरेट भी पी रहे थे। जब मैं शौचालय से बाहर आई तो वो

सभी बेसुध पड़े हुये थे। मुझे लगा कि मेरे लिये ये प्रथम तथा अन्तिम अवसर है। मैं वहां से भाग निकली थी। आश्रम के पीछे वाले द्वार से निकलकर मैंने जंगल वाला मार्ग पकड़ा था–ताकि मैं पकड़ी ना जाऊं। आश्रम वाले क्षेत्र से निकलकर मैं मुख्य सड़क से होकर मुम्बई पहुंची तथा फिर किसी तरह पुलिस स्टेशन पहुंची थी और बेसुध हो गई थी। स्वामी को मेरे गायब होने की जानकारी कल रात को ही हो गई होगी। उसने अपने गुण्डों को मेरी खोज में दौड़ा दिया होगा। मैं उनके हाथ लग गई तो...मुझे बुरी मौत मार डालेंगे वो...।"

"नहीं–ऐसा कुछ नहीं होगा...।" केशव ने भयभीत गुंजन को आश्वस्त करते हुये कहा, "तुम अब बिल्कुल सुरक्षित हो...तुमने...।" वह चुपचाप खड़े होकर कुढ़ रहे अनिल यादव की तरफ पलटकर बोला, "गुंजन का मेडिकल चैकअप कराया है ना–?"

"जी, पण्डित जी!"

"क्या कहना है डॉक्टर का–गुंजन के साथ बलात्कार हुआ है कि नहीं–?"

वह सकुचाते हुये बोला–"बलात्कार तो हुआ है पण्डित जी–लेकिन...।"

"लेकिन–?"

"लेकिन ये जरूरी तो नहीं कि वो बलात्कार स्वामी जी ने ही किया हो? स्वामी जी के आश्रम के पांच लाख रुपये चुराकर भागी थी ये लड़की। किसी ने वो रुपये छीन लिये और इसके साथ बलात्कार भी किया होगा। ये खुन्नस में ही स्वामी जी पर झूठा लांछन लगा रही है। स्वामी जी को तो आप भी जानते हैं ना पण्डित जी–?"

"हां–जानता हूं–बहुत अच्छी तरह से जानता हूं...।"

"फिर भी आप इसकी बात पर विश्वास कर रहे हैं–?" अनिल यादव ने आश्चर्य व्यक्त करते हुये कहा, "आपको लोग अन्तर्यामी कहते हैं। ये माना जाता है कि आपकी आंखें एक्स-रे मशीन के जैसी ही हैं। आप सामने वाले के दिल और दिमाग को पढ़ लेते हैं। ये जान जाते हैं कि वो क्या है? आप स्वामी जी को भी जानते हैं। फिर आप इस लड़की को क्यों नहीं पकड़ पा रहे हैं–?"

"तुमसे किसने कहा कि मैं इस लड़की ...गुंजन की हकीकत को नहीं पकड़ पाया हूं? मैं इसकी हकीकत जान चुका हूं। इसके दिल में क्या है–मुझे मालूम है।"

"तो फिर इसका क्या किया जाये? क्या इसकी तरफ से स्वामी जी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करने की जरूरत है–?"

"नहीं–बिल्कुल नहीं। गुंजन की तरफ से स्वामी जी के खिलाफ कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं करनी है। ना ही तुम्हें स्वामी जी के खिलाफ कोई कार्रवाई ही करनी है...।"

"ये...ये आप क्या कह रहे हैं पण्डित जी...!" मानो गुंजन तड़प कर ही बोली, "यानि...यानि आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं है? आप भी ऐसा सोच रहे हैं कि मैं...मैं स्वामी पर झूठा आरोप लगा रही हूं? आप भी ऐसा समझते हैं कि मैं आश्रम के पांच लाख रुपये चुराकर भागी थी? हे प्रभु...नहीं, आपकी कोई त्रुटि नहीं है। उस स्वामी ने ऐसा प्रसार-प्रचार किया हुआ है कि हर कोई उसे सच्चा सन्त मानता है–हर कोई उसे चमत्कारी पुरुष... ईश्वर का अवतार समझता है। कोई भी मेरी बात पर विश्वास नहीं करेगा। उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होगी। मुझी को चोर समझा जायेगा और दण्ड सुनाकर जेल भेज दिया जायेगा। ठीक है...मुझे जेल जाना स्वीकार है, परन्तु मुझे स्वामी के सुपुर्द ना किया जाये, अन्यथा वो मुझे बुरी मौत मार डालेगा। मैं हार गई। मेरा विश्वास भी पराजित हो गया–जो आपके यहां आने पर उत्पन्न हुआ था पण्डित जी...!" वह सुबकने लगी।

स्टूल पर बैठे केशव ने उसके आंसू पोंछे तथा फिर उसके सिर पर हथेली रखकर कहा, "मेरी बातों का तुमने गलत अर्थ निकाला है गुंजन–। मैंने किसी खास उद्देश्य के निमित्त ही अनिल यादव से ऐसा कहा कि स्वामी जी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज नहीं करनी है... उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करनी है। क्या है कि स्वामी के लाखों–करोड़ों भक्त हैं। यहां तक कि राज्य के मुख्यमन्त्री जी भी उनके परम भक्त हैं। स्वामी जी पर यूं ही हाथ डाला गया तो उनके भक्तों में उबाल आयेगा ही आयेगा। वो हंगामा खड़ा कर देंगे। हालांकि मेडिकल रिपोर्ट से दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा–वास्तविकता सामने आ ही जायेगी, परन्तु स्वामी की भक्ति में अन्धे हो चुके लोगों को लगेगा कि स्वामी के खिलाफ षड्यन्त्र रचा जा रहा है। ये उनके विरोधियों की गहरी साजिश है। इसलिये पहले सबके सामने स्वामी की वास्तविकता आनी चाहिये। भेड़िये के मुख से भेड़ वाला मुखौटा उतरना चाहिये–तभी लोगों के दिमाग पर लटका छल, भ्रम व फरेब का पर्दा हट पायेगा...।"

"ये-ये क्या कह रहे हैं आप...पण्डित जी...!" बुरी तरह बौखलाकर बोला अनिल यादव, "मैं आपकी बातों का मतलब बिल्कुल भी समझ नहीं

पा रहा हूं। भेड़िये के मुख पर भेड़ वाला मुखौटा...आप ऐसा स्वामी जी के बारे में बोल रहे हैं? उन स्वामी जी के बारे में आप ऐसा बोल रहे हैं, जिन्हें कल ही आपने पूरे परिवार के साथ अपना गुरु बनाया है? आप इस ढोंगी लड़की के मगरमच्छी आंसुओं से प्रभावित होकर स्वामी को बलात्कारी मान बैठे हैं पण्डित जी...?"

❑❑❑

❑❑❑

स्टूल से उठा केशव!

अचम्भित अनिल यादव के कन्धों पर हथेलियां रखकर तथा उसकी बिल्लौरी आंखों में झांकते हुये बोला-"तुम क्या समझते हो-कोई मगरमच्छी आंसू बहाकर झूठी कहानी सुनायेगा और मुझे भ्रमित कर लेगा? किसी की एक्टिंग के झांसे में आ सकता हूं मैं?"

"तो फिर आपने स्वामी जी के बारे में ऐसा क्यों कहा-?"

"क्योंकि गुंजन सत्य बोल रही है। गुंजन का आरोप मिथ्या नहीं, एकदम सत्य है।"

"इसका मतलब ये कि...?" थोड़े आश्चर्य, थोड़े अविश्वास, थोड़े क्रोध, थोड़े उलाहने के साथ ही बोला बिल्लौरी आंखों वाला, "स्वामी जी वो नहीं हैं, जो वो दिखाई पड़ते हैं? वो ढोंगी हैं, पाखंडी हैं, दुष्ट और पापी हैं-?"

"बिल्कुल! ऐसा ही है अनिल भाई-!"

अनिल यादव का मुंह खुला-का-खुला रह गया।

आश्चर्य व अविश्वास भरी आंखों से केशव को घूरता चला गया वो।

मानो स्वप्न में भी उसे केशव से ऐसी आशा नहीं थी।

"ये...ये आप क्या कह रहे हैं पण्डित जी! यानि आप इस लड़की की बातों पर विश्वास कर रहे हैं। इसने कहा...और आपने मान लिया कि स्वामी जी ने इसके साथ बलात्कार किया है?"

प्रत्युत्तर में मुस्कराया झील-सी नीली आंखों वाला।

"यानि...जिन्दगी में पहली बार आपने धोखा खा लिया है। आपकी आंखों ने आपको धोखा दिया-तभी आपने स्वामी जी को कल अपना गुरु बना लिया था?"

"नहीं-गुरु नहीं बनाया था अनिल भाई...!"

"क्या मतलब-?" चिहुंककर बोला अनिल यादव, "लेकिन कल

फोन पर तो आपने बतलाया था कि करतार सिंह, राजन शुक्ला जी, चांदनी, आशीर्वाद जी, श्वेता और भाभी जी के साथ आपने भी स्वामी जी को अपना गुरु बनाया है। तब मुख्यमन्त्री जी भी वहीं पर थे। तो आप झूठ बोले थे-या आपने ऐसे ही मजाक किया था-?"

"नहीं, भई! ना तो मैं झूठ बोला था-ना ही मैंने कोई मजाक किया था...।"

केशव के उत्तर पर गुंजन भी दुविधा में पड़ गई-

"क्या मतलब, पण्डित जी-?"

"क्योंकि मुझे स्वामी के करीब पहुंचना था। उसकी नजदीकी...उसका सान्निध्य प्राप्त करना था मुझे अनिल भाई...!"

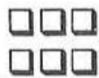
"लेकिन क्यों, पण्डित जी-?"

"क्योंकि मुझे वास्तविकता जाननी है उस स्वामी की...।"

"ले...लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है पण्डित जी! स्वामी जी के बारे में तो गुंजन ने आज, अभी बतलाया है। जबकि आपने स्वामी जी को कल ही गुरु बना लिया था।"

"ओह, समझा।" हंसकर बोला केशव, "तुम शायद ये समझ रहे हो कि गुंजन ने मुझे जो बतलाया है, उससे मुझे अपनी गलती का आभास हो चला कि मैंने गलत व्यक्ति को अपना गुरु बना लिया है और शर्मिन्दगी से बचने के लिये ही मैं गिरगिट की तरह रंग बदल रहा हूं-ये बहाना बना रहा हूं कि मुझे तो स्वामी की हकीकत पहले से ही मालूम थी। क्यों, ऐसा ही सोचा ना तुमने-?"

"न...नहीं...बिल्कुल भी नहीं पण्डित जी! थोड़ी देर के लिये विचलित जरूर हुआ मैं। लेकिन मैं जानता हूं कि आप क्या हैं! आप बहाने बनाकर अपनी गलती पर पर्दा डालने वालों में से कतई भी नहीं हैं। आपने गुंजन की बात पर...इसके आरोप पर विश्वास किया है-यानि ये माना है कि स्वामी ने इसके साथ दुराचार किया था। मैं ये भी जानता हूं कि आपसे इन्सान को पहचानने में भूल नहीं हो सकती है। यदि आप गुंजन के आरोप को सही मान रहे हैं तो...स्वामी जी वैसे ही होंगे-जैसा कि गुंजन बोल रही है। यदि वास्तव में ही स्वामी जी वैसे ही हैं तो ये सम्भव ही नहीं है कि आप किसी गलत व्यक्ति को अपना गुरु मान लें-अपने परिवार के साथ उसके शिष्य बन जायें। लेकिन...मेरा मतलब है कि...क्या आपको पहले से ही स्वामी जी की हकीकत मालूम थी? ले...लेकिन कैसे-?"



अनिल यादव के साथ मानो गुंजन को भी दुविधा की मकड़ी ने उत्सुकता के जाल में उलझा दिया था तथा दोनों को व्याकुलता के झूले झुला रही थी।

दोनों ही उत्तर पाने को लालायित थे तथा केशव को देखे जा रहे थे।

केशव ने कुछ क्षणों तक उन दोनों की जिज्ञासा, व्याकुलता, अधीरता, दुविधा का आनन्द लिया, फिर सस्पैंस का खुलासा कर दिया–

"कुछ दिन पूर्व मैं रियल स्टोरी वाली एक मैगजीन पढ़ रहा था। उसमें दिल्ली के एक बहुत ही खतरनाक व्यक्ति देवा की स्टोरी थी। देवा मुजरिम था–खतरनाक मुजरिम। कम उम्र की बच्चियों का यौन शोषण करता था वो। मासूम व अबोध बच्चियों को टॉफियां तथा चॉकलेट देकर बोला करता था कि जंगल में एक जादुई पेड़ है, जिस पर टॉफियां व चाकलेट लगती हैं। उस पेड़ से थैले भर टॉफियां व चॉकलेट तोड़कर देने का लालच देकर वो बच्चियों को साईकिल पर बैठाकर जंगल में ले जाता था। सुनसान इलाका देखकर वो उस बच्ची के साथ दुराचार करता और उसकी हत्या करके लाश को नदी, तालाब या नाले में फेंक देता था।

दर्जन भर बच्चियों के गायब होने पर पुलिस को पता चला कि लम्बे बालों व दाढ़ी-मूंछ वाला युवक बच्चियों को बहला-फुसलाकर तथा साईकिल पर बिठाकर ले जाता था। प्रत्यक्षदर्शियों से हुलिया मालूम करके देवा के स्केच बनवाये पुलिस ने और उस पर दस हजार रुपये का इनाम घोषित करके सारी दिल्ली में पोस्टर छपवा दिये थे। तब देवा ने अपने बाल, दाढ़ी व मूंछ मुंडवाकर हुलिया बदल लिया था और कुर्ते-पाजामे के स्थान पर पैन्ट-शर्ट पहनने लगा था। उक्त हुलिये में भी उसने दर्जन भर बच्चियों को अपना शिकार बनाया था। पच्चीसवीं बच्ची को उठाते वक्त वो पकड़ा गया था। उसका अपराध साबित होने पर अदालत ने उसको फांसी की सजा सुनाई थी। जेल में नाई से उस्तरा छीनकर उसने अपनी कलाई की नसें काट ली थी तब उसे हॉस्पिटल पहुँचाया गया। हॉस्पिटल से एक नर्स, एक डॉक्टर और दो पुलिस वालों की हत्या करके, डॉक्टर के कपड़े पहनकर वो गायब हो गया था। उसके बाद देवा का कुछ पता नहीं था कि वो कहां पर है और क्या कर रहा है। ये सन् उन्नीस सौ नब्बे की बात है। यानि देवा को फरार हुये लगभग तेईस-चौबीस वर्ष हो चुके हैं। पत्रिका में देवा की तस्वीर भी छपी थी। उसकी तस्वीर देखकर मुझे

लगा था कि उसको मैंने कहीं-ना-कहीं पर देखा है। कुछ भ्रम होने पर मैं एक सप्ताह पूर्व आश्रम गया–स्वामी रामशरण दास का प्रवचन सुनने। प्रवचन सुनने का तो बहाना मात्र ही था...। वास्तविकता तो ये थी कि मैं उसको करीब से देखना चाहता था। हालांकि उस घटना को तेईस-चौबीस वर्ष हो चुके थे। तस्वीर में देवा गंजा तथा क्लीन शेव्ड था–छरहरे बदन का था और स्वामी रामशरण दास जिस्म से तन्दुरुस्त, लम्बे बालों वाला तथा घनी दाढ़ी-मूंछ वाला है–लेकिन मैंने पहचान लिया था कि वो ही देवा है–।"

"व्हाट ऽऽऽ?"

"क...क्या–?"

अनिल यादव तथा गुंजन यूं ही चिहुंके कि मानो अप्रत्याशित रूप से किसी ने उन दोनों पर टोकरा भरकर सांप, बिच्छू तथा कानखूजरों का ढेर उलट दिया हो।

दोनों हक्का-बक्का!

अचम्भित!

आंखें विस्फारित!

मुंह खुले-के-खुले।

ये क्या रहस्योद्घाटन कर डाला केशव ने?




"स्वामी रामशरण दास वो देवा है...जिसने चौबीस नाबालिग बच्चियों के साथ बलात्कार करके उनकी हत्या कर डाली थी...?" अनिल यादव लुटा-पिटा सा ही बोला, "जिसे अदालत ने फांसी की सजा सुना दी थी–लेकिन वो हॉस्पिटल में नर्स, डॉक्टर और पुलिस वालों की हत्या करके फरार हो गया था? हे प्रभु...हे परमपिता परमेश्वर! इतना दुर्दान्त अपराधी आज स्वामी जी के रूप में पूजा जा रहा है। लोग उसकी जय-जयकार कर रहे हैं। उसका मान-सम्मान किया जा रहा है। किसी को भी उस पर संदेह नहीं हुआ है...।"

"संदेह होता भी कैसे अनिल भाई? वो वर्षों तक अण्डरग्राउण्ड रहा। किसी योगी या सन्त के सान्निध्य में उसने योग व आयुर्वेद की शिक्षा ली। धार्मिक व आध्यात्मिक अध्ययन किया। फिर वो बदले हुये रूप में मुम्बई में प्रकट हुआ–स्वामी रामशरण दास के रूप में। किसी को कैसे ये ख्याल आना था कि वो फरार मुजरिम देवा है?"

"लेकिन वो आपकी पैनी नजरों से नहीं बच पाया, पण्डित जी...!"

अनिल यादव केशव को प्रशंसा भरी दृष्टि से निहारते हुये बोला, "आपने उसकी वर्षों पुरानी फोटो देखी और उसको स्वामी जी वाले रूप में भी पहचान लिया। लेकिन आपने उसे पकड़कर कानून के हवाले क्यों नहीं कर दिया–?"

"स्वामी को देवा तो साबित कर ही दिया जायेगा अनिल भाई–! भले ही उसने हुलिया बदल लिया हो–लेकिन फिंगर-प्रिंट्स, हैण्डराइटिंग और ब्लड-ग्रुप इत्यादि नहीं बदल सकता। लेकिन उसके लाखों-करोड़ों भक्तों को भी तो सम्भालना है। मैं चाहता था कि पहले उसके खिलाफ ठोस सबूत प्राप्त कर लूं...फिर उसको गिरफ्तार किया जाये। भले ही देवा ने स्वामी का रूप धारण कर लिया हो–लेकिन उसकी फितरत नहीं बदली। इसका जीता-जागता उदाहरण है...गुंजन! देवा आज भी वासना का गन्दा कीड़ा है। उस दुष्ट को उसके सभी जुर्मों की सजा मिलेगी। उसके शिकार हुये सभी लोगों को न्याय मिलेगा...।"

"मैं...मैं बहुत ही शर्मिन्दगी महसूस कर रहा हूं पण्डित जी...!" अनिल यादव हथेलियों को परस्पर रगड़ते हुये बोला, "हालांकि मैंने स्वामी को अपना गुरु नहीं बनाया था–लेकिन उसका भक्त और प्रशंसक तो था ही। उसमें पूरी पूर्ण आस्था थी। उसे मैं चमत्कारी और सिद्ध पुरुष मानता था। रावण को राम समझने का पाप हुआ मुझसे...।"

"तुम्हें गिल्टी फील करने की आवश्यकता नहीं है अनिल भाई! देवा ने स्वामी के रूप में लाखों-करोड़ों लोगों को अपने माया-जाल से भ्रमित किया। उसके शिष्यों, भक्तों, अनुयाइयों का कोई दोष नहीं है। हमारे देश में साधु, संन्यासी, सन्तों का आदर व सम्मान किया जाता है। इसी का लाभ उठाते हुये देवा ने स्वामी या योगी का रूप धारण कर लिया था। ना जाने कितने लोग हैं, जो बाल व दाढ़ी बढ़ाकर, केसरिया या सफेद चोला धारण करके धर्म के नाम पर पाखण्ड फैला रहे हैं।"

"मैंने आपके बारे में जैसा सुना था–बिल्कुल वैसा ही पाया आपको...।" बेड पर लेटी गुंजन उत्साह व आशा से भरी हुई बोली, "वास्तव में ही आप दिमाग के जादूगर हैं पण्डित जी! पहले से ही विश्वास था आप पर। अब तो मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया है। आप मुझे न्याय और उस दुष्ट स्वामी...नहीं, देवा को दण्ड दिलायेंगे...।"

"अब मुझे क्या करना है पण्डित जी? मेरे लिये कोई आदेश है–?"

"अभी पुलिस का कोई काम नहीं है अनिल भाई! तुम्हें गुंजन को छिपाकर रखना है। स्वामी या उसके आदमियों को गुंजन के यहां होने की जानकारी नहीं होनी चाहिये। वैसे चन्द घण्टों की ही बात है। मैं इस स्वामी

रूपी देवा के साथ एक खेल खेलने जा रहा हूं। स्वामी को अपने जाल में फांसकर उसके खिलाफ ठोस सबूत हासिल करूंगा और फिर उसे पुलिस के...कानून के हवाले कर दूंगा। ये तो सुनिश्चित है कि वो फांसी के फन्दे पर लटकेगा...।"

"तू गया स्वामी उर्फ देवा...!" अनिल यादव बुदबुदाया, "पण्डित जी के चक्रव्यूह में फंसने जा रहा है तू। अब देख कि तेरा क्या अन्जाम होता है–!"

❑❑❑

❑❑❑

"मैं तुमसे बेहद नाराज हूं केशव!" गुलाबी साड़ी में लिपटी बला की खूबसूरत सोफिया कृत्रिम क्रोध के साथ बोली, "तुम्हें स्वामी की वास्तविकता मालूम थी कि वो कुख्यात अपराधी देवा है–फिर भी हम लोगों को कुछ नहीं बतलाया तुमने?"

"मम्मी जी का वचन सत्य है पिताश्री...।" केशव का हमशक्ल आशीर्वाद भी उलाहना देते हुये बोला, "आपने स्वामी की प्रशंसा के पुल बांध दिये। हम लोगों को उसका शिष्य बनाने के लिये ले गये थे। हम लोगों ने उसके चरण स्पर्श किये और उसका आशीष प्राप्त किया। मन-ही-मन उसने हमें मूर्ख कहा होगा–हमारी नादानी पर वो मुस्कराया होगा वह...हम लोगों को उसके बारे में बतला देना चाहिये था–।"

"फिर वो बात कहां बनती, जो मैं बनानी चाहता था...।" केशव मुस्कराकर बोला, "तुम तो एक्टिंग कर लेते–लेकिन तुम्हारी मम्मी, राजन, करतार सिंह, चांदनी तथा श्वेता से गड़बड़ी हो सकती थी। तुम लोगों को यदि स्वामी की वास्तविकता मालूम होती तो तुम्हारे चेहरे तथा आंखें इस बात की चुगली खा सकते थे। तुम्हारे चेहरों पर स्वामी के लिये विश्वास, आस्था के भाव नहीं आ पाते। वैसे भी मुझे स्वामी पर संदेह था। हन्ड्रेड परसेन्ट श्योर थोड़े ही था मैं। स्वामी को करीब से देखा तो पूर्ण विश्वास हुआ कि वो देवा ही है। आश्रम से लौटे तो अपने पड़ोसी शर्मा जी के एक्सीडेन्ट की खबर आ गई थी। उनकी धर्मपत्नी तीर्थयात्रा पर गई हुई थी। घर में उनके बच्चे ही थे, जो बेहद घबराये हुये थे और मदद के लिये मेरे पास आये थे। उनके साथ हॉस्पिटल गया–जहां किसी भले आदमी ने शर्मा जी को एडमिट करा दिया था। शुक्र था कि शर्मा को ज्यादा चोटें नहीं आई थीं। सुबह चार बजे उन्हें छुट्टी दिलाकर घर लाया। फिर स्नान के पश्चात् पूजा-पाठ किया। नाश्ता कर रहा था कि अनिल यादव का फोन आ गया था। सो इस बीच स्वामी के खिलाफ कुछ करने का या कोई प्लान

बनाने का अवसर नहीं मिला था। अब हॉस्पिटल से लौटा तो...तुम लोगों को सारी बातें बतला ही रहा हूं।"

"मैंने तो कल्पना भी नहीं की थी कि स्वामी इतना खतरनाक बन्दा निकलेगा...।" बोली चांदनी, "बेचारी गुंजन के साथ कितना बुरा किया उस कमीने ने...।"

"सिर्फ गुंजन के साथ थोड़े ही किया होगा भाभीजी...!" बोली श्वेता, "आश्रम की ना जाने कितनी भोली-भाली महिलाओं की जिन्दगी बर्बाद की होगी उस कमीने ने। ये तो कुछ भी नहीं—उसने देवा वाले रोल में दो दर्जन बच्चियों को अपनी वासना का शिकार बनाकर उनकी हत्या कर डाली थी। ये स्वामी तो पूरा शैतान निकला।"

"रियली...मैं बहुत ही शॉक्ड हूं गुरुवर...!" राजन ने कहा, "कल्पना भी नहीं की थी कि स्वामी ऐसा दरिन्दा निकलेगा। वो जल्द-से-जल्द फांसी पर लटकना चाहिये।"

"फांसी तो की होगा प्राह जी...!" करतार सिंह हथेली पर मुक्का मारकर तैश से भरा हुआ बोला, "ओनू फांसी दी सजा ते सालों पहिला अदालत विच सुणा दी गई सी। जे साढा बस चले तो उसनूं तेजाब दे ड्रम विच टप्पा दे देंदा। खसमा नूं खाने नूं कुत्ते दी मौत ही मारना चाइये...।"

"रिलेक्स, सरदार जी...कूल डाउन...।" मुस्कराकर बोला केशव, "कायदे-कानून से ही चलना पड़ेगा। देंवा को पकड़कर सबूत के साथ कानून के हवाले करना है हमें। उसको सजा तो अदालत में जज साहब ही सुनायेंगे—जो कि फांसी ही होनी है। अब सोचना ये है कि हमें देवा स्वामी को अपने जाल में कैसे फांसना है—?"

"मैं बतलाऊं साहब जी...?"

केशव, सोफिया, आशीर्वाद, राजन, चांदनी, करतार सिंह तथा श्वेता ने आवाज की दिशा में देखा तो साढ़े चार फुट के तीस वर्षीय, दुबले-पतले मुंशी के दर्शन हुये, जो कि काली जींस के ऊपर लाल रंग की टी-शर्ट पहने हुये था। उसके पैरों में नीली पट्टियों वाली हवाई चप्पल थी तथा हाथों में बड़े साइज की ट्रे थमी हुई थी—जिसमें चाय की बड़ी केतली तथा खाली कप रखे हुयें थे।

"तुम...?" मुस्कराकर बोला केशव, "तुम बताओगे मुंशी कि स्वामी को जाल में कैसे फांसा जाये—?"

"मुंशी—?" उसने यूं मुंह बनाया मानो उसके मुंह में जबरन साबुन की टिकिया ठूंस दी गई हो, "कृपया मुझे मुंशी होशियार चन्द कहा कीजिये ना साहब जी...! मैंने आप सभी को ये बात बतलाई हुई है कि गांव के

और आस-पास के इलाकों के लोग मुझसे सलाह-मशवरा करने आया करते थे—मेरी होशियारी से प्रभावित होकर मुझे होशियार चन्द की उपाधि दे डाली थी। क्या है कि मजबूरी मुझे मुम्बई ले आई। पेट के वास्ते रसोईये की नौकरी कर रहा हूं। यहां पर मेरे इन्टेलीजेन्ट दिमाग की कद्र ही नहीं होती है...।"

"लेकिन आज मुंशी चाचा...मेरा मतलब है कि होशियार चन्द जी...।" आशीर्वाद तपाक से बोला, "आज आपकी बुद्धिमत्ता की कद्र होगी। बतलाइये कि स्वामी को जाल में कैसे फंसाया जाये—?"

❑❑❑

❑❑❑

शतुरमुर्ग की मानिन्द ही मुंशी की गर्दन अकड़ गई। चौबीस इंच का सीना फूलकर सवा चौबीस इंच का हो गया। ट्रे को मेज पर रखकर उसने गला खंखारा तथा फिर बोला, "जब से आपने स्वामी जी के बारे में बतलाया है ना साहब जी—तभी से मैं अपने दिमाग के घोड़ों को दौड़ाये जा रहा था। इस चक्कर में दो बार चाय भी उबलकर निकल गई। तीसरी बार बनाकर लाया हूं। खैर, बड़े काम के लिये थोड़ी-सी चाय का नुकसान उठाया जा सकता है। खुश हूं मैं आज—मेरे आला दर्जे के दिमाग की कद्र की गई है। मेरा प्लान ये है कि आप, छोटे साहब, शुक्ला जी और सरदार जी नकाबपोश बनकर आश्रम में जायें और हथियारों के दम पर स्वामी का किडनेप करके जंगल में ले जायें। वहां उसको जान से मारने की धमकी देकर कहें कि वो अपने तमाम जुर्मों को कबूल कर ले। वो डरकर अपने जुर्मों का खुलासा करेगा तो...आप उसकी वीडियो फिल्म बना लेना। बस, फिर उसे वीडियो फिल्म के साथ पुलिस के हवाले कर देना। वाह...वाह...क्या धांसू प्लान है मेरा। अपनी पीठ थपथपाकर शाबाशी देने को जी चाहता है...।"

"खाक बढ़िया प्लान हैं तुहाड्डा, ओये डड्डू...।"

बुरा-सा मुंह बनाकर बोला करतार सिंह, "स्वामी दा किडनेप होन्दे ही हंगामा मच जायेगा। असी लोका तो किडनेप का मुकदमा ठोंक दिया जायेगा। सबसे वड्डी गल तॉं ये है कि किडनेप ते हथियारों से स्वामी बुरी तरह डरा हुआ होगा। ओसदे बयान वाली वीडियो फिल्म विच ओसदी घबराहट भी नजर आनी है। वेखने वाले समझ जावांगे कि उसनूं डरा-धमकाकर बयान लिया गया है। अपने प्लान नूं जेब विच रख—किचन विच जाकर रोटी-सोटी तैयार कर—।"

बेचारे मुंशी का चेहरा सीने तक लटक गया। वो पलटा तथा चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया।

श्वेता ने ट्रे से केतली उठाई तथा खाली कपों में चाय उंडेलते हुये केशव से बोली, "प्लान तो आपको ही बनाना है गुरुजी!"

"बन चुका है श्वेता–!"

"रियली? तो बतलाइये ना गुरुजी कि आपका प्लान क्या है–?"

❑❑❑

❑❑❑

"आपने राजनैतिक पार्टी क्यों बनाई है राघव जी...?" हाथ में इण्डिया न्यूज के लोगो वाला माइक लिये हुये तीस वर्षीय तथा खूबसूरत माधवी चोपड़ा ने प्रश्न किया, "आप मुम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति और समाजसेवी हैं। जनकल्याण के कार्यों में लीन रहते हैं आप। लाखों लोगों का भला किया होगा आपने। गरीब, बीमार तथा अनपढ़ लोग, बेसहारा औरतें, अनाथ बच्चे आपको उम्मीदभरी नजरों से निहारते हैं। कहावत है कि जिसका कोई नहीं होता, उसका खुदा या भगवान होता है। लेकिन इस इलाके के लोग कहते हैं कि जिसका कोई नहीं, उसके राघव जी हैं। क्या ये मान लिया जाये कि आपका जन-कल्याण या समाज सेवा के कार्यों से मन उचट गया है–?"

साठ वर्षीय क्लीन शेव्ड चेहरे तथा अधगंजे सिर वाले राघव ने मीडिया वालों के साथ खड़ी माधवी चोपड़ा से सम्बोधित होकर कहा–"राजनीति में आने का कोई शौक नहीं था मुझे बिटिया। राजनीति को गन्दा दलदल मानता था मैं। लेकिन तुम्हें और बाकी न्यूज चैनल वालों को याद होगा कि मैंने मुख्यमन्त्री जी के जनता दरबार में पहुंचकर प्रश्न किया था कि वो राज्य से गुन्डागर्दी, बलात्कार, महंगाई और भ्रष्टाचार का निदान क्यों नहीं कर पा रहे हैं? उन्होंने अपनी ईमानदारी का रोना रोया था तो मैंने कहा था कि प्रदेश की जनता को अपराध, महंगाई, भ्रष्टाचार तथा रिश्वतबाजी से मुक्ति चाहिये। आये दिन बलात्कार की घटनायें होती रहती हैं, सरेआम लूटपाट, हत्या की घटनायें हो रही हैं तथा महिलाओं में खौफ है–वो दिन में भी घर से बाहर निकलते हुये डरती हैं। कोई भी सरकारी काम रिश्वत दिये बिना नहीं हो पाता है। उनके कुछ मन्त्रियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं। उनकी ईमानदारी से तो प्रदेश की जनता को राहत नहीं मिलने वाली है। वो प्रदेश को कब भय, महंगाई, अपराध और भ्रष्टाचार मुक्त करेंगे? करेंगे भी कि नहीं? तब मुख्यमन्त्री जी ने व्यंग कसते हुये कहा था कि बातें तो कोई भी बना ले–जब मैदान में उतरकर काम करने

पड़ते हैं और सिर पर जिम्मेदारियों का बोझ पड़ता है तो दिन में ही तारे दिखलाई पड़ने लगते हैं। मुख्यमन्त्री जी ने मुझसे कहा था कि मैं उनकी पार्टी में शामिल हो जाऊं। इलैक्शन लड़े बिना ही वो मुझे मन्त्री बना देंगे और देखेंगे कि मैं कैसे प्रदेश की समस्याओं का निराकरण कर पाता हूं। तब मैंने कहा था कि उनकी पार्टी या सरकार में शामिल होकर कोई भी कुछ नहीं कर पायेगा। तब उन्होंने कहा था कि मैं किसी भी पार्टी में शामिल होकर इलैक्शन लडूं और काम करके दिखलाऊं। उन्होंने दावा किया था कि मैं कुछ भी नहीं कर पाऊंगा।"

"यानि मुख्यमन्त्री जी को जबाब देने के लिये ही आपने अपनी पार्टी बनाई है राघव जी...?" प्रश्न किया जी न्यूज चैनल के रिपोर्टर ने।

"नहीं, भाई साहब...!" अपनी शानदार कोठी के बाहर वाले लॉन में विभिन्न न्यूज चैनल्स के रिपोर्टर्स के समक्ष बैठे राघव राजवंशी ने विनम्रता के साथ कहा, "मुख्यमन्त्री जी की बातों का बुरा नहीं माना था मैंने–ना ही उनसे मेरा कोई बैर है। मुझे ये स्वीकार करने में कतई भी संकोच नहीं है कि मुख्यमन्त्री जी वास्तव में ही ईमानदार हैं। परन्तु वो सिस्टम को कन्ट्रोल नहीं कर पा रहे हैं।"

"इसका कारण क्या है राघव जी–?" ये प्रश्न माधवी चोपड़ा का था।

"इसका कारण ये है कि जब कोई व्यक्ति किसी भी पार्टी से इलैक्शन लड़ता है तो वो लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करता है। बहुत मोटी रकम खर्च करने पर ही वो एम०एल०ए० या मन्त्री बनता है। तब उसका अवसर मोटी कमाई करने का होता है। वो सौ रुपये खर्च करके हजार रुपये कमाना चाहता है। बस, यही लालच भ्रष्टाचार को जन्म देता है। जब नेता, मन्त्री या जनता के प्रतिनिधि भ्रष्ट हो जायेंगे तो वो अपराध, रिश्वत या भ्रष्टाचार पर अंकुश नहीं लगा पायेंगे।"

"तुम्हारी शंका अपनी जगह ठीक है बिटिया...!" मृदु मुस्कान के साथ ही बोला राघव राजवंशी, "परन्तु अपनी 'जन सेवा पार्टी' बनाते समय ही मैंने घोषणा कर दी थी कि भ्रष्ट, बेईमान, अपराधी किस्म के लोगों के लिये मेरी पार्टी में कोई जगह नहीं है। पहले जांच की जायेगी, शपथ-पत्र भरवाया जायेगा, फिर पार्टी का सदस्य बनाया जायेगा। बाद में भी कोई गलत कार्य करेगा तो उसे कान पकड़कर बाहर का रास्ता दिखला दिया जायेगा। जब चुनाव का समय होता है तो टिकटों की बिक्री होती है यानि चुनाव लड़ने वाले को चन्दे या किसी अन्य रूप में मोटी रकम देनी होती है–तब टिकट मिलती है। यानि पार्टी ने शुरूआत में ही गड़बड़ी कर दी

तो वो अपने एम०एल०ए० या मन्त्री से ईमानदारी की उम्मीद कैसे कर सकती है? मेरी पार्टी ईमानदार, शरीफ, साफ छवि वाले जुझारू लोगों को मुफ्त में टिकट देगी और उसे इलैक्शन लड़ने के लिये पर्याप्त प्रचार-सामग्री भी मुहैया करायेगी। यानि कन्डीडेट को अपनी जेब से कोई खर्च ही नहीं करना पड़ेगा...।"

"लेकिन ऐसा कैसे होगा राघव जी-?" सहारा न्यूज की चश्माधारी युवा रिपोर्टर ने कहा, "क्या आप अपनी जेब से इलैक्शन का सारा खर्चा वहन करेंगे-?"

"अरे, नहीं। मेरी इतनी हैसियत नहीं है कि मैं इतना मोटा खर्चा वहन कर सकूं। हमारी पार्टी हाथ जोड़कर जनता जर्नादन से प्रार्थना करेगी कि अगर वो प्रदेश में ईमानदार पार्टी को सत्ता में लाना चाहते हैं तो कृपा करके हमारी पार्टी को दान या चन्दा दें। प्रदेश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो चाहते हैं कि ईमानदार लोगों की पार्टी सत्ता में आये। वो हमारी पार्टी के सदस्य बनने के लिये फीस के रूप में सौ-सौ रुपये दे देंगे। इलैक्शन के खर्चे के लिये भी चन्दा दे देंगे। प्राप्त होने वाली रकम से ही मेरी पार्टी चुनाव लड़ेगी। वैसे भी हम लोग इलैक्शन में बहुत ज्यादा खर्च नहीं करेंगे। हमारी पार्टी के कार्यकर्ता डोर टू डोर प्रचार करेंगे। घर-घर जाकर प्रचार करेंगे और पम्फलेट बांटेंगे। कोई होर्डिग नहीं, टी०वी० या रेडियो पर एडवरटाइज नहीं, फालतू के पोस्टर और बैनर नहीं। पैसे बांटकर वोट नहीं खरीदेंगे। ईमानदारी के नारे पर कम खर्चा करके भी चुनाव लड़ा जा सकता है। मेरी पार्टी का मुख्य हथियार ईमानदारी ही है। मेरी पार्टी, पार्टी के नेता ईमानदार होंगे-तभी प्रदेश को अपराध-मुक्त, भय-मुक्त, भ्रष्टाचार-मुक्त किया जा सकेगा। यदि आप लोगों का कोई और प्रश्न हो तो...कर लीजिये। मुझे आश्रम जाकर स्वामी जी का आशीर्वाद लेना है-। क्या कोई मुझसे प्रश्न करना चाहता है-?"

❑❑❑

❑❑❑

"भगवान ने आपको हम दीन-दुखियों का भला करने के लिये ही इस दुनिया में भेजा है। कहते हैं कि पूत के पांव पालने में ही दिखलाई पड़ जाते हैं। आपके चेहरे पर देवी-देवताओं वाला नूर देखकर ही आपके माता-पिता ने आपका नाम राम रखा होगा। हैं भी आप राम के जैसे ही। आपने लोगों की भलाई के लिये क्या कुछ नहीं किया है। गरीबों के लिये स्कूल, हॉस्पिटल, धर्मशाला बनवाकर दी है। जरूरतमन्दों को दान करते हैं। बीमारों को इलाज के साथ जरूरत पड़ने पर अपना खून भी देते हैं।

निर्धन कन्याओं की शादी करवाते हैं आप। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और चर्च बनवाया है। राजनीति भी की है तो लोगों की भलाई के लिये। राजनीति की कीचड़ के कमल हैं आप राम जी...भगवान आपको खूब लम्बी उम्र दे-ताकि आप दीन-दुखियों के काम आते रहें। आपका खूब नाम हो। मैं आपके चरणों की धूल को चन्दन समझकर अपने माथे पर लगा रहा हूं। आपने मेरे बेटे को अपना खून नहीं दिया होता तो मेरा वंश ही मिट जाता। मुझ गरीब की तीन बेटियों की शादी करवाई आपने। बीमार बीवी का इलाज करवाया था और अपनी फैक्ट्री में नौकरी दी। अपनी खाल के जूते बनाकर आपके पैरों में पहना दूं...तो भी आपका कर्ज नहीं उतार सकूंगा। मैं और मेरा परिवार जीवनभर आपका अहसानमन्द...।"

"नहीं, भगवान के लिए हमें शर्मिन्दा मत करो सुदामा भाई!" बिल्लौरी आंखों वाले तथा सुनहरे रंग के कुर्ते-पाजामे व काले शॉल वाले राम माहेश्वरी ने उस अधेड़ को अपने कदमों से उठाकर अपने सीने से लगा लिया और भर्राये कण्ठ से कहा, "कुछ भी तो नहीं कर रहे हैं हम भाई! हम इस दुनिया में भला क्या लेकर आये थे? बहुत ही गरीब थे हम तो। मेहनत-मजदूरी करने वाले माता-पिता की सन्तान थे-वो भी एक एक्सीडेन्ट में चल बसे थे और हम अनाथ हो गये थे। सोमेश माहेश्वरी जी ने हम पर कृपा की-हमें गोद ले लिया था। इस नश्वर संसार से कूच करने से पहले वो हमें करोड़ों की नकदी, प्रोपर्टी तथा फैक्ट्री सौंप गये थे। वो समाजसेवी थे। लोगों की भलाई के काम करते रहते थे। हम भी उनके पद-चिन्हों पर चल रहे हैं। ईश्वर ने हमें इतना कुछ दिया तो हम भी जरूरतमन्दों को दे रहे हैं। बदले में हमें लोगों की दुआ, प्यार, स्नेह और अपनापन मिलता है...। हम किसी पर कोई उपकार नहीं कर रहे हैं। जाओ, तुम्हारी ड्यूटी का समय हो रहा है सुदामा भाई-फैक्ट्री जाओ...।"

सुदामा नामक अधेड़ ने श्रद्धापूर्वक पुनः राम माहेश्वरी के चरण स्पर्श किये और फिर वहां से चला गया।

राम माहेश्वरी ने मेज पर से साड़ी व एक कम्बल उठाकर पंक्ति में खड़ी महिला को दिया और बोला-

"तुम्हारे पति ओमी की तबियत अब कैसी है लक्ष्मी-?"

"कल शाम ही डॉक्टर ने उन्हें छुट्टी दे दी थी राम जी...!" महिला हाथों को जोड़े हुये बोली, "आपके हॉस्पिटल में कोई खर्चा नहीं हुआ। मुफ्त में ही सारी दवाइयां मिलती रही थीं। खाना, दूध, फल वगैरा भी मिलते थे। अगर आपका हॉस्पिटल ना होता तो...दूसरे हॉस्पिटल का खर्चा कहां से कर पाती? भगवान आपको खूब लम्बी उम्र दें। आप हर बार

इलैक्शन जीतकर मन्त्री तो बनते ही हैं। भगवान करे कि इस बार आप मुख्यमन्त्री बनें। मुख्यमन्त्री के रूप में आप पूरे प्रदेश का कल्याण कर देंगे...।"

राम माहेश्वरी ने मुस्कराकर दोनों हाथ जोड़ दिये।

"ये अपने राम जी हैं बेटी...इनके चरण छूकर इनका आशीर्वाद लो...।" लक्ष्मी नामक वो महिला साथ में खड़ी अठारह वर्षीय, गोरी-चिट्टी तथा खूबसूरत युवती से बोली, "तुम्हारे पिताजी को इनकी मेहरबानी से ही नई जिन्दगी मिली है। तुम पढ़-लिख सकी हो...।"

नीले रंग के सूट वाली वो युवती पैर छूने के लिये झुकी ही थी कि राम माहेश्वरी ने उसको पकड़कर कहा, "अरे, नहीं बेटी–ऐसा पाप मत चढ़ाओ हम पर। अपने यहां बेटियों से पैर स्पर्श नहीं कराते हैं, बल्कि जब उनकी शादी की जाती है तो उनके चरण स्पर्श किये जाते हैं। हम किसी भी कन्या से पैर नहीं छुआते हैं, बल्कि हम तो किसी भी महिला से पैर नहीं छुआते हैं। लेकिन हमने तुम्हें पहचाना नहीं है बेटी–!"

"ये मेरी बेटी है मयूरी...राम जी...!" तपाक से कहा लक्ष्मी ने, "ये कक्षा आठ तक तो आपके ही स्कूल में पढ़ी थी। अव्वल दर्जे से पास होने पर आपने इसको स्टेज पर कप और इनाम दिया था। इसने आगे भी पढ़ने की इच्छा जताई थी तो आपने अपनी चैरिटी संस्था से इसकी पढ़ाई का खर्चा देने की घोषणा की थी। आपकी दया से ही इसने इन्टर पास कर लिया है–वो भी अव्वल दर्जे से...।"

"अरे वाह...!" राम माहेश्वरी मयूरी के सिर पर स्नेह से हथेली रखकर बोला, "फिर तो तुम्हें आगे भी पढ़ना चाहिये बेटी! डॉक्टर, इंजीनियर, वकील...जो भी बनना चाहो–हम तुम्हारी पढ़ाई का सारा खर्चा उठायेंगे...।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद राम जी...!" लक्ष्मी बोली, "लेकिन मयूरी आगे नहीं पढ़ पायेगी। वो क्या है कि बचपन में हमने इसका रिश्ता तय कर दिया था–इसके पापा के बचपन के मित्र थे। वो बहुत अमीर हैं। दिल्ली में रहते हैं वो। चांदनी चौक, कनाट पैलेस में उनकी कई दुकानें हैं। वो खुद बैंक में मैनेजर हैं। करीब के ही गांव में उनकी सैंकड़ों बीघा जमीन है। खेती से और दुकानों के किराये से बहुत मोटी आय होती है। हम तो उनके मुकाबले में कुछ भी नहीं हैं। लेकिन वो आज भी मयूरी को अपनी बहू बनाने को तैयार हैं। उनकी धर्मपत्नी को कैंसर है और वो मरने से पहले अपने इकलौते बेटे के सिर पर सेहरा बन्धा देखना चाहती हैं और मयूरी को अपनी बहू बनाकर अपने घर ले जाना चाहती हैं। सो अगले

ही महीने मयूरी की शादी है। ये आगे पढ़ेगी कि नहीं, ये इसके पति और ससुराल वालों पर निर्भर होगा। हालांकि वो लोग दहेज लेने से साफ मना कर चुके हैं। लेकिन उनकी हैसियत को देखते हुये शादी में अच्छी दावत तो देनी ही होगी। थोड़ा कपड़े और गहने वगैरा भी देने होंगे। समझ में नहीं आता कि शादी कैसे हो पायेगी...?"

"हमारे होते हुये चिन्ता क्यों करती हो तुम लक्ष्मी? हमने ना जाने कितनी ही निर्धन कन्याओं का विवाह कराया है और स्वयं को धन्य समझा है। मयूरी की शादी के लिये हम तुम्हें पांच लाख रुपये का चैक देंगे...।"

"पा...पांच लाख...?" लक्ष्मी की आंखें फट पड़ने को तैयार थीं–मुंह खुला-का-खुला रह गया।

"कल ही चैक तुम्हारे घर पहुंच जायेगा। बैंक में एकाउन्ट तो होगा–?"

"हां–है ना, राम जी–!"

"ठीक है। चैक को अपने एकाउन्ट में जमा करा देना। दो-चार दिन में ही रकम तुम्हारे एकाउन्ट में पहुंच जायेगी। बढ़िया दावत करना। बढ़िया टेन्ट लगवाना। रहा प्रश्न कपड़ों और गहनों का...तो उसकी व्यवस्था हम करेंगे। दूल्हे की सोने की चेन, अंगूठी, उसकी मां के लिये कंगन, हार, अंगूठी, उसके पिता के लिये भी सोने की चेन, अंगूठी और सभी के लिये बढ़िया कपड़े। मयूरी के लिये बढ़िया जोड़े और गहने। शादी से एक सप्ताह पूर्व ही सारा सामान तुम्हारे घर पहुंचा दिया जायेगा। अरे...ये क्या करती हो...नहीं, हमारे पैर छूकर हम पर पाप मत चढ़ाओ...।"

"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद...।" लक्ष्मी हाथों को जोड़कर बोली, "आप साक्षात भगवान का अवतार हैं। मरते दम तक आपको दुआ देती रहूंगी। अभी तो आज्ञा चाहती हूं। चल, मयूरी बेटी...!"

दोनों मां-बेटी चली गईं तो राम माहेश्वरी दूसरे लोगों को साड़ी, शॉल, कम्बल इत्यादि बांटने लगा।

सभी के जाने पर उसने हाथ जोड़े तथा ऊपर आसमान की तरफ देखते हुये बोला, "हे परम पिता परमेश्वर! हम आपके बहुत-बहुत आभारी हैं कि आपने हमें इतना दिया है कि हम दीन-दुखियों, जरूरतमन्दों की मदद करते रहें। हम पर ऐसे ही अपनी अनुकम्पा बनाये रखना। बस, हमें इस बार चुनाव जितवाकर मुख्यमन्त्री की कुर्सी तक पहुंचा देना। क्या है कि मुख्यमन्त्री जी बूढ़े हो चले हैं और उन्होंने रिटायर होने की बात की थी। यूं तो होममिनिस्टर भी मुख्यमन्त्री बनने का इच्छुक है। लेकिन आप तो जानते ही हैं कि वो कितना धूर्त, भ्रष्ट और बेईमान है। सारे प्रदेश को

बेच डालेगा वो–तबाह कर डालेगा। जबकि हम प्रदेश की जनता की सेवा करना चाहते हैं। प्रदेश को भय, अपराध, भ्रष्टाचार, महंगाई तथा रिश्वत से मुक्त करके तरक्की की राह पर ले जाना चाहते हैं। देखते हैं कि आप हमारी ये इच्छा पूरी करते हैं कि नहीं–!"

❑❑❑
❑❑❑

"कुछ लोग कहते हैं कि राजनीति में धर्म नहीं होना चाहिये। तभी तो आज की राजनीति में बेईमानी, भ्रष्टाचार, अपराध, स्वार्थ, लालच, लोभ की कीचड़ घुल गई है। विश्वगुरु कहलाने वाला ये भारत देश कई मामलों में पिछड़ गया है। फोन, मोबाइल, इंजन, जनरेटर, घड़ी, बाइक, कार, ट्रक, बस, ट्रेन, सिलाई मशीन, रेडियो, टी०वी०, ट्रांजिस्टर, कम्प्यूटर इत्यादि के आविष्कार दूसरे देशों में हुये हैं। आधुनिक हथियार, बम, प्लेन, शिप, रॉकेट, मिसाइल, टैंक, इत्यादि के आविष्कार विदेशों में हुये। मेडिकल साइंस ने भी विदेशों में तरक्की की। कृषि क्षेत्र के सभी साधन व उपकरण व अन्य वैज्ञानिक क्षेत्रों में भी विदेश आगे है। सबसे पहले वो ही चांद और मंगल पर पहुंचे, जबकिं हमारे ऋषि-मुनियों, योगियों, साधु-सन्तों, वैज्ञानिकों ने लाखों वर्ष पूर्व ही सारे ब्रह्मांड की खोज कर ली थी। ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। आयुर्वेद का निर्माण, चारों वेद, उपनिषद, पुराणों की रचना हुई। उन्हीं वेदों, पुराणों, उपनिषदों का अध्ययन करके ही विदेशियों ने आज वे तमाम आविष्कार किये हैं और भविष्य में करते रहेंगे। जबकि हमारे देश के कर्णधार हाथ-पर-हाथ रखे बैठे हैं। उन्हें बेईमानी, भ्रष्टाचार तथा विदेशी बैंकों में काला धन जमा करने से ही फुर्सत नहीं मिल पा रही है। धर्म निरपेक्षता के नाम पर हिन्दू, मुस्लिम, सिख, बौद्ध, जैन तथा ईसाइयों के बीच मनमुटाव उत्पन्न करके वोटों की राजनीति किये जा रहे हैं। देश, राष्ट्र, वतन की चिन्ता नहीं, स्वार्थ की अग्नि पर लाभ की रोटियां ही सेंकी जा रही हैं। अभी के लिये बस इतना ही...इसी विषय पर हम कल भी चर्चा करेंगे।"

अपना प्रवचन समाप्त कर स्वामी रामशरण दास ने बन्द आंखों को खोलकर सभागार में उपस्थित भक्तों व शिष्यों पर दृष्टिपात किया तथा दोनों हाथों को उठाकर मानो सभी को आशीर्वाद प्रदान किया।

अपने स्थान से उठकर राघव राजवंशी ने स्वामी के चरण स्पर्श किये तथा हाथों को जोड़े हुये कहा, "धन्य हैं आप स्वामी जी...! मैं भी स्वयं को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूं–जो मुझे आपके जैसे गुरु मिले। ईश्वर को धन्यवाद कि मुझे आपके सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। दूसरे

लोग सिर्फ धर्म या अध्यात्म पर आधारित बातें ही करते हैं–लेकिन आप धर्म तथा अध्यात्म के साथ-साथ समाज तथा देश की समस्याओं पर भी बोलते हैं। समस्यायें उठाते हैं और उनका निराकरण भी करते हैं। राजनीति पर क्या खूब बातें की आपने। जो भी कहा, एकदम सही और सटीक कहा है। आप आधुनिक ऋषि हैं। इस देश को आपकी सख्त आवश्यकता है। नये युग, नये राष्ट्र का निर्माण आपको ही करना है स्वामी जी...! आपकी ही आज्ञा से मैंने अपनी नई राजनैतिक पार्टी का निर्माण किया है और राजनीति के क्षेत्र में कदम रखने जा रहा हूं। आशीर्वाद दीजिये कि मैं अपने ध्येय में कामयाब रहूं...सफल रहूं...।"

उसके झुके हुये सिर पर आशीर्वाद की मुद्रा में हथेली रखकर स्वामी ने मधुर स्वर में कहा, "हमारा आशीर्वाद, स्नेह, प्यार, मार्गदर्शन–सदैव ही तुम्हें प्राप्त होता रहेगा। तुमने स्वार्थसिद्धि के लिये नहीं, अपितु नेक ध्येय के लिये ही राजनैतिक पार्टी का गठन किया है। तुम राजनीति से बेईमानी, भ्रष्टाचार व अपराध को खत्म करने के लिये कृत-संकल्प हो। तुम पर ईश्वर की कृपा भी बरसेगी तथा जनता का भरपूर साथ भी मिलेगा। सफलता सदैव तुम्हारे चरण स्पर्श करेगी। दृढ़ निश्चय के साथ सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ते चले जाओ। तुम्हें अपनी पार्टी के माध्यम से मानवता, समाज, प्रदेश तथा देश की सेवा करनी है। कभी भी हमारे मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़े तो निःसंकोच हमें स्मरण कर लेना। चुनाव समीप ही हैं। हम ये जानने के लिये उत्सुक रहेंगे कि तुम्हारी पार्टी सफलता के कितने झण्डे गाड़ती है–।"

❑❑❑
❑❑❑

"नमस्कार...जी...।" गोरी-चिट्टी तथा खूबसूरत युवती हाथों में वाशिंग पाउडर का पैकेट तथा साबुन की दो टिकिया लिये हुये सीधे कमरे में चली आई तथा केशव, सोफिया, राजन, चांदनी, करतार सिंह व आशीर्वाद से सम्बोधित होकर बोली, "मेरा नाम मेघा ठाकरे है। मैं सुपर चमकार कम्पनी की तरफ से वाशिंग पाउडर व डिटर्जेन्ट केक का प्रचार करने आई हूं। हमारा प्रोडक्ट किसी भी वॉशिंग पाउडर या डिटर्जेन्ट केक से लाजवाब और किफायती है। एक किलोग्राम चमकार वाशिंग पाउडर का पैकेट सिर्फ बीस रुपये का और साथ में साबुन की टिकिया भी मुफ्त–जिसकी कीमत ही मार्केट में बीस रुपये है। यानि आम-के-आम और गुठलियों के दाम। हींग लगे ना फिटकरी और रंग भी चोखा आये। बीस रुपये में एक किलो वाशिंग पाउडर और दो सौ ग्राम की साबुन की टिकिया।"

"क्या तरीका है ये...?" चांदनी नाराजगी के साथ बोली, "बिना परमिशन के तुम मुंह उठाये भीतर घर में घुस आई। कॉलबेल नहीं बजाई—दरवाजा भी नॉक नहीं किया। नहीं चाहिये तुम्हारा ये घटिया वाशिंग पाउडर और डिटर्जेन्ट बार। चुपचाप बाहर निकल जाओ...।"

"ठीक है—नहीं खरीदना है तो कोई बात नहीं। लेकिन आप मेहमाननवाजी कैसे भूल सकती हैं मैडम जी! इतनी दूर चलकर आई हूं। थक गई हूं। मुझे बैठने के लिये तो कहिये। फिर पानी, चाय या कॉफी। साथ में बढ़िया नाश्ता भी। अरे, वाह...आप लोग गाजर का हलवा खा रहे हैं। गाजर का हलवा मेरा फेवरिट है। गरम-गरम गाजर का हलवा और साथ में गरमा-गरम कॉफी। हां, नमकीन में मसाले वाले काजू चल जायेंगे।"

"हे भगवान...!" आश्चर्य के साथ बोली सोफिया, "इस लड़की की बेशर्मी और ढीठता तो देखो। मान ना मान...मैं तेरी मेहमान! इसे बाहर का रास्ता तो दिखलाना आशीर्वाद—! अरे, तुम हंस क्यों रहे हो आशीर्वाद—?"

आशीर्वाद ही क्या, केशव भी हंसने लगा, आगन्तुक युवती भी हंस रही थी।

"गच्चा खा गईं आप मम्मी जी...!" बोला आशीर्वाद, "चांदनी आन्टी, शुक्ला अंकल जी और पटियाला वाले अंकल जी भी गच्चा खा गये। श्वेता बुआ को नहीं पहचान सके...आप लोग—?"

"श्...श्वेता...?" चौंकी सोफिया।

"ये-ये श्वेता है—?" चांदनी भी चौंकी।

राजन व करतार सिंह भी चौंक उठे।

"हां—मैं श्वेता...।" वो युवती इस बार अपनी अर्थात् श्वेता की आवाज में बोली, "गुरुजी ने मुझे मेकअप के लिये भेजा था ना। एक्सपर्ट ने फेसमास्क, विग, कॉन्टेक्ट लैंसेज और मेकअप से बिल्कुल ही बदल दिया। दर्पण में देखकर मैं भी स्वयं को पहचान नहीं सकी थी। रहा सवाल आवाज का...तो गुरुजी ने ही मुझे आवाज बदलने की कला में माहिर किया है। आप तीनों ने मुझे नहीं पहचाना है—यानि मैं अपने पहले टेस्ट में पास हो गई हूं।"

"ये सब किसलिये केशव...?" पूछा सोफिया ने।

गाजर का हलवा चबाते हुये केशव ने चाय की घूंट भरी, फिर बोला, "श्वेता स्वामी अर्थात् देवा के आश्रम में दुखियारी युवती बनकर जायेगी सोफी। इसे वहां महिला आश्रम में भर्ती होना है। इसकी सुन्दरता पर मुग्ध

होकर स्वामी के भीतर का शैतान जागेगा। वो श्वेता को किसी बहाने से अपनी रंगशाला में बुलायेगा और रंगे हाथों पकड़ा जायेगा।"

"लेकिन कैसे—?"

"श्वेता की पोशाक में एक हिडेन कैमरा लगा होगा—जो कि एक घंटे की वीडियो फिल्म तैयार कर सकता है।"

"लेकिन श्वेता वहां खतरे में भी पड़ सकती है केशव—!"

"मेरे होते हुये भला ऐसा कैसे हो सकता है पगली? श्वेता के पास एक ट्रांसमीटर होगा। बहुत ही सेन्सेटिव माइक्रोफोन भी होगा। जी०पी०एस० सिस्टम वाला मोबाइल फोन भी होगा। हमें श्वेता की लोकेशन मालूम होती रहेगी। हम इसकी तथा इसके आस-पास के लोगों की बातें सुनते रहेंगे। मैं, आशीर्वाद, राजन और करतार सिंह आश्रम के आस-पास में ही रहेंगे। जरूरत पड़ने पर श्वेता की मदद को पहुंच जायेंगे—स्वामी उर्फ देवा को दबोच लेंगे। मैंने श्वेता के माध्यम से स्वामी को रंगे हाथों पकड़ने का प्लान बनाया है। तुम अपना काम ठीक से कर लोगी ना श्वेता? मन में कोई डर या आशंका तो नहीं है ना—?"

"कैसी बात करते हैं गुरुजी—आपकी शिष्या हूं। कैसा डर, कैसी आशंका? मैं अपना रोल परफेक्ट तरीके से निभाऊंगी।"

"गुड...वैरी गुड...ये हुई ना कोई बात...।"

तभी आशीर्वाद चौंका, लेकिन अपने चौंकने को उसने किसी पर भी जाहिर ना किया।

चौंकने का कारण ये था कि उसकी रिस्टवाच से एक नन्हीं-सी सूई बार-बार निकलकर कलाई पर हौले-हौले दस्तक दे रही थी।

वो रिस्टवाच नहीं, बल्कि ट्रांसमीटर था और कोई उससे सम्पर्क करना चाह रहा था।

"एक्सक्यूज मी...!" बोलकर वो उठा तथा कमरे से बाहर चला गया।

कुछ देर पश्चात् केशव भी कमरे से बाहर निकला तथा हॉल रूम में चारमीनार की सिगरेट सुलगाकर कश लगाने लगा।

कॉमन बाथरूम से बाहर निकलकर आशीर्वाद केशव के करीब आया तथा फुसफुसाकर बोला— "ट्रिपल सी के चीफ भारत-पुत्र जी ने अभी मुझसे ट्रांसमीटर पर कॉन्टेक्ट किया है डैडी जी! मुझे एक खास मिशन पर जाना होगा। महीना, दो महीने या तीन महीने भी लग सकते हैं। मम्मी जी और बाकी लोगों को क्या बतलाऊं—?"

"उन लोगों को बोलना कि एन०सी०सी० यानि नेशनल कैडेट कोर

की तरफ से तुम्हें स्पेशल ट्रेनिंग पर आसाम भेजा जा रहा है। बाकी मैं सम्भाल लूंगा पुत्तर...।"

"ठीक है डैडी जी! चाहता था कि स्वामी देवा के भन्डाफोड़ कार्यक्रम में मैं भी शामिल रहूं—लेकिन मुझे जाना होगा। स्वामी का तिया-पांचा करने पर मुझे जरूर बतलाना डैडी जी। जानने के लिये मैं उत्सुक रहूंगा कि श्वेता बुआ और आपने स्वामी को अपने जाल में कैसे फांसा है...?"

❑❑❑

❑❑❑

कथानक को आगे बढ़ाने से पूर्व आइये! कथानक के कुछ महत्त्वपूर्ण पात्रों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर लेते हैं—

लंदन से कानून या वकालत की डिग्री प्राप्त करने वाला केशव पण्डित चालीस वर्ष का खूबसूरत, गोर वर्ण वाला तन्दुरुस्त तथा पांच फुट ग्यारह इंच ऊंचे जिस्म का स्वामी है। हल्के सुनहरे तथा अर्ध-घुंघराले बालों वाले केशव की झील-सी नीली आंखों में ना जाने कैसा जादू है कि कोई भी आकर्षित हुये बिना नहीं रह पाता है। उसकी आंखों में जब उस्तरे की धार-सा पैनापन उतरता है तो मुजरिमों, भ्रष्टाचारियों, बेईमानों, आतंकियों, देशद्रोहियों व देश के दुश्मनों की रीढ़ में भूकम्प-सा उत्पन्न हो जाता है तथा तमाम रोम-छिद्र मानो शर्त लगाकर बर्फ-सा ठण्डा पसीना उगलने लगते हैं।

वो देशभक्त है—वो कानून, मानवता का पुजारी है—वो न्याय का पक्षधर है—वो सत्य, धर्म तथा कर्त्तव्य का पक्षधर है—मजलूमों, जरूरतमन्दों, आतंकित व सताये जा रहे लोगों के लिये सखी हातिमताई है। वो दुष्टों, पापियों, अत्याचारियों, मुजरिमों, भ्रष्टाचारियों, देशद्रोहियों, देश के दुश्मनों तथा आतंकियों के लिये साक्षात यमदूत ही है। वो वकील भी है, इन्वेस्टीगेटर भी है—वो लेखक भी है। वो वीर-योद्धा भी है।

स्वर्ग की अप्सरा-सी सुन्दर, पन्ना जैसी हरी आंखों वाली सोफिया ने भी लंदन में कानून की पढ़ाई कम्पलीट करके लॉ की डिग्री प्राप्त की थी। वहीं पर उसमें तथा केशव में मुहब्बत हुई तथा भारत लौटकर दोनों ने शादी कर ली थी। सोफिया ने वकालत का पेशा ना अपनाकर हाउस वाइफ बनने का निर्णय लिया था। उसको देखकर विश्वास ही नहीं होता कि वो पन्द्रह वर्षीय आशीर्वाद की मां होगी—अपनी उम्र से काफी कम उम्र की लगती है।

पन्द्रह वर्षीय आशीर्वाद पण्डित—केशव तथा सोफिया का बेटा। खूबसूरत, तन्दुरुस्त, पूरे छः फुट का तथा केशव का हमशक्ल। अभी वो

दसवीं कक्षा में ही पढ़ता है—परन्तु मात्र दस वर्ष की आयु में ही वकील बनकर उसने अदालत में सफलता के झण्डे गाड़ दिये थे। केशव की मानिन्द ही वो जांबाज, दिलेर व बहादुर होने के साथ माइन्डेड भी है तथा दिमाग का चैम्पियन कहलाता है। वो ना सिर्फ पिता के पद-चिन्हों पर चलते हुये उपन्यास लिखता है, बल्कि वो ट्रिपल सी अर्थात् सैन्ट्रल केम्पेनर कम्पनी नामक एक देशभक्त संस्था का एरिया कमाण्डर भी है।

ट्रिपल सी तथा आशीर्वाद के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिये कृपया 'आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यास पढ़ें।

पैंतीस वर्षीय राजन शुक्ला भी गोरा-चिट्टा, तन्दुरुस्त व खूबसूरत युवक है तथा केशव का असिस्टेन्ट है। हाल में ही उसने एल०एल०बी० की डिग्री भी हासिल कर ली है तथा केशव के सान्निध्य में वकालत के साथ-साथ जासूसी के गुर भी सीख रहा है। वो केशव से मार्शल-आर्ट की ट्रेनिंग भी ले रहा है, उसकी खूबसूरत धर्मपत्नी का नाम चांदनी है और दोनों परिवार के सदस्य बनकर केशव के घर में ही रहते हैं।

चालीस वर्षीय हट्टा-कट्टा करतार सिंह पंजाब के पटियाला शहर का रहने वाला है। वो बतौर ड्राइवर केशव के सान्निध्य में आया था। केशव से ट्रेनिंग लेकर वो उसका असिस्टेन्ट बन गया। स्वभाव से थोड़ा अक्खड़, दिलेर तथा बहादुर है। केशव, सोफिया तथा आशीर्वाद के बार-बार कहने पर भी वो उनके साथ ना रहकर किराये के मकान में रहता है। दरअसल एक बम-विस्फोट में उसके बीवी-बच्चे मारे गये थे और उसको लगता है कि बीवी-बच्चों की आत्मायें किराये वाले घर में वास करती हैं।

सांवली-सलोनी श्वेता गुप्ता भी वकील है। वो रवि गोयल नामक कम्प्यूटर इंजीनियर से प्यार करती थी तथा दोनों की शादी होने वाली थी—लेकिन रवि गोयल का कत्ल हो गया था। केशव ने इन्वेस्टीगेशन करके कातिल को पकड़ा था। कातिल कोई और नहीं बल्कि श्वेता का पिता सेठ ताराचन्द गुप्ता ही था—जो कि सफेदपोश मुजरिम था और अण्डरवर्ल्ड में ड्रेकुला के नाम से जाना जाता था। केशव की कृपा से श्वेता ने अपने पिता को अदालत में कातिल साबित करके फांसी की सजा दिलवाई थी तथा उसकी तमाम चल-अचल सम्पत्ति को ठुकराकर केशव की असिस्टेन्ट बन गई और केशव के घर में ही रहती है। हालांकि बाद में श्वेता को अपने नाना की दिल्ली में कोठी, प्रोपर्टी तथा करोड़ों की नगदी मिली थी, लेकिन उसने दिल्ली ना जाकर केशव की असिस्टेन्ट ही बने रहने का निर्णय किया था।

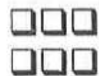
तीस वर्षीय, पतला-दुबला, छोटे कद तथा लम्बे बालों वाला मुंशी

केशव का नौकर है–जो कि रसोई के कार्यों में पारंगत है और स्वयं को होशियार चन्द कहलवाना पसन्द करता है। उसका दावा है कि उसके इलाके के लोग उसके पास अपनी समस्याओं का निवारण करवाने के लिये आया करते थे और उसकी बुद्धिमानी को देखकर उसको होशियार चन्द की उपाधि से नवाजा गया था। मुम्बई में भी कोई भूला-भटका उसके पास अपनी समस्या को लेकर आ जाता है। अपनी समझ में वो मास्टर-माइंड प्लान ही देता है–लेकिन उसका दुर्भाग्य कि किसी-ना-किसी कारण से प्लान सफल नहीं हो पाता है।

पैंतीस वर्षीय इन्सपैक्टर अनिल यादव बेहद कर्मठ, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा ईमानदार पुलिस अफसर है। किसी केस में उलझ जाने पर वो सदैव केशव को ही याद करता है। केशव उसकी मदद भी करता है–वो केशव को गुरु का दर्जा देता है।

केशव पण्डित ने अपने कैरियर का आगाज रमाकान्त चोपड़ा नामक एडवोकेट के असिस्टेन्ट के रूप में किया था तथा उससे कानून के नुक्ते सीखे थे। वह आज भी रमाकान्त को 'गुरुजी' मानता है, भरपूर मान-सम्मान देता है। रमाकान्त की बेटी माधवी चोपड़ा को उसने अपनी धर्म-बहन बनाया हुआ है, जो कि इण्डिया न्यूज चैनल की रिपोर्ट है।

इस संक्षिप्त विवरण के पश्चात् आइये कथानक का रसास्वादन करते हैं।



मस्तिष्क में भरी धुन्ध धीरे-धीरे छंटती जा रही थी तथा सुप्त मस्तिष्क शनैः-शनैः सक्रिय हो रहा था।

वो अपने बीमार पिता के लिये मेडिकल स्टोर से दवाइयां लाने के लिये घर से निकली थी। मौहल्ले की गली से निकलकर मेन रोड पर पहुंची तो बिना नम्बर प्लेट वाली काली कार ने उसका रास्ता रोक लिया था। उसमें से काली पोशाक तथा नकाब वाले चार लोगों ने बाहर निकलकर रिवॉल्वर तथा पिस्टल से हवाई फायर करते हुये उसको क्लोरोफॉर्म से भीगा रूमाल सुंघाकर बेहोश कर दिया था–फिर उसे नहीं मालूम कि उसके साथ क्या हुआ था!

कौन थे वो नकाबपोश?

उन्होंने उसको क्लोरोफॉर्म सुंघाकर बेहोश क्यों किया था?

आखिर उनका उद्देश्य क्या था?

इस घड़ी वो कहां है?

उसे नर्म व गुदगुदे बिस्तर का आभास हुआ–

हड़बड़ाकर उठ जाना चाहा उसने–लेकिन उठ नहीं पाई–क्योंकि उसकी कलाइयों तथा पैरों को डोरियों से बांधा गया था।

घबराकर आंखें खोलीं तो प्लास्टर ऑफ पेरिस से डिजाइन की गई छत के दर्शन हुये–जिसमें दो सीलिंग फैन लगे हुये थे, जोकि बन्द थे।

हाथों-पैरों को नायलॉन की डोरियों से बंधन-मुक्त करने की भरसक चेष्टा के साथ उसने इधर-उधर देखा तो पाया कि वो शानदार फर्नीचर वाले ए०सी० युक्त कमरे के बेड पर बंधी लेटी थी तथा कमरे का दिखलाई पड़ने वाला दरवाजा बन्द था।

आसन्न खतरे को भांपकर वो इतना घबरा गई कि नन्हा-सा दिल थैली में बन्द कर दिये गये कबूतर की मानिन्द ही फड़फड़ाने वह छटपटाने लगा।

कनपटियों पर घूंसे से पड़ने लगे।

रीढ़ कंपकंपाने लगी, पसलियां मचलने लगीं।

नसों में भरा खून मानो उस हिरणी की मानिन्द ही कुलांचें भरने लगा, जिसके पीछे शिकार के मकसद से बब्बर शेर पड़ा हो।

घबराकर रोने-चिल्लाने लगी–"म...मम्मी...पा...पा...मुझे बचा लो, मम्मी-पापा...हे भगवान! मैं किस मुसीबत में फंस गई हूं? खोलो मुझे–यहां से बाहर निकालो। कोई है...मुझे बचाओ–मेरी मदद करो...प्लीज...हेल्प मी...मम्मी...पापा...।"

अचानक ही उसके कान सतर्क व चौकन्ना हो चले।

ऐसा लगा कि कमरे के बाहर कोई था–जो दूर से करीब चला आ रहा था।

कौन है?

कोई मददगार?

या किडनेपर?

दरवाजा हिला–कुन्डी खोली जा रही थी।

उसकी धड़कनें तीव्र हो चलीं।

समूचा जिस्म थरथराने लगा।

चूं-चूं की हल्की आवाज के साथ दरवाजे के दोनों पल्ले खुलने लगे।

दरवाजा खोल भीतर प्रविष्ट होने वाली एक तीस वर्षीय युवती थी–जो कि थोड़ा मोटी तो थी, लेकिन बला की हसीन व खूबसूरत थी।

उसने काले रंग की चमचमाती व भड़कीली ड्रेस पहनी थी, जिसके गिरेहबान से गोल व सुडौल उभार बाहर को झांक रहे थे।

केले के तने-सी चिकनी व सुडौल तथा सून्डाकार टांगें भी जलवानुमा थीं।

सुर्ख लिपस्टिक से पुते होठों पर चंचल किस्म की मुस्कान थिरकाकर बोली वह–"होश आ गया बेबी–?"

"भगवान के लिये मुझे खोल दीजिये...।" वह रोने-गिड़गिड़ाने लगी, "यहां से जाने दीजिये मुझे। आपकी बहुत कृपा होगी। मैं...मैं अपने पापा जी के लिये दवाई लेने जा रही थी। वो बहुत बीमार हैं। उनको दवाई की जरूरत है। मेरे पापा और मम्मी मेरा इन्तजार कर रहे होंगे...। मेरे लिये परेशान हो रहे होंगे। मुझ पर दया कीजिये मैडम जी...प्लीज।"

वह कैटवॉक करने वाले अन्दाज में आगे बढ़ी तथा बेड के किनारे बैठ गई। आगे की तरफ झुककर युवती के गुलाबी व रसीले होंठों पर दायें हाथ की तर्जनी उंगली चलाते हुये बोली, "कितने कोमल, रसीले होंठ हैं तेरे...ये दांत...सफेद-सफेद, छोटे-छोटे...बड़ी-बड़ी नशीली आंखें...सुतवा नाक...कश्मीर के सेबों जैसे चिकने और गुलाबी गाल। एक-एक अंग, जिस्म के उभार...सब कुछ सांचे में ढला हुआ...गोरी-चिट्टी और चिकनी काया...आह...वाह...तेरी इन दहकी हुई सांसों में महक भी है। खूबसूरत देह में कस्तूरी जैसी गन्ध भरी हुई है। तभी तो बॉस तुझ पर रीझ गये थे। तुझे देखते ही उनके मुंह में पानी भर आया होगा। खून खौल उठा होगा–। नस-नस में करंट फैल गया होगा। तभी तो बॉस ने तुझे किडनेप करा लिया...।"

"कौ...कौन बॉस? किसने किडनेप कराया है मुझे? क...क्या चाहते हैं वो मुझसे...?"

"हाय...मेरी बन्नो! इतनी मासूम भी बनकर मत दिखला। बच्ची नहीं रही है तू। तेरी जवानी ने अपने पंख फैलाने शुरू कर दिये हैं। क्या नहीं जानती कि तुझ जैसी खूबसूरत...हॉट सेक्सी लड़की को देखकर किसी मर्द के मुंह में पानी क्यों भर जाता है? वो क्या चाहेगा तुझसे?"

"न...नहीं...।" वह रोने-गिड़गिड़ाने लगी–"ऐसी-वैसी लड़की नहीं हूं मैं मैडम जी! गरीब घर की शरीफ लड़की हूं। इज्जत ही मेरे लिये सब कुछ है। इज्जत चली गई तो...जिन्दा नहीं रह सकूंगी मैं। भगवान के लिये मुझे यहां से निकाल दीजिये–मरते दम तक आपकी अहसानमन्द रहूंगी।"

"तुझे निकाल दिया तो बॉस मुझे कच्चा ही चबा जायेंगे। माना कि उनकी लाड़ली और चहेती रखैल हूं मैं–लेकिन वो जरा-सी गुस्ताखी भी बर्दाश्त करने वाले नहीं हैं। अपनी कई चहेतियों को गुस्ताखी करने पर

बॉस तेजाब से भरे ड्रम में डुबोकर मार चुके हैं। भरी जवानी में तेजाब में गलने का कोई इरादा नहीं है मेरा। लगता है कि बॉस आ गये हैं। तेरा दूल्हा आ रहा है–तेरे साथ जबरदस्ती वाली सुहागरात मनाने के लिये...देख, वो आ रहे हैं...दरवाजे की तरफ देख तो सही...कौन है तेरा दूल्हा–?"

❑❑❑

❑❑❑

"मेरा नाम राधा है जी। किशनपुरा गांव की रहने वाली हूं मैं। मां-बाप तो तभी चल बसे थे, जब मैं ढाई साल की ही थी। चाचा-चाची ने ही परवरिश की मेरी। गांव के स्कूल में आठवीं कक्षा तक पढ़ाया मुझे। एक वर्ष पहले चाची को सांप ने काट लिया था और वो चल बसी थी। चाचा ने दूसरी शादी की। नई चाची खूबसूरत थी–साथ ही चरित्रहीन भी। आस-पड़ोस के कई मर्दों के साथ अवैध-सम्बन्ध बना लिये और चाचा को भनक भी नहीं लगने दी। मैंने चाचा को बतलाया तो चाची ने फांसी लगाने का ड्रामा किया। रो-रोकर ऐसे ड्रामे किये कि मानो उससे बड़ी सती-सावित्री कोई और हो ही नहीं। चाचा ने भी उस पर विश्वास कर लिया। चाची ने चाचा के कान भरे कि मैं चरित्रहीन हूं–उसने मेरा विरोध किया तो मैंने उस पर झूठा इल्जाम लगा दिया। बोली कि जल्दी ही मेरी शादी ना की तो मैं किसी के साथ भाग जाऊंगी और चाचा-चाची की नाक कट जायेगी...।"

धारा-प्रवाह बोलते रहने पर भेष बदलकर दुखियारी युवती के रूप में आश्रम में आई श्वेता ने कृत्रिम आंसू पोंछे तथा फिर गंगा से सम्बोधित होकर बोली–"चाची ने अपने प्रेमी से मेरी शादी कराने की साजिश रची। उसका प्रेमी पियक्कड़, चोर, उठाईगिरा, अधेड़ उम्र का था। चाचा भी चाची के रंग में रंग गया। मेरी एक नहीं सुनी और शादी की तैयारियां शुरू कर दीं। मजबूरन रात को घर से निकलकर गांव की ही अपनी एक सहेली के घर में जा छिपी थी और सुबह-सवेरे ही तांगे में बैठकर कस्बे में पहुंची। वहां से ट्रेन में सवार होकर मुम्बई आई। मेहनत-मजदूरी करके गुजर-बसर करना चाहती थी, लेकिन हर कोई मुझे वासना की नजर से देखता। बड़ी मुश्किल से अपनी इज्जत बचाती रही। फिर एक भली औरत ने मुझे आपके आश्रम के बारे में बतलाया। वो बोली कि यहां पर मुझे काम करना सिखलाया जायेगा और खाने-पीने के साथ रहने को छत भी मिलेगी। कृपा करके मुझे अपने आश्रम में शरण दे दीजिये–आपका बहुत अहसान होगा बहन जी...!"

"संध्या...!" गंगा करीब ही खड़ी युवती से बोली, "राधा को

स्नानगृह में ले जाओ। इसे नये वस्त्र दे देना। इसको यहां के नियमों की जानकारी दे देना। ये भूखी मालूम पड़ रही है। इसको भोजन करा देना और अपने कक्ष में ही ठहरा लेना। ये तुम्हारे कक्ष में ही रहेगी...।"

"जैसी आपकी आज्ञा...बड़ी बहन जी...!" संध्या ने सिर झुकाकर कहा, फिर श्वेता की कलाई थामकर वहां से चली गई।

गंगा की पैनी नजरों ने अन्तिम छोर तक श्वेता का पीछा किया, फिर वो बुदबुदाई, "आश्रम में आई सभी महिलाओं में अब तक की सबसे सुन्दर, सबसे हसीन युवती है तू राधा! तुझे देखकर स्वामी के मुंह में पानी भर आयेगा। तुझे घोलकर पी जाने के लिये उतावला हो उठेगा वो। तुझ पर नजर पड़ते ही वो मुझे हुक्म दे देगा कि तुझे उसकी रंगशाला में पहुंचा दूं। अपने गांव से तो तू बचकर भाग आई। मुम्बई में भी वासना के भेड़ियों से बचती रही। लेकिन इस आश्रम में सबसे बड़ा औरतखोर है—उससे कैसे बच पायेगी तू—?"

❑❑❑

❑❑❑

कथित दूल्हे को देखकर बेड पर बन्धी लेटी युवती की आंखें मारे आश्चर्य तथा अविश्वास के फट पड़ने को तैयार हो चलीं।

मुंह खुला-का-खुला रह गया।

उसके दायें हाथ में व्हिस्की से अधभरा कांच का गिलास था तो बायें हाथ की तर्जनी व मध्यमा उंगलियों के मध्य सुलगी हुई सिगरेट फंसी हुई थी।

उसका भभका हुआ चेहरा तथा चढ़ी-चढ़ी सी सुर्ख आंखें इस बात की चुगली खा रही थीं कि वो नशे में धुत्त था।

बेड के करीब आकर उसने बची हुई व्हिस्की को मुंह तथा हलक के रास्ते पेट तक पहुंचाया तथा खाली गिलास काली पोशाक वाली युवती को पकड़ाकर बोला—"इस लड़की में दम है ना रोमा डार्लिंग—?"

"बहुत दम है बॉस...!" वह मुस्कराकर बोली, "आपकी पसन्द की दाद देनी होगी। वैसे भी आप हुस्नो-शबाब के पारखी हैं—जौहरी हैं। बढ़िया माल की खूब पहचान है आपको। मेरी अनुभवी आंखें बोलती हैं कि ये अभी तक अनटच है...एकदम कुंवारी है। इसे लड़की से औरत बनाने का सौभाग्य आपको ही मिलेगा...!"

"न...नहीं...।" वह युवती रोते हुये बोली, "आप मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं राम जी! आप तो समाजसेवी और एम०एल०ए० भी हैं। आप दीन-दुखियों की मदद करने वाले हैं। जरूरतमन्द लोग आपकी

तरफ ही उम्मीद भरी निगाहों से देखते हैं। इलाके के किसी भी व्यक्ति को कोई दुख-तकलीफ हो तो उसे आशा रहती है कि आप उसकी मदद करेंगे। इलाके में भगवान का दर्जा दिया जाता है आपको। दुखियारी महिलाओं के मसीहा हैं आप। लोग आपको सिर्फ राम जी कहते ही नहीं है, बल्कि आपको राम जी मानते भी हैं। आप राम होकर किसी अबला की इज्जत के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते हैं राम जी! आप ऐसा करेंगे तो लोगों का, अबलाओं का राम के नाम से भरोसा उठ जायेगा...।"

"सत्यानाश...बेड़ा गर्क...।" बिल्लौरी आंखों वाले राम माहेश्वरी ने काले फर वाली टोपी उतारकर फर्श पर फेंकी तथा माइका-से चमचमाते गंजे सिर पर हथेली फिराते हुये बोला, "यहीं तो हिन्दुस्तान मात खा गया। इस देश के लोग समझते ही नहीं कि नाम से कुछ नहीं होता। इस कलियुग में हरिश्चन्द नाम का बन्दा महाझूठा और बेईमान हो सकता है। श्रवण कुमार मां-बाप को दुत्कारने वाला, कृष्ण गुण्डों का साथ देने वाला, शंकर तबाही मचाने वाला हो सकता है। प्रहलाद नास्तिक और पापी हो सकता है। भीम कमजोर हो सकता है, भीष्म के दर्जनों बच्चे हो सकते हैं। विष्णु कुरूप हो सकता है। कुबेर भिखारी हो सकता है। लंकेश के पास मिट्टी की झोंपड़ी भी ना हो सकती है। कर्ण दान देने की बजाय दान ले रहा हो सकता है। सावित्री धन्धे वाली, लक्ष्मी फुटपाथ पर बैठकर भीख मांगने वाली, सरस्वती कुंद दिमाग वाली, मेनका बदसूरत, सीता कई पतियों वाली हो सकती है। लोग ये उम्मीद क्यों करते हैं कि हर कोई अपने नाम के अनुरूप ही व्यवहार करे—चरित्र का पालन करे? गलती तो मेरे मां-बाप की थी—जो मेरा नाम राम रख दिया। मैंने तो उनसे कहा नहीं था कि मेरा नाम राम ही रखो। ना ही मैं इस बात के लिये बाध्य हूं कि मेरा नाम राम है तो मुझे राम के ही पद-चिन्हों पर ही चलना होगा। अपने बाप के कहने पर मैं बनवास पर नहीं जाने वाला था। एक पत्नी का वफादार नहीं रहने वाला था। वध करने के लिये रावण कहां से लाता मैं? क्या मुझे कोई हनुमान मिल सकता था? मुझे राज करने के लिये अयोध्या कौन देगा? क्या तू मुझे अयोध्या का राजा बनवा सकती है?"

बेचारी!

उत्तर दे भी तो क्या दे?

कश लगाकर टोटा फर्श पर फेंक दिया राम माहेश्वरी ने तथा मुंह में भरा कसैला धुआं उसके आंसुओं से नहाये चेहरे पर छोड़कर बोला, "लोग मुझसे राम का अवतार होने की आशा करते हैं तो...मैं क्या कर सकता हूं मेरी मोरनी? तेरी मां लक्ष्मी ने तेरा नाम मयूरी ही बतलाया था ना? वो

मुझे राम समझकर तुझे मेरे पास लाई–ताकि मैं तेरी शादी का बन्दोबस्त कर सकूं। तुझे देखते ही मुंह में पानी भर आया था। खून गरम होकर खौलने लगा था। वासना का नाग फुंफकारते हुये पिटारे से बाहर आने को बेताब हो चला था–बड़ी मुश्किल से रोका था उसको। लेकिन तय कर लिया था कि आज की रात तेरे साथ ही सुहागरात मनानी है। अपने आदमियों को तुझे किडनेप करके लाने को बोल दिया था। धर्म-कर्म करने का ही ठेका लिया है क्या मैंने? क्या मेरे भीतर दिल-दिमाग नहीं है–मेरी इच्छायें, ख्वाहिशें नहीं हैं? शराब, कबाब और शबाब...ये तीन कमजोरियां हैं मेरी। राजनीति में लाभ उठाने के लिये मैं समाजसेवा करता रहता हूं। बहुत ज्यादा खर्चा हो जाता है। बदले में मौजमस्ती करने का अधिकार तो बनता ही है डार्लिंग। दिनभर समाज सेवा करते-करते थक जाता हूं ना। रात को रिलेक्स करना तो बनता है ना? मनोरंजन करने का अधिकार तो मेरा भी है ना? देख, यूं रोने-गिड़गिड़ाने से तुझे कोई भी फायदा होने वाला नहीं है। मैं नाम का ही राम हूं–मेरे वास्तविक कर्म रावण और कंस वाले ही हैं। वैसे भी रात को जब मैं शराब पी लेता हूं तो मेरा जिस्म कबाब और शबाब मांगने लगता है। अक्सर तो रोमा डार्लिंग ही मुझे खुश कर देती है। लेकिन कब तक? भले ही कोई व्यंजन कितना भी टेस्टी क्यों ना हो–रोजाना खाते-खाते जी ऊब जाता है। क्या तू रोजाना मटर-पनीर या खीर खा सकती है? इसीलिये जब भी मन होता है–अपने आदमियों को बोल देते हैं। वो तुझ जैसी खूबसूरत हसीना को उठाकर ले आते हैं। गलती की तेरी मां ने। क्या जरूरत थी तुझे मेरे सामने लाने की? बेमतलब में ही भेड़िये को गरम-गरम गोश्त वाली बकरी दिखला दी। तुझे मेरी हवस का शिकार तो होना ही था। तो तू अपनी इज्जत लुटवाने के लिये...लड़की से औरत बनने के लिये तैयार है ना–?"

"न...नहीं...मुझे बख्श दीजिये...।"

"ये तो यूं ही रोने-गिड़गिड़ाने का काम करती रहेगी। हमसे सब्र नहीं हो रहा है। हमें इसके खूबसूरत जिस्म पर ये कपड़े बिल्कुल भी नहीं भा रहे हैं। उतार दो रोमा डार्लिंग...वस्त्रहीन कर दो इसे...।"

मोना को मानो इसी आदेश की बेताबी से प्रतीक्षा थी–उसने कैंची उठा ली तथा मयूरी के वस्त्रों को काट-काटकर हवा में उड़ाने लगी।

जैसे-जैसे वस्त्र कम होते जा रहे थे, वैसे-वैसे राम माहेश्वरी का चेहरा चमकता जा रहा था तथा आंखों की कटोरियों में वासना के कीड़े भरते जा रहे थे।

मुंह में पानी भरता जा रहा था।

उसने स्वयं के भी वस्त्र उतारने शुरू कर दिये।

मयूरी को जब लगा कि रोने-गिड़गिड़ाने से उसकी इज्जत बचने वाली नहीं है तो डरपोक गीदड़ी की मानिन्द भभकियां देने लगी, "मेरे साथ ऐसा-वैसा कुछ करके तू बच नहीं सकेगा राम माहेश्वरी! कुछ भी करके तू मेरी जुबान पर ताला नहीं लगा सकेगा। मैं तेरा भान्डा फोड़ दूंगी। तेरी हकीकत दुनिया के सामने ले आऊंगी। तेरे चेहरे पर चढ़ा शराफत का नकाब उतार फेकूंगी। पुलिस स्टेशन जाकर तेरे खिलाफ कम्पलेंट करूंगी। तेरा कैरियर चौपट हो जायेगा। तू जेल चला जायेगा। वहां से इलैक्शन लड़ेगा भी तो तेरी जमानत जब्त हो जायेगी। अगर अपनी भलाई चाहता है तो मुझे छोड़ दे। मैं भगवान...अपने मां-बाप की कसम खाकर वचन देती हूं कि किसी को कुछ भी नहीं बतलाऊंगी–इस घटना को बुरा ख्वाब समझकर भूल जाऊंगी।"

शर्ट को हवा में उछालकर राम माहेश्वरी बेड पर चढ़ा और मयूरी के ऊपर झुककर तर्जनी उंगली से उसके होंठों को छेड़ते हुए फुंफकारा–"सयानी बनती है हरामजादी। अपनी गीदड़ भभकियों से हमें डराने की कोशिश करती है? क्या हमें मालूम नहीं है कि अपनी इज्जत लुटाने पर तू क्या करेगी? लेकिन हम तुझे कुछ करने का मौका देंगे ही कब? आज तक हमने जितनी भी हसीनाओं को इस बिस्तर पर लूटा है–वो हमारा भान्डा नहीं फोड़ सकीं–कभी पुलिस स्टेशन नहीं जा सकीं। क्योंकि लाशें कुछ भी नहीं कर सकती हैं। जहर का इंजैक्शन तैयार है। जब हम तेरा शिकार कर लेंगे तो तुझे जहर का इंजैक्शन लगा दिया जायेगा...।"

"न...नहीं...।"

"राम नाम सत्य है...सत्य बोलो गत है। तू मर जायेगी। हमारे आदमी तेरी लाश को रातों-रात ठिकाने लगा देंगे। ढूंढे से भी तेरी लाश किसी को नहीं मिलेगी...।"

"न...नहीं...!" मयूरी के तिरपन कांप उठे। हल्दी की मानिन्द पीला पड़ा उसका जिस्म पसीने से लथपथ हो गया, वह कठिनता से ही बोल सकी–

"ऐ...ऐसा नहीं कर सकते...आप...।"

राम माहेश्वरी होंठों पर पोटेशियम सायनाइड जैसी घातक मुस्कान चिपकाकर फुंफकारा–

"हम कर सकते हैं बेबी! कुछ भी कर सकते हैं हम। हमारे नाम पर मत जा। हम अपने नाम के विपरीत रावण ही हैं। अन्डरवर्ल्ड से गहरा नाता है हमारा। अपने जुर्मों, पापों को छिपाने के लिये ही हमने समाजसेवी

का मुखौटा चढ़ाया हुआ है। तुझे हम चिंगल-चिंगल कर खा जायेंगे। तेरी इज्जत की बोटियों को चबा-चबाकर अपना पेट भरेंगे। फिर तेरे जिस्म को मौत के जबड़ों में रख देंगे। तो...तू लुटने के लिये तैयार है ना...?"

और फिर वो भूखा भेड़िया-सा उस अभागी पर टूट पड़ा। उसे नोंचने-खसोटने लगा। उसके नाजुक मुलायम तन में हवस के लम्बे व पैने दांत गड़ाने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

गंगा उस कक्ष में प्रविष्ट हुई—जिसमें कथित रूप में स्वामी बन्द होकर साधना किया करता था।

भीतर से दरवाजा बन्द करके वो स्वामी के पास जाकर बैठ गई।

नर्म व मोटे गद्दे पर बैठे स्वामी के सामने लकड़ी की चौकोर मेज पर व्हिस्की की खुली बोतल, पानी का जग, लम्बी स्ट्राइक सिगरेट की डिब्बी, लाइटर, ऐश-ट्रे के साथ मछली के पकौड़ों से भरी प्लेट भी रखी हुई थी।

गंगा की कमर में हाथ डालकर उसे अपने करीब खींचा स्वामी ने तथा उसके गुलाबी होंठों को अपने होठों में कैद करने के साथ उसके ब्लाऊज में हाथ डालकर ठोस व गुदाज उभारों से खेलने लगा।

सिसकारी-सी भरकर गंगा होंठों के साथ जीभ से भी हरकत करने लगी।

होंठों को हटाकर स्वामी ने व्हिस्की का भरा गिलास उसके होंठों से लगा दिया।

गट-गट की आवाज के साथ गंगा सारी व्हिस्की पी गई तथा फिर डिब्बी से एक सिगरेट निकालकर लाइटर की नीली लौ से सुलगाकर कश मारने लगी।

"हमने क्लोज सर्किट टी०वी० के माध्यम से उस हसीन युवती राधा को देखा गंगा...।" कहने पर स्वामी ने गंगा से सिगरेट ले ली तथा कश लगाकर धुएं के छल्ले उड़ाने लगा।

"कैसी लगी—?"

"जानदार...शानदार है। बला की हसीन है वो...।"

"वो अभी-अभी आई है। आपको थोड़ा सब्र करना...।"

"सब्र नहीं होगा गंगा—बिल्कुल भी नहीं होगा। उसने हमारी कामेच्छा को भड़का दिया है। उसके यौवन का रस पीने के लिये व्याकुल हो चले हैं हम। दीक्षा देने के बहाने उसको हमारी रंगशाला में पहुंचाओ—।"

"जो आपकी आज्ञा, स्वामी जी! वो थकी-मांदी थी। सो चुकी है।

उसके कमरे में पांच अन्य महिलायें भी सोई हुई हैं। अभी जगाया तो बाकी महिलायें संदेह करेंगी। उसे कल शाम को आपकी सेवा में प्रस्तुत कर दूंगी...।"

"ओह...तो फिर आज रात का क्या होगा जानेमन--?"

दोनों मखमली बांहें उठाकर गंगा ने कामुकता से भरी अंगड़ाई ली तथा गुलाबी होंठों पर जिव्हा फिराकर नशीली-सी आवाज में बोली—"आपकी सेवा के लिये ये दासी तो हाजिर है ना स्वामी जी! मेरे होते आपकी कोई रात सूखी कैसे बीत सकती है? मेरे पास रूप-यौवन का अथाह सागर है। आप जी भरकर डुबकियां लगा सकते हैं। सदैव की भांति आपको निराश नहीं होना पड़ेगा...।"

उठ खड़ी हुई गंगा तथा स्वयं ही अपने वस्त्रों को जिस्म से जुदा करने लगी।

स्वामी की आंखों में वासना के कीड़े गिजगिजाने लगे।

उठकर वो स्वयं भी निःवस्त्र होने लगा।

फिर दोनों बिस्तर पर पहुंचकर काम-क्रीड़ाओं में मग्न हो गये।

कामुकता भरी सिसकारियों से कमरे का तापमान बढ़ने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

सवेरे स्नानादि से निवृत्त होने पर राधारूपी श्वेता आश्रम के प्रांगण में बने भव्य मन्दिर में पहुंची तथा पूजा-अर्चना की।

वो मन्दिर से बाहर निकल ही रही थी कि सामने से गंगा आ पहुंची।

"प्रणाम...बड़ी बहन जी...!" श्वेता ने हाथ जोड़ दिये।

"सदैव प्रसन्न रहो...।" भीनी-भीनी मुस्कान के साथ मधुर स्वर में कहा गंगा ने, "बहुत ही सौभाग्यशाली हो तुम राधा...!"

"मैं कुछ समझी नहीं बड़ी बहन जी...!"

"स्वामी जी की पारखी दृष्टि ने तुम्हारे गुणों को पहचानकर तुम्हें दीक्षा देने का निर्णय किया है—।"

"लेकिन स्वामी जी ने अभी तक मुझे नहीं देखा है...।"

"वो बहुत ही पहुंचे हुये सिद्ध योगी हैं। अन्तर्मन की आंखों से तुम्हें देख लिया उन्होंने और ये भी जान लिया कि तुममें धर्म, अध्यात्म तथा योग का प्रचार-प्रसार करने की प्रतिभा है, तभी तो उन्होंने तुम्हारा चयन किया है। वो तुम्हें दीक्षा देंगे, फिर तुम्हें प्रचार-प्रसार के लिये देश-विदेश में भेजा जायेगा। देश में इधर-उधर जाने के लिये तुम्हें आश्रम की कार तथा दो सेविकायें मिलेंगी। विदेश जाने के लिये तुम्हारा पासपोर्ट तथा वीजा

बनवाया जायेगा तथा हवाई हजाज से यात्रा का खर्चा, बाकी खर्चे भी आश्रम उठायेगा। रातों-रात तुम प्रसिद्ध हो जाओगी। तुम्हारे नाम के जय-जयकारे लगेंगे। लोग श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरण स्पर्श करेंगे। लोग पलक-पांवड़े बिछाकर तुम्हारा स्वागत करेंगे। सफर के लिये बढ़िया गाड़ियां, उत्तम श्रेणी का भोजन, फल, मेवे, दूध, जूस इत्यादि। ठहरने के लिये होटल के ए०सी० वाले कमरे! यूं समझो कि लाटरी ही खुल रही है तुम्हारी...।"

"मु...मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है बड़ी बहन जी...!" कृत्रिम प्रसन्नता व्यक्त करते हुये बोली श्वेता, "आश्रम में प्रवेश करते ही मुझे प्रमोशन मिल रहा है। मैं स्वामी जी की कसौटी पर खरी उतरने की पूरी चेष्टा करूंगी। वो मुझे कब दीक्षा देंगे–?"

❑❑❑

❑❑❑

कमरे से अटैच्ड बाथरूम का दरवाजा भीतर से बन्द करने पर श्वेता ने गिरेहबान के भीतर से बहुत छोटे साइज का फोन निकाला तथा केशव का नम्बर मिलाया–

"हैलो, श्वेता...!"

"नमस्कार, गुरुजी...!" दूसरी तरफ से केशव की आवाज आने पर वो धीमी आवाज में बोली, "थोड़ी देर पहले ही गंगा मेरे पास आई थी। वो बोली कि स्वामी जी ने अन्तर्मन की आंखों से मुझे परखकर दीक्षा देने का निर्णय कर लिया है। वो मुझे तरह-तरह के प्रलोभन दे रही थी। धर्म व अध्यात्म के प्रचार-प्रसार के लिये मुझे देश-विदेश भेजा जायेगा। मुझे बढ़िया ट्रीट मिलेगा। लोग मेरी जय-जयकार करेंगे। मेरे चरण स्पर्श करेंगे। मेरे स्वागत में पलक-पांवड़े बिछायेंगे।"

"यानि अपना प्लान सफल हो रहा है श्वेता...!"

"जी, गुरुजी...!"

"गुड...वैरी गुड। दीक्षा कहां दी जायेगी? मेरा मतलब कि गंगा ने बतलाया कि स्वामी कहां पर दीक्षा देगा–?"

"गंगा बतला रही थी कि दीक्षा, जप, तप इत्यादि के लिये आश्रम में ही विशेष कक्ष है। ये तो उसे नहीं बतलाया कि वो कक्ष कहां पर है–।"

"कोई बात नहीं। कितने बजे का कार्यक्रम है–?"

"रात का समय ही है गुरुजी! एक्यूरेट टाइम तो नहीं बतलाया है गंगा ने–।"

"कोई बात नहीं श्वेता!" फोन पर दूसरी तरफ से कहा केशव ने, "तुम्हें कतई घबराने की आवश्यकता नहीं है। शाम होने पर मैं, राजन और

करतार सिंह आश्रम के आस-पास ही होंगे। तुम्हारे फोन में जी०पी०एस० सिस्टम है–जिससे हमें तुम्हारी लोकेशन मिलती रहेगी। फोन में स्पेशल माइक है–तुम जो भी बातें करोगी–या दूसरा कोई करेगा, उसे रेडियो रिसीवर के माध्यम से हम सुनते रहेंगे। हिडेन कैमरा भी है तुम्हारे पास। स्वामी के सामने पहुंचने से पहले उसे ऑन कर लेना और स्वामी से उसके जुर्म स्वीकारने की चेष्टा करना। डरना मत। तुम्हें कुछ नहीं होने देंगे...।"

"मुझे आप पर पूरा भरोसा है गुरुजी! मैं महान केशव पण्डित की शिष्या हूं–डरने का प्रश्न ही नहीं उठता है। आज इस पाखन्डी स्वामी का खेल खत्म कर देना है आपको। इस दुष्ट को इसके किये की ऐसी सजा देनी है कि ये मरते दम तक याद करे...।"

"राधा...ओये राधा...!" बाहर से किसी ने दरवाजा नॉक करते हुये कहा, "बड़ी देर लगा रही है। स्नान तो पहले ही कर लिया था तूने। मुझे बाथरूम जाना है...।"

"बन्द करती हूं गुरुजी...! आश्रम की महिला बाहर खड़ी है...।" फुसफुसाकर बोलने पर श्वेता ने फोन बन्द किया तथा गिरेहबान से भीतर सरकाकर टोंटी खोलकर हाथ धोने लगी तथा बुदबुदाई–"बहुत पाप कर चुका है तू स्वामी रामशरण दास उर्फ देवा! आज रात को देख कि तेरे साथ क्या होता है–!"

❑❑❑

❑❑❑

श्वेता आश्रम के वर्कशॉप में एक महिला से पापड़ बनाना सीख रही थी कि बाहर से एक युवती आकर बोली, "बड़ी बहन जी ने तुम्हें अपने कार्यालय में बुलाया है राधा बहन!"

राधा बनी श्वेता ने तौलिये से हाथों को साफ किया तथा उस युवती के साथ चल दी।

कार्यालय के बाहर पहुंचकर युवती ने उसे भीतर जाने का संकेत किया तथा स्वयं पलटकर वहां से चली गई।

काले शीशे वाले दरवाजों को ढकेलकर श्वेता शानदार फर्नीचर वाले ऑफिस में प्रविष्ट होकर बोली, "आपने मुझे बुलाया, बड़ी बहन जी–?"

शीशे के टॉप वाली मेज के पीछे रिवॉल्विंग चेयर पर बैठी गंगा ने फाइल को मेज पर रखा तथा मधुर मुस्कान के साथ बोली–"आ जाओ, राधा! बैठो...तुमसे आवश्यक बात करनी है...।"

श्वेता मेज के इधर रखी दो में से एक कुर्सी पर बैठी तथा प्रश्न-सूचक दृष्टि से गंगा को देखने लगी।

गंगा ने दो में से एक ओरेंज जूस का गिलास उठाकर श्वेता के समक्ष रखा तथा दूसरा गिलास स्वयं के लिये उठाकर बोली—"जूस पीते हुये बात करते हैं। तुम्हें रात को ठीक आठ बजे...दीक्षा लेने के लिये विशेष कक्ष में मेरे साथ चलना है। पूजा-पाठ तथा छोटा-सा हवन भी होगा, जो शुद्धता के लिए होना आवश्यक है। सो तुम साढ़े सात बजे तक स्नान करके नये वस्त्र धारण कर लेना। जूस पीयो बहन...!"

श्वेता ने जूस की घूंट भरी।

गंगा ने भी थोड़ा जूस पीया तथा फिर बोली, "मस्तिष्क में कोई तनाव लाने की आवश्यकता नहीं है। दीक्षा का कार्यक्रम बहुत ही सरल होता है। बस, स्वामी जी की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना है तथा उनके निर्देशों का पालन करना है। वैसे मैं भी सुबह तक यहीं उपस्थित रहूंगी। एक सप्ताह तक दीक्षा का कार्यक्रम चलता रहेगा। दिन में विश्राम तथा आवश्यक पुस्तकों का अध्ययन करना है। योग तथा प्राणायाम का अभ्यास करना है। क्या हुआ...गिलास पकड़कर माथा क्यों पकड़ लिया तुमने? यूं झटके से क्यों खा रही हो तुम राधा...?"

"ना जाने क्यों जोर-जोर से चक्कर आ रहे हैं मुझे...।"

श्वेता हथेलियों से सिर को थामे हुये बोली, "ओह...बहुत घबराहट...ये...ये क्या हो रहा है मुझे...क्या इस जूस में कोई गड़बड़ी...?"

"हां—गड़बड़ी तो थी...।" कुत्सित किस्म की मुस्कान के साथ बोली गंगा, "जूस में नशीली दवा मिला दी थी मैंने। इसीलिये तो यहां बुलाया था तुम्हें। ना, उठने की चेष्टा मत करो...गिरकर चोट लगेगी। बेहोश तो होना ही है—कुर्सी पर बैठे-बैठे ही बेहोश हो जाओ ना—।"

बेचारी श्वेता ने सोचा भी नहीं था कि अचानक ही उसके साथ ऐसा कुछ हो जायेगा।

इससे पूर्व कि वो सोच-समझ पाती कि गंगा ने उसको जूस में नशीली दवा क्यों दी है...वो होशो-हवास खो बैठी—बेहोश हो गई वो।

उस ऑफिस के भीतर वाला दरवाजा खुला तथा स्वामी का पदार्पण हुआ।

❑❑❑

❑❑❑

गंगा ने मुस्कराकर स्वामी का स्वागत किया—फिर कुर्सी से उठकर बोली—"ये बेहोश हो चुकी है स्वामी जी! आपने आदेश दिया तो मैंने इसे नशीला जूस पिलाकर बेहोश कर दिया। परन्तु प्रोग्राम तो रात के लिये

तय हुआ था। मैंने राधा को बोल दिया था कि ये रात को आठ बजे तक तैयार हो जाये। लेकिन आपने तो दिन में ही...अभी तो दोपहर भी नहीं हुई है। लगता है कि इसकी खूबसूरती का कुछ ज्यादा ही जादू चल गया है आप पर—। धैर्य हुआ ही नहीं। लेकिन--धैर्य रखना चाहिये था प्रभु! ये दिन भर गायब रहेगी—आप भी गायब रहेंगे। घण्टे-दो घण्टे में तो आपका पेट भरेगा नहीं। आश्रम के लोगों को संदेह हो सकता...!"

स्वामी ने आगे बढ़कर गंगा को बांहों में भर लिया तथा उसके गुलाबी होंठों का थोड़ा रस निचोड़ने पर कहा—"ये ठीक है कि ये बला कि खूबसूरत है...रूप-यौवन से भरपूर। टी०वी० पर देखते ही नसें फड़फड़ा उठी थीं। परन्तु हम इतने अधीर भी नहीं हैं कि रात होने की प्रतीक्षा भी ना कर सकें...।"

"तो फिर...इसको दिन में ही बेहोश क्यों कराया है आपने—?"

"इसको अटैच्ड बाथरूम में लिये चलते हैं। इसने मेकअप किया हो सकता है—।"

"म...मेकअप...? क्या मतलव—?"

"मतलब भी समझ में आ जायेगा जानेमन—।"

स्वामी ने गंगा को मुक्त करके बेहोश श्वेता को यूं ही बांहों में उठा लिया कि मानो बहुत ही हल्की-फुल्की हो, फूल-पत्तियों से निर्मित।

वो ऑफिस के अटैच्ड बाथरूम में पहुंचा।

असमंजस तथा दुविधा में पड़ी गंगा भी उसके पीछे-पीछे बाथरूम में प्रविष्ट हुई तथा उसने भीतर से दरवाजा बन्द करने पर कहा—"मैं कुछ भी समझ नहीं पा रही हूं स्वामी जी! आपने पहले इसे बेहोश कराया—फिर मेकअप वाली बात की—मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा—।"

"थोड़ा धैर्य रखो डार्लिंग! सस्पैंस का अपना ही मजा होता है। पहले इस कन्या को वस्त्रों के साथ ही स्नान कराओ।"

"मैं...मैं कुछ समझी नहीं...।"

"हम जैसा कह रहे हैं—वैसा ही करो गंगे—।" कहने पर स्वामी ने बेहोश श्वेता को बाथरूम के फर्श पर लिटा दिया।

सस्पेंस के जाल में उलझी गंगा प्लास्टिक की नीली बाल्टी से नीला मग लेकर श्वेता पर पानी डालने लगी।

"साबुन भी लगाओ और इसके बदन को अच्छी तरह से धो डालो...।"

गंगा स्वामी के आदेश का पालन करने लगी।

"तौलिये से इसके बदन को साफ करो...।"

गंगा ने ऐसा ही किया तो चौंकी तथा बोली, "ये क्या स्वामी जी—इसका रंग...?"

"मेकअप के द्वारा इसका रंग गोरा किया गया था बालिके! परन्तु वास्तव में ये सांवली रंगत वाली है। इसका बाकी जिस्म तो सांवला दिखलाई पड़ने लगा है, लेकिन चेहरा नहीं। चैक करो। चेहरे पर फेंस मास्क तो नहीं है—?"

गंगा ने चैक किया तो श्वेता के चेहरे पर चढ़ा मास्क उतर गया—बालों की विग भी अलग हो गई।

"ये...ये तो कोई और ही है स्वामी जी...!" बौखलाकर बोली गंगा, "इसने मास्क, विग और मेकअप से अपना हुलिया बदला हुआ था। ये जानी-पहचानी सी लग रही है—। शायद इसे पहले भी मैंने देखा है...।"

"परसों ही तो देखा था गंगा! ये केशव पण्डित की चेली है...इसका नाम श्वेता गुप्ता है...।"

"के...केशव पण्डित की चेली? ले...लेकिन ये भेष बदलकर और अपना परिचय बदलकर हमारे आश्रम में क्यों आई है—?"

❑❑❑

❑❑❑

गम्भीर हो चले स्वामी ने सफेद रंग के चोले की भीतरी द गुप्त जेब से लक्की स्ट्राइक सिगरेट की डिब्बी व माचिस निकालकर एक सिगरेट सुलगा ली तथा कश लगाकर बोला, "असल बात क्या है...ये तो श्वेता ही होश में आने पर हमें बतलायेगी। लेकिन ये तय है कि ये यहां पर किसी खास मकसद से ही आई है। ये भी तय है कि इसको केशव पण्डित ने ही यहां पर भेजा है। यानि कोई-ना-कोई गड़बड़ी तो है। ओह...ओह...हुम्म...।"

"क...क्या हुआ स्वामी जी—?"

"बहुत चेष्टायें करने पर भी हमारे आदमी उस हरामजादी गुंजन का पता नहीं लगा पाये हैं। हो सकता है कि गुंजन किसी तरह केशव पण्डित तक जा पहुंची हो। उसने केशव पण्डित को सारी बातें बतला दी हों...।"

"फिर तो केशव पण्डित को पुलिस की मदद लेनी चाहिये थी स्वामी जी...!"

"नहीं—तुम केशव पण्डित को ठीक से नहीं जानती हो गंगा! वो बहुत ही कुत्ती चीज है। बहुत ही सुरता है वो। किसी पर कच्चा हाथ नहीं डालता वो। उसको मालूम है कि हमारी क्या हैसियत है। हमारे पास कितनी ताकत और पहुंच है। हमारे भक्तों और शिष्यों की संख्या लाखों-करोड़ों

में है। प्रदेश का मुख्यमन्त्री तक हमारा शिष्य है। हमें गुंजन के बयान या आरोप पर गिरफ्तार नहीं किया जा सकेगा। केशव ने हमें अपराधी साबित करने के लिये हमारे खिलाफ ठोस सबूत प्राप्त करने के लिये ही अपनी इस चेली को राधा बनाकर यहां भेजा होगा।"

"ओह...!" गंगा चिन्तित भाव से बोली, "ये...ये तो बहुत ही बुरा हुआ। माना कि श्वेता अब अपने मकसद में कामयाब ना हो पायेगी। लेकिन केशव पण्डित को आपकी वास्तविकता मालूम हो चुकी है। वो हाथ धोकर आपके पीछे पड़ जायेगा।"

"कुछ भी नहीं कर पायेगा वो...।" घमण्ड से गर्दन को अकड़ाकर कहा स्वामी ने, "वो डाल-डाल तो...हम पात-पात। वो दिमाग का जादूगर तो हम हरफनमौला...बाजीगर...मदारी और खलीफा! वो नहीं जानता कि हम क्या बला हैं। अपनी पर आयेंगे तो उसको चुटकी से मसल डालेंगे। हम उसको कुछ भी करने का अवसर ना देंगे। लेकिन उसने अपनी चेली को यहां भेजा है तो पूरी तैयारियों के साथ भेजा होगा। इसे जासूसी के साजो-सामान से लैस करके ही भेजा होगा। इसकी तलाशी लो...।"

गंगा ने तलाशी ली तो छोटे साइज का फोन हाथ लग गया।

स्वामी ने उससे फोन लेकर उसको खोला तथा बोला—

"इसमें जी०पी०एस० सिस्टम लगा है। इस सिस्टम से फोन धारक की लोकेशन मालूम पड़ जाती है। मालूम पड़ जाता है कि वो कहां पर है। लेकिन हमारे पास इसका भी तोड़ है...।"

"वो क्या स्वामी जी—? फोन को नष्ट कर देंगे क्या—?"

"फोन को नष्ट करने से बात थोड़े ही बनेगी गंगा! इस फोन को अभी हमारा कोई चेला मुम्बई से दूर ले जायेगा और किसी दरिया में फेंक आयेगा। तब यही माना जायेगा कि श्वेता उस दरिया में कूदी होगी। केशव पण्डित हम पर आरोप लगायेगा कि हमने ही श्वेता को दरिया में फिंकवा कर उसकी हत्या करा दी होगी...तो कहता रहे। वो अपने आरोप को साबित नहीं कर पायेगा। इस फोन को हम मुम्बई से दूर फिंकवा देंगे तो केशव को लगेगा कि श्वेता हमारे आश्रम में नहीं है। जबकि श्वेता हमारे आश्रम में ही होगी—तहखाने में...हमारी रंगशाला में...। इसकी पोशाक पर बटन कैसा है गंगा? ये पोशाक तो बटन वाली नहीं है...।" कहने पर स्वामी ने श्वेता के ब्लाउज पर लगे बटन जैसी वस्तु को अलग करके उसको ध्यानपूर्वक देखा तथा फिर बोला, "ये कोई कैमरा मालूम पड़ता है गंगा! ऐसे कैमरे जासूसी के लिये प्रयोग किये जाते हैं। हमारी वीडियो फिल्म बनाने के लिये ही ये इस कैमरे को लाई होगी। खैर, अब ये कैमरा

हमारे कब्जे में है। इसका फोन भी हमारे पास है। तुम इसको दूसरी पोशाक पहना दो गंगा और इसको अभी हमारी रंगशाला में पहुंचा दो। कोई इसके बारे में पूछे तो बोल देना कि अचानक ही इसकी तबियत बिगड़ गई थी। इस पर कोई बुरी आत्मा का प्रकोप है और हम इसका उपचार कर रहे हैं–।"

"ठीक है स्वामी जी! लेकिन मैं अभी तक ये नहीं समझ पाई हूं कि आपको राधा बनी श्वेता पर संदेह कैसे हुआ–?"

❑❑❑

❑❑❑

ना जाने कितने समय तक बेहोश रही श्वेता।

होश में आई तो वो किसी कक्ष में कुर्सी पर नायलॉन की डोरियों से बंधी बैठी थी।

चार ए०के० सैंतालीस धारी युवक करीब ही खड़े थे तथा सामने ही कुर्सी पर गंगा बैठी थी।

सिगरेट में कश लगाकर होंठों को गोलाकार करके कसैला धुआं श्वेता के चेहरे पर छोड़ा तथा कुत्सित मुस्कान के साथ बोली, "होश आ गया तुझे श्वेता गुप्ता–?"

वह चौंकी–बुरी तरह चौंकी।

"चौंक मत। तेरी पोल खुल चुकी है। तू जिस बाथरूम में छिपकर फोन पर अपने गुरु केशव पण्डित से बातें कर रही थी, वहां पर क्लोज सर्किट वाला कैमरा लगा था। कन्ट्रोल रूम में उपस्थित व्यक्ति ने वो सब देखकर स्वामी जी को बतला दिया था। तभी तो स्वामी जी के कहने पर मैंने तुझे नशीला जूस पिलाकर बेहोश कर दिया था। तेरा मास्क, विग और मेकअप उतारकर तेरा वास्तविक चेहरा देखा गया। तेरा फोन और कैमरा स्वामी जी के कब्जे में है। अब तू आश्रम के नीचे रंगशाला में कैद है...।"

"कोई चिन्ता नहीं...।" लापरवाही के साथ बोली श्वेता, "गुरुजी मुझे बचा लेंगे।"

"गलतफहमी की शिकार मत बन। जी०पी०एस० सिस्टम वाले फोन को मुम्बई से बहुत दूर किसी नदी में फेंक दिया गया होगा। तेरा गुरु समझेगा कि तू भी फोन के साथ थी। आश्रम की तलाशी लेने पर भी तू नहीं मिलेगी। हां–बाद में तेरी क्षत-विक्षत लाश शायद मिल जाये। अभी तो तुझ पर कयामत टूट पड़ने वाली है। हालांकि मेकअप उतरने पर तू गोरी-चिट्टी नहीं रही–लेकिन तेरे सांवले-सलोने रूप-यौवन में भी बला की कशिश है। रात होते ही स्वामी जी आयेंगे और तेरी इज्जत की बोटी-बोटी करके खा

जायेंगे। जब तेरे खूबसूरत जिस्म से उनका मन भर जायेगा तो...तेरी हत्या कर दी जायेगी...।"

"हे भगवान...!" मन-ही-मन बोली श्वेता, "यदि गुरुजी समय रहते मुझ तक नहीं पहुंचे तो...तो क्या होगा मेरा–?"

❑❑❑

❑❑❑

"प्लान के अनुसार श्वेता को प्रत्येक तीन घन्टे में मिस कॉल देनी थी...।" केशव रिस्टवॉच में टाइम देखकर बोला, "उसकी पिछली कॉल दस बजे आई थी। एक बजे उसे मिस कॉल देनी थी–लेकिन दो बजे तक भी मिस कॉल नहीं आई तो मैंने उसको कॉल करना चाहा–लेकिन उसका फोन बन्द है। जबकि उसे फोन बन्द करने को नहीं कहा गया था। रेडियो रिसीवर ऑन किया तो फोन में लगा ट्रांसमीटर माइक्रोफोन भी काम नहीं कर रहा है।"

"हे भगवान...!" सोफिया चिन्तित होकर बोली, "अपनी श्वेता किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ गई है–?"

ड्राइंगरूम में उपस्थित राजन, करतार सिंह तथा चांदनी भी चिन्तित हो चली।

"ऐसा होना तो नहीं चाहिये सोफी। क्योंकि स्वामी ने दीक्षा का कार्यक्रम रात को आठ बजे रखा है। अभी तो दिन का ही समय है। राजन, मालूम तो करो कि श्वेता के फोन की लोकेशन क्या है–?"

"जी–गुरुवर–।"

राजन ने मेज पर रखे लैपटॉप को खोला तथा उसके की-बोर्ड के बटनों को पुश करने लगा।

"ओ...नो...।" स्क्रीन पर देखते हुये वो चौंककर बोला, "ये–ये क्या गुरुवर...?"

"क्या हुआ राजन–?"

"ये देखिये, गुरुवर...।" राजन लैपटॉप की स्क्रीन केशव की तरफ घुमाकर बोला, "श्वेता के फोन की लोकेशन आश्रम में नहीं है–ये लोकेशन तो मुम्बई से बाहर की है...।"

केशव ने लैपटॉप अपने करीब सरका लिया तथा कहा–"हां–ये तो मुम्बई से बाहर की लोकेशन है राजन...।"

"इसका मतलब की है प्राहवा जी–? की श्वेता आश्रम विच नी है? ओ...मुम्बई से बाहर है–?"

"ऐसा होना तो नहीं चाहिये करतार सिंह! श्वेता को तो आश्रम में ही होना चाहिये।"

"लेकिन उसका फोन तो मुम्बई से बाहर गोवा जाने वाली सड़क को दर्शा रहा है केशव...।" चिन्तित सोफिया बोली, "हो सकता है कि किसी कारण से श्वेता वहां गई हो—?"

केशव की झील-सी नीली आंखें सोचने वाली मुद्रा में सिकुड़ चलीं।

वह उठा तथा बोला, "जल्दी से गाड़ी निकालो करतार सिंह। ये लैपटॉप उठा लो राजन। हम वहां चलकर देखते हैं, जहां की ये लोकेशन है। वहीं चलकर मालूम पड़ेगा कि...असल माजरा क्या है—!"

❑❑❑

❑❑❑

जाने का प्रोग्राम तो सिर्फ केशव, करतार सिंह व राजन का ही था—लेकिन सोफिया व चांदनी भी जिद करके उनके साथ चल दीं।

लाल रंग की टाटा सफारी को करतार सिंह ड्राइवर कर रहा था तो राजन उसकी बगल वाली सीट पर बैठा हुआ था।

सोफिया व चांदनी के साथ केशव पीछे की सीट पर था तथा गोद में रखे लैपटॉप की स्क्रीन को देखे जा रहा था।

गाड़ी की रफ्तार एक सौ किलोमीटर प्रति घण्टा की थी तथा वो मुम्बई से बाहर निकलकर गोवा जाने वाली सड़क पर दौड़ लगा रही थी।

"फोन की लोकेशन काफी देर से एक ही स्थान पर है। यानि वो फोन सफर में नहीं है—बल्कि एक ही स्थान पर है। शायद आश्रम की तरफ से इस स्थान पर कोई कार्यक्रम हो और श्वेता भी उस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिये गई हो। लेकिन इस स्थान पर कोई शहर या कस्बा नहीं है। शायद कोई गांव हो। या स्वामी ने कोई छोटा-मोटा आश्रम बनाया हुआ हो। ये स्थान यहां से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर ही है। हम लोग सात-आठ मिनट में ही वहां पहुंच जायेंगे...।" इतना कहने पर केशव ने कोट की जेब से चारमीनार सिगरेट की डिब्बी तथा गोल्डन कलर का लाइटर निकाला।

एक सिगरेट सुलगाकर कश मारने लगा वो।

लगभग सात मिनट पश्चात् केशव ने कहा, "गाड़ी को सड़क के किनारे रोक लो करतार सिंह। फोन की लोकेशन यहीं की है...।"

करतार सिंह ने गाड़ी को सड़क से नीचे उतारकर रोक दिया।

सभी बाहर निकले।

"यहां तो कोई कस्बा तो क्या गांव भी नहीं है केशव...।" चारों

तरफ नजरें दौड़ाते हुये बोली सोफिया, "कोई बस्ती नहीं। बस स्टॉप वगैरा भी नहीं है। ना ही कोई आश्रम वगैरा ही दिखलाई पड़ रहा है। कोई इन्सान भी दिखलाई नहीं पड़ रहा है। श्वेता यहां क्या करने आई होगी—?"

कोई जवाब देने की बजाय केशव लैपटॉप की स्क्रीन को देखते हुये सड़क की विपरीत दिशा में बढ़ने लगा।

राजन, करतार सिंह, सोफिया व चांदनी भी उसके पीछे-पीछे चल दीं।

एक गोलाकार झील के करीब पहुंचकर रुका केशव तथा बोला—"मेरे ख्याल से श्वेता का फोन इस झील के भीतर होना चाहिये।"

चांदनी की सिसकारी-सी निकल गई।

"ओह, नो...!" सोफिया सीने पर हथेली रखकर कंपकंपाते स्वर में बोली, "श...श्वेता को सही-सलामत रखना प्रभु...इस झील में सिर्फ उसका फोन ही हो!"

"राजन...करतार सिंह...।" बोला केशव, "झील में उतरकर देखो...कुछ मिलता है क्या—?"

❑❑❑

❑❑❑

गुरु का आदेश मिलते ही राजन व करतार सिंह ने अपने वस्त्र, जूते तथा जुर्राबें उतारीं और झील में कूद गये।

सोफिया व चांदनी व्याकुलता के साथ हथेलियों को परस्पर मसलते हुये इधर-से-उधर, उधर-से-इधर चहलकदमी-सी करने लगीं।

जबकि केशव ने चारमीनार ब्राण्ड वाली सिगरेट सुलगा ली तथा झील के करीब पहुंचकर कश लगाने लगा—धुआं उड़ाने लगा।

"ईश्वर करे कि सब कुछ ठीक हो...।" चहलकदमी करते हुये बुदबुदाई सोफिया, "श्वेता एकदम सही-सलामत हो। मेरे मन में बार-बार जो ख्याल उभर रहे हैं...वो एकदम गलत निकलें। श्वेता का अपना कोई नहीं है—ना घरवाले, ना ही रिश्तेदार। वो हमें ही अपना सबकुछ मानती है। उसे कुछ हो गया तो...बहुत बुरा होगा। केशव अपने आपको कभी क्षमा न कर पायेंगे—क्योंकि केशव ने ही श्वेता को राधा बनाकर स्वामी के आश्रम में भेजा था। नहीं, प्रभु...ऐसा अनर्थ नहीं होना चाहिये...।"

"गुरुवर...।" झील के पानी से सिर बाहर निकालकर बोला राजन, "कुछ दिखलाई नहीं पड़ा है...।"

"पूरब साइड में आगे बढ़ो राजन। फोन की लोकेशन उधर की ही है...।"

राजन पानी के भीतर चला गया।

"हुणे कुछ वी नी मिला है प्राहवा जी...।"

"उधर...पूरब की तरफ जाकर देखें. करतार सिंह...।"

"चंगी गल कीती प्राहवा जी...।" कहने पर करतार सिंह पानी के भीतर चल गया।

कोई पांच मिनट पश्चात् राजन तैरते हुये झील से बाहर आया तथा हाथ में थमी वस्तु को केशव की तरफ बढ़ाकर बोला—"इस पोलीथीन के भीतर फोन मालूम पड़ता है गुरुवर। शायद श्वेता का ही हो—।"

सोफिया व चांदनी भी लपकते हुये केशव के नजदीक चली आई।

केशव ने पोलीथीन को खोलकर उसके भीतर से फोन निकाला तथा कहा—"हुम्म...ये श्वेता वाला ही फोन है—।"

"ले...लेकिन ये फोन यहां झील में कैसे भाई साहब—?" चांदनी ने पूछा।

उधर पानी से सिर बाहर निकालकर करतार सिंह ने राजन को झील के बाहर देखा तो वो भी किनारे की तरफ तैरने लगा।

"वापिस, करतार सिंह...।" चांदनी के प्रश्न का उत्तर दिये बिना केशव तेज स्वर में बोला, "राजन को श्वेता का फोन इसी झील-से मिल गया है। झील के तल में जाकर देखो...ठीक से देखो कि श्वेता है कि नहीं? तुम भी जाकर देखो, राजन...।"

राजन झील में कूद गया।

"क...क्या मतलब...?" सोफिया बुरी तरह घबराकर बोली, "श्वेता झील के भीतर? न...नहीं, ऐसा नहीं हो सकता है। ये...ये नहीं हो सकता...।"

"रिलेक्स, सोफी...।" केशव उसकी गोरी-चिट्टी व कोमल कलाई पकड़कर बोला, "कन्ट्रोल योर सेल्फ! अभी कुछ नहीं हुआ है। ईश्वर से प्रार्थना करो कि झील से श्वेता ना मिले...।"

सोफिया के साथ चांदनी ने भी हाथों को जोड़कर आंखें मूंद लीं तथा ईश्वर से प्रार्थना करने लगीं।

आधा घण्टा पश्चात् राजन व करतार सिंह ने झील से बाहर निकलकर बतलाया कि पानी के भीतर 'कुछ' नहीं मिला है।

सोफिया तथा चांदनी ने हाथों को जोड़कर तथा आसमान की तरफ देखते हुये मन-ही-मन ईश्वर का धन्यवाद अदा किया।

केशव ने गोल्डन कलर के लाइटर से सिगरेट सुलगा ली।

"गल कुश समझ विच नी आंदी है प्राहवा जी...।" करतार सिंह

बोला, "श्वेता दा फोन ऐत्थे क्यों है? फोन तो श्वेता दे नाल होना चाहिदा। ऐसे...।"

झील-सी नीली आंखों को सिकोड़कर झील के किनारे-किनारे केशव ने सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये कुछ दिमाग खर्च किया, फिर कदमों को विश्राम देकर बोला, "मेरा विचार ये है कि श्वेता यहां नहीं आई थी। यहां पर सिर्फ उसका फोन ही आया था। आया नहीं, लाया गया था। इस झील में फेंकने के लिये...।"

"लेकिन क्यों केशव? श्वेता के फोन को इस झील में क्यों फेंका गया? किसने फेंका है—?"

"जाहिर है सोफी कि ये काम स्वामी ने ही कराया होगा।"

"लेकिन क्यों—?"

"ऐसा क्यों हुआ, ये तो अभी नहीं कहा जा सकता है सोफी—लेकिन श्वेता का राज खुल चुका है। स्वामी को पता चल गया कि राधा के रूप में श्वेता उसके आश्रम में पहुंची है। शायद श्वेता जब फोन पर मुझसे बात कर रही थी तो किसी ने सुन लिया होगा। या फिर वहां पर कैमरा लगा हुआ था। यानि श्वेता पकड़ी जा चुकी है। स्वामी को जानकारी हो चुकी है कि मैंने श्वेता को राधा बनाकर भेजा है—अर्थात् मुझे उसकी वास्तविकता मालूम हो चुकी है और मैं उसे अपने जाल में फंसाने के चक्कर में हूं। स्वामी को लगा होगा कि मैं श्वेता की खोज में उसके आश्रम में पहुंचूंगा। उसको ये भी मालूम हो चुका है कि श्वेता के फोन में जी०पी०एस० लगा है—जिसके कारण मुझे श्वेता की लोकेशन मालूम हो जायेगी और मैं श्वेता तक पहुंच जाऊंगा। सो उसने श्वेता के फोन को मुम्बई से दूर इस झील में फिंकवा दिया। फोन को पोलीथीन में इसलिये बन्द किया गया, ताकि फोन खराब ना हो और उसका जी०पी०एस० ये दर्शाये कि श्वेता आश्रम में नहीं है। स्वामी की सोच के मुताबिक...मैं आश्रम में जाकर श्वेता के बारे में पूछूंगा तो वो बोल देगा कि श्वेता उसके आश्रम में नहीं आई थी। फोन वहां होता तो मैं जी०पी०एस० के कारण ये साबित कर देता कि श्वेता का फोन आश्रम में है तो श्वेता भी वहीं पर है। अब मैं ये बात नहीं बोल सकता। अपनी समझ में तो स्वामी ने बहुत ही चालाकी भरा कदम उठाया है और उसने अपना गेम शुरू कर दिया है।"

"यानि श्वेता खतरे में है केशव! उसे मदद की जरूरत है। तुम्हें पुलिस के साथ आश्रम पर हमला बोल देना...।"

"ये जोश या हड़बड़ाहट से काम लेने का समय नहीं है सोफी! हो सकता है कि स्वामी ने श्वेता को किसी गुप्त स्थान पर पहुंचा दिया हो।

पहले मुझे ये मालूम करना है कि श्वेता को कहां पर रखा गया है–?"

"ले–लेकिन...।" सोफिया ने पूछा, "ये कैसे मालूम करोगे तुम केशव–?"

❑❑❑

❑❑❑

"आप तो बहुत अच्छी हिन्दी बोल लेती है लिली जी...।"

"बचपन से ही इन्डिया आती रही हूं गंगा जी...।"

बॉबकट बालों तथा हरी आंखों वाली खूबसूरत युवती काले रंग की धोती तथा हरे रंग के कुर्ते में थी। लाल रंग के पर्स को उतारकर दूसरे कन्धे पर लटकाकर गंगा से बोली, "बीस वर्ष की आयु में वृन्दावन वाले इस्कॉन टेम्पल में रहकर राधा-कृष्ण की भक्ति करने लगी थी। पूज्य स्वामी राधा रमण जी के सान्निध्य में श्रीमद भगवत गीता का अध्ययन किया। कृष्ण भक्ति वाले ग्रन्थों का अध्ययन किया। संस्कृत तथा हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। सो हिन्दी भाषा पर पूरा होल्ड हो गया है। इसी माह मुम्बई वाले इस्कॉन टेम्पल में आई हूं। यहां के आश्रम के बारे में सुना तो यहां आकर स्वामी जी का प्रवचन सुना। क्या मैं यहां की सदस्यता प्राप्त कर सकती हूं गंगा जी–?"

तुझ जैसी खूबसूरत युवती को देखकर स्वामी के मुंह में पानी भर जायेगा। वो तुझे अपनी खासमखास चेली बना लेंगे। उन्हें तो तुझ जैसी हसीना की तलाश रहती है।

मन-ही-मन बुदबुदाने पर गंगा बोली, "अवश्य! क्यों नहीं?"

"मैं अभी सदस्यता प्राप्त करना चाहती हूं...गंगा जी।"

"ठीक है। चलिये, मेरे कार्यालय में चलिये और एक प्रपत्र भर दीजिये...आइये।"

गंगा लिली को अपने कार्यालय में ले गई।

रिवॉल्विंग चेयर पर बैठकर उसने मेज की दराज में से एक फार्म निकाला तथा सामने बैठी लिली के सामने मेज पर रखकर बोली, "इसको भर दीजिये लिली जी। कलमदान में पेन है। कोई बात समझ में न आये तो मुझसे पूछ सकती हैं आप...।"

"इसे भी भर देती हूं गंगा जी। लेकिन एक बात तो बतलाइये मुझे...।" कहने पर लिली ने कुर्सी से थोड़ा आगे खिसककर कोहनियां मेज पर टिका दीं तथा गंगा की आंखों में आंखें डालकर बोली–"क्या यहां पर मेरे रहने की...खाने-पीने की व्यवस्था हो जायेगी? बदले में मैं आश्रम का कोई भी कार्य करूंगी। क्या है कि इस्कॉन टेम्पल में भी मुझे तमाम

सुविधायें उपलब्ध हैं–परन्तु यहां की हरियाली, जंगल, प्राकृतिक वातावरण ने मुग्ध कर दिया है...तेरा नाम गंगा ही है ना–?"

"नहीं–मेरा नाम नीलम है...नीलम बत्रा–।"

मानो गंगा कहीं खो चुकी थी तथा उसकी आवाज मानो किसी गहरे कुएं से ही निकल रही थी।

ये कमाल लिली की उन हरी आंखों का ही था, जिन्होंने गंगा की आंखों में झांकते हुये उसको अपने वशीभूत कर डाला था–उसके मस्तिष्क को अपने नियन्त्रण में लेकर उसको सम्मोहित या हिप्नोटाइज कर डाला था।

"यहां कब और कैसे आई थी तू? यहां आने से पहले क्या करती थी? यहां आने पर वास्तव में तेरा काम क्या है–? बिना कुछ छिपाये अपने बारे में सबकुछ बतला और सच-सच बतला–।"

"दिल्ली के सीमापुरी इलाके की रहने वाली हूं मैं...।" गंगा मानो नींद में बोल रही थी, "मॉडलिंग और फिल्मों का शौक था–लेकिन घरवाले इसके सख्त खिलाफ थे। भागकर मुम्बई आई थी–लेकिन किसी ने भी फिल्म या टी०वी० सीरियल में काम नहीं दिया। हां–बेवकूफ बनाने को ऑडिसन लेते थे और रात को मेरे साथ हमबिस्तर होते थे। कई लोगों के बिस्तर गर्म करने पर भी जब काम नहीं मिला तो गुजारे के लिये कॉलगर्ल रैकेट से जुड़कर धन्धा करने लगी थी। एक दिन आश्रम में स्वामीजी का प्रवचन सुनने के लिये आई तो स्वामी जी मुझ पर मोहित हो गये। प्रवचन के पश्चात् मुझे अपने कक्ष में बुलाया तथा मेरे बारे में पूछा तो मैंने अपने बारे में सच-सच बतला दिया था। तब वो मुझे अपनी रंगशाला में ले गये। रातभर ड्रिंक के साथ वासना का खेल चला था। वो बोले थे कि मैं आश्रम में रहने लगूं–मुझे हर तरह की सुख-सुविधा मिलेगी। बस, मैं यहां रहने लगी। नीलम बत्रा से गंगा देवी बन गई। महिला आश्रम की संचालिका भी हूं और स्वामी की खास चेली भी हूं। स्वामी पूरा अय्याश है। वो आश्रम की खूबसूरत युवतियों के साथ भी मौज-मस्ती करता है। कोई विरोध करे तो उसे मारकर स्वामी उसकी लाश को ठिकाने लगवा देता है। मैं सभी कामों में उसकी मदद करती हूं–।"

"श्वेता गुप्ता कहां है–?"

"वो आश्रम के नीचे वाले हिस्से में कैद है। वो यहां पर राधा बनकर आई थी। लेकिन वो बाथरूम में बन्द होकर फोन पर अपने गुरु केशव पण्डित से बात कर रही थी। बाथरूम में क्लोज-सर्किट टी०वी० वाला कैमरा लगा था। कन्ट्रोल रूम में एक सेवक ने देखा तो स्वामीजी को इन्फॉर्म

कर दिया। स्वामीजी के कहने पर मैंने श्वेता को नशीला जूस पिलाकर बेहोश कर दिया था और फिर श्वेता को नीचे पहुंचा दिया गया।"

"वो ठीक तो है ना? स्वामी ने उसके साथ कुछ ऐसा-वैसा तो नहीं किया है—?"

"नहीं। दिन में स्वामी पूजा-पाठ, प्रवचन, योग साधना, चिकित्सा इत्यादि के कार्यों में व्यस्त रहता है। रात होने पर ही वो नीचे बनी रंगशाला में पहुंचेगा और श्वेता के साथ मौज-मस्ती...।"

"नीचे जाने का रास्ता कहां से है—?"

"मेरे इसी ऑफिस से...वो जो दरवाजा है ना—उसके परे एक गैलरी है और फिर नीचे जाने के लिये सीढ़ियां हैं। स्वामी के साधना-कक्ष से भी नीचे जाने का रास्ता है।"

"नीचे सिक्योरिटी की क्या व्यवस्था है—?"

"एक दर्जन गार्डस् रूपी गुन्डे हैं। वो नीचे ही रहते हैं। उनके पास ए०के० सैंतालीस, रिवॉल्वरें तथा पिस्टल जैसे हथियार होते हैं। वो स्वामी के जर खरीद गुलाम जैसे हैं—स्वामी के लिये कुछ भी कर सकते हैं वो! स्वामी के हुक्म पर कत्ल कर देते हैं और लाश को ठिकाने भी लगा देते हैं।"

"थैंक्यू, गंगा उर्फ नीलम...।" लिली ने कन्धे पर लटका पर्स उतारकर मेज पर रखा तथा उसमें से सेलफोन निकालकर बदले हुये स्वर में बोली, "मैं लिली नहीं...सोफिया पण्डित हूं। श्वेता के बारे में जानने के लिये ही लिली बनकर आई थी। अब तेरे स्वामी की खैर ना होगी। मैं फोन करके केशव को बुला रही हूं। स्वामी तो खैर बहुत ही खतरनाक मुजरिम है। उसके लिये तो फांसी की सजा पहले से ही तय है...लेकिन...तू भी मुजरिम है...तू भी...बचेगी...नहीं...गिरफ्तार...सजा...ओह... ये...क्या...हो...रहा...?"

लिली रूपी सोफिया लाख प्रयत्न करके भी स्वयं को अचेत होने से नहीं बचा सकी।

कुर्सी पर बैठे-बैठे ही वो सुध-बुध खो बैठी।

लेकिन कैसे?

अचानक ही क्या हो गया था?

❑❑❑

❑❑❑

"मैडम जी...मैडम जी...।"

सोफिया की चेतना जाग्रत हुई तो उसे श्वेता की आवाज सुनाई पड़ी।

उसने आंखें खोल दीं तो श्वेता दिखलाई पड़ी—जो कि सामने ही कुर्सी पर बन्धी बैठी थी।

वो स्वयं भी कुर्सी पर बैठी हुई थी तथा नायलोन की डोरियों से इस कदर जकड़ी हुई थी कि चेष्टायें करने पर भी हिल नहीं सकती थी।

इधर-उधर नजरों को दौड़ाकर उस बड़े आकार के वर्गाकार कमरे को देखा, जिसका दरवाजा बन्द था।

"आप...ठीक तो हैं ना मैडम जी...?" चिन्तित श्वेता ने पूछा।

"हां—ठीक हूं श्वेता।" वह ठण्डी आह-सी भरकर बोली, "लेकिन तुमने मुझे कैसे पहचाना? मैं तो मास्क और विग लागकर...।"

"नहीं—इस समय आप अपने वास्तविक रूप में हैं मैडम जी...।"

"ओह...यानि मेरा मास्क, विग इत्यादि हटा दिये गये हैं। मैं यहां तुम्हारा पता लगाने के लिये आई थी। तुम्हारे फोन में लगे जी०पी०एस० के सहारे हम लोग गोवा वाली रोड पर पहुंचे थे और एक झील से तुम्हारा फोन बरामद हुआ था। केशव समझ गये थे कि तुम पकड़ी गई हो और धोखा देने के लिये स्वामी ने तुम्हारा फोन उस झील में फिंकवा दिया है। केशव के प्लान के मुताबिक मैं लंदन निवासी लिली बनकर यहां आई और गंगा को एक काल्पनिक स्टोरी सुनाकर आश्रम की सदस्यता लेने की इच्छा व्यक्त की। फिर मैंने उसको हिप्नोटाइज्ड करके तुम्हारे बारे में जानकारी हासिल की। फिर मैं केशव को फोन करने जा रही थी कि अचानक ही अपनी सुध-बुध खो बैठी। जबकि मैंने कुछ खाया-पीया भी नहीं था। समझ में नहीं आया कि एकदम से बेहोश कैसे हो गई...?"

"गंगा के ऑफिस में गैस छोड़ी गई थी मिसेज केशव पण्डित...।"

सोफिया तथा श्वेता ने चौंककर ये जानने की चेष्टा की कि वो आवाज किसकी थी?

❑❑❑

❑❑❑

"इधर-उधर देखने पर हम दिखलाई नहीं पड़ेंगे सोफिया एन्ड श्वेता...।" वो भारी-भरकम आवाज पुनः उभरी, "हम तो तुम दोनों को देख सकते हैं—लेकिन तुम हमें नहीं देख सकती हो। क्योंकि हम तुम दोनों को सी०सी०टी०वी० के माध्यम से कन्ट्रोल रूम में बैठकर देख रहे हैं और माइक पर बोल रहे हैं। कमरे में लगे स्पीकर्स के माध्यम से हमारी आवाज तुम दोनों के चारों कानों तक पहुंच रही है। तुम्हारे होश में आने की ही प्रतीक्षा थी हमें सोफिया। हम अभी वहां पहुंच रहे हैं...।"

"यह आवाज तो स्वामी की मालूम पड़ती है मैडम जी...।"

"हां–स्वामी की ही आवाज है श्वेता। वो यहां आ रहा है...।"

"लेकिन हम दोनों क्या करेंगी मैडम जी? हम तो बन्धी हुई हैं--चाहकर भी कुछ नहीं कर पायेंगी हम दोनों। ये स्वामी बहुत ही खतरनाक है। ना जाने हमारे साथ क्या करेगा–!"

दरवाजा खुला तथा गंगा कमरे में प्रविष्ट होकर बोली, "ये सस्पैंस अधिक देर तक नहीं रहेगा। स्वामी जी पधार रहे हैं। ये तो मुझे भी मालूम नहीं कि वो तुम दोनों के साथ क्या करेंगे–लेकिन जो भी करेंगे, वो तुम दोनों को कतई भी पसन्द नहीं आयेगा–।"

एक कुर्सी खींचकर वो दोनों के सामने बैठ गई। गिरेहबान में से लक्की स्ट्राइक सिगरेट की डिब्बी व माचिस निकाल ली।

माचिस की तीली से एक सिगरेट सुलगा ली गंगा ने तथा कश लगाकर गुलाबी होंठों को गोलाकार करके कसैले धुएं की बौछार सोफिया के चेहरे पर छोड़ी तथा घातक किस्म की मुस्कान के साथ बोली–"हैलो...लिली! हाऊ आर यू? खूब बेवकूफ बनाया तूने मुझे सोफिया पण्डित। लेकिन फिर भी गच्चा खा गई तू। ठीक वैसे ही...जैसे ये...श्वेता गुप्ता खा गई थी। आश्रम के प्रत्येक हिस्से में सी०सी०टी०वी० कैमरे लगे हुये हैं और कन्ट्रोल रूम से सभी हिस्सों को वॉच किया जाता है। तूने मुझे हिप्नोटाइज करके थोड़ी जानकारी तो निकाल ली थी सोफिया–लेकिन केशव पण्डित को फोन करने से पहले ही मेरे ऑफिस में गैस छोड़ दी गई। तेरे साथ मैं भी बेहोश हुई थी। लेकिन स्वामीजी ने जड़ी-बूटी सुंघाकर मुझे जल्दी ही होश में ला दिया था। अब क्या होगा तुम दोनों का...? खैर, जो भी होगा...अभी मालूम पड़ जाने वाला है। स्वामीजी बस...पधारने ही वाले हैं। स्वामीजी तो इस श्वेता पर ही लट्टू थे। बहुत खुश थे कि आज की रात एक सांवली-सलोनी युवती के साथ मौज-मस्ती करेंगे। लेकिन उनके जाल में तो तू भी फंस गई सोफिया। मानना पड़ेगा कि तू बला की खूबसूरत है। विश्वास ही नहीं होता कि तू उस लम्बू लड़के आशीर्वाद की मम्मी है। कहीं से भी तू इतनी उम्र की नहीं लगती है। मुश्किल से तीसेक वर्ष की ही लगती है। मेरा अन्दाजा तो यही है कि स्वामी जी आज रात के लिए तुझको ही चुनेंगे। हो सकता है कि वो तुम दोनों को ही चुन लें। इस उम्र में भी वो भरपूर मर्द हैं। हों भी क्यों नहीं–मर्दानगी बढ़ाने वाली दवाइयों का इस्तेमाल करते रहते हैं। अपने वास्ते वो अपने हाथों से देशी जड़ी-बूटियों से चटनी, हलवा, च्यवनप्राश...और भी ना जाने क्या-क्या बनाते रहते हैं। आज की रात तुम दोनों के लिये ही कयामत की रात साबित होने वाली है...।"

सोफिया ने गुलाबी होंठों पर उपहास उड़ाने वाली मुस्कान उभारी तथा व्यंगपूर्ण भाव से बोली, "ये तो आने वाला समय ही बतलायेगा कि आज की रात किसके लिये कयामत की रात साबित होने वाली है–!"

❑❑❑

❑❑❑

काली पोशाक वाले छः गार्डस् धड़धड़ाते हुये कमरे में प्रविष्ट हुये–जिनमें से चार के हाथों में ए०के० सैंतालीस तथा दो के हाथों में रिवॉल्वरें थीं।

"हरि ओम...हरि ओम...।" कहते हुये स्वामी ने भी वहां कदम रखे।

लेकिन वो सफेद रंग के चोले में नहीं था–वो काली पैन्ट तथा काले ओवर कोट में था। सिर पर भी काला हैट था तथा पैरों में काले रंग के चमचमाते हुये लैदर शूज थे।

"हैलो, मिसेज पण्डित...।" सोफिया के सामने पहुंचकर वो कुत्सित किस्म की मुस्कान के साथ बोला, "हाऊ आर यू? चू...चू...चू...अफसोस कि दिमाग के जादूगर के उठाये गये दोनों कदम ही नाकाम साबित हुये हैं। पहले उसने अपनी इस चेली श्वेता को राधा बनाकर यहां भेजा–फिर तुम्हें भेजा। लेकिन तुम दोनों ही पकड़ी गईं। अब क्या होगा...तुम दोनों का...?"

"हमारी छोड़ तू स्वामी–अपनी सोच–।" सोफिया उसकी आंखों से अपनी नजरों के 'पेच' लड़ाते हुये बोली, "तेरा क्या होगा–?"

"ऐ...तमीज से बात कर स्वामीजी से...।" गंगा सोफिया के सिर के बालों को मुट्ठी में जकड़कर बोली, "इनसे तू-तड़ाक से बात की तो...बहुत ही बुरा अन्जाम होगा तेरा। जानती नहीं कि इनका समाज में कितना मान-सम्मान है? आम लोगों की बात तो छोड़...प्रदेश का चीफ मिनिस्टर भी इनका शिष्य है और इनके चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेता है। क्या मन्त्री, क्या नेता, क्या पुलिस वाला और क्या सरकारी ऑफिसर...सभी इनके चरणों की धूल पाने के लिये व्याकुल रहते हैं। इनका इशारा होते ही सेठ लोग अपनी तिजोरियों का मुंह खोल देते हैं। इन्हें भगवान का अवतार मानकर पूजा जाता है...।"

"गिद्ध की पैरवी एक चील कर रही है...।" बालों के खिंचने से हो रही पीड़ा को नजरअन्दाज करके व्यंगपूर्ण भाव से बोली सोफिया, "कौन-से मुंह से तू इस पाखंडी स्वामी की पैरवी कर रही है? क्यों नहीं...तू भी तो इसी की चेली है। कुछ समय पहले तूने ही स्वीकार किया था कि

हीरोइन बनने के लिये दिल्ली से भागकर मुम्बई आई थी। फिल्मों, टी०वी० सीरियल में काम पाने के लिये लोगों को 'खुश' किया तूने। जब नाकाम रही तो...कॉलगर्ल बन गई थी। कागज के चन्द टुकड़ों के लिये तू अपनी इज्जत बेचती फिरती थी। बाद में ये स्वामी तुझ पर मर मिटा तो तू इसकी खासम-खास चेली बन गई। इसके बुरे कर्मों की हिस्सेदार बन गई तू। नौ सौ चूहे खाने वाली बिल्ली एक काफिर को हाजी साबित करने पर तुली हुई है...आह...!"

"अपनी जुबान को लगाम दे तू सोफिया पण्डित...।" उसके रेशमी केशों को झटका मारकर गुर्राई-सी गंगा, "मत भूल कि तू इस वक्त हमारे कब्जे में है और हमारे रहमो-करम पर है। छह खूंखार और हथियारबन्द गुन्डे यहां पर हैं तो छः बाहर मौजूद हैं। तुझे और इस श्वेता को स्वामी जी का इशारा होते ही गोलियों से भूनकर रख देंगे।"

"इसके बालों को छोड़ो गंगा डार्लिंग...।" स्वामी गंगा के हाथ को सोफिया के केशों से अलग करके बोला, "तुम्हें नाहक ही मिर्ची लग रही है। मिसेज पण्डित ने कुछ गलत तो कहा नहीं है। जो तुम हो, वो ही बतला रही है ये तुम्हें। क्या तुम्हें याद है कि हमसे पहले कितने मर्दों का बिस्तर गर्म कर चुकी हो तुम–?"

ठिठाई से हंसी गंगा और हथेली-पर-हथेली मारकर बोली, "ये तो बहुत ही कठिन प्रश्न किया आपने स्वामी जी। कम्प्यूटर पर भी हिसाब जोड़ूं तो ठीक-ठीक नहीं बतला सकूंगी कि आपके अलावा कितने मर्दों के साथ हमबिस्तरी कर चुकी हूं मैं। लेकिन इस सती-सावित्री ने मेरे साथ-साथ आपका भी अपमान किया है। इसे इसकी बदतमीजी की सजा तो मिलनी चाहिये कि नहीं–?"

ओवरकोट की जेब से सिल्वर फ्लास्क निकालकर स्वामी ने उसमें भरी व्हिस्की की दो घूंट भरी तथा फिर कहा–"हां--हमारे साथ बदतमीजी तो कर रही है केशव पण्डित की अप्सरा-जैसी सुन्दर बीवी। लेकिन इसमें इस बेचारी का कोई दोष नहीं है। इसे इस बात का आभास हो गया है कि इसका बहुत ही बुरा अन्जाम होना है। इसीलिये ये अपना मानसिक सन्तुलन खो चुकी है। पागल-सी हो गई है ये। किसी पगली की बातों का भला बुरा क्या मानना गंगे...।"

स्वामी भी हंसा।

गंगा भी हंसी।

श्वेता की आंखों में खून के कतरे-से भर उठे तथा वो बन्धन-मुक्त होने की भरसक, लेकिन असफल चेष्टा करते हुये चिल्ला उठी–"मैडम

जी पागल नहीं हुई हैं ओये स्वामी रामशरण दास। तुझे रामशरण कहूं कि...देवा बोलूं–? हां, देवा...दिल्ली से वर्षों पूर्व फरार हुआ खतरनाक अपराधी जिसे अदालत ने फांसी की सजा सुनाई थी...।"

"देवा...?" बुरी तरह चौंककर बोला स्वामी, "तूने हमें देवा कहा? यानि तू हमारे बारे में सबकुछ जानती है। लेकिन कैसे? हमें बतला श्वेता कि हमारे अतीत के बारे में कैसे जानती है–?"

❑❑❑

❑❑❑

"तू फांसी की सजा मिलने पर जेल से फरार हो गया था और बाद में स्वामी रामशरण दास बन गया। कानून के साथ तू सारी दुनिया को धोखा देने में कामयाब हो गया था–लेकिन ये तेरी बदकिस्मती ही है कि गुरुजी सत्यकथा पत्रिका में देवा की स्टोरी पढ़ रहे थे–जिसमें देवा की फोटो भी थी। गुरुजी को लगा कि उन्होंने देवा को कहीं देखा है। उन्हें लगा कि देवा ही वर्तमान में स्वामी रामशरण दास बना हुआ है। वो पूरी तसल्ली करने के लिये ही तेरे आश्रम में तेरा प्रवचन सुनने के बहाने आये थे। उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि तू ही देवा है। तुझे अपने जाल में फंसाने के लिये गुरुजी ने अपने परिवार के साथ तुझे अपना गुरु बनाने का ड्रामा ही किया था–ताकि तुझसे जान-पहचान बढ़ाने पर वो तेरे खिलाफ कोई जाल बुन सकें।"

"ओह...!" स्वामी का चेहरा लाल-भभूका हो चला तथा मुट्ठियां भिंच गईं।

आंखों से चिंगारियां तथा नथुनों को चौड़ाकर फुंफकारें-सी छोड़ने लगा वो।

जबकि कुर्सी पर बन्धी बैठी श्वेता अपनी ही रौ में बोले जा रही थी–"इससे पहले कि गुरुजी तुझे अपने जाल में फांसने के लिये कोई प्लान तैयार करते...तेरी कैद से गुंजन निकल भागी। वो इन्सपैक्टर अनिल यादव के पास पहुंची थी। उसकी दशा खराब थी। इन्सपैक्टर यादव ने गुंजन को हॉस्पिटल पहुंचाया और मदद के लिये गुरुजी को बुला लिया था। गुंजन ने गुरुजी को तेरे कुकृत्यों के बारे में बतलाया तो गुरुजी ने तेरे खिलाफ सबूत हासिल करने के लिये मुझे राधा बनाकर यहां भेज दिया...।"

"लेकिन तू पकड़ी गई...।" सिल्वर फ्लास्क से व्हिस्की की घूंट भरकर कुत्सित मुस्कान के साथ कहा स्वामी ने, "तेरी खोज के लिये राम जी ने अपनी सीता को लंका में भेजा–लेकिन सीता भी रावण के चंगुल में फंस गई। केशव पण्डित ने अपनी तरफ से चाल तो बढ़िया चली

थी–लेकिन वो मात खा गया। तुम दोनों के रूप में उसकी दो कमजोर नसें हमारे हाथों में आ गई हैं।"

"ये...ये ठीक नहीं हुआ स्वामी जी...।" चिन्तित भाव से बोली गंगा, "केशव पण्डित को आपके बारे में सबकुछ मालूम हो गया है। अगर उसका कोई इलाज नहीं किया तो...वो खतरनाक साबित हो जायेगा। उसकी बीवी और चेली आपके कब्जे में है। इस बात का फायदा उठा लेना चाहिये आपको–। अगर केशव पण्डित जीवित रहा तो...वो आपको बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा सकता है...। मेरा मतलब है कि...।"

"हम तुम्हारा मतलब समझ गये हैं गंगा। तुम चिन्ता मत करो। हम केशव पण्डित का ऐसा इलाज करेंगे कि...वो भी याद रखेगा–। हम उससे अभी फोन पर बात करते हैं। जब वो हमारी हकीकत जान ही चुका है तो हम भी उससे खुलकर बात करेंगे। लेकिन उससे पहले हमें एक आवश्यक कार्य करना होगा।"

"वो क्या स्वामी जी–?" पूछा गंगा ने।

"इन दोनों को...।" वह सोफिया तथा श्वेता को इंगित करके बोला, "यहां से इन दोनों को तुरन्त ही हटाना होगा हमें।"

"ये तो ठीक सोचा है आपने स्वामीजी। लेकिन इन्हें यहां से कहां भेजेंगे आप–?"

❑❑❑

❑❑❑

मुम्बई से कोई चालीस किलोमीटर दूर घने जंगल में था वो फार्महाउस–जो कि लाल रंग के पत्थरों से निर्मित था तथा बारह फुट ऊंची बाउन्ड्री वाल से घिरा हुआ था।

बाउन्ड्री वाल के बीच में लोहे का बड़ा फाटक था, जो कि भीतर की तरफ से बन्द था।

उसी फॉर्महाउस के भीतर एक हॉल कमरे में सोफिया तथा श्वेता को कुर्सियों पर बिठाकर नाइलोन की डोरियों से कसकर बान्धा गया था।

दर्जनभर हथियारबन्द गार्ड्स रूपी गुन्डों के साथ स्वामी भी वहां पर था तथा काली पैन्ट, काले ओवरकोट व फैल्ट हैट में ही था। गंगा भी थी तथा फार्महाउस पर आने पर उसने सफेद वस्त्र त्यागकर खुले गले वाला लाल ब्लाउज तथा काले रंग की मिनी स्कर्ट धारण कर ली थी।

स्वामी और गंगा गोल मेज के इर्द-गिर्द बैठे व्हिस्की के साथ सिगरेट का भी लुत्फ उठा रहे थे।

मेज पर व्हिस्की की दो बोतलें; पानी से भरा कांच का जग, ऐश-ट्रे

के साथ लक्की स्ट्राइक सिगरेट की दो डिब्बियां व दो माचिसें रखी हुई थीं। एक प्लेट में पनीर के टुकड़े, दूसरी में तले हुये मसालेदार काजू तथा तीसरी में मछली के पकौड़े रखे हुये थे।

खाली गिलास मेज पर रखकर स्वामी ने ओवरकोट की जेब से मोबाइल फोन निकाला तथा बोला–"अब हम केशव पण्डित को फोन करते हैं।"

उसने केशव का नम्बर लगाया तथा स्पीकर फोन वाला बटन दबाकर फोन को मेज पर रख दिया–गंगा से सिगरेट लेकर कश लगाने लगा।

"हैलो...।" फोन के नन्हें स्पीकर से केशव की इतनी तेज आवाज उभरी कि सोफिया व श्वेता भी सुन पा रही थीं।

"हम बोल रहे हैं केशव पण्डित...स्वामी जी...स्वामी रामशरण दास...या फिर अपना वास्तविक नाम बतलायें पण्डित? वैसे बतलाने से कोई फर्क तो पड़ने वाला है नहीं...देवा बोल रहे हैं हम! तेरी चेली श्वेता ने हमें बतलाया कि तू हमारे बारे में सबकुछ जान चुका है। लेकिन हमें अब स्वामी जी ही सुनने की आदत पड़ गई है। तू हमें स्वामी जी ही कहेगा तो...हमें बहुत अच्छा लगेगा...।"

"यानि तूने भेड़ वाला चोला उतार ही दिया है स्वामी और भेड़ियों वाले रूप में आ गया है–?"

"जब तू हमारे बारे में सबकुछ जान ही चुका है तो...हमें भेड़ बने रहने में फायदा भी तो नहीं है पण्डित।"

"श्वेता कहां है? वो ठीक तो है ना–?"

"हां–अभी तक तो ठीक ही है पण्डित! श्वेता भी ठीक है...और सोफिया भी ठीक है।"

"सो...सोफिया–?"

"क्यों...चौंक गया ना तू? अभी तक तो इसी गलतफहमी में होगा तू कि सोफिया का भेद खुला नहीं है और वो लिली के रूप में श्वेता की खोज-खबर निकाल रही होगी। लेकिन ऐसा है नहीं पण्डित! तेरी चालाक बीवी ने हालांकि अपनी तरफ से पूरी चेष्टा की थी। गंगा को उसने सम्मोहित करके श्वेता के बारे में जानकारियां हासिल कर ली थी और तुझे फोन भी करना चाहती थी। लेकिन उस बेचारी को ये मालूम नहीं था कि वहां पर सी०सी०टी०वी० वाला कैमरा लगा था और उसको देखा जा रहा था। जहरीली गैस छोड़कर उसे बेहोश कर दिया था। वो अब हमारे कब्जे में है।"

"ओह...ये बात है...।"

"हां—लेकिन इस भ्रम में मत रहना कि सोफिया तथा श्वेता को हमने आश्रम में रखा हुआ है। तू चाहे तो पुलिस फोर्स लेकर आश्रम पर आ सकता है। तलाशी लेने पर कुछ नहीं मिलेगा तुझे—लेकिन ऐसी गुस्ताखी करने का खामियाजा सोफिया तथा श्वेता को भुगतना पड़ेगा। सो कोई भी ऐसी-वैसी हरकत नहीं करना पण्डित—।"

"कहां हैं वो दोनों—?"

"बतलायेंगे पण्डित—इसीलिये तो तुझे फोन किया है हमने। लेकिन यूं...एकदम से तो नहीं बतलायेंगे हम! पहले हम इस बात का भरोसा करेंगे ना...कि तू हमारे साथ कोई चालाकी तो नहीं कर रहा है? हम ये चाहेंगे कि तू अकेला और निहत्था ही आये...।"

"तेरे कब्जे में सोफिया और श्वेता हैं स्वामी। इसलिये मेरा चालाकी करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। तू जहां भी कहेगा, मैं वहां पर अकेला और निहत्था चला आऊंगा। बोल, कहां पर आना है मुझे—?"

❑❑❑

❑❑❑

फोन की घण्टी बजने पर स्वामी ने गिलास में बची व्हिस्की की घूंट भरकर अश्लील किस्म का डांस कर रही गंगा को रुकने का तथा एक गार्ड रूपी गुन्डे को म्यूजिक सिस्टम बन्द करने का इशारा किया।

गंगा ने डांस बन्द किया तथा रिवॉल्वरधारी गुन्डे ने म्यूजिक सिस्टम बन्द कर दिया।

"हां, बोल शालिग्राम...।" स्वामी फोन को कान से लगाकर बोला, "वो होटल ताजमहल पर आ गया क्या—?"

"हां—आ गया है स्वामी जी...।" दूसरी तरफ से बतलाया गया, "वो सफेद रंग की इन्डिका कार से आया है। सफेद पैन्ट के ऊपर नेवी ब्लू कलर का कोट पहने हुये है। उसकी कार में दूसरा कोई नहीं है—।"

"ठीक है। तू फौरन ही अपनी कार में सवार होकर विधानसभा भवन पर पहुंच। जब वो वहां पहुंचे तो...हमें फोन कर देना...।"

स्वामी ने दूसरी तरफ से उत्तर सुने बिना ही फोन बन्द कर दिया तथा केशव के फोन का नम्बर लगाने लगा। दूसरी तरफ से केशव की आवाज में 'हैलो' सुनने पर वह बोला, "हमें मालूम है कि तू होटल ताजमहल पर पहुंच गया है केशव पण्डित। आशा करते हैं कि तू निहत्था ही होगा—।"

"निहत्था भी हूं और अकेला भी हूं स्वामी...।"

"सोफिया और श्वेता की जान और इज्जत के लिये यही बढ़िया होगा कि तू हमारे साथ सूईं की नोक बराबर भी चालाकी ना करे। हमारा

तात्पर्य तो समझ में आ ही गया होगा। हुम्म...अब तू तुरन्त ही विधानसभा भवन पर पहुंच। हमें जब विश्वास हो जायेगा कि तू हमारे साथ कोई चालाकी नहीं कर रहा है—तब तुझे यहां बुला लेंगे...।"

स्वामी ने फोन बन्द करके मेज पर रखी बोतल से गिलास में व्हिस्की डाली तथा पानी मिलाये बिना ही घूंट भरकर बोला, "म्यूजिक चलाओ। डांस करो गंगा डार्लिंग...।"

म्यूजिक बजने लगा—गंगा थिरकने लगी।

स्वामी ने गिलास में बची व्हिस्की को मुंह व हलक के रास्ते पेट में पहुंचाने पर सिगरेट सुलगा ली तथा गंगा के पास पहुंचकर भद्दे ढंग से नाचने-कूदने लगा।

फिर वो गंगा के साथ वाहियात किस्म की हरकतें करने लगा—कभी उसे बांहों में भरता, कभी उसके गालों व होंठों को चूमता तो कभी उसके उभारों को सहलाते हुये सोफिया व श्वेता की तरफ देखते हुए उन्हें चिढ़ाने लगता।

"ये क्या रूप देख रही हूं मैं इस बदतमीज का...मैडम जी...?" क्रोधित तथा कसमसाये हुये भाव से बोली श्वेता, "लगता ही नहीं कि ये वो ही स्वामी रामशरण दास है। काश...काश कि मैं बन्धन-मुक्त होती...तो अपने परिणाम की चिन्ता किये बिना इसके मुंह पर थूकती और चप्पलों से इसको पीटती। इसका कमीनापन तो बढ़ता ही जा रहा है...।"

"तुमने उस चिराग को तो देखा ही होगा श्वेता—जिसका तेल खत्म होने लगता है? उसकी ज्योति लपलपाने लगती है। इसकी भी जिन्दगी की लौ लपलपा रही है। ये स्वामी तभी तक मस्त है, जब तक केशव यहां नहीं आ जाते हैं...।"

"लेकिन गुरुजी यहां कब तक पहुंचेंगे मैडम जी—?"

❑❑❑

❑❑❑

"हां—मालूम है कि तू विधान सभा भवन से अपनी कार छोड़कर टैक्सी में सवार हुआ और गोवा वाली रोड पर स्थित नारायणपुर गांव के करीब वाली रोड पर स्थित नारायणपुर गांव के करीब वाले उस मोड़ पर पहुंच गया है, जहां से एक छोटी सड़क भानूगढ़ के किले पर पहुंचती है। तुझे इसी सड़क पर अब पैदल चलना है केशव पण्डित। दस किलोमीटर की दूरी पर भानूगढ़ का किला है। उससे पांच किलोमीटर की दूरी पर पान के आकार की झील पड़ती है—इसी झील के ठीक सामने लाल पत्थरों से

निर्मित एक फार्महाउस है, उसी फार्महाउस पर पहुंचना है तुझे। वहां फाटक पर हमारे हथियारबन्द गार्डस् होंगे। वो तेरी तलाशी लेंगे। यदि तेरे पास कोई सूईं या आलपिन भी निकला तो...वो तुझे गोली मार देंगे...।"

"नहीं स्वामी, मेरे पास कोई हथियार या औजार नहीं होगा। हां—चारमीनार सिगरेट की डिब्बी और एक लाइटर अवश्य है। तू अगर कहे तो मैं उन्हें भी फेंक देता हूं...।"

"नहीं, कोई जरूरत नहीं है पण्डित। तुझे पूरे पन्द्रह किलोमीटर पैदल चलकर आना है। दो-तीन घन्टे तो लग ही जायेंगे। दौड़कर भी आयेगा तो भी एक घण्टा तो लगेगा ही। थकान मिटाने के लिये तुझे स्टेमिना की जरूरत होगी। अपनी चारमीनार वाली सिगरेट पीते हुये अपने सफर को शुरू कर। हमारे साथ-साथ सोफिया पण्डित और श्वेता गुप्ता को भी व्याकुलता के साथ तेरी प्रतीक्षा है। तो तू अपनी यात्रा आरम्भ कर...।"

कहने पर स्वामी ने फोन काटकर मेज पर रख दिया तथा एक सिगरेट सुलगाकर सोफिया व श्वेता के समक्ष पहुंचा।

गंगा भी उसके पीछे आ खड़ी हुई—जो कि डांस करने के कारण पसीने-पसीने हो चली थी।

"आ रहा है केशव पण्डित...दिमाग का जादूगर...।" दोनों अर्थात् सोफिया व श्वेता से सम्बोधित होकर कहा स्वामी ने, "ना जाने किस बेवकूफ ने केशव पण्डित को दिमाग के जादूगर की उपाधि दे डाली थी। खामख्वाह ही लोगों ने उसकी प्रशंसा के इतने पुल बान्धे हैं—उसकी शान में कसीदे पढ़े हैं। उसे यूं प्रजेन्ट करते हैं कि मानो वो महाभारत का कृष्ण भगवान हो। खिलाड़ियों का खिलाड़ी...सबसे बड़ा खिलाड़ी...खिलाड़ी नम्बर वन! धुरंधर, खलीफा, बाजीगर, मदारी, वीर-योद्धा, सेनापति...और भी ना जाने क्या-क्या है वो। कुछ भी तो नहीं है वो। हमने उसको तिगनी का नाच नचाया हुआ है। हमारी उंगली के इशारे पर वो कठपुतली की तरह ही तो नाच रहा है। हमने आदेश दिया कि होटल ताजमहल पहुंच...तो पहुंच गया। विधानसभा भवन के लिये कहा तो...पहुंच गया। हमारे आदेश पर वो नारायणपुर पहुंचा और अपनी कार को छोड़कर टैक्सी से पहुंचा। वहां से वो पैदल चलकर यहां पर पहुंचेगा। हुआ ना वो हमारे हुक्म का गुलाम—?"

"तूने हम दोनों को अपने कब्जे में लिया हुआ है ना...।" घृणा व तिरस्कार की भावना के साथ ही बुरा-सा मुंह बनाकर बोली श्वेता, "इसीलिये तो। ऐसा तो कोई भी कर सकता है। गुरुजी को हम दोनों से प्यार है—इसीलिये वो तेरी बात मान रहे हैं—इत्तफाक से हम दोनों तेरे

कब्जे में आ गईं। अन्धे के हाथों बटेर लग गई तो वो स्वयं को बहुत बड़ा शिकारी समझ रहा है...हुं...।"

"हां—शिकारी तो हैं हम...।" कश लगाकर झुका स्वामी तथा श्वेता के चेहरे पर धुंएं की बौछार छोड़कर विषैले भाव से बोला, "होश सम्भालते ही हमें दो पैरों वाली चिड़ियाओं का शिकार करने का शौक पड़ गया था। नन्हीं-मुन्नी लड़कियां—जो कि बहुत ही मासूम, कमजोर, हल्की-फुल्की... चिकनी...मक्खन-सी मुलायम होती थीं। वासना की छुरी से उन्हें हलाल करके बड़ा ही आनन्द प्राप्त होता था। वो चींखती-चिल्लाती थीं, रोती थीं, तड़पती थीं, छटपटाती थीं तो हमारे खून में जोश और गर्मी बढ़ जाया करती थी। मानो हम जीते-जी ही स्वर्ग में विचरण किया करते थे। बाद में हमारा स्थान बहुत ऊंचा हो गया तो हमारे शौक का स्थान भी ऊंचा हो गया। हमें जवान, रूप-यौवन से लदी-फदी युवतियां भाने लगीं। कभी-कभार मन करता तो गुंजन जैसी कुछ कम आयु वाली लड़कियों का शिकार कर लिया करते हैं। सब कुछ अच्छा-भला चल रहा था कि केशव पण्डित ने गड़बड़ी कर डाली। हमारे अतीत के पन्नों को खोलकर वो हमें बेपर्दा करने की जिद पर अड़ गया। नहीं जानता था बेवकूफ कि बिल्ली को शिकारी शेर का रास्ता नहीं काटना चाहिये—शेर कुपित होकर बिल्ली को चीर-फाड़ डालता है...।"

"तेरी आंखों के साथ-साथ...लगता है कि तेरे दिमाग में भी काला मोतिया बिन्द उतर आया है स्वामी...।" बोली सोफिया, "तभी तू हकीकत को नहीं देख पा रहा है। शेर नहीं, जंगली कुत्ता है तू—जो सिर्फ मुर्गियों, बकरियों तथा भेड़ों का ही शिकार कर सकता है। शेर जब सामने आता है तो तेरे जैसे कुत्ते दुम को पिछली टांगों के बीच दबाकर 'कूं...कूं...' करने लगते हैं और जमीन को गीली कर देते हैं।"

स्वामी के होंठों से मुस्कान यूं ही विलुप्त हुई—जैसे सूर्योदय के होते ही अन्धेरा उड़न छू हो जाता है।

आंखों में ज्वालामुखी का लावा-सा भरने लगा। नथुने चौड़े होकर फुंफकारें-सी छोड़ने लगे।



"स्वामीजी को अपमानित किया है तूने सोफिया पण्डित...।" गंगा ने अपने शब्दों के पैट्रोल से आग को भड़काने की चेष्टा की, "इन्हें कुत्ता कहने की जुर्रत की है तूने। ये भी भूल गई कि तू इनके कब्जे में है और इनके रहमो-करम पर है। ये चाहें तो तेरे साथ कुछ भी कर सकते हैं...कुछ

भी। तेरी जान ही नहीं...तेरी इज्जत भी खतरे में पड़ गई है। तेरी ये बदजुबानी तेरे घमन्ड की धज्जियां उड़ाकर रख देगी। स्वामीजी का कहर टूटेगा तुझ पर। मुसीबतों के पहाड़ टूटने वाले हैं तुझ पर। इसको ऐसा दण्ड दीजिये आप कि..." वह स्वामी की नरफ घूमकर बोली, "इसके होश ठिकाने लग जायें—ये खून के आंसू रोने को मजबूर हो जाये...।"

स्वामी ने क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये सोफिया को दुर्वासा ऋषि सरीखी भस्म कर देने वाली दृष्टि से घूरा, लेकिन फिर वो मुट्ठियों को भींचकर बोला, "पहले हमें एक आवश्यक कार्य करना है गंगा। जग्गी...!"

"आदेश...स्वामी जी...।" ए०के० सैंतालीसधारी एक गुन्डा दो कदम आगे बढ़ाकर बोला।

"अपने साथ सात और लोगों को लेकर बाहर जा और फाटक पर तैनात हो जा। ढाई-तीन घण्टे में केशव पण्डित यहां पहुंचेगा। यदि उसने तेज दौड़ भी लगाई तो उसे यहां पहुंचने में एक-सवा घण्टा तो लगेगा ही। उसको अपने कब्जे में लेकर बारीकी के साथ तलाशी लेनी है। वो बहुत ही चालाक है। उसके पास फोन, माइक, ट्रांसमीटर वगैरा हो सकते हैं। शायद उसने पुलिस के साथ सैटिंग की हुई हो। उसकी जेबों को खंगालकर सारा सामान अपने कब्जे में ले लेना। सिगरेट की डिब्बी, लाइटर, पर्स, पेन वगैरा के साथ-साथ उसकी बैल्ट और जूते भी अपने कब्जे में ले लेना। फिर डोरियों से कसकर बांध देना और फिर हमारे सामने पेश कर देना। चल, सात लोगों को साथ लेकर बाहर पहुंच—।"

जग्गी अपने साथ सात अन्य गुन्डों को लेकर वहां से चला गया।

हॉल में चार गुन्डे रह गये।

तब आंखों में खूंखार किस्म के भाव लिये हुये स्वामी सोफिया की तरफ बढ़ने लगा।

सोफिया तो सामान्य ही बनी हुई थी लेकिन श्वेता भयभीत हो चली।

❑❑❑

❑❑❑

"क्या बोली तू हमें...कुत्ता? कुत्ता बोली तू हमें—?"

"मैं गलत बोल गई...।" बिना भयभीत हुये मुस्कराकर बोली सोफिया, "कुत्ता नहीं बोलना चाहिये था तुझे। कुत्ता तो स्वामीभक्त और वफादार होता है—वो हिंसक भी नहीं होता है। तू भेड़िया है...आदमखोर भेड़िया...।"

"भेड़िया...आदमखोर भेड़िया...।" सुर्ख हो चले चेहरे पर खूंखार किस्म के भाव समेटे हुये बोला स्वामी, "चल, ठीक है। हमने माना कि

हम भेड़िये हैं...खूंखार भेड़िये, भेड़ की खाल में छिपे भेड़िये। लेकिन तुझे भेड़िये से डरना चाहिये...आतंकित होना चाहिये कि नहीं? तुझे ये भय नहीं हो रहा है कि ये भेड़िया तेरा भी शिकार कर सकता है—?"

"भेड़िया भले ही कितना खूंखार क्यों ना हो...लेकिन वो शेरनी का शिकार नहीं कर सकता है स्वामी—।"

"इसकी जुबान तो बहुत लम्बी है...।" गंगा जल-भुनकर बोली, "मेरठ की कैंची की तरह ही चल रही है। ये तो आपको कुछ समझ ही नहीं रही है स्वामी जी। अपमान-पर-अपमान किये जा रही है ये आपका। इसको इसकी औकात तो बतलानी ही होगी आपको...।"

"पहले तू अपनी औकात में रह भेड़िये की चमची। इस स्वामी के चक्कर में पड़कर तू भी कुतिया सरीखी हो गई है। नारी जाति के नाम पर कलंक ही है तू...।"

"ये, ये मेरा अपमान कर रही है स्वामीजी। मैं इसका गला घोट दूंगी...।"

"नहीं, तुम्हें कुछ करने की आवश्यकता नहीं है गंगा। सबकुछ हम पर छोड़ दो तुम।" कहने पर स्वामी सोफिया से बोला, "हम समझ नहीं पा रहे हैं कि तू इतना साहस कैसे दिखला रही है? किसके दम पर तू इतना कूद रही है? ओह...केशव पण्डित के दम पर। क्यों...यही बात है ना? लेकिन तू इतनी बड़ी गलतफहमी की शिकार कैसे है कि तेरा वो केशव पण्डित तेरे लिये कुछ कर पायेगा? वो तुझे हमारे चंगुल से निकाल लेगा तथा हमारे कोप से बचा लेगा? वो जब तक यहां पहुंचेगा...तब तक तो हम बहुत कुछ कर चुके होंगे। वो आयेगा तो...तो कुछ नहीं कर पायेगा। जो कुछ भी करेंगे...हम करेंगे। हमारे गुन्डे उसको बान्धकर हमारे सामने लायेंगे। फिर हम उसके भाग्य का निर्णय करेंगे। निर्णय ही क्या करना है...हम उन बेवकूफों में से नहीं हैं—जो अपने दुश्मन को जीवित छोड़ दिया करते हैं। केशव पण्डित यदि जीवित रहा तो...वो हमें परेशान करता रहेगा। उसको खत्म करके आसपास ही कहीं...जंगल में उसकी लाश को दफना दिया जायेगा।"

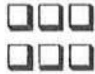
मुस्कुराई सोफिया—

यूं ही मुस्कुराई कि मानो स्वामी ने नादानी में ये दावा कर दिया हो कि वो एक हथेली पर चांद तथा दूसरी हथेली पर सूरज रखकर एक ही छलांग में समुद्र को लांघ सकता है।

स्वामी भृकुटी टेढ़ी करके बोला, "तू यूं क्यों मुस्करा रही है सोफिया पण्डित—?"

"तेरी नादानी...तेरी बेवकूफी पर...।" मुस्कान को बरकरार बनाये रखे हुये बोली सोफिया, "तेरी मूर्खता भरी बातों पर मुस्कुरा रही हूं स्वामी। कुओं के मेंढक की तरह ही तू टर्र-टर्रा रहा है और इस गलतफहमी में है कि तू शेर की तरह ही दहाड़ा है। भेड़िया भले ही कितना भी खूंखार और शक्तिशाली क्यों ना हो--लेकिन उसकी भी एक हद होती है। वो कुत्तों की टीम के साथ मिलकर छोटे-मोटे जानवरों का शिकार तो कर सकता है—लेकिन बब्बर शेर के सामने उसकी कोई औकात नहीं होती। तू शायद अभी केशव पण्डित को ठीक से समझा ही नहीं है—तभी तूने यूं ही बोल दिया कि केशव का वध करके उसकी लाश को दफन कर देगा...।"

"ओहो...ओफ्फोह...यानि तू ये कहना चाहती है कि हम केशव पण्डित को मार नहीं सकते? क्यों...क्या वो अजर-अमर है? उसको घुट्टी में अमृत चखाया गया था क्या? क्या भगवान ने उसको चिरंजीवी होने का वरदान दिया हुआ है? ऐसी क्या खूबी है तेरे उस केशव पण्डित में कि हम उसको मार नहीं सकते हैं—?"



"अगर मैं अपने केशव की प्रशंसा करने लगूं तो सारी जिन्दगी गुजर जायेगी। बस, तू इतना ही समझ ले कि केशव ने सदैव कानून, समाज, देश, मानवता तथा मजलूमों के नाम अपनी जिन्दगी की हुई है। परोपकार में वो सखी हातिमताई है। कानून के लिये वो बेटा है तो मुसीबतजदा लोगों के लिये सच्चा मित्र है। मुजरिमों, देश के दुश्मनों, देशद्रोहियों के लिये वो साक्षात काल है। वो महाबली है, महायोद्धा है। जांबाज है, निडर है। अपनों के लिये अमृत, दुखियारों के लिये दवाई तो दुश्मनों के लिये विष है। ईश्वर ने उसको सौ हाथियों का बल, सौ चीतों की फुर्ती तो सौ लोमड़ियों की बुद्धि व चालाकी दी है। मेरे केशव का इतिहास पढ़ेगा स्वामी, तो तुझे मालूम पड़ेगा।"

"क्या...क्या मालूम पड़ेगा हमें? बोल...बतला हमें तू सोफिया पण्डित—?"

"केशव ने असंख्य मुजरिमों को सबूतों के साथ पकड़कर कानून के हवाले किया और अदालत में उनके जुर्म साबित करके उन्हें दण्ड दिलवाया। अनेकों गैंगस्टर्स को मिट्टी में मिला दिया। कई आतंकियों, देशद्रोहियों तथा देश के दुश्मनों को नेस्तनाबूद कर डाला मेरे केशव ने। कई जालिम तानाशाहों को उनकी ही धरती पर धूल चटाकर उनका विध्वंश कर डाला। पाकिस्तान की आई०एस०आई०, वहां की मिलिट्री तथा वहां

के हुक्मरानों को उनके ही मुल्क में जाकर उनकी औकात बतला दी और वहां से यूं ही निकल आये. जैसे चूहों-बिल्लियों के झुन्ड से बब्बर शेर अपनी मतवाली चाल में शान से चला आता है। फिर तू क्या...तेरी हस्ती क्या है स्वामी? केशव ने तो बड़े-बड़े दरियाओं के रुख मोड़ दिये—तू तो एक गन्दी नाली है। केशव पण्डित ने बड़े-बड़े पहाड़ धराशाई किये हैं—तू तो मामूली कंकर ही है...।"

"उफ...उफ...अपमान...।" गंगा हथेली पर घूंसा मारकर फुफकारी-सी, "केशव पण्डित की ये मुंहजोर बीवी तो आपके मुंह पर ही आपका अपमान कर रही है और अभी तक सही-सलामत है ये। आपने अभी तक इसका बाल भी बांका नहीं किया है...।"

"धैर्य से काम लो तुम गंगे...सब्र का दामन थामे रखो...।" चोटिल नाग की मानिन्द ही फुंफकारकर कहा स्वामी ने, "इसे हमारी कोई कमजोरी अथवा लाचारी मत समझो। हमने मन-ही-मन बहुत पहले योजना बना ली थी कि हम जो कुछ भी करेंगे—वो केशव पण्डित के आने पर ही करेंगे। हम चाहें तो अभी...इस मुंहजोर औरत को मुंहतोड़ जवाब दे सकते हैं। इसको बुरी मौत मार सकते हैं। लेकिन उतना आनन्द...उतना मजा नहीं आयेगा, जितना कि केशव पण्डित की उपस्थित में आयेगा। अब तो वैसे भी इस बड़बोली के सारे भ्रम दूर करने हैं हमें। कल्पना करो तुम गंगा कि केशव पण्डित उस कुर्सी पर बन्धा बैठा है। हम सोफिया और श्वेता को बोलेंगे कि केशव की जान बचानी है तो...नाचो। ये दोनों नाचेंगी और गायेंगी भी। केशव पण्डित मना करेगा...तो भी नहीं रुकेंगी ये दोनों। फिर हम इन दोनों का चीर हरण करेंगे। इनके खूबसूरत जिस्मों को व्हिस्की से स्नान करायेंगे और फिर बारी-बारी से इन दोनों के साथ रंगरेलियां मनायेंगे...इन दोनों की इज्जत लूट लेंगे हम। ये दोनों रोयेंगी—गिड़गिड़ायेंगी—परन्तु अपनी इज्जत नहीं बचा पायेंगी। केशव पण्डित भी खून के आंसू रोयेगा। फिर इन दोनों के सामने हम केशव पण्डित के टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। तब हम सोफिया पण्डित से पूछेंगे कि दरियाओं के रुख मोड़ने वाला, पहाड़ों को धराशाई करने वाला केशव कहां पर है? इन्तकाम का आनन्द तो ऐसे ही आयेगा गंगा डार्लिंग...।"

"चल बे, शेख चिल्ली।" सोफिया स्वामी का मखौल उड़ाते हुये बोली, "शेख चिल्ली की तरह ही हवाई किले तैयार कर रहा है तू और बादशाह बनने के ख्वाब देख रहा है। मुझे तथा श्वेता को पनीर की पकौड़ियां समझ लिया है क्या बे तूने? मामूली औरतें नहीं हैं हम दोनों। मैं दिमाग के जादूगर की अर्धांगनी हूं तो श्वेता उसकी परम शिष्या है। हम दोनों का बाल भी

बांका नहीं कर पायेगा तू। केशव पण्डित की मौजूदगी की तो बात ही मत कर। वो ऐसा तूफान है, जिसके प्रचण्ड वेग में तू तिनके की मानिन्द ही उड़ जायेगा। केशव ऐसा सैलाब है कि तू सूखे पत्ते-सा बह जायेगा। तू ऐसा-वैसा कुछ भी नहीं कर पायेगा हम देनों के साथ। चीरहरण की बात करता है तू कमीने—हमारे वस्त्रों का एक धागा भी नहीं उतार पायेगा तू...ये चैलेंज है मेरा। यदि तू एक ही बाप की औलाद है तो...मर्द का बच्चा है तो...अपनी मां का दूध पीया है तो...हमारे साथ कुछ भी करके दिखला। मुझे अपने केशव पर इतना भरोसा...इतना विश्वास है कि तू हम दोनों का जरा-सा भी अहित नहीं कर पायेगा। अगर तुझे ये गलतफहमी है कि तुझमें कुछ दम-खम है तो...तो हमारे साथ कुछ भी बुरा व्यवहार करके बतला। बोल...क्या तुझे सोफिया पण्डित का चैलेंज स्वीकार है? गूंगी का गुड़ खाये क्या खड़ा है तू ओये भेड़ की खाल में छिपे भेड़िये। बोल ना...क्या तू मेरा चैलेंज कबूल करता है?"



स्वामी की सुर्ख आंखों में आश्चर्य व अविश्वास उमड़ आया।

"लगता है कि तू अति विश्वास की शिकार है सोफिया पण्डित। तूने अपने पति को ना जाने क्या मान लिया है—ना जाने क्या समझ लिया है। उसे वो कृष्ण भगवान समझने की भूल मत कर—जो द्रोपदी की पुकार सुनकर उसकी लाज बचाने के लिये नंगे पैर दौड़ पड़ा था। तेरा पति सिर्फ इन्सान है...साधारण इन्सान। उसके पास कोई चमत्कार नहीं है। योजना तो यही थी हमारी कि केशव पण्डित के आने पर ही हम तमाशा शुरू करेंगे—परन्तु तूने हमें ललकारा है...चैलेंज दिया है हमें। तुझे बतलाना ही पड़ेगा हमको कि तेरा वो केशव पण्डित कुछ भी नहीं है। आज वो तेरी और श्वेता की कोई मदद नहीं कर पायेगा। खोलो, इन दोनों को गोपाल...गंगा—।"

गोपाल नामक रिवॉल्वरधारी युवक आगे बढ़ा तथा श्वेता को बन्धन-मुक्त करने लगा—जबकि गंगा सोफिया की डोरियां खोलने लगी।

स्वामी ने व्हिस्की की बोतल उठाई तथा डायरेक्ट उसी से घूंट भरने लगा। बोतल रखकर वो पलटा तथा बोला—"केशव पण्डित की शिष्या श्वेता तेरा शिकार है गोपाल—जबकि सोफिया पण्डित हमारा शिकार होगी। हम दोनों शुरूआत करेंगे इन दोनों के चीर-हरण से। बड़े-बड़े दावे कर रही थी ये मिसेज पण्डित। इसकी गलतफहमी को हम दूर करेंगे। हम भी देखते

हैं कि इसका केशव पण्डित इसकी और श्वेता की इज्जत कैसे बचा पाता है—?"

फिर वो बन्धन-मुक्त हो चली सोफिया के करीब पहुंचकर बोला, "क्या तुझे अभी भी विश्वास है कि तेरा केशव पण्डित तेरी और श्वेता की इज्जत बचा लेगा—?"

"हां—पूरा विश्वास है मुझे अपने केशव पर...।" पूर्ण विश्वास के साथ ही बोली सोफिया, "उसी विश्वास के दम पर ही मैं अब भी ये चैलेंज कर रही हूं कि तू मेरा या श्वेता का बाल भी बांका नहीं कर सकता है स्वामी रामशरण दास उर्फ देवा...।"

"तो फिर ठीक है। गोपाल श्वेता को...तो हम तुझे अपना शिकार बनायेंगे। हम भी तो देखें कि तेरा वो केशव पण्डित तुम दोनों की लाज कैसे बचाता है? गोपाल...केशव की चेली का चीर हरण शुरू कर। इसको पूर्णतया नग्न कर डाल। ऐसा ही हम सोफिया पण्डित के साथ करते...आ...आह...ओह...!"

सोफिया के दायें पैर का घुटना मुड़ा तथा स्वामी के पेट पर जबरदस्त प्रहार हुआ।

हाथों से पेट को दबोचे हुये स्वामी थोड़ा झुका तथा आंखों में पीड़ा के साथ आश्चर्य के भाव लिये सोफिया को देखने लगा—उस सोफिया को...जो कि रणचण्डी का ही अवतार लग रही थी।

बौखलाये गोपाल ने श्वेता की तरफ बढ़ना बन्द करके रिवॉल्वर को सोफिया पर तान दिया—ऐसा ही बाकी गुन्डों ने भी किया।

"न...नहीं...।" पेट से दायां हाथ हटाकर तथा हवा में उठाकर चीखा-सा स्वामी, "कोई भी गोली ना चलायेगा। मारना नहीं है इस घमन्डी औरत को...ये अभी नहीं मरेगी। हालांकि इसको मरना है, लेकिन केशव पण्डित को बुरी मौत मरते हुये देखने के बाद। अभी इसको पकड़ो और उस...उस मेज पर लिटा दो...। श्वेता को तुम सम्भालो गंगा। इसको बाद में देखा जायेगा। पहले तो सोफिया पण्डित का घमण्ड तोड़ना है हमें...।" गंगा ने एक गुन्डे से ए०के० सैंतालीस झपट ली तथा उसकी नाल श्वेता की कनपटी पर रखकर हिंसक भाव से बोली—"तेरी इस श्वेता की जान दांव पर लगी है सोफिया पण्डित। मेरी उंगली की जरा-सी जुम्बिश ही दर्जनों गोलियां उगलेगी और इसकी कनपटी...दिमाग के फरखच्चे उड़ जायेंगे। चुपचाप सैरेंडर कर दे। कोई विरोध नहीं...कोई मुकाबला नहीं। भले ही स्वामीजी तेरे साथ कुछ भी करें...लेकिन तू जरा-सा भी विरोध नहीं करेगी। अगर करेगी तो...श्वेता की जान की कीमत पर...।"

स्वामी ने गंगा को प्रशंसा भरी नजरों से देखा, फिर चारों गुन्डों को इशारा किया।

चारों गुन्डों ने हथियार फर्श पर डालकर सोफिया को पकड़ लिया।

स्वामी ने आगे बढ़कर सोफिया के गाल पर झन्नाटेदार थप्पड़ मारा तथा चोटिल नाग की मानिन्द ही फुंफकारकर बोला, "मेज पर लिटा दो इसे–।"

चारों गुन्डों ने सोफिया को मेज पर धकेलकर लिटा दिया तथा उसको इतनी मजबूती के साथ पकड़ लिया कि वो उठने ना पाये।

स्वामी धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुये कुत्सित किस्म की मुस्कान के साथ बोला, "हम पर वार करने की जुर्रत की तूने...सोफिया पण्डित! इच्छाधारी नाग को चोटिल करने का क्या परिणाम होता है...नहीं जानती क्या तू? अब देख कि हम तेरी क्या दुर्दशा करते हैं। चिल्ला-चिल्लाकर पुकार अपने केशव पण्डित को...बोल उसे कि वो यहां आकर तेरी इज्जत बचा ले। हम भी देखें कि तेरा वो दिमाग का जादूगर...कैसे तेरी मदद करता है...?"

❑❑❑
❑❑❑

घबरा गई सोफिया पण्डित? चिन्तित हो चली? मारे भय के उसका सुन्दर मुखड़ा हल्दी-सा पीला पड़ गया? लगी वो रोने-गिड़गिड़ाने? ना...बिल्कुल भी नहीं–ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ।

उसको निश्चिंत रूप से मुस्कुराते देखकर स्वामी की आंखें सिकुड़ चलीं–वो सोचने के लिये विवश हो गया कि सोफिया की ऐसी मुस्कान का रहस्य आखिर है क्या?

फिर जेहन को झटका-सा देकर वो आगे बढ़ा तथा सोफिया की आंखों में झांकते हुये बोला, "गंगा ने श्वेता की कनपटी पर ए०के० सैंतालीस की नाल रखी हुई है और वो किसी भी क्षण ट्रिगर दबा सकती है। सो...तू कोई विरोध नहीं करेगी...चुपचाप सरेंडर कर देगी। वैसे...तू इतनी विवश है कि चाहकर भी विरोध नहीं कर सकती...मुकाबला नहीं कर सकती। तेरे पास बस एक ही विकल्प बचता है–वो ये कि तू रोये और गिड़गिड़ाकर हमसे रहम की भीख मांगे। परन्तु उसका भी कोई लाभ तुझे होने वाला नहीं है। हम तुझ पर कोई दया नहीं करने वाले हैं। चल, चीर-हरण से इस खेल का शुभारम्भ करते हैं...।"

उसने हाथ को सोफिया की साड़ी के पल्लू की तरफ बढ़ाया ही था कि...छनाक...की तेज आवाज हुई तथा कांच के बहुत से टुकड़ों के साथ ऊपर छत की तरफ से एक इन्सानी शरीर स्वामी के ऊपर आकर गिरा।

कालीन पर जा गिरा स्वामी बुरी तरह बौखलाकर उठा।

गंगा तथा चारों गुन्डे भी बौखला उठे तथा चारों गुन्डों ने हड़बड़ाकर सोफिया को छोड़ दिया।

"गु...गुरुजी...।" श्वेता हर्षित भाव से चिल्ला पड़ी।

छत के रोशनदान के कांच को तोड़कर नीचे कूदे केशव ने फर्श या कालीन पर पैरों में पहने जूतों के टिकते ही नीचे दबे स्वामी के लम्बे बालों को मुट्ठी में जकड़ा तथा उसको झटके के साथ सीधा खड़ा किया तो...मारे पीड़ा के स्वामी के मुंह से चींख उबल पड़ी।

फिर उसकी नजरें केशव पर पड़ीं तो आंखें यूं ही फैलती चली गईं कि मानो उसने चिड़िया के अन्डे से हाथी को निकलते हुये देख लिया हो।

"त...तुम...।" वह बौखलाकर बोला, "के...केशव पण्डित...तुम...ओह...ओह...प...परन्तु...ऐ...ऐसा कैसे हो स... सकता है...तु...तुम तो यहां से प...पन्द्रह किलोमीटर दूर थे...हमारे विश्वसनीय आदमी ने फोन करके हमें ब...बतलाया था...उसने तुम्हें...नारायणपुर गांव पर टैक्सी से उतरते हुये देखा था...इतनी देर में तो कोई...हे...हेलीकॉप्टर से भी...यहां नहीं पहुंच सकता...फिर...फिर तुम...यहां...कै...कैसे पहुंच गये...?"

❑❑❑
❑❑❑

"मैं तो यहीं पर था स्वामी...।"

"यहीं पर...!" बौखलाया स्वामी, "कब से–?"

"लगभग चार घण्टे से...।"

"च...चार घन्टे से? न...नहीं...झूठ बोल रहे हो तुम। ऐसा नहीं हो सकता...।"

"क्यों नहीं हो सकता?" मुस्कराकर कहा केशव ने, "लगभग चार घण्टे पहले तूने और गंगा ने व्हिस्की की बोतल खोलकर ड्रिंक शुरू किया था और दो सिगरेट के साथ पांच पैग चढ़ाने पर गंगा ने म्यूजिक सिस्टम पर डांस शुरू किया था। पहला गाना था...बीड़ी जलाई ले जिगर से पिया–जिगर मा बड़ी आग है...।"

स्वामी की आंखों के साथ गंगा की आंखें भी चौड़ी होती चली गईं।

स्वामी ने दोनों हाथों से अपने बालों को छुड़ाने की भरसक चेष्टा की, लेकिन सिवाय पीड़ा के कुछ नहीं मिला उसको।

केशव ने ही उसके बालों को अपनी मुट्ठी से आजाद किया तथा

फिर पूरे इत्मीनान के साथ चारमीनार ब्राण्ड वाली एक सिगरेट गोल्डन लाइटर की नीली लौ से सुलगा ली।

इसी समय में चार में से तीन गुन्डों ने फर्श पर से ए०के० सैंतालीस, रिवॉल्वर तथा पिस्टल उठा ली—चौथे की ए०के० सैंतालीस तो गंगा के हाथों में थी।

चूंकि केशव निहत्था था तथा उस पर चार हथियार तने हुये थे, इसलिये स्वामी भीगी बिल्ली से भेड़िया बनते हुये गुर्राया—"तू क्या समझता है...हम तेरे झूठ को सच मान लेंगे? हम कैसे मान लें कि तू यहां पर चार घण्टे से है? चार घण्टे पहले हमने तुझसे बात की थी फोन पर—जब तू विधानसभा भवन पर था। तूने फोन पर ही गाना सुना होगा...।"

"तूने म्यूजिक सिस्टम बन्द करवाकर ही अपने चेले शालिग्राम से बात की थी स्वामी—इसलिये फोन पर गाने की आवाज कैसे आ सकती थी भला? वैसे भी तब म्यूजिक सिस्टम पर दूसरा गाना बज रहा था...अनारकली डिस्को चली! जब तूने आखिरी बार शालिग्राम का फोन आने पर मुझसे बात की थी तो उससे पहले गाना चल रहा था...आई चिकनी चमेली...पौव्वा चढ़ाकर आई...क्यों? तू भी तो नाच रहा था। फिर उसके बाद तेरा और गंगा का सोफिया के साथ वाक्-युद्ध हुआ था। सोफिया ने तुझे खरी-खरी, खोटी-खोटी सुनाई थी। तुझे कुत्ता तक कह डाला था। फिर सोफिया ने तुझे चैलेन्ज कर दिया था कि तू इसका और श्वेता का बाल भी बांका नहीं कर सकेगा। क्यों...क्या गलत बोल रहा हूं मैं—?"

स्वामी की खोपड़ी घूम उठी। वह माथे को तर्जनी उंगली से सहलाते हुये बोला, "लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? तू हमारे कहने पर पहले होटल ताजमहल पहुंचा...फिर विधानसभा भवन...फिर वहां से टैक्सी पकड़कर नारायणपुर पहुंचा। वहां तूने टैक्सी छोड़ दी थी। वहां से यहां की दूरी पन्द्रह किलोमीटर...हेलीकॉप्टर से ही इतनी जल्दी यहां पहुंचा जा सकता है...हमने हेलीकॉप्टर की आवाज भी नहीं सुनी...बात कुछ समझ में नहीं आ रही है...।"

"मेरे गुरुजी के खेल ऐसे ही होते हैं ओये स्वामी...।" बोली श्वेता, "बड़े-बड़े धुरंधरों के दिमाग की चक्करघिन्नी बन जाती है। तू तो कुछ है ही नहीं। तू इस गलतफहमी का शिकार था कि तू मेरे गुरुजी को अपने इशारे पर नचा रहा है—इनके साथ खेल रहा है—लेकिन वास्तविकता तो ये है कि गुरुजी तेरे साथ चूहें और शेर वाला खेल, खेल रहे थे। मुझे और मैडम जी को भी पूरा विश्वास था कि गुरुजी हमारा बाल भी बांका ना

होने देंगे। तभी तो मैडमजी ने पूरे विश्वास के साथ तुझे चैलेंज कर डाला था। अब ये तो मेरे गुरुजी ही बतायेंगे कि इन्होंने तेरे साथ क्या खेल खेला है—!"

❑❑❑
❑❑❑

"हम तेरा खेल जानना चाहते हैं केशव पण्डित। हमें बतला कि तूने ये सब कैसे किया—?"

"कुछ खास नहीं किया मैंने स्वामी...।" केशव ने सिगरेट का अवशेष फर्श पर डालकर जूते की 'टो' से कुचल दिया तथा स्वामी की आंखों में झांकते हुये बोला, "तूने सोफिया को तो अपने कब्जे में ले लिया था—लेकिन इसकी तलाशी नहीं ली। सोफिया के वस्त्रों में एक ट्रांसमीटर और एक माइक्रोफोन छिपा हुआ है। जिनके कारण मैं सोफिया और इसके आसपास के लोगों की बातें भी रेडियो रिसीवर पर सुन रहा था और मुझे सोफिया की लोकेशन भी मिल रही थी। जब तू सोफिया और श्वेता को यहां लेकर आया तो मैं भी पीछा करते हुये यहां आ पहुंचा था। लेकिन तेरे सामने नहीं आया मैं। चुपचाप रेन वाटर पाइप से चढ़कर छत पर पहुंच गया था।"

"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? तू तो पहले होटल ताजमहल, फिर विधानसभा भवन और फिर नारायणपुर गांव...?"

"वो मैं थोड़े ही था—।"

"क...क्या मतलब—?"

"वो तो मेरे भेष में मेरा परम शिष्य राजन शुक्ला था—जिसे तेरा चेला केशव पण्डित समझता रहा था। हां, फोन पर तूने जो बातें की थीं...वो मुझसे ही की थीं—तब मैं यहीं पर...इस फार्महाउस की छत पर था...।"

"ओह...ओह...तो ये खेल था तेरा...।" मुट्ठियों को कसकर भींच लिया स्वामी ने तथा फुंफकारता हुआ बोला, "तभी तेरी बीवी झांसी की रानी बनी हुई थी। क्योंकि इसको मालूम था कि ट्रांसमीटर की वजह से तू यहां पहुंच चुका है। हमें धोखे में रखने के लिये तूने नकली केशव पण्डित का इस्तेमाल किया। काफी चालाक है तू। लेकिन आज तेरी सारी चालाकी धरी-की-धरी रह जायेगी। कुछ भी नहीं कर पायेगा तू...कुछ भी नहीं। हमारी योजना पर ही अमल होगा। वो ही होगा...जो हमने सोचा था। पहले तू अपनी बीवी तथा चेली की बेइज्जती का तमाशा देखेगा और फिर ये दोनों तेरी मौत का तमाशा देखेंगी। यूं क्यों मुस्कुरा पड़ा है तू? हमने कोई चुटकुला सुनाया है क्या ओये केशव पण्डित—?"

"हां—मेरे लिये तो ये किसी चुटकुले से कम थोड़े ही था स्वामी...।" केशव उसके कन्धों पर हथेलियां रखकर बोला, "तू बुरी तरह मात खा चुका है। मेरे बारे में बहुत कुछ जानता भी है तू। फिर भी तू ऐसा दावा कर रहा है। मुझे ऐसा ही लगा कि मानो कोई लंगड़ा बोल रहा हो कि वो इधर से हिमालय पर चढ़कर और उधर से उतरकर महज एक घण्टे में चीन पहुंच जायेगा।"

स्वामी की आंखों में खून के कतरे-से भर गये तथा नथुने फूलने-पिचकने लगे।

"तू शायद नहीं जानता कि हमारे साथ हथियारबन्द गुन्डे हैं।"

"हां—मालूम है। उनमें से तूने आठ को बाहर फाटक पर भेज दिया था—ताकि वो मेरी तलाशी लेकर और बांधकर तेरे सामने पेश कर सकें। लेकिन वो नहीं जानते थे कि वो जिसके लिये बाहर जा रहे हैं—वह तो पहले से ही भीतर आ चुका है।"

"कोई बात नहीं। वो बाहर से भीतर आ सकते हैं...।"

"नहीं आयेंगे...।"

"नहीं आयेंगे? क्या मतलब—?"

"उस खिड़की को खोल और बाहर झांककर देख। तुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा...।"

"इन लोगों पर ध्यान रखना...। इनमें से कोई भी जरा-सी गड़बड़ी करे तो...फौरन ही हमारी आज्ञा लिये बिना ही गोलियां मार देना...।"

अपने गुन्डों तथा गंगा को बोलकर स्वामी खिड़की की तरफ बढ़ा और बुदबुदाया—"बहुत ही चालाक आदमी है ये केशव पण्डित। ना जाने इसने हमारे आठ गुन्डों के साथ क्या किया होगा—!"

❑❑❑

❑❑❑

खिड़की खोलकर स्वामी ने बाहर का दृश्य देखा तो दिमाग कुम्हार की चाक की मानिन्द ही गोल-गोल घूमने लगा।

आठों गुन्डे लॉन में फैले पड़े थे तथा उनके आसपास ही उनके हथियार भी पड़े थे।

"अधिक चिन्ता करने की जरूरत नहीं है स्वामी...।" उसके कानों से केशव की आवाज टकराई—"ये मुर्दा नहीं, जिन्दा हैं—कुछ घण्टों के लिये बेहोश हुये हैं ये। मेरे पास प्लास्टिक की बनी एक स्पेशल गन है। जिससे नन्हें-नन्हें पिन निकलते हैं। उन पिनों पर एक खास किस्म का रसायन लगा होता है—पिन के जिस्म में चुभते ही इन्सान या जानवर तुरन्त ही

बेहोश हो जाता है। उसको चींखने-चिल्लाने या कुछ कहने का मौका नहीं मिल पाता है। यही कारण है कि तुझे इन लोगों के बेहोश होने के बारे में भनक भी नहीं लग सकी है।"

आग-बबूला होकर पलटा स्वामी तथा चींख-चींखकर बोला, "हमसे दुश्मनी मोल लेकर तूने ठीक नहीं किया है केशव पण्डित! तुझे इस दुश्मनी का परिणाम भोगना होगा। भले ही तूने हमारे आठ आदमियों को बेहोश कर दिया हो—लेकिन हमारे चार गुन्डे अभी भी यहां उपस्थित हैं। तीन गुन्डों ने और गंगा ने तुझ पर हथियार ताने हुये हैं। हमारा संकेत होते ही तुझ पर गोलियां बरस पड़ेंगी। बाजी अभी भी हमारे हाथों में ही है।"

"ऐसे चालाक किस्म के दुश्मन को अधिक समय तक जिन्दा छोड़ना समझदारी नहीं होती स्वामीजी...।" केशव पर एक०के० सैंतालीस ताने हुये बोली गंगा, "जरा-सा मौका मिलते ही ये हमला बोल देगा और हमें पछताने का भी मौका नहीं मिलेगा। आज्ञा दीजिये...मैं अभी इसे गोलियों से भून देती हूं...।"

"हा—हा—हा...सुना, मैडम जी...।" श्वेता पहले तो हंसी, फिर सोफिया से बोली, "बकरी बब्बर शेर का शिकार करने का दम भर रही है। इसे मालूम ही नहीं है कि सैंकड़ों हथियारबन्द लोग भी अपने गुरुजी का मुकाबला नहीं कर सकते हैं। ये गंगा अपने आपको ना जाने क्या समझ रही है...।"

मारे अपमान के गंगा का चेहरा लाल-भभूका हो चला तथा वो ए०के० सैंतालीस को लाठी की मानिन्द उठाकर श्वेता पर हमला करने के लिये दौड़ पड़ी।

लेकिन श्वेता तक पहुंचने से पूर्व ही वो फर्श पर बेहोश पड़ी थी तथा उसकी ए०के० सैंतालीस केशव के हाथ में थी।

हुआ यूं था कि केशव ने किसी चीते की मानिन्द ही हवा में छलांग लगाई तथा हवा में उड़ते-उड़ते गंगा की कनपटी पर बायें हाथ से घूंसा जड़ा तथा दायें हाथ से ए०के० सैंतालीस छीन ली थी।

एक घूंसा ही काफी था गंगा के लिये—वो फर्श पर गिरने से पूर्व ही अचेत हो चुकी थी।

"मार दो...इसको भून डालो...।" स्वामी बौखलाकर चींखा-सा, "हमारी गंगा को मार डाला इसने। इसे मार डालो...छोड़ना मत इसे...।"

तीनों गुन्डे हिचकिचाये—क्योंकि वो जानते थे कि केशव किस बला का नाम है—वैसे भी केशव के हाथों में ए०के० सैंतालीस थी।

"क्या हुआ? फायरिंग नहीं करोगे...? ओह...इससे डर रहे हो।

लो, मैं इसको फेंक देता हूं...।" कहने पर केशव ने ए०के० सैंतालीस को हवा में दूर उछालकर चारों गुन्डों तथा स्वामी को भी हैरान-परेशान कर दिया।

"ये तुम लोगों के लिये फर्स्ट एंड लास्ट चांस है...।" केशव चारों गुन्डों से बोला, "यदि चूक गये तो...तुम लोगों की खैर नहीं होगी। हड्डी-पसली टूटेगी और पुलिस, अदालत के माध्यम से फांसी के फन्दे तक पहुंच जाओगे। क्योंकि इस स्वामी के लिये तुम लोग फांसी पर चढ़ने योग्य जुर्म तो कर ही चुके हो। तुम्हारा और तुम्हारे इस स्वामी का बचने का सिर्फ एक ही उपाय है—वो ये कि तुम लोग मेरा खात्मा कर डालो। मैं निहत्था खड़ा हूं तुम लोगों के सामने। तीन के हाथों में हथियार हैं। चौथा भी मेरी फेंकी हुई ए०के० सैंतालीस उठाकर उसका इस्तेमाल कर सकता है। मैं देखना चाहता हूं कि स्वामी के पालतू पिल्लों में कितना दम-खम है—!"

❑❑❑
❑❑❑

"देख क्या रहे हो कुत्तो...?" स्वामी उबलकर बोला, "ये तुम लोगों के साथ हमें भी चैलेंज कर रहा है। साबित कर दो कि तुम मामूली पिल्ले नहीं हो—बल्कि खूंखार किस्म के कुत्ते हो। कहर बरसा दो केशव पण्डित पर। पहना दो इसको मौत का कफन...।"

तीन गुन्डों ने केशव पर हथियार तानने की महाभूल की और 'आ बैल मुझे मार' वाली कहावत को चरितार्थ कर दिया।

बायें पैर की धुरी पर लट्टू की मानिन्द ही घूमा केशव तथा उसका हवा में उठा दायां पैर 'तड़...तड़ाक...तड़ाक' की कड़क आवाज के साथ तीन गुन्डों की कनपटियों पर हथौड़े की मानिन्द ही टकराया।

तीनों की ही कनपटियों की हड्डियां पिचक गईं तथा वहां खड्डे से बन गये।

पहले उनके हथियार हाथों से छूटे तथा फिर वो स्वयं भी कटे वृक्ष की मानिन्द भरभराकर फर्श पर गिर पड़े।

ना चींखे, ना चिल्लाये, ना तड़पे—बस...बेहोश हो गये।

तब तक चौथे गुन्डे ने फर्श पर पड़ी ए०के० सैंतालीस उठा ली तथा केशव पर तान दी, लेकिन उसकी नाल बुरी तरह हिल रही थी क्योंकि उसके हाथ बुरी तरह कांप रहे थे।

"फायरिंग कर...उल्लू के पट्ठे...।" स्वामी मुट्ठियों को भींचे हुये

गला फाड़कर चींखा, "अगर तुझसे कुछ नहीं हो रहा है तो राइफल हमें दे...ट्रिगर दबा...फायरिंग कर...।"

तड़...तड़...तड़...।

बेचारे गुन्डे ने हड़बड़ाकर ट्रिगर दबा दिया तो ए०के० सैंतालीस की नाल गोलियां उगलने लगी—लेकिन केशव हवा में उछलने पर धनुष से छोड़े गये तीर की मानिन्द ही फर्श से छः फुट तथा ए०के० सैंतालीस से छूटी गोलियों से एक फुट ऊपर तैरते हुये गुन्डे के करीब पहुंचा। उसका सिर तड़ाक...की तेज आवाज के साथ गुन्डे के चेहरे से टकराया तथा इसी के साथ केशव उसके ऊपर से होते हुये फर्श पर जा खड़ा हुआ।

गुन्डे का चेहरा पिचककर भीतर की तरफ चला गया। उसकी नाक तथा मुंह से खून की पिचकारियां छूट चलीं।

वह फर्श पर गिरकर छिपकली की कटी दुम की मानिन्द ही छटपटाया तथा फिर एक झटका-सा खाकर बेहोश हो गया।

स्वामी ने तब तक एक ए०के० सैंतालीस उठा ली तथा केशव पर तानकर हिंसक भाव से बोला, "बहुत हो गया तेरा तमाशा ओये केशव पण्डित! तू गया...तेरा खेल खत्म। मरने के लिये तैयार हो जा...।"

"चल, तू भी चेष्टा करके देख ले स्वामी...।" कहने के साथ ही केशव फर्श पर गिरकर गीली साबुन की मानिन्द ही फिसला और स्वामी के पेट पर सिर की टक्कर जड़ दी भड़ाक...।

"आऽऽऽ!" स्वामी की चींख निकली तथा हाथों में थमी ए०के० सैंतालीस हवा में उछली—जिसे हवा में उछलकर केशव ने ही कैच किया।

स्वामी ने कसमसाकर जबड़ों को भींच लिया और मुट्ठियों को कस लिया।

"ले पकड़...।" केशव ने ए०के० सैंतालीस उसकी तरफ उछालकर कहा, "तू भी क्या याद करेगा—।"

स्वामी ने ए०के० सैंतालीस कैच की तथा सीधी करके केशव पर फायरिंग करना ही चाहता था कि केशव ने दायें पैर को नीचे से ऊपर की तरफ चलाकर उसके हाथों पर वार किया—

परिणामस्वरूप ए०के० सैंतालीस हवा में पुनः उछली और केशव ने उसे कैच करने पर वापिस हवा में उछाल दी, बोला—"चल, हथियारों में क्या रखा है। ऐसे ही मुकाबला हो जाये—।"

आशा के विपरीत स्वामी ने हैट तथा फिर अपना ओवर कोट खोलकर तथा उतारकर फेंक दिया।

फिर वो हवा में उछलते हुये और किसी मार्शल आर्ट के खिलाड़ी

की मानिन्द मुंह से आवाज निकालते हुये हाथों-पैरों को हवा में उछालने लगा।

"ये स्वामी तो शायद मार्शल आर्ट जानता है मैडम जी...।" श्वेता फुसफसाकर सोफिया से बोली, "किसी स्वामी या आम आदमी का तो मार्शल आर्ट से कोई लेना-देना नहीं होता है। ये भला मार्शल आर्ट कैसे जनता है—?"

❑❑❑
❑❑❑

आशा के विपरीत स्वामी हवा में उछलकर केशव की तरफ उड़ा-सा, और उसने केशव के सीने पर दायें पैर की किक जड़ देनी चाही, लेकिन बला की फुर्ती के साथ केशव ने झुकाई दी और हाथों के बल फर्श पर जिस्म को टिकाकर दोनों पैरों से स्वामी की पीठ व कमर पर वार कर दिया।

चींखते हुये स्वामी गैस भरे गुब्बारे की मानिन्द उड़कर सामने की दीवार से टकराकर फर्श पर गिरा...लेकिन बला की फुर्ती से किसी स्प्रिंग की मानिन्द ही उछलकर खड़ा हो गया।

केशव ने दायें हाथ की तर्जनी उंगली से उसे करीब आने का संकेत किया।

स्वामी किसी बॉक्सर की मानिन्द हाथों को हवा में फेंकते हुये आगे बढ़ा—अचानक ही उसने हवा में उछलकर किसी बकरे की मानिन्द ही सिर की जोरदार टक्कर केशव के सीने पर जड़ दी...भड़ाक।

लेकिन ये क्या...सिर को पकड़े हुये स्वामी ही धुत्त शराबी की मानिन्द लड़खड़ाकर दो कदम पीछे हटा तथा पीड़ा भरी आंखों में आश्चर्य भरकर केशव को देखने लगा।

दरअसल केशव अपने स्थान से इंचभर भी नहीं हिला था। स्वामी को यूं ही लगा था कि मानो गलती से उसने सिर किसी दीवार से टकरा दिया था।

स्वामी अभी पीड़ा से उबर भी ना पाया था कि केशव ने दोनों हाथों से उसके सिर को दबोचकर दायें घुटने का जबरदस्त वार उसके गुप्तांग पर कर दिया...तड़ाक!

"अ...आ...!" चीखने के लिये मुंह तो खोला स्वामी ने...लेकिन आवाज ही ना निकली।

मारे पीड़ा के उसका चेहरा यूं सुर्ख हो चला कि मानो जिस्म का समूचा खून चेहरे में उतर आया हो।

सुर्ख होकर आंखें कटोरियों से बाहर कूदने को लालायित हो चलीं—उनमें आंसू भर आये।

झुककर दोनों हथेलियां पेट के नीचे रखकर वह आगे-पीछे होने लगा—फिर 'भद...' से नीचे जा गिरा तथा जल बिन मछली-सा छटपटाने व तड़फड़ाने लगा।

केशव ने उसके लम्बे बालों को मुट्ठी में जकड़कर एक झटके के साथ उसको उठा दिया तथा उसके पेट पर हथौड़े-जैसे घूंसे मारते हुये बोला—"गांधी तेरे देश में...रावण राम के भेष में...ये तूने ही कहा था ना? तब तो मुझे नहीं पता था—लेकिन अब पता है कि गांधी के देश में राम के भेष वाला रावण तू ही है। क्या सजा दूं मैं तुझे ओये भेड़ की खाल में छिपकर रहने वाले भेड़िये? तूने लोगों के विश्वास को छला है—इसलिये तेरे जिस्म को अनगिनत सूराख करके छलनी बना दूं? शराब को गंगाजल बताकर पीता रहा...तो तुझे ढेर सारा तेजाब पिला दूं? मासूम अबलाओं के जिस्म में वासना के पैने दांत गड़ाता रहा—तो तेरे इस पाजी जिस्म में बड़े साइज की नुकीली कीलें ठोक दूं? भले ही ये देश गांधी जी का है—लेकिन मैं हिटलर बनकर तेरी जिन्दगी के साथ तानाशाही करना चाहता हूं—तेरी सांसों को मौत के तेजाब में घोलकर तेरी गन्दी आत्मा को नरक की किसी खूंटी पर टांग देने का ख्वाहिशमन्द हूं मैं...।"

"अ...आह...आह...छोड़ दो हमें...आह...।" बुरी तरह तड़पते, चींखते, कराहते हुये बोला स्वामी, "पहले हमारी बात सुन लो...सुनने पर ही निर्णय लेना...आह...उई...हमारी बात पसन्द ना आये...तो कुछ भी करना...हमारी बात...सुन ले आह...।"

केशव ने उसके बालों को छोड़ा तो वह भरभराकर नीचे गिरा तथा हाथों से पेट को दबोचे हुये तड़पने व कराहने लगा।

"वक्त नहीं है...जल्दी बोल।" केशव उसकी पसलियों पर ठोकर जड़कर बोला, "जल्दी से बोल...क्या कहना चाहता है तू—?"

❑❑❑
❑❑❑

गहरी-गहरी सांसें भरकर स्वामी ने पहले पीड़ा से थोड़ी मुक्ति पाई तथा फिर बोला, "हम...अपने तमाम पापों और अपराधों को स्वीकार करते...।"

"हम...करते हैं...नहीं, अपने लिये मैं...करता हूं...वाले शब्द इस्तेमाल करेगा तू। कोई स्वामी," केशव उसके सिर पर जूते समेत दायां

पैर रखकर कड़वाहट भरे लहजे में बोला, "कोई योगी...साधु-संन्यासी या धर्मात्मा नहीं है तू। गन्दी नाली का कीड़ा है तू...जल्दी से बोल...क्या कहना चाहता है तू–?"

"मैं कोई स्वामी नहीं...मैं अपराधी हूं केशव पण्डित! तुम तो मेरे बारे में सबकुछ जानते ही हो...मेरा नाम देवा है। दिल्ली में कई बच्चियों की लाज से खेलकर उनकी हत्या की मैंने। पकड़ा गया तो अदालत ने फांसी की सजा सुनाई थी। लेकिन मैं भाग निकला था। फांसी की सजा से बचने के लिये मैं उत्तराखंड भाग गया था। वहां कई योगियों तथा साधु-सन्तों के सान्निध्य में रहकर योगा, आयुर्वेदिक चिकित्सा व अध्यात्म की शिक्षा ली। धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन किया। फिर स्वामी रामशरण दास के रूप में मुम्बई के करीब आकर अपना डेरा जमाया। बाद में वृद्ध आश्रम, महिला आश्रम, अनाथालय, स्कूल, हॉस्पिटल इत्यादि बनवाये। खैर, मैं तुमसे सौदा करना चाहता हूं...।"

"कैसा सौदा–?"

सोफिया व श्वेता मूक दर्शक बनी हुई थीं।

"मेरे बारे में सिर्फ तुम ही जानते हो पण्डित। गुंजन, कुछ पुलिस वाले ही हमारी...मे...मेरी वास्तविकता जानते हैं। तुम उन्हें अपने तरीके से सम्भाल लोगे। मैं फांसी से बचना चाहता हूं। वास्तविकता को छिपा लो तुम–बदले में तुम्हें सौ करोड़ रुपये मिल जायेंगे...।"

"इतनी बड़ी रकम है तेरे पास–?"

"पचास करोड़ कैश है। बाकी के पचास करोड़ किसी से दिलवा दूंगा...।"

"किससे दिलवायेगा–?"

"कि...किंग कोबरा से...।"

"किंग कोबरा...?" झील-सी नीली आंखों को सिकोड़कर पूछा केशव ने, "ये कौन है–?"

"पाकिस्तान वाली आई०एस०आई० संस्था है ना? उसका इन्डियन कमाण्डर है किंग कोबरा–।"

"लेकिन तेरा किंग कोबरा से क्या सम्बन्ध है–?"

"वो...वो मैं भी आई०एस०आई० का एरिया कमाण्डर हूं...।"

"आह...राज पर राज खुल रहे हैं...।" व्यंगपूर्ण भाव से बोला केशव, "प्याज के छिलकों की तरह तेरे रहस्य उजागर हो रहे हैं। तू सिर्फ बलात्करी और हत्यारा ही नहीं है–बल्कि देशद्रोही भी है। वाह...बहुत सारी डिग्रियां प्राप्त की हुई हैं तूने स्वामी उर्फ देवा। खैर, ये बतला कि

तू आई०एस०आई० के सम्पर्क में कैसे आया था और ये किंग कोबरा कौन है–?"

❑❑❑
❑❑❑

केशव ने चारमीनार की डिब्बी से एक सिगरेट निकालकर गोल्डन कलर के लाइटर से सुलगाई तथा स्वामी को देखा, "ए...एक सिगरेट पीनी चाहता...आह...आह...।"

केशव ने स्वामी के पेट पर ठोकर जड़ दी तथा जहर-से कड़वे लहजे में बोला, "अपने बाप की बारात में आया है क्या...जो तेरी खातिरदारी होगी बे? शुक्र मना कि मेरे हाथ-पैर अभी रेस्ट पर हैं–तेरी ठुकाई तथा तुड़ाई का कार्यक्रम कुछ देर के लिए स्थगित हुआ है। मेरे प्रश्नों के उत्तर दे तू...।"

"वो...क्या है कि जब मैं जेल से फरार होकर इधर-उधर छिपा फिर रहा था तो...पुलिस ने मुझे मेरठ में पहचान लिया था और मेरे पीछे पड़ गई थी। इत्तफाक से मेरे बचपन के दोस्त सलीम ने मुझे देखा और अपनी कार में लिफ्ट देकर मुझे मुजफ्फरनगर ले गया था। वहां उसने मेरी मुलाकात अपने मामू करीमुल्ला से करवाई थी–जो कि पाकिस्तानी था तथा आई०एस०आई० के लिये काम करता था। करीमुल्ला मुझसे बोला था कि मैं पकड़ा गया तो फांसी पर चढ़ा दिया जाऊंगा। इसलिये मुझे आई०एस०आई० ज्वाइन कर लेनी चाहिये। मुझे धन-दौलत की कमी नहीं होगी। मेरे हांमी भरने पर मुझे कश्मीर से बॉर्डर पार करवाकर पाकिस्तान भेजा गया था। वहां आई०एस०आई० के ट्रेनिंग कैम्प में एक वर्ष तक मुझे मार्शल आर्ट, हथियारों, जासूसी वगैरा की ट्रेनिंग दी गई थी। फिर आई०एस०आई० के चीफ ने मुझसे कहा था कि मैं धर्म का चोला पहन लूं और स्वामी बनकर लोगों को अपना भक्त बना लूं। इसी की ओट में आई०एस०आई० के लिये काम भी करता रहूं...।"

"हुम्म...फिर तू पाकिस्तान से उत्तराखंड गया और वहां से स्वामी रामशरण दास बनकर यहां लौटा था...क्यों?"

"हां–यही बात है...।"

"तूने ये नहीं बतलाया कि किंग कोबरा कौन है और वो कहां रहता है–?"

"मैं नहीं जानता कि वो कौन है... मैं क्या...भारत में आई०एस०आई० से जुड़ा कोई भी व्यक्ति नहीं जानता है। आई०एस०आई० चीफ को ही मालूम है। उसी ने किसी सफेदपोश व्यक्ति को इन्डियन

कमाण्डर बनाया तथा उसको छदम नाम या परिचय दिया—ताकि वो पकड़ा ना जाये। मैं...मैं सच बोल रहा हूं पण्डित...वास्तव में ही मैं नहीं जानता कि किंग कोबरा कौन है। तुम तो सम्मोहन विद्या के मास्टर हो। चाहो तो मुझे सम्मोहित करके इस बात की पुष्टि कर सकते हो...।"

केशव लगातार उसकी आंखों में झांककर देखे जा रहा था। उसे लगा कि वो सत्य ही बोल रहा है, इसलिये कहा, "तो फिर किंग कोबरा कैसे सम्पर्क करता है? आवश्यकता पड़ने पर आई०एस०आई० के लोग उससे कैसे सम्पर्क करते हैं—?"

"उसने सभी को छोटे साइज के, परन्तु बहुत ही शक्तिशाली ट्रांसमीटर दिये हुये हैं। उन्हीं से सम्पर्क होता है...।"

"हुम्म...क्या तू कभी मिला किंग कोबरा से—?"

"हां—एक बार उससे मिलना था तो उसने मुझे दिल्ली बुलाया था। वहां कुतुबमीनार के पास वो फकीर के रूप में मुझसे मिला था। शायद उसने फेसमास्क, विग और आंखों पर कॉन्टेक्ट लैंसेज लगाये हुये थे। आवाज बदलकर बोल रहा था वो। बस, एक बार ही उससे मुलाकात हुई थी। मुझे बचाने के लिये वो तुम्हें पचास करोड़ रुपये दे देगा। पचास करोड़ मैं अपने पास से दूंगा...।"

"थोड़ी रकम है ये...।"

"कि...कितनी चाहिये—?"

"मेरी किंग कोबरा से अपने ट्रांसमीटर के द्वारा बात करा। मैं उसी को बतलाऊंगा कि मुझे उससे क्या चाहिये—।"

❑❑❑

❑❑❑

स्वामी के अन्डरवियर के भीतर एक गुप्त जेब थी— उसी से उसने माचिस की डिब्बी के साइज का ट्रांसमीटर निकाला तथा उसे ऑन करके किंग कोबरा से सम्पर्क स्थापित करने की चेष्टा करने लगा—

"एस०आर०डी० कॉलिंग...एस०आर०डी० कॉलिंग...।"

"किंग कोबरा दिस साइड...बोलो, कैसे याद किया हमें...ओवर?" ट्रांसमीटर के भीतर से मानो कोई इच्छाधारी नाग ही फुंफकारते हुये मानवी भाषा में बोला था।

"वो...हम...मैं संकट से घिरा हूं किंग कोबरा जी...।" कनखियों से केशव को देखते हुये बोला स्वामी।

"कैसा संकट? ओवर...खों...खों...।"

स्वामी ने संक्षिप्त में सारी बातें बतलाकर कहा—"मेरे पास सिर्फ

पचास करोड़ रुपये ही हैं। सोचा था कि पचास करोड़ रुपये आपसे दिलवा दूंगा—लेकिन केशव केशव पण्डित सौ करोड़ रुपये में राजी नहीं है। जान बचाने के लिये कोई रास्ता केशव पण्डित ही निकाल सकता है। वो कहता है कि अपनी मांग के बारे में आपको ही बतलायेगा। कृपया करके आप केशव पण्डित से वार्तालाप कर लीजिये...ओवर...।"

"हां—ठीक है—केशव पण्डित से हमारी गुफ्तगू...वार्तालाप कराओ एस०आर०डी०...खों...खों...।"

स्वामी ने ट्रांसमीटर केशव की तरफ बढ़ा दिया।

केशव ने ट्रांसमीटर लिया तथा बोला, "हैलो, किंग कोबरा...।"

"सलाम, केशव पण्डित...हैलो...तुम्हारे बारे में बहुत कुछ सुना है। सुना क्या है...तुम्हारे बारे में बहुत कुछ जानते हैं हम। पाकिस्तानियों के दिलो-दिमाग पर पूरी तरह छाये हुये हो तुम। खास करके आई०एस०आई० वालों के। वो जिसको भी हिन्दुस्तान में कोई जिम्मेदारी सौंपते हैं—उसको तुमसे आगाह करते हैं। बोलते हैं कि केशव पण्डित से पूरा होशियार रहने की जरूरत है—वो ही तुम्हारे मिशन में अड़ंगा डाल सकता है। मुझसे भी ऐसा ही कहा गया था। इसी वास्ते मैंने अपना ठिकाना मुम्बई में नहीं बनाया। पैदाइश...खों...मुम्बई की होने के बावजूद मैं कहीं और से आई०एस०आई० को चला रहा हूं। खैर, ये बोलो कि स्वामी की बख्शीश करने के वास्ते तुम्हें क्या चाहिये? वैसे सौ करोड़ रुपये की रकम...खों...खों...कम नहीं होती। बोलो, क्या चाहिये तुम्हें...?"

"ऐसी बातें ट्रांसमीटर पर...या फोन पर थोड़े ही होती हैं किंग कोबरा? मेरी डिमांड ज्यादा होगी। तुम कम करवाना चाहोगे। बारगेनिंग यानि मोल-भाव होगा। अगर हम आमने-सामने हों तो...।"

"ये तो मुमकिन ही नहीं है पण्डित। हम मुम्बई से बहुत दूर हैं।"

"मुझे कोई जल्दी नहीं है किंग कोबरा। तुम कल शाम तक आ सकते हो। या फिर मुझे अपने पास बुला सकते हो। जहां भी बोलोगे...मैं आ जाऊंगा। अकेला और निहत्था ही आऊंगा। कोई चालाकी नहीं होगी—बिल्कुल नहीं होगी। वैसे भी तुम मुझे अपने इलाके में बुलाओगे तो अपनी सुरक्षा के पक्के इन्तजाम कर ही लोगे। खतरा होगा तो मुझे होगा...तुम्हें नहीं। आई०एस०आई० वालों ने किसी चूहे या गीदड़ को तो इन्डियन कमाण्डर बनाया नहीं होगा। उम्मीद करता हूं कि तुमसे बुजदिली भरा जवाब नहीं मिलेगा मुझे...।"

"मैं चूहा हूं कि शेर हूं...इस बहस में पड़ने की जरूरत नहीं है केशव पण्डित—बिल्कुल भी नहीं है। मैंने कमाण्डर बनने से पहले ही तुम्हारे बारे

में फुल स्टडी की थी। तमाम जानकारियां हासिल की थीं। भले ही हमारी कभी मुलाकात नहीं हुई हो–लेकिन–खों...खों...यूं समझो कि तुम्हारी नस-नस से वाकिफ हूं मैं। तुम्हारे सिर पर कितने बाल हैं...मुंह में कितने दांत हैं...जानता हूं। बुजदिल कहो मुझे...चूहा या गीदड़...कुछ भी बोलो...मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है...चढ़ाये में आकर चने के झाड़ पर चढ़ने वालों में से कतई नहीं हूं मैं। अगर रकम चाहिये तो...मेरा आदमी फार्महाउस पर लेकर पहुंच जायेगा। मुम्बई में भी अपने बन्दे हैं। कहो तो रकम तुम्हारे घर पर भिजवा देता हूं। कितना पैसा चाहिये...दो सौ करोड़...तीन सौ...चलो, पांच सौ करोड़ भिजवा देता हूं। लेकिन ये सौदा 'इस हाथ दे और उस हाथ ले' वाला होगा। रकम लेकर स्वामी को हमारे हवाले करना होगा। बोलो, ये लेन-देन कहां करना चाहोगे...खों...खों...।"

"खांसी है तुम्हें किंग कोबरा! किसी अच्छे डॉक्टर से इलाज क्यों नहीं करवाते हो? वैसे कोई डिग्री ना होते हुये भी मैं कई खतरनाक बीमारियों का इलाज कर लेता हूं। मुझसे इलाज करा लो...गारन्टी के साथ बोलता हूं कि हमेशा के लिये खांसी ठीक हो जायेगी...।"

"लेन-देन वाली जगह बोलो केशव...।"

"यहीं...फार्म हाउस पर ही रकम भिजवा दो। ये बोलो कि रकम कब तक पहुंच जायेगी–?"

"खेलने के वास्ते...बेवकूफ बनाने के वास्ते तुम्हें किंग कोबरा ही मिला है क्या पण्डित...?"

"क्या मतलब–? कहना क्या चाहते हो तुम किंग कोबरा–?"

❑❑❑

❑❑❑❑

"मैं जिस भी आदमी को रकम देने के लिये भेजूंगा...तुम उसको पकड़ लोगे केशव पण्डित...।" केशव के हाथ में पकड़े ट्रांसमीटर के नन्हें स्पीकर से किंग कोबरा की कोबरा जैसी फुंफकारती हुई आवाज उभरी, "ये बात दूसरी होगी कि वो तुम्हें मेरे बारे में कुछ भी नहीं बतला पायेगा। उसको कुछ मालूम ही नहीं होगा। स्वामी तो एरिया कमाण्डर है–इसको भी मेरे बारे में कुछ मालूम नहीं है। लेकिन मैं मोटी रकम के साथ अपने एक और आदमी को खामख्वाह ही जाया क्यों करूं...खों...खों...।"

"क्या मतलब? कहना क्या चाहते हो तुम किंग कोबरा...?"

"मतलब तो तुम समझ ही गये हो पण्डित–जानबूझकर अन्जान मत बनो। मैं तो ऐसे ही तुमसे सौदेबाजी कर रहा था। वरना मैं जानता हूं कि तुम आर०एस०डी० यानि स्वामी रामशरण दास को छोड़ने वाले नहीं

हो–मेरे सुपुर्द करने वाले कतई नहीं हो। दुनिया की तमाम दौलत देकर भी तुम्हारी वतनपरस्ती को नहीं खरीदा जा सकता है। हिन्दुस्तान में तुम जैसे गिने-चुने ही वतन परस्त होंगे, जिनके दम-खम पर ही ये मुल्क टिका हुआ है। ना जाने उस बेवकूफ स्वामी ने ये गलतफहमी कैसे पाल ली कि वो कोई भी कीमत चुका कर तुम्हारे चंगुल से निजात पा सकता है...खों...खों...।"

"ये...ये क्या कह रहे हो आप किंग कोबरा...?" स्वामी बौखलाकर तेज आवाज में बोला, "मैं आपका...आई०एस०आई० का वफादार हूं। आई०एस०आई० के लिये ही मैंने ये स्वामी वाला रोल प्ले किया था। मैं मुसीबत में हूं...संकटग्रस्त हूं। मुझे बचाना आपका कर्त्तव्य बनता है। अगर आप अपने वफादार लोगों को यूं मझधार में छोड़ देंगे तो कौन आपके साथ वफादारी करेगा?"

"तू मंझदार में फंसा होता तो हम तुझे बचा लेते स्वामी–लेकिन तू तो केशव पण्डित के चंगुल में फंस चुका है। भूल गया क्या...जब दिल्ली में हमारी मुलाकात हुई थी तो हमने तुझे केशव पण्डित से आगाह किया था। हिदायत दी थी कि केशव पण्डित से होशियार रहना। लेकिन तू अपनी बेवकूफी और नादानी से केशव पण्डित की चपेट में आ गया। चल, हम तुझी पर छोड़ते हैं। तू केशव पण्डित से सौदा कर ले। ये जो भी रकम मांगे, हमें बतला–हम दे देंगे। लेकिन होशियारी के साथ ही डील करना...खों...खों...ये तुझे बेवकूफ बना सकता है। इसको भारत मां की कसम देकर ही सौदा करना–क्योंकि वतन परस्त है, सच्चा हिन्दुस्तानी है–ये भारत मां की कसम खाने पर धोखा नहीं करेगा। तू छोड़ हम ही केशव पण्डित से बात कर लेते हैं। बोल केशव पण्डित–क्या तू भारत मां की कसम खाकर स्वामी का सौदा करने के लिये राजी है? तू जो भी कीमत लगायेग–हम दे देंगे। हमें अभी तेरा जवाब चाहिये–खों...खों...।"

मुस्कुराया झील-सी नीली आंखों वाला तथा बोला–"मैं बिना कोई सौगन्ध खाये ही बोल रहा हूं किंग कोबरा कि मैं इस ढोंगी स्वामी को किसी भी कीमत पर छोड़ने वाला नहीं हूं। मैं ये चाहता था कि इस स्वामी के माध्यम से तुझ तक पहुंच जाऊं और तेरा गला पकड़कर तेरा टेंटुआ दबा डालूं...।"

"मैं तेरे झांसे में आने वाला थोड़े ही था ओये केशव पण्डित...।" ट्रांसमीटर के माध्यम से किंग कोबरा फुंफकार उठा, "हम उड़ते पंछी के पंख ही नहीं गिन लेते हैं–बल्कि ये भी जान लेते हैं कि वो किधर से आ रहा है और कहां पर जायेगा। तू एड़ी से चोटी तक के भी जोर लगाकर

किंग कोबरा तक नहीं पहुंच सकता—ना ही टेंटुआ दबा सकता है। तेरा जो जादुई दिमाग है ना...हम तक नहीं पहुंच सकेगा। तूने स्वामी को जरूर पकड़ लिया है—लेकिन हम पर कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा...खों...खों...चौबीस घण्टे के भीतर ही महाराष्ट्र के नये एरिया कमाण्डर को मुकर्रर कर दिया जायेगा...।"

"किसी को भी मुकर्रर कर दे तू किंग कोबरा, वो भी मुझसे नहीं बच पायेगा। और बचेगा तू भी नहीं किंग कोबरा...।"

"हम तक पहुंचने के ख्वाब भी मत देखना पण्डित। अव्वल तो तुझे मालूम ही नहीं पड़ेगा कि हम कोन हैं और कहां रहते हैं। अगर ऐसा कोई करिश्मा हो भी गया तो...इसे अपनी फतह नहीं, बल्कि शिकस्त ही समझना। क्योंकि हम ज्वालामुखी हैं—हमें छूने की कोशिश करेगा तो जलकर राख हो जायेगा तू...।"

"देश के दुश्मनों के लिये मैं यमदूत की तरह ही हूं किंग कोबरा। दुनिया का कोई भी जीव भले ही कहीं भी जाकर छिप जाये...यमदूत वहीं पहुंच जाता है। जब तेरे विनाश का समय निकट होगा तो मैं तुझ तक पहुंच जाऊंगा। रही बात तेरे ज्वालामुखी होने की...तो अपनी गलतफहमी दूर कर ले तू। तू सिर्फ शमां की जलती हुई लौ भर ही है। तुझे मोमबत्ती की तरह इस्तेमाल करते हुये आई०एस०आई० वालों ने देशद्रोहिता की आग से जला दिया है। उन बेवकूफों की मंशा ये है कि मोमबत्ती यानि शमां से हिन्दुस्तान में आग लगाकर अपने हाथों को सेंक लेंगे। बार-बार उन्होंने ऐसी ही शमां जलाई और बदले में हिन्दुस्तानी बारूद से उनका घर ही बार-बार उड़ा है। खैर, उनकी बात छोड़...तेरी बात करते हैं ना। तू जलती मोमबत्ती है किंग कोबरा। तू चन्द परवानों को तो जला सकता है—लेकिन फौलाद में छेद नहीं कर सकता है। जिस दिन भी तेरी तकदीर तुझसे रूठ जायेगी तो हवा का हल्का-सा झोंका ही तेरी लौ को निगल जायेगा। खाली मोमबत्ती का बेजान मोम ही रह जायेगा। ज्वालामुखी...हुं...तेज धूप बर्दाश्त करने की खूबी नहीं है...चला है खौलते लावे में डुबकी लगाने। तेरे विनाश का समय शुरू हो चुका है किंग कोबरा—जिसकी शुरूआत स्वामी उर्फ देवा से हो चुकी है। समझ कि तेरी लंका का प्रथम द्वार धराशाई हो चुका है...।"

"तेरे बारे में ठीक ही सुना था। तेरी जीभ मेरठ की कैंची की माफिक ही चलती है...।"

"सिर्फ चलती ही नहीं है किंग कोबरा...काटती भी बहुत तेज है। तेरे अरमानों, तेरी ख्वाहिशों, तेरे ख्वाबों और तेरी खुशफहमियों को बहुत

जल्द छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर एक ही फूंक से आसमान में उड़ा दूंगा। तेरी लंका का दहन मेरे ही हाथों होगा...।"

"मुझे कोई ऐरा-गैरा नत्थू खैरा समझने की भूल मत करना केशव पण्डित। मैं कोई मामूली आदमी नहीं हूं। आई एस०आई०का इन्डियन कमाण्डर हूं मैं। आई०एस०आई० से जुड़े तमाम ओहदेदार, एजेन्ट ही नहीं, बल्कि कई दहशतगर्द, फिदायीन भी मेरे अन्डर में काम करते हैं...। उनकी तादाद लाखों नहीं तो...हजारों में तो होगी ही...।"

"जंगल के जीव-जन्तुओं की संख्या से आग पर कोई फर्क नहीं पड़ता है किंग कोबरा! जंगल की आग जब विकराल रूप धारण करके चारों तरफ फैलती है तो सभी जीव-जन्तुओं को जलाकर राख कर देती है...।"

"चल, मान लिया कि वो जीव-जन्तु ही सही। लेकिन उनके अलावा मेरी पीठ पर आई०एस०आई० का हाथ है तो सिर पर पाकिस्तानी हुक्मरानों का हाथ है। यूं समझ कि पूरा पाकिस्तान मेरे साथ है...खों...खों...।"

"किस पाकिस्तान की बात कर रहा है तू ओये किंग कोबर...?" हाथ में पकड़े ट्रांसमीटर को मुंह के करीब लाकर बोला केशव, "उस पाकिस्तान की...जिसका आज से पैंसठ-छियासठ साल पहले कोई अस्तित्व ही नहीं था? जिसे हिन्दुस्तान ने ही जन्म दिया? जिसको चलाने के लिये हिन्दुस्तान ने पैंसठ करोड़ रुपये दिये थे? जिसके पास सुई तक बनाने का कारखाना नहीं है? जो दूसरे देशों की मदद का मोहताज है? दूसरे देश उसकी मदद करना बन्द कर दें तो उसके हाथों में कटोरा आ जायेगा। ये हमारी रहमदिली है कि बार-बार उसको माफ कर देते हैं—वरना वो हर बार की जंग में बुरी तरह पिटा है। उस पाकिस्तान का रौब देने की कोशिश कर रहा है तू...जिसकी आई०एस०आई० और मिलिटरी को कई बार नाको चने चबवा चुका हूं मैं? अकेला ही गया और अपना मिशन कम्पलीट करके सही-सलामत वापिस लौट आया...वो कुछ नहीं कर पाया। उन लोगों में अगर कुछ दम-खम होता तो तुझ जैसे गद्दारों के कन्धे पर बन्दूक रखकर चलाने की हिमाकत नहीं करते। चोरी-छिपे आतंकियों की घुसपैठ नहीं कराते। उस पाकिस्तान को अपना आका मानने में तू गर्व महसूस कर रहा है, जिसमें आमने-सामने की जंग लड़ने की हिम्मत नहीं है। खजूर के पेड़ को अपना सरपरस्त मान रहा है तू—जिसके नीचे बैठने वाले को छाया नहीं मिलती और फल भी बहुत दूर लगते हैं? होश की दवा कर ओये बेवकूफ इन्सान—वरना छक्के छूट जायेंगे तेरे। तूने ओखली में सिर डालने की गलती कर डाली है...सिर पर मूसल ही पड़ेंगे। जब तू मेरे सामने

होगा तो...कोई बचाने नहीं आयेगा तुझे। दूर-दूर तक कोई आका दिखलाई ना पड़ेगा–दिखलाई पड़ेगी...सिर्फ तबाही...बर्बादी और मौत!"

"जुबानजोरी में तुझसे कौन जीते–?"

"किसी भी तरह की जंग में नहीं जीत पायेगा तू किंग कोबरा...।"

"ये तो आने वाला वक्त ही बतलायेगा...खों...खों...।"

"वक्त की रेत तो तेरी मुट्ठी से निकली जा रही है बेवकूफ। तुझे जो भी बतलाना है...मैं ही बतलाऊंगा...।"

"तू...तू...हमसे नहीं जीत सकेगा केशव पण्डित...।"

"अपनी इस गलतफहमी को अभी दूर कर ले ना तू। हो जाये आमना-सामना...हो जाये मुकाबला। तू नहीं आता है तो कोई बात नहीं...मुझे ही बुला ले। मैं अकेला और निहत्था ही चला आता हूं। बोल...बतला कि मुझे कहां पर आना है...?"

❑❑❑

❑❑❑

एक साथ दो काम हुये थे–

पहला ये कि किंग कोबरा ने ट्रांसमीटर को बन्द कर दिया था–दूसरा ये कि स्वामी ने वहां से भागने में ही अपनी भलाई समझी।

लेकिन वो भाग नहीं सका।

करतार सिंह के साथ खड़े केशव ने ऐसा घूंसा मारा कि वो चींख मारकर फर्श पर उल्टा और खून के साथ दो दांत भी फर्श पर उगल दिये।

पीड़ा को भुलाकर उसने हमलावर केशव को देखा, फिर सोफिया व श्वेता के साथ खड़े दूसरे केशव को देखा।

"वो राजन शुक्ला है स्वामी...।" सिगरेट में कश लगाकर केशव बोला, "जिसे तेरे चमचे ने केशव पण्डित समझ लिया था और तू भ्रमित रहा था कि मैं तेरे निर्देशों का पालन कर रहा हूं। मैं तो यहीं पर था–मेरे फोन, मेरे रूप वाला राजन ही पहले होटल ताजमहल, विधान सभा भवन पहुंचा था। वहां राजन ने कार छोड़कर टैक्सी पकड़ी थी तथा नारायण पुर गांव पहुंचा था। कुछ देर पश्चात् ही करतार सिंह गाड़ी लेकर वहां पहुंचा और ये दोनों यहां पर आ गये।"

बैठे-बैठे ही स्वामी कराहते हुये ओवर कोट की आस्तीन से मुंह से रिसते खून को पोंछने लगा।

"इस डड्डू...साडा मतलब कि...इस मेंढक ने अपना जुर्म कबूला की...प्राहवा जी–?"

"कबूलना तो था ही करतार सिंह। मेरे कोट की जेब में लगे पेन रूपी स्पाई कैमरे ने रिकॉर्डिंग भी की है। यहां आने के बाद एक और रहस्य उजागर हुआ है कि ये आई०एस०आई० से भी जुड़ा हुआ है–आई०एस० आई० का एरिया कमाण्डर है ये...। इसने सौदेबाजी करने के लिये ट्रांसमीटर पर इन्डियन कमाण्डर से मेरी बात भी करवाई–जो कि किंग कोबरा नाम से जाना जाता है। किंग कोबरा की मैंने ऐसी बोलती बन्द की कि वो ट्रांसमीटर ऑफ करने को विवश हो गया।"

करतार सिंह ने स्वामी को गिरेहबान से पकड़कर उठाया तथा जमीन से एक फुट ऊपर हवा में झूला-सा झुलाते हुये गुर्राया-सा, "मैं तैनू छड्डांगां नी आये खसमा नूं खाने। तू बलात्कारी तो कातिल ही नहीं है, बल्कि देशद्रोही भी है। नाली में रेंगने वाले गन्दे कीड़े...फांसी दी सजा बहुत कम होगी। तैनू तो गन्ने दा रस कढ़ने वाले कोल्हू विच ठूंस देना चाहिदा ए! तेरे गन्दे खून नूं नाली विच बहाकर गोश्त नू चील-कौओं दे सामने ते हड्डियों नूं जंगली कुत्तों दे सामने फेंक देना चाहिये। प्राहवा जी...मैनू इस दी हड्डी-पसली तोड़ने दी परमिशन चाहिदा ए...।"

"न...नहीं...।" स्वामी आतंकित हो चिल्लाया, "मु...मुझे माफ कर दो पण्डित...क्षमा कर दो...।"

केशव ने आगे बढ़कर स्वामी को करतार सिंह से छुड़ाकर फर्श पर पटक दिया तथा उसके सीने पर जूते समेत पैर रखकर नफरत तथा हिकारत के साथ बोला, "तेरे पाप, तेरे जुर्म अक्षम्य हैं देवा। तेरे गन्दे खून में ना सिर्फ वासना और जुर्म के...बल्कि देशद्रोहिता के भी गन्दे कीड़े गिजगिजा रहे हैं। ऐसा लगता है कि तुझे जन्म घुट्टी में नाली का गन्दा पानी ही पिला दिया गया था–जिसमें सांप का जहर, भेड़िये का खून और सूअर की चर्बी भी मिला दी गई थी। ढोंगी और अय्याश किस्म के साधु-सन्त तो बहुत होंगे–लेकिन तू उनसे भी चार कदम आगे बढ़कर देशद्रोही भी निकला है। तुझ पर जो रहम करे...वो सच्चा देशभक्त नहीं हो सकता...।"

"मैं...मैं अपनी सारी प्रोपर्टी बेच दूंगा और सारी रकम तुम्हारे चरणों में रख दूंगा...।"

"शायद तूने किंग कोबरा की बातों को ध्यान से नहीं सुना था देवा। तुझे अभी भी मालूम नहीं हुआ कि केशव पण्डित के ईमान को तीनों लोक की धन-सम्पदा से भी नहीं खरीदा जा सकता है।"

"ठीक है...तुम मुझे कानून के हवाले कर दो...अदालत मुझे जो भी सजा देगी...मुझे स्वीकार होगी...।"

"कानून के हवाले तो करना ही है तुझे। तेरे लिये फांसी का फन्दा भी पहले से तैयार है। लेकिन वो सजा तो बहुत पहले की है—जब तू देवा था। स्वामी रामशरण दास बनने के बाद भी तूने ढेरों पाप, ढेरों जुर्म किये हैं। उनमें सबसे बड़ा गुनाह है...देशद्रोहिता। जिस देश की मिट्टी से जन्मा...उसी मिट्टी में आतंकवाद का बारूद मिला रहा था तू। जिस वातावरण में सांसें ले रहा था, उसी में जहर घोला तूने। थोड़े लालच, थोड़े स्वार्थ के लिये तूने देश के दुश्मनों की गुलामी स्वीकार की। जिस डाल पर बैठा है, उसी को काट रहा है दुष्ट...पापी...नीच...कुत्ते-कमीने! अफसोस की बात ये है कि भारतीय संविधान के अन्तर्गत कानून के पास सबसे बड़ी सजा फांसी ही है। जबकि फांसी की सजा तो तुझे पहले ही सुना दी गई थी। उसके बाद तूने ढोंगी स्वामी बनकर लोगों की आस्था तथा धार्मिक विश्वास के साथ खिलवाड़ किया था। कई अबलाओं की लाज लूटी। जमकर अय्याशी की। कई हत्यायें की और करवाई। देश के साथ गद्दारी की और आई०एस०आई० के लिये अपना दीन-ईमान बेचता रहा। इन सारे गुनाहों की सजा भी तो तुझे मिलनी चाहिये कि नहीं? वो सजा अदालत नहीं देगी...मैं दूंगा। अभी दूंगा...यहीं पर दूंगा। सोच रहा हूं कि तुझे क्या सजा दूं—?"

❑❑❑

❑❑❑

केशव के आदेश पर राजन तथा करतार सिंह ने स्वामी को पकड़कर एक मेज पर पटक दिया।

"इसके दोनों पैर पकड़ो...।" केशव स्वामी के सिर के लम्बे बालों को मुट्ठियों में जकड़कर बोला, "तुम दोनों की तरफ से ये हिलना नहीं चाहिये...।"

"बिल्कुल नहीं हिलेगा गुरुवर...।" करतार सिंह के स्वामी का बायां पैर पकड़ लेने पर राजन स्वामी का दायां पैर पकड़कर बोला, "लेकिन आप करना क्या चाहते हैं—?"

"मुझे इसके सिर पर ये लम्बे बाल बिल्कुल भी अच्छे नहीं लग रहे हैं। इन्हें उखाड़कर इसको गंजा करना है।"

"न...नहीं...।" चींखकर स्वामी ने उठने की चेष्टा की, लेकिन सफल ना हो सका।

केशव ने चक्की के पाटों की मानिन्द ही जबड़ों को कसकर भींचा

तथा जोर से हाथों को झटका मारा तो स्वामी के कई हजार बाल सिर से उखड़ गये।

"अ...आह...!" चींखा व तड़पा स्वामी।

"इसके पैर पकड़े रहो...।" कहने पर केशव ने स्वामी के बचे हुये बालों को मुट्ठियों में जकड़कर झटके के साथ सिर से उखाड़ दिये।

ये सिलसिला तब तक चला, जब तक कि एक-एक बाल सिर से अलग नहीं हो गया।

गंजा हो चुका स्वामी बुरी तरह तड़प रहा था—उसके टकले सिर पर से खून भी रिस रहा था। सोफिया व श्वेता बेहद प्रसन्न थीं।

"इसकी दाढ़ी भी चंगी नी लग रही है प्राहवा जी। इस ढोंगी दी दाढ़ी भी नोच डालिये...।"

"नहींऽऽऽ!" चींखकर स्वामी ने उठने की चेष्टा की...लेकिन सफल ना हो सका।

लब्बो-लुआब ये कि केशव ने स्वामी की दाढ़ी का एक-एक बाल भी उखाड़कर फर्श पर फेंक दिया तथा फिर उसकी मोटी कलाइयों को पकड़कर राजन व करतार सिंह से कहा—"कसकर पकड़ लो इसको...।"

दोनों शिष्यों ने आज्ञा का पालन किया।

केशव ने स्वामी की कलाइयों को पकड़े हुये उसके हाथों को अपनी तरफ खींचा तथा फिर तेज झटके के साथ उसके हाथों व कन्धों के जोड़ वाली हड्डियों को तोड़ डाला।

स्वामी की पीड़ा भरी चींखों से हॉल की दीवारें कांपने लगीं तथा छत हिलने लगी।

केशव ने स्वामी के टूटे कन्धों को दबोच लिया तथा बोला, "इसके दोनों पैर भी तोड़ने हैं राजन...करतार सिंह। इसको ऐसा अपाहिज बनाना है कि जिन्दगी भर दूसरों का मोहताज हो जाये...।"

स्वामी ने चींखते-चिल्लाते हुये विरोध किया, लेकिन...राजन ने उसके पैरों को कसकर पकड़ते हुये खींचा और करतार सिंह ने हवा में उछलकर तथा स्वामी के पैरों पर कूदकर जांघों की हड्डियां तोड़ डालीं।

हलाल होते बकरे की मानिन्द ही डकराते हुये स्वामी बुरी तरह तड़प रहा था, मचल रहा था।

केशव मेज पर चढ़कर उसके सीने पर सवार हो गया तथा बायें हाथ से उसके सिर को दबोचकर बोला, "बहुत बड़ा पापी...बहुत बड़ा अपराधी...बहुत बड़ा देशद्रोही है तू देवा स्वामी। मैं चाहकर भी तुझे वो

सजायें नहीं दे सकता...जिनका पात्र है तू। अगर मेरे वश में होता तो...पहले तुझे तेजाब से स्नान कराके तेरी समूची खाल को आलू के छिलके की तरह ही उतार देता—फिर खाल विहीन जिस्म पर नमक, मिर्च, गरम मसाला छिड़कता। फिर बेसन के घोल में तुझे सानकर भट्टी पर रखी कड़ाही के खौलते तेल में तल देता। फिर भूखे कुत्तों, गिद्धों, चील-कौव्वों को दावत पर आमन्त्रित करता। जिन पैरों से तूने देशद्रोह के मार्ग पर कदम रखे थे, वो टूट गये। जिन हाथों से तू मासूम अबलाओं का चीरहरण किया करता था...वो भी टूट गये। लेकिन वो आंखें अभी भी सलामत हैं, जिनसे तूने धर्म, मानवता, समाज, देश, संस्कृति को गन्दे भावों से देखकर मैला करने की चेष्टा की। तू इस लायक नहीं है कि इन गन्दी आंखों से कुछ भी देखे।"

और फिर केशव ने दायें हाथ की तर्जनी व मध्यमा उंगलियों को चौड़ा कर उन्हें गैन्डे के सींग की मानिन्द ही कड़ा करके स्वामी की आंखों पर तीखा वार कर दिया...खच्च!

आंखों को फोड़ते हुये उंगलियां भीतर तक पेवस्त हो गईं तथा खून से सन गईं।

यूं ही लगा कि स्वामी की पीड़ा भरी चींखें मानो छत को फाड़कर आसमान को छू लेने की चेष्टा कर रही हों।

चारमीनार वाली एक सिगरेट सुलगाकर बोला केशव, "पुलिस को बुला लो राजन। स्वामी और इसके बेहोश पड़े गुन्डों को पुलिस के हवाले करो। अब कानून तथा अदालत को निर्णय करना है कि इस दुष्ट को कब तक फांसी पर चढ़ाना है...!"

❑❑❑

❑❑❑

स्वामी रामशरण दास उर्फ देवा, उसके दस गुन्डों तथा गंगा को पुलिस के हवाले करने पर केशव, सोफिया, राजन तथा श्वेता जब घर वापिस लौटे तो भोर होने को थी।

बिना कुछ खाये-पीये ही वो सभी सोने के लिये चले गये।

फिर भी सोफिया आठ बजे का अलार्म लगाकर सोई थी। जागने पर उसने केशव, राजन, चांदनी व श्वेता को उठा दिया तथा अल्टीमेटम दे दिया कि सभी स्नानादि से निवृत्त हो साढ़े आठ बजे तक पूजाघर में चले आयें।

आठ बजकर इकतीस मिनट पर उन्होंने तथा नौकर मुंशी ने पूजा घर में पूजा की।

नौ बजे वो डायनिंग रूम में थे तथा टी०वी० पर न्यूज देखते हुए नाश्ते की प्रतीक्षा कर रहे थे।

कालबेल बजने पर मुंशी ने बाहर वाले हिस्से में जाकर मेन गेट खोला तो सत्तर वर्षीय दो व्यक्तियों को खड़े पाया।

एक रमाकान्त था—जो कि केशव का गुरु था।

वो सफेद रंग के कुर्ते-पाजामे में था तथा ऊपर से कत्थई रंग की जर्सी पहने हुये था।

जबकि दूसरे वृद्ध ने सफेद चुस्त पाजामा के साथ काले रंग का बन्द गले वाला कोट पहना था और उसके सिर के बाल मेहन्दी के कारण लाल रंग के थे—वो पीतल की मूठ वाली बेंत लिये हुये था।

मुंशी ने रमाकान्त के चरण स्पर्श किये तथा फिर पूरे आदर-सम्मान के साथ दोनों को ड्राइंगरूम में ले जाकर बिठाया—फिर डायनिंग रूम में जाकर केशव, सोफिया, राजन, चांदनी तथा श्वेता को उन दोनों के आगमन की सूचना दी।

ड्राइंगरूम में पहुंचकर केशव, सोफिया, श्वेता राजन तथा चांदनी ने श्रद्धापूर्वक रमाकान्त के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त किया और फिर सोफे व कुर्सियों पर बैठ गये।

सोफिया ने मुंशी को वहीं पर चाय व नाश्ता लाने के लिये बोल दिया था।

"इनसे मिलो केशव...।" रमाकान्त बगल में बैठे काले कोट वाले को इंगित करके बोला, "ये मेरे परम मित्र नजीर हुसैन हैं। इनके बारे में मैं तुम्हें पहले ही बतला चुका हूं...।"

"वो ही...करीमनगर वाले?"

"हां—वो ही...।"

केशव ने उठकर जब नजीर हुसैन के चरण-स्पर्श किये तो वो बौखलाकर बोला, "ये...ये क्या करते हैं आप पण्डितजी...आप तो इस मुल्क की शान हैं। आपकी शौहरत है, रुतबा है। पूरे मुल्क को आप पर नाज है। सिर्फ हिन्दुस्तान ही नहीं...बल्कि बाहर के भी कई मुल्कों में भी आपके नाम की धूम है। इतनी बड़ी हस्ती को एक मामूली आदमी के कदमों में झुकना नहीं चाहिए। बहुत ही मामूली आदमी हूं मैं...गांव का कच्चा घर और जमीन बेचकर अपने दोस्त राघव के कहने पर मुम्बई आया हूं

तो एक छोटा-सा घर खरीदने की भी हैसियत नहीं है। राघव ने अपने घर के गेस्ट हाउस में ठहराया है...खाना-पीना भी उसके जिम्मे है...।"

"इन्सान की पहचान उसकी अमीरी या धन-दौलत से थोड़े ही होती है हुसैन साहब...।" उसके कदमों में घुटनों के बल बैठकर उसके जूतों पर हथेलियां रखे हुये कहा केशव ने, "इन्सान की पहचान उसके चरित्र, आचरण, व्यवहार से होती है। आप मेरे बुजुर्ग हैं तथा आदरणीय गुरुजी के मित्र भी हैं। इन नाते भी आपसे आशीर्वाद लेने का अधिकार बनता है मेरा। आप मेरे इस अधिकार से मुझे वंचित नहीं कर सकते। दुनिया के लिये मैं कुछ भी हूं...आपके लिये पुत्र समान हूं। इसलिये मुझे आप नहीं, तुम ही कहेंगे आप। आशीर्वाद दीजिये...।"

"जीते रहो...खुश रहो...।" केशव के सिर पर दोनों हथेलियां रखकर गद्‌गद् भाव से ही बोला नजीर हुसैन, "जैसा सुना था...वैसा ही पाया है आप...तुम्हें केशव बेटे। खुदा तुम्हें खूब तरक्की दे...तुम्हें उम्रदराज करे। तुम्हारी शौहरत, तुम्हारी मकबूलियत बुलन्दियां छूती रहें। तुम्हारा दामन हमेशा खुशियों से लबरेज रहे।"

"शुक्रिया...।" कहने पर केशव उठकर सोफे पर बैठ गया तथा बोला, "ये तो आपका बड़प्पन ही है कि मुझे इतना मान दे रहे हैं। आपने भी इस देश के लिये कुछ कम नहीं किया है। अपने देश का बहादुरी के लिये दिये जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार 'परमवीर चक्र' आपको दिया गया था...।"

"परमवीर चक्र...।" चौंका राजन।

सोफिया, चांदनी व श्वेता भी चौंकीं।

"हां—ये सत्य है...।" केशव उन चारों से सम्बोधित होकर बोला, "राष्ट्रपति जी ने इन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया था। जानना नहीं चाहेंगे किसलिये—?"

चारों ने संयुक्त स्वर में पूछा—"किसलिये—?"

❑❑❑

❑❑❑

"हुसैन साहब जब मिलटरी में कर्नल थे...।" बतलाया केशव ने, "भारत-पाकिस्तान के बीच जब युद्ध हुआ तो पाकिस्तान के टैंक तबाही मचा रहे थे। लेकिन हुसैन साहब एक बड़ा चक्कर लगाकर टैंकों के दूसरी तरफ पहुंचे और बमों से सात पाकिस्तानी टैंकों को सैनिकों के साथ उड़ा दिया था। फिर तो भारतीय सेनाएं आगे ही बढ़ती चली गई थीं और पूरी

छावनी को नष्ट कर दिया था। फिर भारतीय सेना का लहौर पर कब्जा हो गया था। लाहौर में तिरंगा झन्डा फहराया गया था। ये बात दूसरी है कि भारत-पाक सरकारों के बीच हुये समझौते के अन्तर्गत पाक को उसकी सारी जमीन लौटा दी गई थी—लेकिन वो भारत की बहुत बड़ी विजय थी—जिसमें हुसैन साहब का बहुत बड़ा योगदान था। इसके बाद भी हुसैन साहब ने जांबाजी और बहादुरी का प्रदर्शन जारी रखा। कई घुसपैठियों को पकड़ा और मारा इन्होंने। फिर पाकिस्तानी सैनिकों ने एक बार सात भारतीय सैनिकों को पकड़ लिया और अपनी छावनी में ले गये थे। पाकिस्तानी सरकार ने कहा कि उसके सैनिकों ने किसी भी भारतीय सैनिक को नहीं पकड़ा है। तब हुसैन साहब ने एक पाकिस्तानी सैनिक को मारकर उसकी वर्दी पहनी और जान पर खेलते हुये उस छावनी में पहुंचे। एक मेजर को गन प्वाइंट पर लेकर सभी भारतीय सैनिकों को छुड़ाकर लाये थे। तब इनके पैर पर गोली लगी थी। जहर फैल जाने के कारण डॉक्टरों ने इनके दायें पैर को घुटने से काट दिया था...।"

"व्हाटऽऽऽ?"

बुरी तरह चौंके सोफिया, चांदनी, राजन तथा श्वेता—उनके मुंह खुले के खुले रह गये।

"हां—ये हकीकत है बच्चों...।" नजीर हुसैन मुस्कुराकर बोला, "मेरा दायां पैर घुटने पर से कटा हुआ है। जयपुर वाला नकली पैर लगा है। उसी से चलने की बहुत प्रैक्टिस हो गई है। इस बेंत के सहारे थोड़ा-सा लंगड़ाकर चल लेता हूं...जरूरत पड़ने पर थोड़ा-बहुत दौड़ भी लेता हूं...।"

"हुसैन साहब की जांबाजी और बहादुरी के लिये राष्ट्रपति जी ने इन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया था। लेकिन इन्होंने इसके बाद एक ऐसा कारनामा किया था कि...।"

"रहने दो केशव बेटा। लगता है कि रमाकान्त ने तुम्हें मेरे बारे में बहुत कुछ बतलाया हुआ है। हम उस मुद्दे पर आते हैं, जिसके लिये यहां आये हैं...।"

"कौन-सा कारनामा किया था हुसैन साहब ने...गुरुजी...?" उत्सुकता के साथ बोली श्वेता, "इनके उस कारनामे के बारे में बतलाइये ना—।"

केशव ने रमाकान्त की तरफ यूं देखा कि मानो आज्ञा ले रहा हो।

"बिल्कुल बतलाओ, केशव बेटा।" बोला रमाकान्त, "मेरा ये यार नजीर हुसैन...शेर दिल वाला है। फौलाद का सीना है इसका। ऐसा बिल्कुल

भी नहीं है कि इसके जख्म हरे हो उठेंगे और खून रिसने लगेगा। ये इतना कमजोर होता तो इस देश के लिये, अपने वतन के वास्ते इतनी बड़ी कुर्बानी देता ही नहीं। इसकी महानता के बारे में सोफिया बहू, चांदनी, राजन और श्वेता को भी मालूम होना चाहिये। तुम नहीं बतलाना चाहते तो फिर मैं बतला देता हूं...।"

"नहीं, गुरुजी–मैं ही बतला देता हूं ना इन लोगों को...।" बोलकर केशव सोफिया, राजन, चांदनी व श्वेता से सम्बोधित होकर बोला, "ये हुसैन साहब का रिकॉर्ड रहा है कि इन्होंने मिलिटरी ज्वाइन करने से लेकर सर्विस के समाप्त होने तक कभी भी एक दिन की छुट्टी ना ली थी। वर्षों तक ये ड्यूटी ही करते रहे। पैर गंवाने पर इनको मिलिटरी से छुट्टी दे दी गई तो ये अपने घर लौटे थे। तब घरवालों की जिद पर इन्होंने शादी की थी। अधेड़ उम्र में एक बेटा हुआ था...शहजादा हुसैन।"

"बेटा मत बोलो उस कम्बख्त को केशव...।" आग-बबूला होकर बोला नजीर हुसैन, "बेटे के नाम पर वो बदनुमा दाग ही था...दोजख का कीड़ा। मेरी बीवी फातिमा ने अपनी कोख से जहरीले नाग को ही पैदा किया था। तभी तो उसका फन कुचल दिया था मैंने...मार डाला था उस कमीने को...।"

"क्या...?" चिहुंककर बोला राजन,"ये आप क्या कह रहे हैं नजीर हुसैन जी? अ...आपने अपने बेटे को मार डाला था? लेकिन क्यों? आखिर ऐसा क्या हुआ था कि आपको अपने बेटे की हत्या करने की जरूरत पड़ गई थी–?"

❑❑❑

❑❑❑

नजीर हुसैन के चेहरे की त्वचा सुर्ख पड़कर यूं ही कंपकंपाने-सी लगी कि मानो चेहरे के भीतर भयंकर किस्म का भूकम्प आया हुआ हो।

कनपटियों की नसें उभरकर यूं मचल रही थीं कि मानो कैंचुए रेंग रहे हों।

आंखों में लावा-सा भरा हुआ था।

नथुने फूले हुये थे–होंठ फड़फड़ा-से रहे थे। मुट्ठियों को भींचे हुये वो मानो प्रत्येक शब्द को चबा-चबाकर ही उगल रहा था–"क्योंकि शहजादा नाम का वो नाग वतन फरोश था...गद्दार था। बचन से ही उसको वतन परस्ती की सीख दिया करता था। झांसी की रानी, मंगल पाण्डे, महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, चन्द्रशेखर

आजाद, भगतसिंह, अश्फाक उल्लाह, राम प्रसाद बिस्मिल, अब्दुल हमीद वगैरा के किस्से सुनाया करता था उसको। चाहता था कि वो भी मेरी तरह फौज में जाकर वतन की खिदमत करे। लेकिन...ना जाने कैसे फातिमा का दूध तेजाब और मेरा खून जहर बन गया था।"

"लेकिन...।" कौतूहलता में फंसे राजन ने प्रश्न किया, "ऐसा क्या किया था आपके बेटे ने–?"

"अठारह साल की उम्र में बारहवीं पास करने पर शहजादा ने मिलिटरी ज्वाइन की थी तो मैं और फातिमा बेहद खुश थे। सारे करीमनगर में हमने लड्डू बांटे थे। लेकिन क्या मालूम था कि वो कमीना अपने ही वतन के साथ गद्दारी करेगा। एक दिन ये दिल तोड़ने वाली मनहूस खबर आई कि शहजादा मिलिट्री के सीक्रेट वाली फाइलों, कागजातों, नक्शों के फोटो चींखकर आई०एस०आई० वालों के हाथों बेचा करता था। शक होने पर मेजर रुद्र प्रताप ने उसको फॉलो किया तथा एक सीक्रेट फाइल को आई०एस०आई० के एजेन्ट को सौंपते हुये पकड़ लिया था। लेकिन शहजादा ने मेजर को गोली मार दी थी और फरार हो गया था। मेजर का हॉस्पिटल में ऑपरेशन हुआ और उसने होश में आने पर शहजादा के बारे में बतलाया। तब मिलिट्री ने शहजादा को मुजरिम और भगौड़ा घोषित कर दिया था...।"

अपनी वाणी को विराम देकर नजीर हुसैन ने कोट की जेब से 'कैवन्डर्स' की डिब्बी व माचिस निकाली। एक सिगरेट सुलगाकर उसने गहरे-गहरे, तगड़े-तगड़े दो कश लगाकर धुएं को काफी देर तक फेंफड़ों के गलियारों में घुमाया, फिर नथुनों से निकालकर रोष भरे भाव से बोला–"मिलिट्री वाले उस गद्दार की तलाश में करीमनगर भी आये थे–लेकिन वो घर पर तो लौटा ही नहीं था। फिर मुझे मालूम पड़ा कि वो मेरी बहन यानि अपनी फूफी के घर पर मेरठ में छिपा हुआ है और गुपचुप तरीके से पाकिस्तान भागने की फिराक में है। मेरठ गया था मैं। जाते ही रिवॉल्वर तान दी उस पर और पुलिस को फोन कर दिया था। उसने रिश्तों की दुहाई दी। मिन्नतें और खुशामदें की कि मैं उसको जाने दूं। लेकिन मैं जानता था कि वो पाकिस्तान जाकर ट्रेनिंग लेगा और दहशतगर्द बनकर मेरे ही मादरे वतन को नुकसान पहुंचायेगा। पुलिस के आने पर उसने रिवॉल्वर निकालकर सब-इन्सपैक्टर, चारों कांस्टेबिलों को गोलियां मार दीं और वहां से भागा, तब मैंने उसको गोली मार दी थी। एक ही गोली में उसका खात्मा हो गया था। उसकी खोपड़ी के परखच्चे

उड़ गये थे। मैंने उस नालायक की लाश पर थूक दिया था। पुलिस वालों ने ही उसकी मिट्टी को ठिकाने लगाया था। खुद को कानून के हवाले कर दिया था मैंने। लेकिन हालात को मद्दे नजर रखते हुये जज साहब ने मुझे बा-इज्जत बरी कर दिया था। बस...अफसोस इसी बात का रहा कि फातिमा बेटे की मौत का सदमा बर्दाश्त ना कर पाई थी। उसको दिल का दौरा पड़ा और चल बसी थी। ना जाने खुदा ने मां का दिल इतना कमजोर क्यों बनाया है? छोड़ो...इस किस्से को...मैं तो यही मानता हूं कि मेरी कोई औलाद ही नहीं थी...।"

बात को समाप्त करके नजीर हुसैन सिगरेट में जल्दी-जल्दी कश लगाने लगा।

वातावरण थोड़ा बोझिल हो चला।

❑❑❑

❑❑❑

"आपने जो किया...वो हर कोई नहीं कर सकता है हुसैन साहब...।" बोली सोफिया, "बेटा भले ही कितना नालायक क्यों ना हो—लेकिन उसकी जान लेने के लिये बहुत बड़ा कलेजा चाहिये। आप मिलिट्री में रहे हैं और सच्चे देशभक्त हैं—इसलिये आपने ऐसा कारनामा करके दुनिया के सामने बढ़िया उदाहरण पेश किया है...।"

"लेकिन मुझे शहजादा की जान लेकर कभी भी दुःख या अफसोस नहीं हुआ है बेटी। दुःख है तो अपनी शरीके हयात के चले जाने का। घुट-घुटकर जी रहा था। राघव राजवंशी मेरे बचपन का दोस्त है। बार-बार मुम्बई चले आने को कहता रहता था। इस बार वो करीमनगर पहुंच गया और मेरा घर-जमीन बिकवा दी—ताकि मेरे लौटने का रास्ता ही बन्द हो जाये। अपने साथ ले आया वो। अपने ही घर में रखा है उसने मुझे। अपनी पार्टी की बहुत बड़ी जिम्मेदारी मेरे कन्धों पर डाल दी। पार्टी का वाइस प्रेसीडेन्ट बना दिया मुझे। बहुत ही नेक मकसद से उसने पार्टी बनाई है। वो राजनीति से सारी गन्दगी दूर करके ईमानदारी के हथियार से भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग लड़नी चाहता है। रमाकान्त भी मेरा अजीज दोस्त है। इसको भी मैंने पार्टी ज्वाइन करा दी है और महामन्त्री की जिम्मेदारी सौंपी गई है...।"

"बधाई हो गुरुजी...।" केशव रमाकान्त के घुटनों को छूकर बोला, "ये आपने बढ़िया निर्णय किया है। आपकी बोरियत दूर...आप व्यस्त रहेंगे और पार्टी को आपने अनुभवों का लाभ मिलेगा...।"

"राघव जी का ये प्रण है केशव बेटा कि भले ही पार्टी को लाभ ना हो, लेकिन वो भ्रष्ट, मुजरिम, बेईमान तथा अपराधी किस्म के लोगों को पार्टी में नहीं लेंगे। ठोक बजाकर, जांच-परख करके ही किसी को पार्टी का सदस्य बनाया जायेगा। वो चाहते हैं कि तुम भी उनकी पार्टी में सम्मिलित हो जाओ...।"

"मैं...?" चौंका केशव।

"हं, तुम...।" रमाकान्त अपने घुटनों पर रखे केशव के हाथों को पकड़कर बोला, "तुम तो जुर्म और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ते ही रहते हो। तुम्हारे पार्टी में शामिल हो जाने पर लोगों का पार्टी पर विश्वास बढ़ेगा। लोगों का पार्टी के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। राघव जी को तुम्हारे पास आना था—लेकिन कल रात उनके पैर में फ्रेक्चर हो गया। सीढ़ियों से पैर फिसल गया था—दायें पैर पर प्लास्टर चढ़ा है। उन्होंने मुझे और नजीर को ये जिम्मेदारी सौंपी है...।"

तभी नौकर मुंशी ट्रॉली को धकेलते हुये कमरे में प्रविष्ट हुआ। ट्रॉली पर चाय के साथ नाश्ते की प्लेटें भी रखी हुई थीं।

श्वेता तथा चांदनी ने सारा सामान उठाकर मेज पर रखा तो मुंशी खाली ट्रॉली को धकेलते हुये बाहर चला गया।

चांदनी ने केतली से कपों में चाय उंडेली तथा श्वेता ने कपों को सभी के सामने रखा।

केशव से चाय का कप लेकर रमाकान्त ने नजीर हुसैन को दिया तथा केशव से अपने लिये दूसरा कप लेने पर कहा—"तुमने कोई उत्तर नहीं दिया केशव? आजकल की भ्रष्ट, बेईमान और निकम्मी राजनीति ने देश का बेड़ा गर्क करके रख दिया है। कहते हैं कि विदेशी बैंकों में जमा किया सारा काला धन यदि वापिस ले आयेंगे तो लाखों की संख्या में हॉस्पिटल, स्कूल, कॉलेज बनाये जा सकते हैं। अनेकों फैक्ट्री, कम्पनी बनाकर सभी बेरोजगारों को रोजगार दिया जा सकता है। बढ़िया सड़कों और पुलों का निर्माण हो सकता है। नये विकसित भारत का निर्माण किया जा सकता है। लेकिन ऐसा तभी सम्भव है, जब ईमानदार, देशभक्त तथा जुझारू किस्म के लोग राजनीति में आयें। प्रश्न जनसेवा पार्टी का नहीं है—प्रश्न देश का है। देश को तुम जैसे लोगों की सख्त आवश्यकता है।"

केशव ने चाय की घूंट भरी तथा गम्भीर भाव से बोला, "आपका आदेश मेरे लिये ईश्वर के आदेश के बराबर है गुरुजी। आपका आदेश होगा तो मैं जनसेवा पार्टी ज्वाइन कर लूंगा और दी गई जिम्मेदारी का निर्वाह

करूंगा। परन्तु मुझे पूर्ण रूप से पार्टी को समर्पित होना पड़ेगा। नई पार्टी है। पार्टी को प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है। तब मैं वकालत नहीं कर पाऊंगा। इन्वेस्टीगेशन करके मुजरिमों को नहीं पकड़ सकूंगा। देश के दुश्मनों, देशद्रोहियों, मुजरिमों, आई०एस०आई० वालों, आतंकियों के खिलाफ कोई मिशन नहीं चला सकूंगा। कुल मिलाकर मुझे अपने पुराने सभी मार्ग त्यागकर राजनीति के मार्ग पर चलना होगा। आप ही बतलाइये कि मेरे लिये क्या उचित होगा—?"

रमाकान्त ने चाय की घूंट भरी तथा गंभीर मुद्रा में बोला, "ये तो सम्भव ही नहीं है केशव बेटा कि अपने नियमित मार्गो को छोड़ दो। कानून को, अदालत को, न्याय को, निर्दोषों और मजलूमों को तुम्हारी सख्त आवश्यकता है। पुलिस को भी तुम्हारी आवश्यकता है। जब कोई खतरनाक मुजरिम या देश का दुश्मन काबू में नहीं आता है तो पुलिस और सरकार को तुम्हारा ही नाम सूझता है। देश के प्रधानमन्त्री तक कई बार तुम्हारी मदद ले चुके हैं। तुम वकील तो हो ही...आवश्यकता पड़ने पर तुम पुलिस और मिलिट्री वाला काम भी करते हो। कई बार तुमने अकेले ही पाकिस्तान जाकर इम्पॉसिबल मिशन कम्पलीट किये हैं। देश की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हो तुम। नहीं, इस शर्त पर तुम्हें पार्टी ज्वाइन करने को बिल्कुल भी नहीं कहूंगा कि तुम 'दिमाग का जादूगर' वाला रोल समाप्त कर डालो और लीडर बन जाओ! तुम क्या बोलते हो नजीर—?"

सोफिया के बढ़े हुये हाथ में रखी प्लेट से काजू का पीस उठाकर मुंह में डाला नजीर हुसैन ने तथा फिर चाय की घूंट भरकर बोला—"इस नजरिये से तो सोचा ही नहीं था मैंने रमाकान्त भाई। वाकई...पार्टी ज्वाइन कर लेने पर केशव की प्रेक्टिस पर फर्क पड़ेगा। ये अपने कामों को ठीक से अन्जाम ना दे सकेंगे। पार्टी से बढ़कर तो कानून, अदालत, पुलिस और मजलूमों को केशव की जरूरत है। देश को केशव की जरूरत है। नहीं, केशव बेटे...तुम जो कर रहे हो...वो बेहद जरूरी है। तुम मुजरिमों और देश के दुश्मनों के खिलाफ अपनी जंग को बरकरार रखो।"

"धन्यवाद...।" बर्फी की प्लेट उठाकर रमाकान्त तथा नजीर हुसैन के सामने करके बोला केशव, "आप दोनों ने मुझे धर्म संकट से बचा लिया। वैसे मैं आवश्यकता पड़ने पर पार्टी या आप लोगों के लिये सदैव उपस्थित हूं ही। मुझसे कोई भी काम हो तो आप पूरे अधिकार के साथ मुझे आदेश दे सकते हैं। मैं राघव जी से मिलकर उन्हें अपनी विवशता बतला दूंगा। वैसे भी उनके पैर में फ्रेक्चर आया है। मिलकर उनका हाल-चाल पूछ लूंगा।

उन्हें पार्टी बनाने और भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन चलाने के लिये बधाई भी दे दूंगा। क्या आप दोनों भी इलैक्शन लड़ेंगे—?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं...।" बोला नजीर हुसैन, "हम दोनों की उम्र इलैक्शन लड़ने की नहीं है—ना ही हमें विधायक या मन्त्री बनने का लालच है। हम तो पार्टी की जिम्मेदारी उठायेंगे। वैसे भी पार्टी चाहती है कि अधिकांश सीटों पर नौजवान ही इलैक्शन लड़ें। राघव का इलैक्शन लड़ना तो जरूरी है...।"

"हां—ये बात तो है...।" केशव ने कहा—"पार्टी के सत्ता में आने पर मुख्यमन्त्री तो राघव जी को ही बनना है। वैसे, किस इलाके से पर्चा भरेंगे राघव जी—?"

❑❑❑

❑❑❑

"गंजे तथा बिल्लौरी आंखों वाले राम माहेश्वरी ने लक्ष्मी नामक अधेड़ का हाथ पकड़कर खड़ा कर लिया तथा स्टैन्ड पर लगे माइक को हाथ में लेकर सामने उपस्थित सैंकड़ों की भीड़ से सम्बोधित होकर बुलन्द आवाज में बोला—"आपने देखा कि थोड़ी देर पहले पुलिस कमिश्नर हमसे मिलने आया था। लेकिन हमने धरना-प्रदर्शन खत्म करने से साफ इन्कार कर दिया। ये बेचारी लक्ष्मी...इसकी इकलौती और जवान बेटी मयूरी गायब हो गई थी। हमने लक्ष्मी के साथ आकर इसी पुलिस स्टेशन में मयूरी के गायब होने की रिपोर्ट दर्ज करा दी थी और पुलिस से हाथ जोड़कर रिक्वेस्ट की थी कि मयूरी को जल्द-से-जल्द खोजा जाये—क्योंकि उसकी इज्जत और जान खतरे में है। लेकिन पुलिस ने कुछ नहीं किया। हाथ पर हाथ रखे बैठी रही। परिणाम क्या हुआ?"

"परिणाम ये हुआ कि एक नाले से मयूरी की नग्न लाश बरामद हुई। उसके साथ किसी राक्षस ने बेरहमी के साथ बलात्कार किया था और गला घोटकर मार डाला था। ना जाने वो कुत्ते का बच्चा कौन था...जिसने नाबालिग मयूरी के साथ बलात्कार किया था। हमें यूं ही लगा कि मयूरी नहीं, हमारी बेटी के साथ ही बलात्कार हुआ है। हमारी चेतावनी के बावजूद भी पुलिस ने अभी तक मयूरी के बलात्कारी और हत्यारे को नहीं पकड़ा है—उसे फांसी के फन्दे तक नहीं पहुंचाया है। हम लक्ष्मी बहन को देखते हैं तो आंखों में आंसू भर आते हैं। हमसे कुछ खाया-पीया नहीं गया है। जब तक मयूरी का मुजरिम पकड़ा नहीं जायेगा...हम रोजाना इस पुलिस स्टेशन के बाहर धरना-प्रदर्शन करेंगे। तीन दिन बाद तो हम आमरण

अनशन पर बैठ जायेंगे। हमारी जान जाती है तो...जाये...।"

भीड़ ताली बजाने लगी तथा राम माहेश्वरी के लिये नारे लगाने लगी–

"रामजी जिन्दाबाद...।"

"रामजी आप संघर्ष करो...।"

"हम आपके साथ हैं...।"

"देश का नेता कैसा हो–?"

"रामजी के जैसा हो...।"

हाथ जोड़कर अभिवादन करके राम माहेश्वरी दरी पर बैठ गया।

तभी एक शेवरलेट कार वहां आकर रुकी तथा उसमें से सफेद साड़ी वाली खूबसूरत युवती डॉक्टर के साथ बाहर निकलकर धरना-स्थल पर पहुंची।

डॉक्टर ने स्टेथोस्कोप से राम माहेश्वरी का चेकअप किया तथा फिर बैग से कुछ टेबलेट निकालकर राम माहेश्वरी को दी।

सफेद साड़ी वाली युवती राम माहेश्वरी की बगल में बैठ गई तथा उसे पानी की बोतल दी।

"सादा पानी है क्या रोमा डार्लिंग–?" माहेश्वरी की आवाज इतनी धीमी थी कि रोमा के सिवाय कोई अन्य नहीं सुन सकता था।

"टेबलेट की तरह पानी भी नकली है बॉस...।" रोमा भी फुसफुसाकर बोली, "पानी में आधी से ज्यादा जिन मिक्स है...पीते वक्त बुरा मुंह मत बनाना–वर्ना देखने वालों को शक हो जायेगा...।"

"तुम समझती हो कि किसी को हम पर शक हो सकता है डार्लिंग–?" बोलने पर उसने गोली मुंह में डाली तथा जिन मिले पानी की घूंट भरने लगा।

"नहीं, किसी को भी शक नहीं हो सकता...बॉस...।" फुसफुसाई रोमा, "बहुत ही शातिर हैं आप। तोड़ नहीं आपका...जोड़ नहीं आपका। क्या खूब ड्रामा करते हैं कि दिलीप कुमार और अमिताभ बच्चन भी शरमा जायें। बेचारी मयूरी का शिकार करके उसकी मां के सबसे बड़े शुभचिन्तक बन रहे हैं। क्या खूब घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं। स्वयं को ही आपने कुत्ते का बच्चा बोल डाला।"

"ऐसे ड्रामे करके ही तो हम लोगों को बेवकूफ बना रहे हैं डार्लिंग...।" बिसलेरी की बोतल से जिन की घूंट भरकर फुसफुसाया राम माहेश्वरी, "नाम और शोहरत कमाई है। एम०एल०ए० बने हैं। इस बार

तो इलैक्शन जीतकर मन्त्री भी बन जायेंगे...। सी०एम० ने पक्का वादा किया।"

"मुश्किल है...।"

"क्या मुश्किल है–?"

"इलैक्शन जीतना और मन्त्री बनना–।"

"क्या भौंकती हो...?"

"भीतर की जानकारी है कि जन सेवा पार्टी के अध्यक्ष राघव राजवंशी ने इसी इलाके से आपके खिलाफ इलैक्शन लड़ने का पक्का निर्णय कर लिया है...।"

"क्या...?" आंखों को सिकोड़कर फुसफुसाया राम माहेश्वरी, "पक्की खबर है क्या–?"

"एकदम पक्की है बॉस...। आप मुस्कुराने क्यों लगे?"

"राघव की बेवकूफी पर! हमारे मुकाबले में भला वो कैसे टिक पायेगा–?"

"उसकी बढ़िया छवि है। वो समाजसेवी है और धार्मिक कार्यों में भी भाग लेता है। वैसे भी उसने ये दावा किया है कि भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिये ही पार्टी बनाई है। बुरा ना मानना बॉस...आपसे भी बढ़िया छवि बनाई हुई है राघव ने। वो आपकी तरह बगुला भगत नहीं है...।"

"माना कि वो सचमुच में ही समाजसेवी, परोपकारी...धार्मिक, ईमानदार है, लेकिन वो हमारे जितना शातिर नहीं है। हम ऐसी चाल चलेंगे कि उसकी छवि दो कौड़ी की भी ना रहेगी। उसकी जमानत जब्त ना करा दी तो...अपना नाम भी राम माहेश्वरी नहीं...।"

"ऐसी...क्या चाल चलेंगे आप–?"

"इतनी बेसब्र क्यों होती हो डार्लिंग। ऐसी बातों के लिये ये स्थान उपयुक्त नहीं है। रात को बेडरूम में जब दोनों मूड फ्रेश करेंगे तो बतला देंगे कि हम अपनी किस चाल से उस ससुरे राघव को चारों खाने चित करने वाले हैं।"

❑❑❑
❑❑❑

"तुम पागल तो नहीं हो गये हो नजीर...!"

"इसमें भला पागल होने वाली क्या बात है भई राघव...?"

"बात तो है ही...।" पार्टी के कार्यालय में बैठा हुआ राघव राजवंशी नाराजगी के साथ बोला, "घर में मेरी धर्मपत्नी है। बहू भी है। नौकर भी

हैं। कुल मिलाकर काम करने वालों की कमी नहीं है। फिर भी तुम वृद्ध आश्रम में रहने की बात कर रहे हो? क्या तुम स्वयं को गैर समझते हो–? ये समझते हो कि तुम हम पर बोझ हो? क्या सुजाता, अजय और करिश्मा के व्यवहार से तुम्हें ऐसा लगा कि वो तुम्हें पसन्द नहीं कर रहे हैं–?"

"खुदा की कसम खाकर कहता हूं राघव कि ऐसा कुछ भी नहीं है–बिल्कुल भी नहीं है। भाभी जान, अजय और बहू मुझे पूरी इज्जत बख्शते हैं। दरअसल मैं हफ्तेभर से वृद्ध आश्रम में रोजाना आ रहा हूं। आश्रम में सभी मजहब के लोग हैं और कई तो मेरे हम उम्र हैं। उनके साथ बैठकर बहुत अच्छा लगता है। वैसे भी आश्रम में किसी भी चीज की कमी थोड़े ही है। घर से भी अच्छा खाना है। दूध और चाय भी चाहे जितनी बार पियो। हरेक कमरे में एयर कन्डीशनर, फ्रिज और कलर्ड टी०वी० है। एक डॉक्टर परमानेंट बैठता है। आश्रम के भीतर ही मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा भी है। कुल मिलाकर घर से भी बढ़कर सुविधायें हैं। मुझे आश्रम का माहौल बहुत ही बढ़िया लगता है। जाने पर वहां से लौटने की ख्वाहिश नहीं होती है। सबसे बड़ी बात तो ये कि पार्टी का ये कार्यालय भी तो आश्रम के ही बाहरी हिस्से में है। आश्रम में रहकर मैं कार्यालय के काम भी करता रहूंगा। पार्टी की तमाम जिम्मेदारियां तो निभानी ही हैं–जिसके वास्ते बाहर के दौरे होंगे। बस, मैं अपनी रिहाइश आश्रम में करना चाहता हूं...।"

"लेकिन...लोग क्या कहेंगे कि मैंने अपने परम मित्र को भी वृद्ध आश्रम में ठहरा दिया है...।"

"कोई कुछ नहीं कहेगा दोस्त। कहता है तो कहता रहे। मुझे आश्रम में रहना है तो रहना है। तुम्हें मेरी कसम है राघव–तुम जिद नहीं करोगे।"

"तुमने कसम देकर मुझे मजबूर कर दिया है...।" राघव राजवंशी कसमसाकर बोला, "तुम्हारे लिये एक कमरा तैयार करवा...।"

"क्या उस कमरे में हीरे-मोती जड़वाओगे मियां? सभी कमरे लाजवाब हैं...बढ़िया हैं। मुझे मेजर अशोक वर्मा के साथ उनके कमरे में रहना है। उनके साथ कई सालों तक कश्मीर में ड्यूटी की है मैंने। क्या जमाना आ गया है। अच्छी भली पेंशन मिलती है। शानदार बंगला बनवाया था। लेकिन बेटे और बहू को वो पसन्द नहीं थे। उनके साथ इतना बुरा सलूक किया कि वो वृद्ध आश्रम में रहने को मजबूर हो गये। लेकिन वो यहां पर बेहद खुश हैं...तुम्हारे फोन की घन्टी बज रही है।"

राघव ने जेब से फोन निकालकर उसकी स्क्रीन पर उभरते नाम व

नम्बर को देखा तथा फिर फोन कान से लगाकर बोला, "हां, बोल अजय...कैसे फोन किया–?"

"मम्मी जी मन्दिर गई थीं पापाजी–अभी तक लौटकर नहीं आई हैं...।"

"अभी तक नहीं लौटी हैं–?" राघव चौंककर बोला, "अब तो दोपहर हो गई है–मन्दिर में इतना समय तो नहीं लगना चाहिये था। फोन किया तुमने सुजाता को–?"

"मम्मी का फोन बन्द है। मन्दिर आपके पार्टी कार्यालय के नजदीक ही है। घर से तो बहुत दूर पड़ेगा। मैं ऑफिस के लिये भी लेट हो रहा...।"

"हां, ठीक है। मुझे भोजन के लिये घर तो आना ही था। मन्दिर से सुजाता को साथ लेकर आता हूं। आज मंगलवार है और सुन्दर काण्ड का पाठ होता है। सुजाता पाठ में बैठ गई होगी।"

"क्या हुआ राघव–?"

"कुछ नहीं। तुम्हारी भाभी अभी तक मन्दिर से घर नहीं लौटी हैं...।" राघव कुर्सी से उठकर बोला, "मैं चलता हूं। मन्दिर जाकर देखता हूं कि क्या बात है–!"

❑❑❑

❑❑❑

मन्दिर के पुजारी ने जब बतलाया कि सुजाता तो पूजा-पाठ करके सुबह नौ बजे ही घर को लौट गई थी तो राघव चिन्तित होकर बोला, "कमाल की बात है पुजारी जी–सुजाता जी अभी तक घर नहीं पहुंची हैं और उनका फोन भी बन्द है। उन्हें कहीं जाना था तो...फोन करके बतला सकती थीं। उल्टे फोन बन्द किया हुआ है। कोई सखी-सहेली तो अपने साथ अपने घर नहीं ले गई है...?"

"नहीं, राघव जी...यहां से तो वो अकेली ही गई थीं...।" गले में सीता-राम के नाम वाली चादर डाले हुये अधेड़ पुजारी तपाक से बोला, "उन्हें मैंने अकेली ही ऑटो में बैठते हुये देखा था। उनके साथ दूसरी कोई नहीं थी। आप घर पर फोन मिलाकर देखिये–शायद वो घर पहुंच गई...।"

"नहीं पुजारी जी। पांच मिनट पहले ही मैंने घर पर फोन किया था–बहू ने बतलाया कि सुजाता वापिस नहीं लौटी है। समझ में नहीं आता कि उसे कहां ढूंढने या देखने जाऊं। उसकी सहेलियों के फोन नम्बर भी तो मालूम नहीं हैं। खैर, बहू बोल रही थी कि सभी जगह फोन करके पूछ रही है। मैं भी इधर-उधर जाकर देखता हूं...।"

"ठहरिये, राघव जी। मैं आपको प्रसाद लाकर देता हूं...।"

"हां, लाइये पुजारी जी। हनुमान बाबा जी से प्रार्थना भी कीजियेगा कि सुजाता जल्दी से घर लौट आये—वो बिल्कुल ठीक हो...।" कहने पर राघव मन्दिर के प्रांगण में बनी सीमेन्ट की बेंच पर बैठ गया।

घन्टी बजने पर उसने कुर्ते की जेब से फोन निकाला तथा स्क्रीन पर दृष्टिपात किये बिना ही कान से लगाकर बोला, "हां, करिश्मा बहू...तुम्हारी सासू मां लौटी कि नहीं—?"

"इतनी जल्दी लौटेगी भी नहीं राघव साहब...।"

"कौन...?" वह आंखें सिकोड़कर बोला, "कौन हो तुम? और तुम ने सुजाता का नाम कैसे लिया—?"

"वो मेरे सामने ही तो है राघव साहब...।" दूसरी तरफ से बोलने वाले का स्वर भारी-भरकरम था।

"तु...तुम्हारे सामने...?"

"हां—मेरे ही सामने कुर्सी पर बैठी है। हाथ-पैर डोरियों से बन्धे हुये हैं। बेचारी...मारे खौफ के हल्दी की माफिक पीली पड़ी हुई है और थर-थर कांप रही...।"

"क...क्या मतलब? सुजाता कुर्सी पर बन्धी बैठी...?"

"शीऽऽ...धीरे-धीरे बोलो। आसपास किसी ने सुन लिया तो भारी मुसीबत हो जायेगी। तुम्हारी शरीके हयात की जिन्दगी खतरे में पड़ जायेगी।"

"क...क्या मतलब? तुम कौन हो? क्या तुमने सुजाता को किडनेप किया है? कुछ नहीं होना चाहिये मेरी सुजाता को...तुम्हें जो भी चाहिये...मिल जायेगा। लेकिन पहले मैं सुजाता से बात करूंगा...।"

"बात करनी है...लो, कर लो बात...मैं फोन उसके कान से लगा देता हूं...ऐ...बात कर राघव से...।"

"है...हैलो...जी...।" दूसरी तरफ से इतना बोलकर सुजाता रोने लगी।

मानो तड़पकर ही बोला राघव—"तु...तुम ठीक तो हो ना सु...सुजाता...?"

"न...नहीं जी...मन्दिर से वापिस लौट रही थी...काली पोशाक और नकाब वाले बिना नम्बर प्लेट की कार से निकले...चार लोग थे...ऑटो ड्राइवर के सिर पर लोहे का डन्डा मारकर उसे बेहोश कर दिया...मुझे रूमाल सुंघाया तो बेहोश हो गई...होश आया तो...एक

अन्धेरे कमरे में कुर्सी पर बन्धी बैठी हूं...ये दाढ़ी वाला...देखने में ही बहुत खतरनाक लग रहा है...इसके पास रिवॉल्वर और छुरा है...मु...मुझे बहुत डर लग रहा है जी...भगवान के लिये मुझे बचा लीजिये।"

"तु...तुम बिल्कुल भी चिन्ता मत करो...सुजाता...कुछ भी नहीं होने दूंगा मैं...इसकी डिमांड पूरी करके तुम्हें छुड़वा लूंगा...।"

"डिमांड पूरी होने पर सुजाता को छोड़ दिया जायेगा राघव मियां...।" भारी-भरकम आवाज, "इसका अचार थोड़े ही डालना है...।"

"क...क्या चाहते हो—?"

"ऐसी बातें फोन पर थोड़े ही होती हैं...तुम्हें मुझसे मिलने के लिये आना होगा।"

"ठीक है...बतलाओ...कहां आना है मुझे...?"

❑❑❑

❑❑❑

चारों तरफ ऊंची-नीची चट्टानें थीं और समुद्र की लहरों की आवाजें भी सुनाई पड़ रही थीं। छोटी चट्टान पर चढ़कर राघव इधर-उधर देखते हुये चिल्लाकर बोला—"कहां हो तुम? तुम्हारी चेतावनी के मुताबिक ही मैंने किसी को भी कुछ नहीं बतलाया है—किसी की भी मदद नहीं ली। अकेला ही आया हूं और मेरे पास कोई हथियार भी नहीं है। कहां हो तुम...?"

"मैं यहां हूं राघव राहब—।"

वह चौंककर भारी-भरकम आवाज की दिशा में पलटा तो नजदीक की ऊंची चट्टान पर काले रंग के पठानी सूट वाला पैंतीस वर्षीय लम्बा व तन्दुरुस्त युवक दिखलाई दिया, जिसके सिर पर दो बिलान्द लम्बे बाल थे तो चेहरे पर भी एक बिलान्द लम्बी दाढ़ी थी—।

उसके हाथों में रिवॉल्वर देखकर राघव ने थूक-सा सटका तथा बोला—"सु...सुजाता कहां है—?"

"पागल हुये हो क्या राघव मियां...।" वह भारी-भरकम आवाज में बोला, "हमारे दरमियां कोई बातचीत या सौदेबाजी नहीं हुई है—फिर तुम्हारी बीवी को यहां लाने का मतलब ही नहीं बनता है। इस बात की भी कोई गारन्टी नहीं थी कि तुम कोई चालाकी नहीं करोगे। मैं यहां सुजाता को ले आता और पुलिस भी यहां होती तो...तो पुलिस सुजाता को छुड़ा लेती। मुझे मार गिराती या गिरफ्तार कर लेती। तुम्हें तो अपनी बीवी मिल

जाती—लेकिन मुझे तो सिर्फ मौत ही मिलती। भले ही वो मौत गोलियों से मिलती—या फिर फांसी के फन्दे के रूप में...।"

"फांसी का फन्दा? क्या मतलब...?"

"मतलब ये कि इस मुल्क के कानून, पुलिस, मिलिट्री और हुकूमत को मेरी तलाश है राघव मियां। हो भी क्यों नहीं—हिन्दुस्तानियों का बहुत खून बहाया है मैंने। कितनी गोलियां चलाई होंगी...कितने बम फोड़े होंगे...ये भी याद नहीं है...।"

"कौन...?" राघव भौं सिकोड़कर बोला, "कौन हो तुम—?"

"सत्तार...।" कहने पर उसने बायें हाथ को पीठ पीछे से आगे लाकर हवा में लहराया, फिर कहा, "टुन्डा...सत्तार टुन्डा...।"

उसका बायां हाथ कलाई पर से कटा हुआ था—अर्थात् पूरी की पूरी हथेली गायब थी।

"स...सत्तार टुन्डा...मोस्ट वान्टेड आतंकी...।" कहने पर राघव ने पेशानी पर उभर आई पसीने की नन्हीं-नन्हीं असंख्य बुंदकियों को कुर्ते की आस्तीन से पोंछ डाला।

"हां, सत्तार टुन्डा...।" राघव पर रिवॉल्वर ताने हुये बोला वह, "जिस पर हिन्दुस्तानी हुकूमत ने पचास लाख रुपये का इनाम रखा हुआ है।"

"ले...लेकिन...तुमने मेरी बीवी को किडनेप क्यों किया है? क्या चाहते हो? तुम्हारी डिमांड क्या है—?"

"बहुत ही मामूली डिमांड है अपनी। चाहता तो करोड़ों रुपये मांग सकता था। तुम देने पर मजबूर भी होते। लेकिन नहीं, ऐसी कुछ मांग नहीं है अपनी। मुझे सिर्फ एक हफ्ते के वास्ते मुम्बई में छिपने की जगह चाहिये। साथ में सात लोग और हैं। क्या है कि हमें मुम्बई में थोड़ी-सी आतिशबाजी करनी है। यही कोई...हजारेक गोलियां चलानी हैं और दो-तीन दर्जन बम फोड़ने हैं। ज्यादा नहीं...बस, पचास लोगों का खून बहाना है—सौ भी हो सकते हैं। कहीं पर भी वारदात करेंगे तो पुलिस पीछे पड़ जायेगी। सो छिपने के वास्ते एक ठिकाना चाहिये। तुम्हारा एक बूढ़ों का आश्रम है...वृद्ध आश्रम। काफी बड़ा भी है और वहां पर काफी सुविधायें भी हैं।"

"न...नहीं—ये नहीं हो सकता...।"

"क्यों नहीं हो सकता भला? कोई हम लोगों पर शक भी नहीं कर सकेगा—हमें पहचान भी नहीं सकेगा। बाल और दाढ़ी कटवा लेंगे। धोती-कुर्ता पहनेंगे और माथे पर तिलक भी लगा लेंगे। हमारे पास हारमोनियम, ढोलक, तबले होंगे—जिनमें हथियार और बम छिपे होंगे। तुम आश्रम के लोगों को ये बतलाओगे कि हम लोग यू०पी० के रहने वाले हैं और भजन मन्डली बनाकर धर्म का प्रचार करते हैं। सिर्फ एक हफ्ते के वास्ते आश्रम में रहने को आये हैं और फिर गुजरात चले जायेंगे। मैंने पहले भी फरमाया कि कोई हम लोगों पर शक-ओ-शुबहा नहीं कर पायेगा। हमें बहुत से भजन, आरतियां, श्लोक, गायत्री मन्त्र, हनुमान चालीसा वगैरा आती हैं। पाकिस्तान के ट्रेनिंग कैम्प में ये सब सिखलाया जाता हैं। हफ्तेभर तक आश्रम के लोगों का खूब मनोरंजन करेंगे। तो हम लोग आज शाम को ही आश्रम में आ जायें—?"

"न...नहीं...बिल्कुल नहीं। तुम लोगों के इरादे बेहद ही खतरनाक हैं। भोले-भाले, निर्दोष लोगों का खून बहाने की मंशा है तुम्हारी। मैं तुम लोगों को ऐसा नहीं करने दूंगा। पुलिस को तुम्हारे बारे में बतला दूंगा...।"

"क्या होगा पुलिस को बतलाने से...?" हिंसक लहजा हो चला सत्तार टुन्डा का, "हम लोग हुलिया बदलने, भेष बनाने में माहिर हैं। पुलिस के सामने होंगे और पुलिस हमें पहचान भी नहीं सकेगी। तू हमें अपने आश्रम में पनाह नहीं देगा तो हम दूसरा कोई ठिकाना ढूंढ लेंगे। मुम्बई में आई०एस०आई० के बहुत-से एजेन्ट हैं। वो हमारे ठिकाने का इन्तजाम कर देंगे। लेकिन ऐसा होने पर तुझे अपनी बीवी से हाथ धोना पड़ेगा...।"

"न...नहीं...।"

"सुजाता को बुरी तरह तड़पा-तड़पाकर मारा जायेगा। एक-एक करके उंगलियां काटी जायेंगी। जिस्म में चाकू से चीरे लगाकर जख्मों में नमक भरा जायेगा...।"

"न...नहीं...तुम ऐसा नहीं कर सकते...।"

"आंखें फोड़ दी जायेंगी। हाथों-पैरों में कीलें ठोक दी जायेंगी। हथौड़े से हड्डियों का चूरा कर दिया जायेगा। मजे वाली बात ये कि उसको चींखने भी ना दिया जायेगा। सुई-धागे से उसके होंठों की सिलाई कर दी जायेगी। उसकी मौत का नजारा करके शैतान भी सहम उठेंगे...।"

"न...नहीं, बिल्कुल नहीं...।" पसीने से लथपथ हो चला राघव दमे के मरीज की मानिन्द ही हांफते हुये बोला, "ऐसा मत करना...मेरी सुजाता को मत मारना...कुछ भी मत कहना उसको। तुम लोग एक सप्ताह तक वृद्ध आश्रम में रह सकते हो। मैं किसी को...पुलिस को भी कुछ नहीं बताऊंगा...।"

"बतलाओगे तो भारी नुकसान उठाओगे! हम लोग अपने जिस्मों पर बम बान्धकर ही रहते हैं। अभी भी बान्धा हुआ है। हमें अपनी जिन्दगी से कोई मुहब्बत नहीं है...मौत का खौफ नहीं है। जरा-सी गड़बड़ी होते ही बम फोड़ डालेंगे। हमारे साथ-साथ आश्रम के सारे लोग भी उड़ जायेंगे। तेरी बीवी तो मरेगी ही...। यूं समझ कि आश्रम के तमाम लोग हमारे रहमो-करम पर ही होंगे। तो हम लोग शाम को आश्रम में आ जायें–?"

❑❑❑
❑❑❑

तब केशव तथा सोफिया के बीच शतरंज की बाजी बिछी हुई थी तथा केशव से पांच-पांच मिनट में ही बाजी हार चुके राजन, करतार सिंह, चांदनी व श्वेता पूरी दिलचस्पी के साथ दोनों की चालों को देख रहे थे–जब रमाकान्त के साथ राघव राजवंशी का वहां पदार्पण हुआ।

केशव तथा बाकी लोगों ने रमाकान्त के चरण स्पर्श किये और राघव का हाथ जोड़कर अभिवादन किया।

"क्या बात है...?" दोनों के बैठ जाने पर केशव ने कहा, "आप दोनों टेंशन में हैं। क्या हुआ...?"

"राघव भाई बहुत बड़ी मुसीबत में है केशव। ये ही क्या...मुम्बई भी मुसीबत में पड़ सकती है। मुम्बई पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। राघव भाई ने घर आकर बतलाया तो मैंने कहा कि पुलिस की बजाय केशव के पास चलते हैं...।"

"हां...बतलाइये–क्या बात है–?"

सोफिया के इशारे पर चांदनी व श्वेता चाय-नाश्ते के लिये किचन में चली गई।

रमाकान्त ने दुखी व चिन्तित दिखलाई पड़ रहे राघव के कन्धे पर हथेली रखकर बतलाने के लिये इशारा किया तो राघव ने आतंकी सत्तार टुन्डा के द्वारा सुजाता के किडनेप करने तथा उसकी डिमांड के बारे में बतलाया–ये भी बतलाया कि सत्तार टुन्डा व उसके सात साथियों के इरादे क्या हैं।

सोफिया, राजन तथा करतार सिंह चिन्तित हो चले–जबकि केशव ने चारमीनार वाली सिगरेट का धुआं उड़ाने की बलवती हो रही इच्छा का गला घोटकर कहा–"तो ये कल सुबह की बात है राघव जी। आपको कल ही मुझे बतलाना चाहिये था ना–।"

"बहुत जबरदस्त टेंशन में था मैं केशव बेटा...।" हथेलियों को

परस्पर मलते हुये कहा राघव ने, "मैंने तो सत्तार टुन्डा को वृद्ध आश्रम में शरण देने से मना ही कर दिया था। फिर उसने सुजाता को तड़पा-तड़पाकर मारने की बात की तो...मैं भीतर तक हिल गया था। सुजाता की हत्या की कल्पना ने ही मेरे छक्के छुड़ा दिये थे। टुन्डा को मना नहीं कर सका था मैं। शाम को छः बजे उसने मुझे श्यामा प्रसाद मुखर्जी पार्क में बुलाया–जहां वो अपने सात आतंकी साथियों के साथ मौजूद था। सभी धोती-कुर्ते में थे। सिर पर टोपियां और गलों में रामनाम वाले मफलर। मैं सत्तार टुन्डा को पहचान ही नहीं सका था। उसी ने अपना कटा हुआ हाथ दिखलाकर अपने बारे में बतलाया। इसी के साथ उन सभी ने अपने-अपने कुर्ते और बनियान उठाकर पेट पर बन्धे हुये बम दिखलाये। सत्तार ने बतलाया कि उनके पास जो हारमोनियम, ढोलक, तबले वगैरा हैं, उनमें हथियार, बम वगैरा छिपाये हुये हैं। उसने बार-बार मुझे धमकियां दीं कि अगर मैंने किसी की मदद ली या किसी को बतलाया तो वो लोग जिस्मों पर बन्धे बमों को ब्लास्ट कर देंगे और अपने साथ आश्रम के तमाम लोगों को भी उड़ा देंगे–सुजाता को भी मार दिया जायेगा। सारी रात सोया नहीं मैं। सुजाता, आश्रम में रहने वाले लोगों और नजीर हुसैन की चिन्ता लगी रही। लेकिन सुबह होने पर रमाकान्त के पास सलाह लेने पहुंच ही गया–क्योंकि वो लोग मुम्बई में उत्पात मचाने वाले हैं। उनका इरादा भीड़ वाली जगहों पर गोलीबारी करने और बम विस्फोट करने का है। मैं मुम्बई के निर्दोष लोगों की जान कैसे जाने दे सकता हूं भला...?"

"आपने नजीर साहब का भी नाम लिया राघव जी...?"

"हां–नजीर हुसैन के दिमाग में ना जाने क्या फितूर उठा कि उसने कल सुबह ये जिद पकड़ ली थी कि वो वृद्ध आश्रम में ही रहेगा–क्योंकि वहां के कुछ लोगों के साथ उसकी मित्रता हो गई है और वहां का वातावरण उसके मन को भा गया है। मैं तो तैयार नहीं था, लेकिन उसने अपनी सौगन्ध देकर मुझे विवश कर दिया था। वो घर से अपना सारा सामान उठाकर वृद्धआश्रम में ले गया था। वृद्ध आश्रम में रहने वाले डेढ़ सौ लोगों के साथ नजीर हुसैन की जान भी खतरे में है। उधर मुम्बई पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। मुझे तुम पर ही भरोसा है केशव बेटे। ऐसा कुछ करो कि सभी लोग बच जायें और वो आतंकी भी पकड़े जायें...।"

"आप चिन्ता मत करिये राघव जी। क्या आपको मालूम है कि उन्होंने सुजाता जी को कहां पर रखा गया है–?"

"नहीं, ये तो मालूम नहीं है केशव बेटा। सत्तार टुन्डा ने बतलाया

था कि सुजाता उसके किसी आदमी के कब्जे में है। वो आदमी फिदायीन यानि आत्मघाती है–उसके जिस्म पर आर०डी०एक्स० वाला बम बन्धा हुआ है। वो उस आदमी को प्रत्येक चार घन्टे में मिस कॉल देता है। उसको ये निर्देश दिया हुआ है कि अगर चार घन्टे में वो उसके फोन पर मिस कॉल ना दे तो वो सुजाता को खत्म कर दे और वो कोई खतरा महसूस करे तो सुजाता के साथ स्वयं को भी उड़ा डाले। समझ में नहीं आता कि...क्या होगा? जिन्दगी में कभी किसी का बुरा नहीं चाहा है–लेकिन ये मुसीबत आ गई। चिन्ता सिर्फ सुजाता, नजीर हुसैन और आश्रम के लोगों की ही नहीं है–बल्कि मुम्बई के लोगों की भी है। भगवान के लिये कुछ करो केशव बेटा। तुम तो दिमाग के जादूगर हो–तुम तो इस समस्या और संकट का समाधान कर सकते हो...।"

"मुझसे जो भी हो सकेगा...करूंगा, राघव जी। आप ईश्वर पर भरोसा रखिये। उस परमपिता परमेश्वर की इच्छा के बिना तो पत्ता भी नहीं हिल सकता है। नजीर साहब के पास मोबाइल फोन तो होगा ही...?"

"हां–है–।"

"उनका नम्बर बतलाइये मुझे–।"

"नजीर का नम्बर क्यों मांग रहे हो तुम केशव...?" पूछा रमाकान्त ने।

"अभी कुछ सोचा तो नहीं है गुरुजी। लेकिन कोई-ना-कोई चक्कर तो चलाना ही होगा। सत्तार टुन्डा को दबोचने से अधिक नजीर साहब और आश्रम के बाकी लोगों को सुरक्षित रखना आवश्यक है। सुजाता जी को भी बचाना है–जिसके लिये सत्तार टुन्डा को जीवित ही पकड़ना आवश्यक है। सो प्लान बनाकर ही कार्य करना होगा मुझे। सोचना पड़ेगा कि ऐसा क्या किया जाये कि सभी लोग सुरक्षित भी रहें और सभी आतंकी भी पकड़े जायें...?"

❑❑❑

❑❑❑

केशव ने जिद करके राघव तथा रमाकान्त को नाश्ता कराया तथा दोनों को आश्वासन देकर ही विदा किया। फिर उसने फोन पर नजीर हुसैन का वो नम्बर मिलाया, जो राघव ने दिया था।

"हैलो...।"

"जयहिन्द, नजीर साहब...मैं केशव पण्डित बोल रहा हूं...।"

"जयहिन्द, केशव बेटे...खुदा तुम्हें खुश रखे। बड़ी खुशी हुई कि

तुमने मुझे फोन किया। मैं राघव जी के वृद्ध आश्रम में रहने आ गया हूं। हालांकि राघवजी के घर में मुझे सारी सहूलियतें थीं–। सभी लोग जमकर खातिरदारी कर रहे थे, लेकिन मुझे आश्रम का माहौल बहुत ही बढ़िया लगा तो राघव से जिद करके यहां पर रहने के वास्ते चला आया...।"

"हां–राघवजी ने बतलाया मुझे। वो गुरुजी के साथ घर पर आये थे। थोड़ी देर पहले ही यहां से गये हैं। आप इस वक्त कहां पर हैं...?"

"आश्रम में ही हूं...।"

"मेरा मतलब कि आश्रम में कहां पर? अकेले हैं कि साथ में कोई और भी है–?"

"अकेला ही हूं। थोड़ी देर पहले ही हॉल से अपने कमरे में लौटा हूं। हॉल में भजन-कीर्तन का प्रोग्राम चल रहा था। आश्रम में भजन-कीर्तन करने वाले लोगों की टीम एक हफ्ते के लिये आई है। वो आठ लोग हैं। क्या खूब गाते-बजाते हैं वो। मैं हालांकि मुस्लिम हूं लेकिन मैं सभी मजहबों की इज्जत करता हूं। मैं भजन-कीर्तन में आश्रम के सभी मुस्लिमों को भी ले गया था–हम सभी को खूब अच्छा लगा...।"

"मेहरबानी करके अपने कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द कर लीजिये नजीर साहब...।"

"दरवाजा...क्या मतलब–?"

"मतलब भी समझा दूंगा आपको। बेहद जरूरी बात करनी है आपसे। नहीं चाहता कि दूसरा कोई हमारी बातें सुने। मेहरबानी करके आप दरवाजा बन्द करके अटैच्ड बाथरूम के भीतर पहुंचें। तब मैं आपसे जरूरी बातें करूंगा...।"

"ठीक है केशव बेटे...लो, ये मैंने कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया है...अटैच्ड बाथरूम की तरफ बढ़ रहा हूं। लगता है कि कोई खुफिया बात करना चाहते हो। मेरी बेकरारी बढ़ती जा रही है। जरूर कोई खास बात है। लो, मैं बाथरूम के भीतर आ गया हूं...दरवाजा भी बन्द कर लिया है मैंने...हां, अब बोलो कि क्या बात है–?"

❑❑❑

❑❑❑

केशव ने सुजाता का किडनेप करके आतंकी सत्तार टुन्डा का अपने सात साथियों के साथ भजन मन्डली के रूप में वृद्ध आश्रम में जाने के बारे में बतलाया तो दूसरी तरफ से फोन पर नजीर हुसैन चौंककर तथा घबराकर बोला–"ये...ये क्या कह रहे हो के...केशव बेटा तुम? वो...वो

भजन मन्डली वाले खूंखार आतंकी हैं? या मेरे खुदा...यकीन नहीं होता मुझे कि...सत्तार टुन्डा तो खतरनाक आतंकी है...हां, उनमें से एक आदमी का बायां हाथ कटा हुआ है—लेकिन उसने अपना नाम भक्त सम्पूर्णानन्द बतलाया। पहनावे और बोलचाल से वो और बाकी लोग हिन्दू ही मालूम पड़ रहे हैं...ओह...पाकिस्तान में ट्रेनिंग कैम्प में उनको ऐसी ही तालीम दी गई होगी—ताकि वो जरूरत पड़ने पर हिन्दू बनकर पुलिस और लोगों को धोखा दे सकें। लेकिन इस टुन्डे ने ऐसा क्यों किया? वो सुजाता भाभी जान को अगवा करके आश्रम में रहने के वास्ते क्यों आया है...?"

"उसके इरादे बहुत ही खतरनाक हैं नजीर साहब। वो मुम्बई में खून-खराबा करना चाहता है। उसके पास हथियार और बम हैं। उसके इरादे ये हैं कि वो मुम्बई में वारदात करके वृद्ध आश्रम में जा छिपेगा और पकड़ा नहीं जायेगा...।"

"या मेरे खुदा! राघव जी ने ये तो होशियारी करी कि वो तुम्हारे पास पहुंच गये। तुमने भी मुझे बतलाकर समझदारी की है। मैं थोड़ा फिक्रमन्द जरूर हो गया हूं...लेकिन खौफजदा नहीं हूं। मिलिट्री वाला हूं ना। शेर भले ही बूढ़ा हो जाये—लेकिन वो खूंखार भेड़ियों से भी डरता थोड़े ही है। अगर आश्रम के लोग मेरा साथ दें तो...मैं अपनी जान की परवाह किये बिना उन दहशतगर्दों से भिड़ सकता हूं...।"

"नहीं, नजीर साहब! ऐसी कोई गलती मत कीजियेगा आप! सत्तार टुन्डा और उसके साथियों ने अपने जिस्मों पर बम बान्धे हुये हैं। उनके पास हथियार भी हैं। आश्रम के लोगों की जान खतरे में पड़ जायेगी। फिर...सुजाता जी की जान भी तो खतरे में है। वो कहां पर हैं—ये सत्तार टुन्डा ही जानता है। सुजाता जी को भी बचाना है—आश्रम के लोगों की भी सुरक्षा करनी है। इसके लिये चेष्टा यही करनी है कि सत्तार टुन्डा और उसके बाकी साथियों को कोई भी गड़बड़ी करने का मौका ना दिया जाये। उन्हें पकड़े या दबोचे जाने से पहले भनक भी ना लगे कि उनके साथ कुछ होने वाला है...।"

"ऐसा कुछ तो तुम ही कर सकते हो केशव बेटा। क्या तुमने कोई प्लान बनाया है—?"

"हां—कुछ सोचा तो है नजीर साहब। तभी तो आपको फोन किया है मैंने। चूंकि आप उसी आश्रम में रह रहे हैं—इसलिये मुझे आपकी मदद की जरूरत है...।"

"हां—बोलो, केशव बेटा—क्या करना होगा मुझे—?"

❑❑❑
❑❑❑

"कभी-कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े—जाना था गंगा पार प्रभु केवट की नाव चढ़े...।"

आश्रम के बड़े कमरे में सत्तार टुन्डा अपने सात आतंकी साथियों के साथ भजन गा रहा था—उसके साथी हारमोनियम, ढोलक, तबला, चिमटा तथा मंजीरे बजाते हुये उसका साथ दे रहे थे।

अचानक ही रिस्टवाच से नन्हीं-सी सुई निकलकर सत्तार की दाईं कलाई पर चुभने लगी तो वो थोड़ा चौंका, लेकिन किसी दूसरे को उसने कुछ महसूस ना होने दिया और भजन गाता रहा। भजन के पूरा होने पर वो अपने साथियों से बोला—"पेट में थोड़ी गड़बड़ी है। मुझे शौचालय के लिये जाना है। तुम लोग इन लोगों को..." वह आश्रम के दर्जनभर लोगों की तरफ इशारा करके बोला, "नरेन्द्र चंचल जी वाला भजन...चलो बुलावा आया है...माता ने बुलाया है...सुनाओ...।"

दरअसल आश्रम के दर्जनभर लोग उनके कमरे में चले आये थे तथा कुछ भजन सुनाने की फरमाईश की थी।

"चलो बुलावा आया है...माता ने बुलाया है...।"

दूसरा आतंकी भजन गाने लगा, जबकि सत्तार टुन्डा बाथरूम में पहुंचा।

भीतर से दरवाजा बन्द करके उसने रिस्टवॉच-रूपी ट्रांसमीटर का नन्हा-सा एरियल बाहर खींचा और बोला—"हैलो...एस०टी० स्पीकिंग...एस०टी०...स्पीकिंग...।"

"किंग कोबरा दिस साइड...।" ट्रांसमीटर के स्पीकर के माध्यम से दूसरी तरफ से बोलने वाले की फुंफकारती-सी आवाज उभरी, "भजन गाकर आश्रम के लोगों का दिल बहला रहे थे? ओवर...।"

"कमाल की बात है। आपको ये कैसे मालूम हो गया है किंग कोबरा साहब? ओवर—।"

"इसमें हैरानी वाली क्या बात है एस०टी०? हम किंग कोबरा हैं। तुम्हारे हुक्मरानों ने हममें कुछ खासियत देखकर ही आई०एस०आई० का इन्डियन कमान्डर मुकर्रर किया होगा ना? अपने आदमियों के बारे में जानकारी तो रखनी ही पड़ती है। खैर, हमने तुम्हें आने वाले खतरे से आगाह करने के वास्ते ही कॉन्टेक्ट किया है...।"

"खतरा...?" चौंककर बोला सत्तार टुन्डा, "आप किस खतरे की बात कर रहे हैं किंग कोबरा साहब--? ओवर।"

"तुमने सुजाता को किडनेप कर लिया और वृद्ध आश्रम में जगह पाकर ये सोच लिया कि सबकुछ ठीक हो गया है। राघव राजवंशी ने बहुत बड़ी गड़बड़ी कर डाली है...।"

"कैसी गड़बड़ी...? ओवर-।"

"वो कुत्ता केशव पण्डित के पास पहुंच गया है। केशव पण्डित को तो जानते हो ना-? ओवर-।"

"बिल्कुल। पाकिस्तान में ही हम लोगों को केशव पण्डित के बारे में बतलाया गया था और उससे बचकर रहने को कहा गया था। फिर आपने भी मुझे मुम्बई का ये मिशन सौंपते वक्त केशव पण्डित से आगाह किया था। लेकिन ये राघव केशव पण्डित के पास क्यों गया? उसको पुलिस के पास जाना चाहिये था-? ओवर।"

"मुम्बई के लोग किसी बड़ी मुसीबत में फंसने पर केशव पण्डित के पास ही जाते हैं। मुम्बई ही क्या...दूर-दराज के लोग भी पुलिस से ज्यादा केशव पण्डित पर एतबार करते हैं...।"

"इस साले राघव से ऐसी उम्मीद नहीं थी...।" आंखों को सुर्ख करके सत्तार टुन्डा गुर्राकर बोला, "उसे आश्रम के लोगों की फिक्र ना होगी-लेकिन उसको अपनी बीवी की फिक्र तो करनी चाहिये थी। लगता है कि उसको अपनी बीवी सुजाता से भी मुहब्बत नहीं है।"

"ऐसा नहीं है। उसको बीवी से मुहब्बत तो होगी। मगर उसको पूरा एतबार होगा कि केशव पण्डित उसकी बीवी का बाल भी बांका नहीं होने देगा-इसी भरोसे पर उसने केशव पण्डित की मदद ली थी।"

"बेवकूफ है वो...।"

"नहीं, वो बेवकूफ नहीं है एस०टी०। उसके एतबार और भरोसे की वजह ये है कि ऐसे मामलों में केशव पण्डित अक्सर कामयाब हो जाता है। वो जब मिशन पर निकलता है तो पहले फुलप्रूफ प्लान बना लेता है। एक-एक कदम सोच-समझकर ही उठाता है वो। सामने वाली पार्टी का हथियार से नहीं, अपने दिमाग से शिकार करता है वो। ये तो अच्छा हुआ कि हमें किसी तरह इस बात की जानकारी हो गई और हम तुम्हें आगाह कर रहे हैं-वर्ना तुम भी गच्चा खा जाते। तुम्हें शिकार बन जाने पर ही अपनी तबाही और नाकामी की जानकारी होती। खैर, अब तुम लोगों को

अपने वास्ते कोई नया ठिकाना बनाना होगा-जिसका बन्दोबस्त कर दिया जायेगा। तुम लोगों को वो आश्रम छोड़ना पड़ेगा...ओवर...।"

"यानि हमें केशव पण्डित से शिकस्त कबूल कर लेनी है? क्या उसको सबक नहीं सिखलाना चाहिये हमें? ओवर-।"

"वो हमारी हिट लिस्ट में है एस०टी०। हमारे लिये हिन्दुस्तान में सबसे बड़ी अड़चन केशव पण्डित ही तो है। हमारे आका केशव पण्डित का खात्मा चाहते हैं। उसका खात्मा करने वाले को मुंह मांगा इनाम भी मिलेगा। लेकिन ये काम इतना आसान नहीं है। होता तो केशव पण्डित को कभी का खत्म कर दिया गया होता। वो शायद ही तुम्हें आमने-सामने का मुकाबला करने का मौका दे-जो तुम उसे मारने की कोशिश कर सको! उसकी चालें, उसके हमले बहुत ही शातिराना होते हैं। सो तुम दिमाग से केशव पण्डित को सबक सिखाने की बात निकाल दो और आश्रम को छोड़ने की तैयारी करो...ओवर।"

"ये...ये...तो हमारी...आपकी और आई०एस०आई० की बहुत बड़ी तौहीन होगी किंग कोबरा जी...।" सत्तार टुन्डा मानो अंगारों पर लोटते हुये ही बोला-"राघव सिर्फ केशव पण्डित के पास गया-और आप हमें चूहों की माफिक दुम दबाकर भागने के लिए बोल रहे हैं। इससे बेहतर तो मैं शहीद हो जाना पसन्द करूंगा। केशव पण्डित को भले ही कोई नुकसान ना पहुंचाया जाये-लेकिन उसको हमें अपनी ताकत का अहसास तो कराना ही चाहिये। कोई ऐसा धमाका तो हो कि...केशव पण्डित हिल जाये। साथ ही उस साले राघव को भी बढ़िया सबक देना जरूरी है-तभी तो हमारी दहशत कायम होगी किंग कोबरा साहब...ओवर...।"

"क्या चाहते हो तुम? ओवर-।"

"राघव की बीवी सुजाता तो हलाक होगी ही। साथ ही मैं आश्रम के तमाम लोगों भी हलाक करना चाहता हूं। फिर हम लोग वहां से निकल लेंगे। केशव पण्डित के प्लान की भी ऐसी की तैसी करने का ख्वाहिशमन्द हूं मैं...ओवर...।"

"केशव पण्डित के प्लान की ऐसी की तैसी तो तब होगी ना...जब प्लान के बारे में मालूमात होगी। हां, हमें इतना ही अन्दाजा है कि केशव पण्डित नजीर हुसैन की मदद से अपने प्लान पर अमल करेगा...।"

"ये नजीर हुसैन कौन है? ओवर-।"

"राघव का दोस्त है और इस वक्त वो तुम्हारे वाले आश्रम में ही रह रहा है। मिलिट्री में कर्नल था वो-एक जंग में पाकिस्तान को बहुत

नुकसान पहुंचाया था उसने। राघव से केशव पण्डित ने इस नजीर हुसैन के फोन का नम्बर लिया है। इसी से हमने अन्दाजा लगाया है कि केशव पण्डित नजीर हुसैन के जरिये ही कोई खेल खेलने की फिराक में है। शायद वो नजीर हुसैन के जरिये तुम लोगों को चाय या दूध में नींद की दवा दिलवाकर बेहोश करना चाहता है—ताकि तुम लोगों के बेहोश हो जाने पर तुम्हें आसानी से दबोच सके...।"

"ओह...तो ये बात है। हां, एक नजीर हुसैन यहां पर है। वो हमारा भजन सुनने आया था। उसने हमारे भजनों की तारीफ की थी। इससे पहले कि ये नजीर हुसैन कुछ करे...मैं उसको बुरी मौत मार दूंगा—फिर आश्रम के बाकी लोगों को भी उड़ा दूंगा...।"

"नहीं—ये बेवकूफी नहीं करनी है बेवकूफ...।" दूसरी तरफ से किंग कोबरा नाराजगी के साथ चिल्लाकर बोला, "हालांकि पाकिस्तान के हुक्मरानों को हिन्दुस्तानी मुसलमानों से कोई हमदर्दी नहीं है—लेकिन वो ये जताने की कोशिश में हैं कि हिन्दुस्तान में मुसलमानों के साथ सौतेला सलूक होता है और पाकिस्तान को हिन्दुस्तानी मुसलमानों की फिक्र रहती है। इसलिये हम लोगों को सख्त हुक्म है कि हम मुसलमानों को नुकसान ना पहुंचायें। गोलीबारी और बमबारी में मुसलमान मारे जाते हैं तो वो दूसरी बात है—लेकिन हमें ये जताना है कि आई०एस०आई० वाले यहां के मुसलमानों के हमदर्द हैं। इसलिये नजीर हुसैन और आश्रम के बाकी मुसलमानों को कुछ भी नहीं कहना है। बाकी लोगों को उड़ा सकते हो तुम लोग। झटपट तबाही का खेल खेलो और वहां से निकलकर वहां पहुंचो, जहां पर सुजाता को बन्धक बनाकर रखा गया है। वहां तुम्हें नये ठिकाने की जानकारी दे दी जायेगी। ओवर एन्ड ऑल...।"

"लेकिन...।" सत्तार टुन्डा ने कुछ कहना चाहा, लेकिन दूसरी तरफ से रहस्यमयी किंग कोबरा ने ट्रांसमीटर बन्द कर दिया था।

सत्तार टुन्डा तिलमिलाकर रह गया।

फिर उसका चेहरा यूं सुलगने-सा लगा कि मानो अंगारे को जोर-जोर से फूंक मारी जा रही हो। उसकी आंखों में खतरनाक किस्म के भाव गर्दिश करने लगे।

❑❑❑

❑❑❑

आश्रम के दो नौकरों ने ट्रे में सन्तरों के जूश से भरे कांच के चार-चार गिलास रखे हुये थे और नजीर हुसैन के पीछे-पीछे चल रहे थे।

सत्तार टुन्डा तथा उसके सातों साथी भजन गा रहे थे और उस बड़े हॉल में आश्रम के सभी वृद्ध एकत्रित थे तथा भजनों का रसास्वादन कर रहे थे।

सत्तार ने अपने साथियों को किंग कोबरा से ट्रांसमीटर पर हुई तमाम बातें बतलाने पर ये प्लान बनाया था कि वो लोग भजनों के बहाने सभी लोगों को हॉल में इकट्ठा करेंगे—फिर नजीर हुसैन तथा बाकी पांच मुस्लिम को छोड़कर बाकी सभी को मार डालेंगे।

उन्होंने पहले ही हाल में गद्दों के नीचे चार ए०के० सैंतालीस तथा चार रिवॉल्वरों समेत दर्जनभर हैन्ड ग्रेनेड छिपा दिये थे। एक आतंकी आश्रम के ऑफिस से वैन की चाबी भी चुरा लाया था, जिसमें सवार होकर उन्हें वहां से भागना था।

वो लोग आखिरी भजन गा रहे थे, जिसके बाद उन्हें खूनी खेल को अन्जाम देना था।

आठों आतंकियों के समीप पहुंचने पर नजीर हुसैन ने कहा—"आप लोग बहुत मेहनत कर रहे हैं। सुबह भजन सुनाये। दिन में भी कुछ लोगों की इल्तजा पर कई भजन सुनाये। अब शाम होने पर फिर से भजन गा रहे हैं। मैं आप लोगों के लिये सन्तरे का जूश लाया हूं। मेहरबानी करके पहले जूश पी लीजिये...फिर कुछ और भजन सुनाइयेगा...।"

होठों पर अर्थपूर्ण किस्म की मुस्कान सजाकर सत्तार टुन्डा ने अपने साथियों को यूं देखा कि मानो बोल रहा हो कि नजीर हुसैन केशव पण्डित के कहने पर उन्हें फंसाने के लिये आ गया है—लेकिन नहीं जानता कि हम लोगों को पहले से ही सबकुछ मालूम है।

उठा वह और ट्रे से जूश का एक गिलास उठाकर बोला—"बड़ी चिन्ता की आपने नजीर हुसैन साहब! लेकिन हम लोग सन्तरे, मौसमी, अन्नानास या अनार का...कोई भी जूश नहीं लेते हैं। क्योंकि खट्टा होता है ना। गला खराब कर देता है। गायकों को अपनी आवाज सुन्दर बनाये रखने के लिये बहुत परहेज करने पड़ते हैं। जब से हम लोगों ने भजन गाने का कार्य शुरू किया है...खट्टी और ठन्डी वस्तुओं का त्याग कर दिया था। जूश, कोल्ड ड्रिंक, आइसक्रीम, ठन्डा पानी, खट्टे फल...कुछ नहीं लेते हैं। बस, दूध या चाय का ही सेवन करते हैं...।"

"ओ...ओह...!" नजीर हुसैन का चेहरा बुझ-सा गया, फिर वो मुस्कराकर बोला, "कोई बात नहीं। मैं आप लोगों के वास्ते गर्म दूध ले आता हूं...।"

"नहीं, अभी कुछ भी नहीं...नजीर हुसैन जी! हम लोग जब एक बार भजनों का कार्यक्रम आरम्भ कर देते हैं तो...बीच में पानी की एक बूंद भी नहीं लेते हैं। कार्यक्रम के पश्चात् कुछ खाते-पीते हैं। लेकिन आप तो जूश ले आये हैं। ऐसा करिये कि आप ये गिलास पीजिये। बाकी के गिलास यहां बैठे दूसरे लोग पी लेंगे। लीजिये, पूरा पीजिये...।"

"न...नहीं...मेरा गला खराब है। खांसी है...।"

"नहीं, नजीर हुसैन साहब! ये जूश तो आपको पीना ही होगा...।" कहने पर सत्तार ने गिलास नजीर हुसैन के होंठों तक पहुंचा दिया तथा ध्यान से उसके चेहरे को देखने लगा।

"न...नहीं...खांसी है...मैं जूश नहीं पी सकूंगा। भजन के बीच में यहां बैठे लोग भी जूश नहीं लेंगे। मैं इन गिलासों को वापिस ले जाता हूं। जब आप लोग भजनों का प्रोग्राम पूरा कर लेंगे तो आपके वास्ते दूध ले आऊंगा...।"

"नहीं, नजीर हुसैन...ये जूश तो आपको पीना है...अभी पीना है...।" कहने पर सत्तार टुन्डा ने गिलास नजीर हुसैन के होठों से लगा दिया।

"न...नहीं...।" नजीर हुसैन ने बौखलाकर गिलास को परे हटाया तो वो सत्तार के हाथ से छूटकर नीचे जरा गिरा।

छनाक...की आवाज के साथ गिलास टूटा तथा सारा जूश फर्श पर फैल गया।

सत्तार टुन्डा की आंखों में खून के कतरे-से भर गये तथा चेहरा लाल-भभूका हो चला।

झुककर उसने गद्दे को उठाकर हवा में उछाल दिया तथा रिवॉल्वर उठाकर नजीर हुसैन पर तान दी।

बाकी आतंकियों ने भी हथियार उठाये तथा उठ खड़े हुये।

❑❑❑

❑❑❑

हर कोई हतप्रद—सकते में!

"काटो तो खून नहीं" वाली अवस्था!

ये...ये अचानक ही क्या हो गया?

भजन गायकों ने हथियार क्यों उठा लिये? इनके पास हथियार कहां से आ गये?

दोनों नौकरों के हाथों से ट्रे निकल गई तथा उनमें रखे गिलास

छनाक...छनाक...की आवाज के साथ टूट गये—जूश बिखर गया।

वो दोनों पीले—फक्क पड़ गये तथा मलेरिया के मरीज की मानिन्द ही थर-थर कांपने लगे।

बाकी लोग भी हड़बड़ा गये, घबरा गये। उनके थरथराते हुये जिस्म मानो एक-दूसरे से शर्त लगाकर अधिक-से-अधिक पसीना छोड़ने लगे।

नजीर हुसैन को भी मानो लकवा-सा मार गया—।

मानो किसी ऋषि ने कुपित होकर उसको कुछ क्षणों के लिये पत्थर के बुत में तब्दील हो जाने का श्राप दे डाला हो।

एक आतंकी लपककर दरवाजे पर पहुंच गया तथा ए०के० सैंतालीस को लहराते हुये चिल्ला-चिल्लाकर बोला, "खबरदार! कोई चीखेगा नहीं—अपनी जगह से हिलेगा नहीं। हमारी बात ना मानने वाले को गोलियों से भून दिया जायेगा। हमारे पास हथियारों के साथ-साथ हैन्डग्रेनेड भी हैं। सभी चुपचाप अपनी-अपनी जगह पर फेवीकोल के जोड़ की तरह ही चिपके रहें...।"

सभी की सिट्टी-पिट्टी गुम!

कई की हालत तो इतनी खराब हो चली कि मानो किसी भी क्षण दिल का दौरा पड़ जायेगा।

"ये...ये सब क्या है...?" मानो नजीर हुसैन ऋषि के श्राप से मुक्त हुआ तथा साहस बटोरकर बोला, "आप लोग तो भगवान के भक्त हैं—भजन मन्डली वाले हैं। आपके पास हथियार और हैन्डग्रेनेड कहां से आ गये? इन्हें हम लोगों पर क्यों ताना है? क्या चाहते हैं आप लोग... आह...।"

रिवॉल्वर से नजीर हुसैन के सिर पर प्रहार करके उसे नीचे गिरा दिया सत्तार टुन्डा ने तथा उसके सीने पर दाहिना पैर रखकर हिंसक भाव से बोला—"जानबूझकर बावला बन रहा है तू नजीर हुसैन? यूं बनके दिखला रहा है कि जैसे कुछ जानता ही न हो। काश...काश कि तू अपने मजहब और कौम का नहीं होता, मुसलमान नहीं होता तो...तेरे जिस्म को गोलियों से छलनी-छलनी कर दिया होता मैंने!"

"क...क्या मतलब...आह...!"

पूछने पर नजीर हुसैन कराहते हुये हथेली से सिर के बहते खून को रोकने की चेष्टा करने लगा।

"यूं बावला बनके मेरे गुस्से की भट्टी में तू पेट्रोल डालने का काम मत कर...नजीर हुसैन...।"

झुककर नजीर हुसैन के माथे पर रिवॉल्वर की नाल टिकाकर

गुर्राया-सा सत्तार टुन्डा, "मुझे मालूम है कि...तुझे मालूम है कि हम लोग कौन हैं और हमारे इरादे क्या हैं...।"

"कै...कैसी बात करते हो...भला मुझे क्या मालूम कि तुम लोग कौन हो और...?"

"क्यों...केशव पण्डित ने तुझे फोन करके हमारे बारे में बतलाया नहीं है...?"

बुरी तरह चौंका नजीर हुसैन।

उसके चेहरे पर हवाइयां-सी उड़ने लगीं।

"क्यों...क्या हुआ...?" व्यंगपूर्ण भाव से ही कहा सत्तार टुन्डा ने, "हाथों के तोते उड़ गये? तू क्या समझता है कि तू और तेरा केशव पण्डित ही माइन्डेड है? तुम दोनों जो चाहोगे...सिर्फ वो ही होगा? बाकी लोग उल्लू के पट्ठे हैं...क्यों–?"

"मैं...मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं कि...तुम क्या कहना चाहते हो? ये केशव पण्डित कौन है...?"

❑❑❑
❑❑❑

नजीर हुसैन के चेहरे पर दो शक्तिशाली घूंसे जड़कर फुंफकारा-सा सत्तार टुन्डा–"शुक्र मना कि तू मुसलमान है और हमें जानबूझकर मुसलमानों की जान लेने की इजाजत नहीं है–वर्ना यहीं पर ठोक डालता तुझे। राघव की बीवी सुजाता को किडनेप करके हम लोग यहां पर एक हफ्ते के वास्ते रहने को आये थे–लेकिन राघव ने केशव पण्डित के पास जाकर उसकी मदद मांगी। केशव ने फोन पर तुझसे मदद मांगी और तू उसकी मदद को तैयार हो गया। प्लान के मुताबिक तूने आश्रम के नौकर को सब्जी और फल लाने के वास्ते भेजा और केशव पण्डित ने नींद की गोलियों का पाउडर नौकर के हाथों तुझे भिजवा दिया। तूने वो पाउडर जूश में मिलाकर हमें पिलाने की कोशिश की...?"

आंखों में आश्चर्य के भाव भरे हुये बोला नजीर हुसैन–"ले...लेकिन तुम्हें ये बातें कैसे मालूम हो गईं–?"

"यानि तूने कबूल कर लिया कि तू केशव पण्डित की मदद कर रहा था। तू कबूल नहीं भी करता तो कोई फर्क पड़ने वाला नहीं था। मुझे मेरे बॉस किंग कोबरा ने सारी बातें ट्रांसमीटर पर बतला दी थीं और मैं होशियार हो गया था। तभी तो हम लोगों ने तेरा लाया जूश नहीं पीया। बस, किंग कोबरा जी ने ये गलत हुक्म दे दिया कि तुझे और यहां मौजूद बाकी

मुसलमानों को ना मारा जाये। तू भी फेल और तेरा केशव पण्डित भी फेल। हम बाकी लोगों को मारकर यहां से निकल जायेंगे और केशव पण्डित को मुंह की खानी पड़ेगी...।"

"लेकिन मुझे यकीन है कि दिमाग का जादूगर केशव पण्डित मुंह की नहीं खायेगा। वो कुछ ना कुछ करेगा जरूर...।"

"उसे कुछ भी करने का मौका नहीं मिलेगा। वो तो इस बात का इन्तजार कर रहा होगा कि तू हम लोगों को बेहोश हो जाने पर उसे फोन पर इत्तला करेगा। तेरा फोन जायेगा–लेकिन कामयाबी का नहीं–केशव की नाकामी का। होश में आने पर तू केशव पण्डित को फोन पर ये ही बतलायेगा कि हम लोग खून-खराबा करके यहां से जा चुके हैं...।"

इतना कहने पर सत्तार ने नजीर हुसैन की कनपटी पर शक्तिशाली घूंसा मारकर उसे बेहोश कर दिया तथा अपने साथियों से कहा–"नजीर हुसैन के अलावा यहां पर पांच और मुसलमान हैं। इन सभी को किसी दूसरे कमरे में ले जाकर बन्द कर दो। फिर हम लोग बाकी लोगों को जान से मारकर यहां से निकल जाते हैं...। जल्दी करो...हमें यहां पर ज्यादा देर नहीं रुकना है...।"

तभी दरवाजे पर खड़े आतंकी के हाथों से ए०के० सैंतालीस छूट गई–फिर वो भी भरभराकर फर्श पर बिना चीखे और बिना तड़पे चुपचाप गिर गया।

सत्तार टुन्डा तथा बाकी आतंकी बुरी तरह चौंक उठे–

"खतरा...।" चीखा-सा सत्तार टुन्डा, "शायद केशव पण्डित आ चुका है यहां पर। यहां मौजूद सभी लोगों को खत्म कर डालो और जरूरत पड़े तो पेट पर बन्धे बमों के बटन दबाकर खुद को भी उड़ा डालो। लेकिन सिर्फ हम ही नहीं मरेंगे। अपने साथ केशव पण्डित को भी लेकर मरेंगे। हमें देखना होगा कि केशव पण्डित कहां पर है! सामने आ केशव पण्डित! तू सामने आता है कि हम लोग यहां मौजूद तमाम लोगों को उड़ा दें–?"

❑❑❑
❑❑❑

होश में आने पर सत्तार टुन्डा ने स्वयं को पुलिस स्टेशन के इन्टेरोगेशन रूम में पाया। वो लोहे की कुर्सी पर बैठा हुआ था। स्टील की मजबूत पट्टियों से उसको इस कदर कसकर बान्धा गया था कि वो हाथ-पैर तो क्या...उनकी उंगलियों को भी नहीं हिला सकता था। उंगलियां ही

क्या...पेट, सीना, कन्धे, गर्दन, चेहरा, सिर...कुछ भी नहीं हिला सकता था।

जिस्म पर मात्र एक अन्डर वियर ही था।

जीभ से मुंह के भीतर टटोलने पर उसको ज्ञात हुआ कि उसके दांतों के मध्य फंसा पोटेशियम सायनाइड वाला वो कैप्सूल गायब था, जिसे आवश्यकता पड़ने पर आत्महत्या के लिये प्रयोग किया जाना था।

इन्टेरोगेशन रूम में इन्सपैक्टर अनिल यादव के साथ राजन शुक्ला व करतार सिंह भी थे।

अपने प्रश्नों के उत्तर पाना चाहता था सत्तार टुन्डा, लेकिन उसने पाया कि उसके होठों पर मजबूती के साथ टेप चिपकी हुई थी।

राजन का संकेत होने पर अनिल यादव ने स्विच बोर्ड पर लगे एक स्विच का इस्तेमाल किया तो बन्द होठों से 'ऊं...ऊं...ऊं' की आवाज निकालते हुये सत्तार टुन्डा गर्म तवे पर डाल दी गई मछली की मानिन्द ही तड़पने लगा–झटके-से खाने लगा–क्योंकि कुर्सी में करेंट प्रवाहित हो रहा था।

दस सेकेंड के झटके देकर अनिल यादव ने स्विच ऑफ कर दिया तो पसीने से लथपथ सत्तार टुन्डा हांफने लगा।

अनिल यादव ने पुनः स्विच ऑन किया तो टुन्डा फिर से तड़पने, लगा, फड़फड़ाने लगा।

आधा घण्टा में ही करेंट ने मानों उसके जिस्म की समूची शक्ति निचोड़कर उसको बेजान कर डाला।

ना सिर्फ शारीरिक, बल्कि मानसिक रूप से भी वो बेहद कमजोर हो चला था।

तब भी उसका दिमाग थोड़ा सक्रिय था तथा बार-बार यही सोच रहा था कि वो आश्रम के लोगों की हत्या करने जा रहा था, उसने केशव को सामने आने के लिये कहा था, फिर अचानक ही वो अपने होश खो बैठा था–उसके तथा उसके साथियों के साथ अप्रत्याशित रूप से क्या हुआ था?

बाजी बन्द मुट्ठी से कैसे निकल गई थी?

तभी इन्टेरोगेशन रूम में दिमाग के जादूगर का पदार्पण हुआ।

❑❑❑

❑❑❑

सत्तार टुन्डा के सामने रखी कुर्सी पर बैठकर केशव ने चारमीनार

वाली सिगरेट में कश लगाकर कसैला धुआं उसके चेहरे पर छोड़ने पर कहा–"होश में आने पर तू समझ ही गया होगा कि तेरे हाथों से बाजी निकल चुकी है। तू किसी को भी कोई नुकसान नहीं पहुंचा सका है। आश्रम के तमाम लोग सुरक्षित हैं। तेरा प्लान चौपट हो गया है। हालांकि मैंने सुजाता जी को भी बचाने की पूरी चेष्टा की थी–लेकिन उन्हें नहीं बचा सका। इसका जिन्दगीभर अफसोस रहेगा मुझे। मन को यही सोचकर तसल्ली दी है कि सुजाता जी को भगवान ने बस इतनी ही जिन्दगी दी थी–सो मैं उन्हें बचा नहीं सका। शायद तू कुछ कहना चाहता है? चल, बोल...।"

कहने पर केशव ने सत्तार टुन्डा के होंठों पर चिपकी टेप हटाकर फर्श पर फेंक दी।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि...सुजाता को कहां रखा गया था–?" सत्तार की आवाज बहुत ही कमजोर थी।

"तुम लोगों को बेहोश करने के लिये एक नशीली गैस का इस्तेमाल किया था, जिसे एक रोशनदान से हॉल में छोड़ा गया था। तुम लोग और हॉल में मौजूद सभी आश्रम वाले बेहोश हो गये थे। सबसे पहले मैंने तुम आतंकियों के पेट पर बन्धे आर०डी०एक्स० वाले बमों को अलग किया और तुम लोगों के मुंह से नकली दांत के रूप में फिट किये पोटेशियम सायनाइड वाले कैप्सूल निकाल दिये थे। मैं अपने साथ एक एम्बूलेंस और दो डॉक्टर्स भी लेकर आश्रम पहुंचा था। मेरी रिक्वेस्ट पर डॉक्टरों ने परवेज नामक आतंकी को एम्बूलेंस में ले जाकर उसको कुछ इंजेक्शन लगाये और उसको होश में लाये। मैंने परवेज को हिप्नोटाइज किया और मालूम किया कि सुजाता जी को कहां रखा गया है? मैं साबुन के उस बन्द गोदाम में पहुंचा भी–लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। जावेद आतंकी ने अपने साथ सुजाता जी को भी बम से उड़ा दिया था। दोनों के क्षत-विक्षत शव ही मिले। मैं जानना चाहूंगा कि ऐसा कैसे हो गया? जावेद को खतरे की जानकारी कैसे हुई थी–?"

कमजोर पड़ चुके सत्तार के होंठों पर घायल किस्म की मुस्कान उभरी, वह बोला, "मालूम नहीं कैसे...मेरे बॉस किंग कोबरा को ये मालूम हो गया था कि राघव मदद के वास्ते तुम्हारे पास पहुंचा है और तुमने अपने प्लान में नजीर हुसैन को शामिल किया है–उसको फोन पर सारी बातें बतलाकर हमें बेहोश करने को कहा था–जूश में पाउडर मिलाकर। जिसके वास्ते नजीर हुसैन ने नौकर को सब्जी और फल लाने को भेजा था और

तुमने उसका पाउडर दे दिया था। मारे गुस्से के मेरा दिमाग घूम गया था और मैंने ट्रांसमीटर पर फिदायीन जावेद को हुक्म दे दिया था कि वो खुद के साथ सुजाता को भी उड़ा दे। ये काम तभी हो गया था, जब तुमने फोन पर नजीर हुसैन से बात की थी। तुमने तो सोचा भी ना होगा कि सुजाता को इतनी जल्दी मार दिया जायेगा। मैंने भी नहीं सोचा था कि हम लोग तुम्हारे जाल में फंस जायेंगे। हम लोग नजीर हुसैन के जूश से बच गये थे। आश्रम में खून-खराबा करके वहां से निकल जाने का इरादा था—लेकिन ऐसा हो ना सका। क्या तुम्हें मालूम था केशव पण्डित कि हम लोग नजीर हुसैन के लाये जूश को नहीं पीयेंगे—?"

मुस्कुराकर कहा केशव ने—"नहीं, मालूम नहीं था टुन्डे। मैं अन्तर्यामी थोड़े ही हूं। लेकिन किसी मिशन को अन्जाम देने से पहले हरेक पहलू पर गौर कर लेता हूं। मेरे दिमाग में ये बात भी थी कि...हो सकता है कि नजीर साहब तुम लोगों को बेहोश करने में कामयाब ना हो सकें। इसीलिये मैंने नशीली गैस की व्यवस्था कर ली थी और राजन, करतार सिंह, इन्सपैक्टर यादव के साथ आश्रम में आ गया था। साथ में दो डॉक्टर और एम्बूलेंस भी थी। तूने जूश पीने से इन्कार कर दिया तो गैस का इस्तेमाल किया था—।"

"हूं...काफी होशियार हो तुम पण्डित। तभी लोग तुम्हें दिमाग का जादूगर कहते हैं। मेरे सातों साथी कहां हैं? पुलिस स्टेशन में ही होंगे...?"

"नहीं! हॉस्पिटल में हैं...।"

"ओह...यानि उन्हें अभी तक होश नहीं आया है...।"

"होश तो आ गया था—लेकिन वो दोबारा बेहोश हो गये थे—या बोलूं कि कर दिये गये थे...।"

"कर दिये गये थे...क्या मतलब—?"

गुलाबी होंठों को गोल करके मुंह में भरे धुएं को सत्तार के चेहरे पर छोड़ा केशव ने तथा उसकी आंखों में झांकते हुये सर्द लहजे में कहा—"तुम लोग आतंकी हो...दहशतगर्द! फांसी की सजा होना तो निश्चित है। लेकिन अपने यहां का कानून थोड़ा सुस्त है...कैंचुए की चाल चलता है। तुम लोगों को जेल में काफी दिनों तक शाही मेहमान बनाकर रखा जाता। खातिरदारी की जाती—जो मुझे कबूल नहीं था। सो मैंने लोहे की रॉड का इस्तेमाल करके तेरे सातों साथियों के हाथों और पैरों की हड्डियों को इस तरह तोड़ डाला कि...दुनिया का कोई भी डॉक्टर उन्हें जोड़ नहीं सके। वो सातों जहरीले सांप थे—लेकिन अब कैंचुओं से बढ़कर कुछ भी

नहीं रहे हैं। तू भी नहीं रहेगा। तुझे भी जहरीले नाग से कैंचुआ बनना पड़ेगा...कैंचुआ...।"

"न...नहीं...।" अपने अन्जाम की कल्पना करके सिहर उठा सत्तार टुन्डा तथा थूक-सा निगलकर बोला, "तुम्हें खुन्नस ही निकालनी है तो मुझे जान से मार डालो...।"

"वो काम तो कानून का है...।" कुर्सी से उठकर खड़ा हुआ केशव तथा करीबी मेज पर रखी लोहे की रॉड उठाकर बोला, "लेकिन तुझे फांसी के फन्दे पर लटकने में सालों नहीं तो...महीनों तो लग ही जायेंगे। तब तक अपाहिजों वाली ऐसी लाचार जिन्दगी जीयेगा तू...कि प्रत्येक सांस के साथ ऊपर वाले से मौत की दुआ करेगा। जब ऊपर वाला तेरी दुआ नामन्जूर कर देगा तो तू यही तमन्ना करेगा कि जल्द-से-जल्द फांसी पर लटकाने वाला दिन आ जाये। तो...तू अपने साढ़े तीन हाथ-पैर की हड्डियों का चूरा कराने के लिये तैयार है ना...?"

और फिर सत्तार टुन्डा की पीड़ा भरी चींखों से इन्टेरोगेशन रूम की दीवारें कांपने लगीं, छत सहम उठी तथा फर्श भी दहल उठा।

❑❑❑

❑❑❑

ना सिर्फ राघव राजवंशी, बल्कि उसका छब्बीस वर्षीय बेटा अजय तथा चौबीस वर्षीय बहू करिश्मा पर भी मानो सुजाता की मौत या हत्या से दुखों के पहाड़ टूट पड़े थे। उनके दिलो-दिमाग पर बिजलियां गिरी थीं—

अजय व करिश्मा का रो-रोकर बुरा हाल था। लेकिन राघव रो नहीं रहा था—मानो उसकी आंखों के आंसू सूख गये थे—लेकिन दुःख के बादल मंडरा रहे थे। सकते की सी अवस्था में था।

रिश्तेदार, जान-पहचान वले, आस-पड़ोस के लोग, उसकी पार्टी के लोग आपस में चर्चा कर रहे थे कि उसको गहरा सदमा लगा है, सो उसको रुलाने की चेष्टा करनी चाहिये।

जंगल की आग की मानिन्द ही मुम्बई तथा आसपास के क्षेत्रों में सुजाता की हत्या की खबर फैली थी तथा हजारों की संख्या में लोग वहां एकत्रित थे।

राघव द्वारा बनवाये गये वृद्ध आश्रम, महिला आश्रम, स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल तथा उसकी फैक्ट्री से जुड़े लोग तो वहां थे ही—वो लोग भी थे, जिनकी राघव ने किसी-ना-किसी रूप में मदद की थी।

हर कोई दुःखी था, बहुत से लोग तो रो रहे थे।

मीडिया वाले भी वहां पर थे। वो अजय तथा उसकी पत्नी करिश्मा से प्रश्न-उत्तर करके राघव से भी वार्तालाप करना चाहते थे लेकिन रमाकान्त तथा नजीर हुसैन ने ये बोलकर इन्कार कर दिया था कि राघव को बहुत मानसिक पीड़ा पहुंची है और वो किसी भी साक्षात्कार या वार्तालाप के लिये तैयार नहीं हो पायेगा।

मीडिया वालों ने केशव पण्डित को घेर लिया तो केशव ने उनके सभी प्रश्नों के उत्तर देने के साथ-साथ राघव की इस बात के लिये प्रशंसा की कि उसने आश्रम तथा मुम्बई के लोगों को बचाने के लिये उसकी मदद ली थी तथा सुजाता की जान की चिन्ता ना की थी।

पोस्टमार्टम के पश्चात् सुजाता का क्षत-विक्षत शव आ गया तो अन्तिम यात्रा की तैयारियां होने लगीं।

शव-यात्रा में मुख्यमन्त्री, अन्य कई मन्त्री समेत लगभग सभी राजनैतिक पार्टियों के छोटे-बड़े नेता सम्मिलित थे—क्षेत्र का विधायक तथा राघव का प्रतिद्वन्द्वी राम माहेश्वरी भी आया था तथा अथाह भीड़ को देखकर उसके सीने पर सांप-से लोट रहे थे।

"सुजाता की मौत कहीं राघव को लाभ ना पहुंचा दे...रामजी...।" राम माहेश्वरी का सैक्रेटरी शव-यात्रा के साथ चलते हुये फुसफुसाकर बोला, "भीड़ तो लगातार बढ़ती ही जा रही है। ऐसा ना हो कि इस इलैक्शन में ये भीड़ वोटों में बदल जाये और राघव जीत हासिल करके एम०एल०ए० बन जाये...।"

"चुप कर...ऐसा कुछ नहीं होगा...।" चोटिल नाग-सा फुंफकारकर बोला राम माहेश्वरी, "ये इलैक्शन अपनी जिन्दगी और मौत का प्रश्न है। पार्टी और सरकार भी नहीं चाहती कि राघव विजयी हो। क्योंकि वो जनसेवा पार्टी का अध्यक्ष है और मुख्यमन्त्री पद का दावेदार है। उसके हारने पर उसकी पार्टी को भी करारा झटका लगेगा। वो हमसे हारेगा तो पार्टी में अपनी वेल्यू बढ़ जायेगी। सो इस राघव को हर कीमत पर पराजित करना ही होगा हमें। राघव को हराने के लिये कोई दूर की कौड़ी लानी ही होगी शर्मा। सोचना पड़ेगा कि...क्या किया जाये? कैसे इस राघव की लोक-प्रियता को खड्डे में दफन किया जा सकता है—?"

❑❑❑

❑❑❑

लगभग तीस वर्षीय, लेकिन खूबसूरत जिस्म व चेहरे वाली युवती थोड़ा झिझकते हुये कमरे में प्रविष्ट हुई तथा हाथ जोड़कर बोली, "नमस्ते, राघव जी...।"—

बेड के किनारे बैठे राघव के बायें हाथ में व्हिस्की का गिलास था तथा दायें हाथ की तर्जनी व मध्यमा उंगलियों के मध्य जलती हुई सिगरेट फंसी हुई थी।

पहले व्हिस्की को खत्म करके खाली गिलास को सामने रखी मेज पर रखा तथा वहां रखी प्लेट से तन्दूरी मुर्गे की टांग उठाकर बोला—"यूं हमें आश्चर्य के साथ मत देखो मीरा। हम भी इन्सान हैं। हमारी भी इच्छायें हैं, ख्वाहिशें हैं, तमन्नायें और शौक हैं। हां, हम सार्वजनिक रूप से ये सब नहीं करते हैं। बैठ जाओ—डरने या संकोच करने की आवश्यकता नहीं है। बैठो, ना...।"

मीरा नामक युवती झिझकी, फिर मानो साहस करके कुर्सी पर यूं ही बैठी कि आवश्यकता पड़ने पर उठकर भाग खड़ी होगी। वह सफेद साड़ी के पल्लू को दायें हाथ की तर्जनी उंगली पर लपेटने, उतारने, लपेटने लगी।

मुर्गे की टांग का गोश्त चबाते हुये सिगरेट में कश लगाकर धुएं के अनेकों छल्ले उड़ाये राघव राजवंशी ने तथा फिर मीरा से सम्बोधित होकर बोला—"तुमने नवी मुम्बई से टिकिट मांगा है मीरा—?"

"जी...राघव जी...।"

"वहां से हमें पूरे दो दर्जन बायोडाटा प्राप्त हुये हैं। यानि दो दर्जन लोग वहां से हमारी पार्टी के सिम्बल पर चुनाव लड़ने के इच्छुक हैं। उनमें से कई लोग ऐसे हैं...जो इलैक्शन जीत ही जायेंगे। वैसे अपनी पार्टी की लहर चल रही है। नवी मुम्बई के लोग भी हमारी पार्टी के साथ हैं। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि किसी को भी टिकिट थमा दें। क्योंकि दूसरी पार्टी वाले...विशेष रूप से सत्ताधारी पार्टी द्वारा तगड़े उम्मीदवार खड़े किये जायेंगे—इसलिये हमें भी कोई तगड़ा उम्मीदवार ही खड़ा करना होगा।"

"आप...मेरे बारे में तो जानते ही हैं राघवजी...।"

"हां—बिल्कुल जानते हैं। पिता के देहान्त के बाद तुमने अपने परिवार के लालन-पालन की जिम्मेदारी ली और आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया। पढ़ाई छोड़कर अपने पिता की चाय की दुकान चलाने लगी। इसी के साथ सुबह-सवेरे साईकिल पर अखबार बांटने लगी। चाय की दुकान पर सब्जी भी बेचने लगी। तुमने अपने बहन-भाइयों को पढ़ाया-लिखाया। भाई को कम्प्यूटर इंजीनियर बनाया। तीनों बहनों को ग्रेजुएट तक की पढ़ाई कराके उनकी शादियां करवाईं। भाई ने तुमसे कहा कि तुम दुकान बन्द

कर दो और शादी कर लो। लेकिन तुमने अपनी नहीं, भाई की शादी की और एक संस्था 'नारी उत्थान समिति' खड़ी की, जहां महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई, बुनाई की ट्रेनिंग दी जाती है और फिर पोशाक, जर्सी, स्वेटर, शॉल वगैरा तैयार करके बेचे जाते हैं तथा संस्था की महिलाओं को अच्छा पारिश्रमिक दिया जाता है। मुफ्त में बच्चों की पढ़ाई होती है। गरीबों के मुफ्त इलाज के लिये हॉस्पिटल बनवाया तुमने। गरीब कन्याओं के विवाह करवाती हो। एक वर्ष पहले प्रौढ़ शिक्षा अभियान भी चलाया, जहां बूढ़ों को शिक्षित किया जाता है। कुल मिलाकर तुम नवी मुम्बई की प्रमुख समाजसेवी हो और तुम्हारी वहां बहुत ही अच्छी छवि है। तभी तो हमने तुम्हें अपनी पार्टी ज्वाइन कराई थी तथा नवी मुम्बई की महिला मोर्चा की अध्यक्षा नियुक्त किया था। लेकिन वहां के जो दो दर्जन लोग टिकिट के इच्छुक हैं, उनकी भी अपनी विशेषता है, अच्छी छवि है। उनमें चुनाव जीतने की काबिलियत है। खैर, तुम चाहो तो टिकिट मिल सकता है। चुनाव जीतकर विधायक बन जाओगी और मन्त्री भी बना दी जाओगी। नारी कल्याण व बाल कल्याण मन्त्री...मीरा देशाई। लेकिन तुम्हें एक शर्त पूरी करनी होगी मीरा...बोलो, शर्त पूरी करोगी-?"

"शर्त क्या है राघव जी-?"

बोतल से गिलास में व्हिस्की उंडेलकर बिना सोडा मिलाये ही पी गया राघव तथा खाली गिलास मेज पर रखकर उठा, चलकर मीरा के समीप पहुंचा तथा उसके कन्धों पर हथेलियां रखकर बोला-"कुछ पाने के लिये कुछ खोना पड़ता है मीरा। दुनिया का दस्तूर है कि...इस हाथ ले तो उस हाथ दे। तुम्हें ना सिर्फ विधायक बनाने की...बल्कि मन्त्री भी बनाने की फुल गारन्टी है हमारी। इलैक्शन का खर्चा भी हम उठायेंगे-तुम्हें कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा। बस, तुम्हें तो...हमें खुश करना होगा...। समझ रही हो ना कि हम तुमसे क्या चाहते हैं...?"

"ये...ये क्या कह रहे हैं आप...राघव जी...?" मीरा उठ खड़ी हुई तथा घबराकर बोली, "मैं...मैं तो आपको देवता स्वरूप समझती थी। लेकिन आप तो...छीः, आपको शर्म आनी चाहिये। मैं आपकी बेटी जैसी हूं...।"

"झूठ मत बोल। हमारे तेरी मां के साथ कभी भी जिस्मानी सम्बन्ध नहीं रहे हैं...फिर तू हमारी बेटी कैसे हो सकती है भला? सुन...ये रिश्तों, मर्यादा जैसी बकवास बातें करके मूड खराब मत कर। भले ही हमारी बीवी बूढ़ी थी-लेकिन कभी-कभार मूड बनने पर उसके बिस्तर पर पहुंचकर

मौज-मस्ती कर लिया करते थे। वो नहीं रही। आज की रात तू हमारी बीवी बन जा...बदले में तेरी जिन्दगी बना देंगे हम...।"

"न...नहीं। मैं ऐसी-वैसी औरत नहीं हूं। नहीं बनना मुझे विधायक या मन्त्री। नहीं लड़ना है इलैक्शन...नहीं चाहिये कोई टिकिट। मैं जा रही हूं। मुझे जब आपने होटल में आने के लिये कहा था तो, मुझे तभी समझ जाना चाहिये था कि आपकी नीयत ठीक नहीं है। मेरे मन में तो आपकी भगवान जैसी छवि बनी हुई थी...इसलिये मुझे कोई संदेह नहीं हुआ था। मैं जा रही हूं...ये क्या कर रहे हैं आप...छोड़िये मुझे...नहीं...छोड़िये मुझे...वरना मैं शोर मचाऊंगी...नहीं...मैं शोर मचाकर लोगों को इकट्ठा कर लूंगी...आपकी इज्जत दो कौड़ी की भी ना रहेगी...ब...बचाओ...बचाओ...आह...।"

लेकिन...राघव ने मीरा को अपनी बांहों के मजबूत घेरे में ले लिया तथा उसके गालों, होंठों को चूमते हुये बोला-"यूं चींखने-चिल्लाने से कोई फायदा नहीं होगा जानेमन...बेमतलब में ही गला खराब हो जायेगा और कोयल जैसी मीठी बोली बेसुरी हो जायेगी। ये साउन्ड प्रूफ रूम है। तू लाउडस्पीकर पर भी चिल्लायेगी तो...आवाज को कमरे से बाहर नहीं पहुंचा पायेगी। ये तो तय है कि तू हमें खुश किये बिना इस कमरे से बाहर नहीं जा सकेगी। तू अगर अपनी खुशी से हमें खुश ना करेगी तो तुझे ही तकलीफ और पीड़ा होगी। हम जबरदस्ती करेंगे...अपने साथ बलात्कार करवाना चाहती है क्या तू...?"

"मे...मेरी इज्जत लूटकर आप बचेंगे नहीं...।" स्वयं को छुड़ाने की भरसक चेष्टा करते हुये चींखी-सी मीरा, "मैं खामोश ना रहूंगी। मैं पुलिस के पास जाकर शिकायत करूंगी...मेडिकल जांच में साबित हो जायेगा कि आपने मेरी इज्जत लूटी है...आपको अदालत सज़ा सुनाकर जेल भेज देगी...किसी को मुंह दिखलाने के काबिल ना रहेंगे। सत्ता हासिल करके मुख्यमन्त्री बनने का ख्वाब टूट जायेगा...छोड़िये, मुझे...आह...।"

राघव ने मीरा को किसी खिलौने की मानिन्द ही उठाकर बेड पर पटक दिया तथा कुर्ता उतारकर फर्श पर फेंकने पर बोला, "तू कुछ नहीं कर पायेगी। पुलिस स्टेशन तो क्या...इस कमरे से भी बाहर नहीं जा सकेगी। तेरे साथ बलात्कार करने पर हम तेरा गला घोट डालेंगे और तेरी लाश को ठिकाने लगा देंगे। ये होटल हमारा अपना है। यहां का मैनेजर...सारा स्टाफ अपना है। कोई इस बात का जिक्र तक नहीं करेगा कि...तू यहां...हमारे होटल में आई थी। भले ही तू अपने घर से ये बोलकर

चली होगी कि हमसे मिलने के लिये हमारे होटल 'राघव पैलेस' में जा रही है–लेकिन इससे कुछ नहीं होता। होटल का स्टाफ, गार्डस् वगैरा बोल देंगे कि तू यहां नहीं आई थी। मुम्बई में आये दिन लड़कियों के किडनेप होते रहते हैं। यही माना जायेगा कि तुझे भी किसी ने किडनेप कर लिया होगा। हम इस बात का भी लाभ उठायेंगे। धरना-प्रदर्शन करेंगे। वर्तमान सरकार और सत्ताधारी पार्टी पर इल्जाम लगायेंगे कि उसके राज में महिलायें सुरक्षित नहीं हैं–हम सत्ता में आकर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे। ये तो डबल फायदे वाली बात हो गई। अरे...पीछे क्यों हट रही है तू...आ, हमारे पास आ और हमें खुश कर दे...।"

राघव ने बेड पर चढ़कर मीरा को दबोचना ही चाहा था कि मीरा ने नजदीकी मेज पर से पीतल का गुलदान उठाकर राघव के सिर पर शक्तिशाली प्रहार कर दिया।

पीड़ा भरी चींख के साथ राघव ने दोनों हाथों से सिर को थाम लिया तथा तड़पने लगा।

जबकि मीरा बेड से उतरी तथा दरवाजा खोलकर कमरे से बाहर निकल गई।

❑❑❑

❑❑❑

"तो देखा आपने दर्शकों! ये हैं जनसेवा पार्टी के संस्थापक राघव राजवंशी। जो कि मुम्बई में समाजसेवी के रूप में जाने-पहचाने जाते हैं। जिनकी छवि देवता के जैसी थी और जिन्होंने इस दावे के साथ राजनैतिक पार्टी बनाई थी कि वो राजनीति से बेईमानी, जुर्म और भ्रष्टाचार का खात्मा कर देंगे–लोगों तथा विशेषकर महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करेंगे। लेकिन कहने और करने में अन्तर होता है। इन्सान के दो रूप होते हैं। एक रूप वो, जो वह दुनिया के सामने प्रस्तुत करता है–दूसरा रूप वो होता है, जिसे वो छिपाकर रखता है और जो रूप उसका वास्तविक रूप होता है। इस वीडियो फिल्म पर चर्चा करने से पूर्व हम पहले आपको बतला दें कि हमें ये वीडियो फिल्म कैसे और कहां से मिली है। हमें ये वीडियो फिल्म देने वाले सज्जन का नाम है राजेश पुरोहित। आइये, आपको राजेश पुरोहित जी से मिलवाते हैं...।"

टी०वी० स्क्रीन पर न्यूज रीडर सुजाता सिंह के साथ कोई तीस वर्षीय काले कुर्ते वाला युवक भी बैठा दिखलाई पड़ा–जिसने माथे पर पीले रंग का तिलक लगाया हुआ था तथा लम्बे बालों को पीछे की तरफ काढ़ा हुआ

था। उसने कैमरा या दर्शकों की तरफ देखकर हाथों को जोड़कर अभिवादन किया।

"हमारे दर्शकों को बतलाइये पुरोहित जी कि आपने ये वीडियो फिल्म कैसे बनाई? क्या आपको पहले से ही मालूम था कि राघव राजवंशी मीरा देशाई के साथ वो सब करेंगे? या से सब इत्तफाक ही था? कृपया सारी बातें बतलाइये...।"

"मैं मीरा बहन के पड़ोस में ही रहता हूं और मीरा मेरी धर्म बहन है। मेरा थापरनगर में मेन रोड पर आर०जी० फोटो एन्ड वीडियो स्टूडियो है। मीरा बहन के साथ मैंने जनसेवा पार्टी ज्वाइन की थी। मीरा बहन नवी मुम्बई से इलैक्शन लड़ने की इच्छुक थी। उसने अपने बायोडाटा के साथ एप्लीकेशन भेजी थी। राघव जी ने फोन पर मीरा बहन से कहा कि वो रात को नौ बजे उनके होटल 'राघव पैलेस' के रूम नम्बर वन में आ जाये--जहां पर वो पार्टी के कुछ अन्य नेताओं के साथ उम्मीदवारों के चयन पर विचार करेंगे। मीरा बहन ने हांमी भर दी थी। लेकिन मुझे ये थोड़ा अजीब लगा कि मीरा बहन को होटल में बुलाया गया–पार्टी के मुख्यालय में क्यों नहीं? मैंने मीरा बहन को वहां जाने से मना किया था लेकिन वो बोली कि राघवजी जैसे देवता पर संदेह करना भी पाप होगा। लेकिन मुझे दाल में काला लग रहा था...।"

"तो आपने मीराजी के साथ जाने का निर्णय नहीं किया था पुरोहित जी...?"

"मेरी बीवी मोनिका प्रेगनेंट थी और जीवनरेखा नर्सिंग होम में एडमिट थी। डॉक्टर रेखा गुप्ता ने बतलाया था कि डिलीवरी किसी भी वक्त हो सकती है और ऑपरेशन करना पड़ेगा। सो मेरा नर्सिंग होम में होना जरूरी था। खास करके शाम के समय–क्योंकि डिलीवरी शाम को या रात को होनी थी। मेरे समझाने पर भी मीरा बहन होटल जाने की जिद पर अड़ी थी। वो बहुत भोली है और राघव राजवंशी ने अपनी छवि भी देवता वाली बनाई हुई थी। लेकिन मुझे अनहोनी की आशंका हो रही थी। सो मैंने काफी सोच-विचार के बाद होटल राघव पैलेस के रूम नम्बर वन में एक छोटे साइज का वीडियो कैमरा इस तरह छिपाकर लगा दिया था कि वो किसी को नजर ना आये। मैंने कैमरे में रात नौ बजे का टाइम सैट कर दिया था–यानि नौ बजते ही कैमरे को अपने आप ही चालू हो जाना था...।"

"लेकिन आपको होटल के रूम नम्बर वन में कैमरा लगाने का अवसर

कैसे मिला? आप कैसे निश्चिंत थे कि आप कमरे में पहुंच जायेंगे और वहां कैमरा लगाने में सफल हो जायेंगे–?"

"होटल राघव पैलेस में मेरा एक परममित्र मुकेश बख्शी वेटर की नौकरी करता है। उसी की मदद से मैं होटल के उस कमरे में कैमरा लगाने में सफल हो गया था। और देख लीजिये कि मेरी आशंका ठीक ही निकली। भगवान की कृपा से मीरा बहन की लाज बच गई और राघव की हकीकत भी वीडियो फिल्म के माध्यम से दुनिया के सामने आ गई। राघव राम के भेष में छिपा रावण ही है। उसको बेपर्दा करनें के लिये मैंने आपके चैनल की मदद ली। मैं आपके चैनल का बहुत-बहुत आभारी हूं...।"

"हम भी आपके आभारी हैं पुरोहित जी। देश को आप जैसे जागरुक नागरिकों की बहुत आवश्यकता है। तो ये थे राजेश पुरोहित जी...।" टी०वी० स्क्रीन से राजेश पुरोहित को फ्रेम से बाहर कर दिया गया तथा न्यूज रीडर का क्लोज-अप दिखलाई पड़ने लगा, "जिन्होंने सतर्कता बरतते हुये होटल के रूम में वीडियो कैमरा लगा दिया था और वीडियो फिल्म हमें उपलब्ध कराई। वो वीडियो फिल्म हमने आपको दिखलाई–राजेश पुरोहित से भी बात की। अभी-अभी सूचना प्राप्त हुई है कि मीरा देशाई ने पुलिस स्टेशन जाकर राघव राजवंशी के खिलाफ कम्पलेन्ट दर्ज करा दी है। हमारे विशेष संवाददाता राजेन्द्र लहरी पुलिस स्टेशन के बाहर मीरा देशाई के साथ मौजूद हैं। आइये, आपको हम राजेन्द्र लहरी और मीरा देशाई के पास लेकर चलते हैं और सुनते हैं कि दोनों के बीच क्या वार्तालाप हो रहा है...!"

❑❑❑
❑❑❑

सोफिया, राजन शुक्ला, चांदनी, श्वेता, करतार सिंह तथा नौकर मुंशी उर्फ होशियारचन्द केशव पण्डित के साथ ड्राइंगरूम में बैठे हुये थे तथा टी०वी० देख रहे थे।

टी०वी० स्क्रीन पर रिपोर्टर राजेन्द्र लहरी हाथ में 'करंट न्यूज' के लोगो वाला माइक लिये हुये खड़ा था तथा सामने खड़ी मीरा देशाई से पूछ रहा था–"मीरा जी, आपने राघव राजवंशी के खिलाफ कम्प्लेन्ट दर्ज करा दी है। आप हमारे चैनल के माध्यम से लोगों को कुछ कहना चाहेंगी–?"

मीरा का चेहरा काफी उतरा हुआ था और आंखें सूजकर यूं सुर्ख हो गई थीं कि मानो वो लगातार रोती रही हो। मानसिक रूप से वो काफी टूटी हुई मालूम पड़ रही थी।

भर्राये हुये कण्ठ से बोली–"दुनिया वालों की तरह मैं भी राघव को भगवान का अवतार, समाजसेवक, दीन-दुखियों का रखवाला समझती थी। उसने जनसेवा पार्टी बनाई तो लगा था कि राजनीति में सुधार होगा। जुर्म और भ्रष्टाचार मिटेंगे। महिलाओं का सम्मान होगा–वो आधी रात को भी घर से बाहर निकलेंगी तो उनकी इज्जत पर कोई आंच नहीं आयेगी। लेकिन भ्रम ही था मेरा। राघव भेड़ की खाल में छिपा भेड़िया निकला काश...काश कि मैंने राजेश भइया की बात मान ली होती। उन्होंने कहा था कि मुझे रात के वक्त होटल में नहीं जाना चाहिये, वहां कोई गड़बड़ी हो सकती है। लेकिन मेरे दिमाग की आंखों पर तो अन्धविश्वास की पट्टी बन्धी हुई थी। अगर ऐन वक्त पर मेरे हाथ में गुलदान नहीं आ जाता और मैं राघव के सिर पर वार करके वहां से भाग नहीं आती तो...किसी को मुंह दिखलाने के काबिल नहीं रह पाती। राघव ने मेरी लाज लूट ली होती...।"

वह रोने-सुबकने लगी तथा साड़ी के पल्लू से आंसू पोंछने लगी।

"क्या आपको उम्मीद है मीराजी कि आपको न्याय मिलेगा? राघव राजवंशी को सजा मिलेगी–?"

"हां, मुझे पूरी उम्मीद है–क्योंकि राजेश भइया ने चालाकी का परिचय देते हुये होटल के कमरे में वीडियो कैमरा फिट कर दिया था। वो वीडियो फिल्म उस दुष्ट, पाजी, शैतान राघव के खिलाफ ठोस सबूत है। पुलिस स्टेशन के भीतर इन्सपैक्टर प्रभुदयाल ने पहले मेरे आरोप पर आश्चर्य व्यक्त किया था। बोला था कि...क्या पागल हो गई है, जो एक देवता पर ऐसा आरोप लगा रही है...शर्म नहीं आती तुझे? उसने मुझे चुपचाप लौट जाने को बोल दिया था। लेकिन तभी एक सब-सन्सपैक्टर ने वहां आकर बतलाया कि टी०वी० पर 'करंट न्यूज चैनल' पर मेरी और राघव की वीडियो फिल्म दिखलाई जा रही है। इन्सपैक्टर प्रभुदयाल ने वो फिल्म देखी और मेरी रिपोर्ट दर्ज कर ली। लेकिन अभी वो अपने अफसरों से बात कर रहे हैं–क्योंकि मामला राघव राजवंशी का है। फिर भी मुझे पूरा विश्वास है कि कार्रवाई होगी। क्योंकि आपके चैनल पर वो वीडियो दिखलाई जा रही है। बाकी चैनल वाले भी इस मुद्दे को जोर-जोर से उठायेंगे। पुलिस और सरकार पर प्रेशर बनेगा। अगर फिर भी राघव के खिलाफ कुछ कार्रवाई ना हुई तो...मैं मुख्यमन्त्री आवास के सामने अपने ऊपर पैट्रोल छिड़ककर आत्मदाह कर लूंगी और मेरी मौत की जिम्मेदार पुलिस और सरकार होगी...।"

"बाप रे...।" सिसकारी-सी भरकर बोली सोफिया, "ये तो आत्मदाह करने की बात कर रही है। ये राघव तो वाकई शैतान निकला। कल्पना भी नहीं की थी कि राघव ऐसा होगा। क्या हो रहा है हमारे समाज को...?"

"इस कमीने राघव को ऐसी सजा मिलनी चाहिये कि...दूसरे लोग भी सबक लें...।" श्वेता बायीं हथेली पर दायें हाथ से घूंसा मारकर आक्रोश भरे लहजे में बोली, "ऐसे बदमाश को तो महिलाओं के हवाले कर देना चाहिये और उन्हें सजा देने की खुली छूट मिलनी चाहिये। फिर महिलायें बतलायेंगी कि किसी महिला पर नीयत खराब करने का क्या नतीजा होता है।"

"श्वेता...हमें एकदम से किसी निर्णय पर नहीं पहुंच जाना चाहिये...।"

"तुम कहना क्या चाहते हो केशव...?" बोली सोफिया, "क्या तुम अभी भी राघव को निर्दोष मानते हो? ये कहना चाहते हो कि मीरा झूठा आरोप लगा रही है? चैनल पर दिखलाई जा रही वीडियो फिल्म झूठी है...?"

"रिलेक्स, सोफी...।" चारमीनार की सिगरेट में कश लगाकर कहा केशव ने, "मैंने राघव जी को निर्दोष और मीरा को झूठी नहीं कहा है। लेकिन सिक्के के दो पहलुओं की तरह ही हर बात, हर घटना के भी दो पहलू होते हैं। सच और झूठ...दोषी और निर्दोष! तुम तो जानती हो मुझे—मैं किस प्रोफेशन में हूं? मैं पहले किसी घटना के बारे में पूरी छानबीन करता हूं और फिर किसी निष्कर्ष पर पहुंचता हूं।"

"लेकिन भाई साहब...।" चांदनी सकुचाते हुये बोली, "मीरा भला राघव पर झूठा आरोप क्यों लगायेगी? फिर वो वीडियो फिल्म...।"

"इतनी जल्दी किसी निर्णय पर नहीं पहुंचना चाहिये चांदनी। हो सकता है कि मीरा का आरोप सही हो और राघव जी ने उसके साथ वैसा किया हो—लेकिन ये भी हो सकता है कि राघव जी के खिलाफ कोई गहरी साजिश रची जा रही हो...!"

"लेकिन कोई राघवजी के खिलाफ साजिश क्यों रचेगा गुरुवर—?"

"राघव जी ने नई राजनैतिक पार्टी का गठन किया है राजन। उनकी पार्टी का प्रभाव लोगों के दिलो-दिमाग पर हो रहा है। इलैक्शन सिर पर हैं। चुनाव की अधिसूचना जारी हो चुकी है। इसी महीने के लास्ट में वोटिंग है। ऐसे में कुछ भी हो सकता है। जरूरी नहीं कि राघव जी के खिलाफ कोई कांसप्रेसी ही की गई हो—लेकिन मैं सत्य तक पहुंचना चाहूंगा—क्योंकि

सच का सामने आना बेहद जरूरी है...मैं पता लगाकर रहूंगा कि हकीकत क्या है...!"



वृद्ध आश्रम के बाहरी हिस्से वाले जनसेवा पार्टी के मुख्यालय में मीडिया के लोग एकत्रित थे तथा पार्टी के उपाध्यक्ष नजीर हुसैन से तरह-तरह के प्रश्न कर रहे थे।

'यू' के आकार वाली मेज के पीछे बैठा नजीर हुसैन पूरे जोर लगाकर बोला—"मैंने आप लोगों को बतलाया कि राघव जी अपने कमरे में बेहोशी की हालत में पड़े पाये गये हैं और उन्हें गुप्ता नर्सिंग होम में एडमिट किया गया है। मुझे भी नर्सिंग होम जाना था, लेकिन आप लोग आ पहुंचे तो मुझे रुकना पड़ा है। उस ऊपर वाले से...पाक परवर दीगार से ये दुआ करता हूं कि राघवजी जल्दी ही ठीक हो जायें। होश में आने पर वो मीडिया के माध्यम से अपनी बात रखेंगे ही। लेकिन आप लोगों ने मुझसे पूछा है तो...मैं आपको बतला दूं कि राघव जी पर उस मीरा देशाई नाम की युवती ने झूठा इल्जाम लगाया है। क्यों लगाया है...ये तो वो ही जाने...।"

"लेकिन आप उस वीडियो फिल्म के बारे में क्या कहेंगे नजीर साहब—जिसमें राघव जी को मीरा देशाई के साथ बदसलूकी करते दिखलाया गया है...? हमारा न्यूज चैनल 'करंट' बार-बार उसको दिखला रहा है। वीडियो फिल्म तैयार करने वाले राजेश पुरोहित को भी पेश किया गया...।"

"बकवास...।" नजीर हुसैन मेज पर जोर से घूंसा मारकर चिल्ला-चिल्लाकर बोला, "बकवास है ये सब...आप लोग तो जानते हैं कि कम्प्यूटर के जरिये नकली वीडियो फिल्म तैयार की जा सकती है। किसी के भी चेहरे पर किसी दूसरे का चेहरा फिट किया जा सकता है। या फिर कोई कलाकार विग, कॉन्टेक्ट लैंसेज, फेसमास्क से किसी का भी हुलिया बना सकता है—उसकी आवाज की नकल भी कर सकता है। कुल मिलाकर राघव जी बेगुनाह हैं। वो खुदा का नेक बन्दा है—साईं है वो। सखी हातिमताई है। हमेशा जरूरतमन्दों की मदद की उसने। औरतों के वास्ते उसने क्या कुछ नहीं किया है? महिला आश्रम बनवाया। औरतों की मुफ्त डिलीवरी के वास्ते मैटरनिटी हॉस्पिटल बनवाया हुआ है। गरीब बच्चियों के वास्ते स्कूल बनवाया—जिसमें पढ़ाई के साथ डांस, कुकिंग, सिलाई-कढ़ाई और ब्यूटीशियन का कोर्स भी कराया जाता है। गरीब लड़कियों की आये महीने शादी करवाता है वो। राघव जी कतई भी अय्याश नहीं हैं। जिन्दगी

में कभी कोई गलत काम नहीं किया उसने। ना ही उसने कभी शराब पी। बीड़ी-सिगरेट नहीं पी, पान नहीं खाया। वो सुबह-शाम मन्दिर जाने वाला बन्दा है। राघव जी को साजिश का शिकार बनाया जा रहा है। खुदा साजिश करने वालों को दोजख में भेजें। माफी चाहूंगा। मुझे नर्सिंग होम जाना है...राघव जी के पास। ना जाने उनकी तबियत कैसी होगी!"

❑❑❑
❑❑❑

"देखिये, राघव जी को होश आ गया है और वो खतरे से भी बाहर हैं। लेकिन मैं अभी आप लोगों को भीतर जाने की इजाजत नहीं दे सकता हूं। राघव जी का कहना है कि वो स्वयं ही मीडिया वालों को...यानि आप लोगों को बुलाकर अपनी बात रखेंगे। एक्सक्यूज, मी...।"

कहने पर डॉक्टर अशोक गुप्ता मीडिया वालों के बीच से होकर तथा गलियारा पार करके अपने केबिन में पहुंचा—जहां पर रमाकान्त चोपड़ा के साथ केशव पण्डित पहले से ही बैठा हुआ था।

"कैसे है राघव जी...डॉक्टर साहब—?" चिन्तित रमाकान्त ने पूछा।

"वो ठीक हैं अंकल जी और होश में भी हैं।"

"थैंक्स, गॉड...।" रमाकान्त ने हाथ जोड़कर ऊपर की तरफ देखा।

"क्या हम राघवजी से मिल सकते हैं डॉक्टर—?"

"आप दोनों मिल सकते हैं पण्डितजी...।"

"मुझे भी मिलना है राघव जी से...।" नजीर हुसैन भीतर प्रविष्ट होकर बोला, "खुदा का शुक्र है कि अपना यार सेहतमन्द है। डॉक्टर भन्डारी ने बतलाया मुझे। लेकिन राघव जी को हुआ क्या था डॉक्टर गुप्ता—वो बेहोश क्यों हुये थे—?"

"वो...।" डॉक्टर थोड़ा सकुचाकर बोला, "शायद राघवजी ने सूसाइड करनी चाही थी...।"

"खु...खुदकुशी...?" नजीर हुसैन चिहुंका।

"आत्महत्या—?" केशव नीली आंखों को सिकोड़कर बोला, "ये आप क्या कह रहे हैं डॉक्टर—?"

"ये सच है पण्डितजी। राघव जी ने नींद की पचास के लगभग गोलियां खा ली थीं—जिन्हें पेट की सफाई करके निकाल दिया गया है। ये तो अच्छा हुआ कि उनके बेटे अजय और बहू करिश्मा ने वक्त पर ध्यान दे दिया और उन्हें नर्सिंग होम में ले आये थे—वर्ना नींद में ही राघव जी

की जान जा सकती थी। आप लोग उनके कमरे में जा सकते हैं। उनका बेटा और बहू वहीं पर हैं...।"

"चलो, चलते हैं...।" नजीर हुसैन केशव तथा रमाकान्त से बोला, "ये क्या पागलपन करने चले थे राघवजी—उन्होंने खुदकुशी की कोशिश क्यों की थी भला—?"

❑❑❑
❑❑❑

राघव राजवंशी बेड पर लाल कम्बल ओढ़े लेटा हुआ था। उसके सिरहाने की तरफ उसका बेटा अजय तथा बहू करिश्मा खड़े थे और उनकी आंखों में आंसू भरे हुए थे। उन दोनों ने हाथों को जोड़कर केशव, रमाकान्त तथा नजीर हुसैन का मूक अभिवादन किया तथा आंसू पोंछने लगे।

राघव ने आंखें खोलकर तीनों को देखा तथा हाथों के इशारे से बैठ जाने के लिये कहा—

"लाहोल विला कुव्वत...।" बेड के किनारे बैठकर नजीर हुसैन बोला, "ये क्या हिमाकत थी मियां? डॉक्टर ने बतलाया कि तुमने पचासों नींद की गोलियां गटक ली थीं। ऐसी क्या मुसीबत आ गई थी कि...जनाब जान देने चले थे? यारों-दोस्तों का ख्याल नहीं किया तुमने? उनके बारे में नहीं सोचा, जिन्हें हमेशा तुम्हारी मदद की जरूरत पड़ती है? अजय और बहू का तो ख्याल किया होता। भाभीजान के चले जाने पर तुम ही तो इन दोनों के सरपरस्त हो। जनसेवा पार्टी का क्या होगा...जिससे लोगों ने बहुत ज्यादा उम्मीदें लगा ली हैं? क्यों किया तुमने ऐसा—?"

ठन्डी आह-सी भरी राघव ने तथा मानो वह तड़पकर ही बोला—"तो और क्या करता मैं मेरे भाई? टी०वी० खोला तो मनहूस खबर सुनाई जा रही थी। मुझ पर वाहियात इल्जाम लगाया जा रहा था। ना सिर्फ इल्जाम...बल्कि एक वीडियो फिल्म भी दिखलाई जा रही थी। फिल्म में मीरा देशाई के साथ जो व्यक्ति था—उसकी शक्ल और आवाज बिल्कुल मुझ जैसी ही थी। मैं अचम्भित रह गया था। ये तो मेरी समझ में आ गया था कि मेरे खिलाफ गहरा षड्यन्त्र रचा गया है और मेरे किसी डुप्लीकेट का इस्तेमाल किया गया है। लेकिन तब मेरे दिमाग में ये था कि लोग मीरा के आरोप और वीडियो फिल्म पर ही विश्वास करेंगे और मुझे खलनायक के रूप में ही देखेंगे। मैं जबरदस्त टेंशन में आ गया था। लगा था कि सारी इज्जत मिट्टी में मिल गई। सुजाता की हत्या के बाद नींद नहीं आ रही थी तो डॉक्टर ने नींद की गोलियां दी थीं। शीशी की सारी गोलियां निगल गया था मैं...।"

"नादानी की थी तुमने राघव...।" बोला रमाकान्त, "ये तो तुम्हारी समझ में आ ही गया था कि तुम्हारे खिलाफ साजिश रची गई है। तब तुम्हें केशव के बारे में सोचना चाहिये था। केशव ने ना जाने कितनी साजिशों का पर्दाफाश किया है—ना जाने ऐसे कितने ही केस सोल्व किये हैं। तुम्हें निर्दोष साबित करने की जिम्मेदारी केशव की थी...।"

"तब मुझे केशव बेटे के बारे में कुछ सूझा ही नहीं था रमाकान्त। दिमाग ने मानो काम करना ही बन्द कर दिया था। खैर, केशव बेटा...ईश्वर की सौगन्ध...स्वर्गवासी धर्मपत्नी सुजाता की सौगन्ध खाकर बोल रहा हूं कि मैं निर्दोष हूं। वीडियो फिल्म वाला राघव मैं नहीं हूं। मीरा के मुताबिक वो घटना कल रात नौ बजे की है—जबकि कल शाम के बाद मैं घर से बाहर निकला ही नहीं था...।"

कहने पर राघव ने अपने बेटे व बहू की तरफ देखा।

"पापा जी एकदम ठीक कह रहे हैं पण्डितजी...।" उसकी बहू करिश्मा बोली, "पापाजी ने आठ बजे डिनर लिया था और फिर टी०वी० पर कलर्स चैनल पर 'बालिका वधु' देखा था। साढ़े आठ बजे सब टी०वी० पर 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' देखा। नौ बजे वापस कलर्स पर 'बेइन्तहा' और 'रंगरसिया' सीरियल देखने पर दस बजे सोने के लिये चले गये थे।"

"ये बिल्कुल सच है पण्डितजी...।" अजय भी बोला।

केशव ने उन दोनों को नजरअन्दाज करके राघव से कहा—"जरा अपने सिर पर से कैप उतारेंगे आप राघव जी...?"

अजय ने राघव के सिर पर पहनी लगी लाल रंग की ऊनी कैप उतार दी तो केशव ने पूछा—"आपके सिर पर ये चोट कैसे लगी राघव जी और कब लगी—?"

❑❑❑

❑❑❑

राम माहेश्वरी अपनी सेक्रेटरी-रूपी रखैल रोमा के साथ अपनी कोठी के हॉल में बैठा रेड वाइन के साथ मछली के पकौड़ों का भी स्वाद चख रहा था।

वह लाल रंग के नाइट गाउन में था तो रोमा के संगमरमरी जिस्म पर गुलाबी रंग की झीनी-सी नाइटी ही थी और उसने नाइटी के भीतर कुछ भी पहना हुआ नहीं था।

"ये हमारा लास्ट पैग है रोमा डार्लिंग...।" उसकी पतली कमर में हाथ डालकर बोला राम माहेश्वरी, "फिर बेडरूम में चलकर मौज-मस्ती करते हैं। जब तक इलैक्शन नहीं हो जाते हैं—तुम्हें ही हमारा मन बहलाना होगा। हम किसी कुवांरी लड़की को किडनेप करवाने का रिस्क नहीं ले सकते हैं...।"

तभी कॉल बेल बज उठी।

"रात के ग्यारह बजे...कौन आ सकता है भला—?"

"इलैक्शन का माहौल है डार्लिंग। पार्टी के लोग रात को भी चैन नहीं लेने देते हैं। आलतू-फालतू लोगों को तो गार्ड फाटक से ही चलता कर देता है। उसने कॉल बेल बजाई है तो...कोई खास व्यक्ति ही होगा। लेकिन उसको इन्टरकॉम का इस्तेमाल करना चाहिये...।"

"इन्टरकॉम तो खराब पड़ा है। शाम ही तो गार्ड बतला रहा था...।"

"ओह—हां—हमें याद नहीं रहा था। अरे, भई रामदीन...जाकर देखो तो कौन है। जाकर दरवाजा खोलो...।"

अधेड़ उम्र का नौकर एक कमरे से निकलकर लपकते हुये गया तथा उसने बड़े आकार वाले दरवाजे को खोला।

गार्ड की वर्दी वाला युवक भीतर आया, जिसके हाथ में काले चमड़े से मंढ़ा डन्डा तथा दायें कूल्हे पर होलेस्टर झूल रहा था।

"क्या बात है रे कुलदीप—?"

"राघव जी आये हैं रामजी...।"

"रा...राघव...?" इतनी जोर से चौंका राम माहेश्वरी कि हाथ में थमे गिलास से वाइन छलक गई।

"राघव जी...?" रोमा भी चौंक उठी।

"मैंने कहा कि वो सुबह ही आयें—लेकिन वो जिद करने लगे कि अभी मिलना है। मैंने बोला कि आप सो गये होंगे—तो वो बोले कि आपको जगा दूं। उन्हें अभी मिलना है। मैंने अभी बाहर वाला फाटक नहीं खोला है। क्या जवाब दूं उन्हें—?"

"साथ में कौन है—?"

"कोई भी नहीं। राघव जी ऑटो रिक्शा से अकेले ही आये हैं...।"

"ऑटो रिक्शा से...?" हैरत में पड़कर बोला राम माहेश्वरी, "क्या बात करते हो तुम कुलदीप? राघव के पास तो अपनी कई कारें हैं। भला वो ऑटो रिक्शा से क्यों आयेगा—?"

"वो भी इतनी रात को–?" रोमा भी बोली।

"ऐसा तो मैंने भी सोचा था रामजी। राघव जी ने काले रंग का कम्बल ओढ़ा हुआ है। उन्होंने कम्बल हटाया तो मुझे मालूम पड़ा कि वो हैं। ना जाने क्यों राघव जी ने खुद को कम्बल में छिपाया हुआ है! मैं क्या बोलूं उनसे–?"

बिल्लौरी आंखें सिकोड़कर राम माहेश्वरी ने दायें हाथ की तर्जनी उंगली से माथा खुजलाया, फिर बोला–"उसको भीतर भेज दो। मालूम तो पड़े कि वो इतनी रात को हमसे मिलने के लिये क्यों आया है–?"

❑❑❑

❑❑❑

कचहरी में पर्चा भरने के लिये राम माहेश्वरी चला तो साथ में एक किलोमीटर लम्बा जुलूस था। उसने मोटा खर्चा किया था तथा पार्टी से जुड़े छोटे-बड़े नेताओं, कार्यकर्त्ताओं को गाड़ियां उपलब्ध कराई थीं तथा चलने से पूर्व उन्हें शराब की दावत भी दी थी–ताकि वो पूरे जोश से नारेबाजी करते रहें।

हजार के करीब मजदूर तबके के मर्दों व महिलाओं को भी बुलाया था, जिन्हें दो वक्त के भोजन के साथ अच्छी-खासी रकम भी मिलनी थी।

जब जुलूस बड़ा हो तो देखने वालों की भीड़ भी लग जाती है–कुल मिलाकर जुलूस में काफी भीड़ और गहमा-गहमी थी।

ढोल-नगाड़े तथा बैन्ड बाजे तो बज ही रहे थे–लाउड स्पीकरों पर भी नारेबाजी हो रही थी।

एक खुली ट्रक को रथ का रूप दिया गया था, जिस पर सवार राम माहेश्वरी फूल-मालाओं से लदा हुआ था तथा हाथों को जोड़कर लोगों का अभिवादन कर रहा था।

कचहरी में पर्चा भरने पर वह करीबी मैदान में पहुंचा, जहां जनसभा का आयोजन किया गया था। वहां पर भी किराये पर बुलाये गये मर्द, औरतें व बच्चे मौजूद थे।

मैदान में एक बिग स्क्रीन भी लगाई गई थी, ताकि लोग पर्दे पर राम माहेश्वरी को साफ-साफ देख सकें।

ऊंचे व बड़े स्टेज पर पहुंचकर राम माहेश्वरी ने भाषण शुरू किया तथा जोशीले भाव से बोला, "भाइयों, बहनों। अभी इलैक्शन में कई दिन हैं–लेकिन लगता है कि परमपिता परमेश्वर ने हमारी जीत आज ही निश्चित कर दी है। हमारे जुलूस में लाखों लोग सम्मलित हुये। यहां पर भी इस

मैदान में लाखों की संख्या में लोग उपस्थित हैं। हों भी क्यों नहीं...हमने विधायक बनने के बाद अपने क्षेत्र में खूब कार्य करवाये। अपने क्षेत्र को स्वर्ग बना दिया...स्वर्ग। वैसे भी हमने समाज सेवी के रूप में ना सिर्फ क्षेत्र, बल्कि मुम्बई के दीन-दुखियों की मदद और सेवा की। कई मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे, हॉस्पिटल, स्कूल, आश्रम बनवाये। अनेकों निर्धन कन्याओं के विवाह करवाये। फिर हमारे मुकाबले में है ही कौन–जो इस इलैक्शन में हमें टक्कर दे पायेगा? वो राघव राजवंशी? जिसने जनसेवा पार्टी का गठन किया और बहुत बड़े-बड़े दावे किये थे। जुर्म और मुजरिमों को मिटा देंगे...महंगाई खत्म कर देंगे...भ्रष्टाचार को मिटा देंगे...महिलायें आधी रात को भी सड़कों पर निकल सकेंगी और कोई उन्हें टेढ़ी नजरों से घूरने की जुर्रत नहीं कर सकेगा...इत्यादि-इत्यादि, वगैरा-वगैरा...ये सब दावे किये थे ना उस राघव राजवंशी ने? लेकिन हकीकत क्या निकली? क्या गुल खिलाये उस राघव राजवंशी ने? टिकिट देने का लालच देकर बेचारी मीरा देशाई को अपने होटल के कमरे में रात के समय बुलाया। पहले उसको बहलाने-फुसलाने की चेष्टा की...फिर जबरन मीरा देशाई की इज्जत लूटने की चेष्टा की। अगर मीरा देशाई के हाथ में गुलदान नहीं लगता और वो राघव राजवंशी पर हमला करके वहां से भाग नहीं जाती तो...उस बेचारी के साथ अनर्थ ही हो जाता...किसी को भी अपना मुंह दिखलाने के काबिल नहीं रह जाती वो। राघव राजवंशी हाथी के बाहरी दांतों की तरह ही शरीफ और समाजसेवी मालूम पड़ता था–वर्ना वो तो भेड़ की खाल में छिपा भेड़िया ही है। ना जाने कितनी अबलाओं की इज्जत से खेल चुका होगा। क्या आप ऐसे ढोंगी, पाखंडी, अय्याश आदमी को वोट देना पसन्द करेंगे...हैलो...अरे, ये माइक को क्या हुआ...आवाज बन्द क्यों हो गई है...?"

वह थोड़ा बौखलाकर माइक पर उंगली मारने लगा।

"अरे...वो क्या...?" मंच पर खड़े एक नेता ने चौंककर बिग स्क्रीन की तरफ इशारा किया।

बिग स्क्रीन पर दृश्य बदल चुका था।

स्क्रीन पर लाल गाउन पहने बैठे राम माहेश्वरी के हाथ में शराब से भरा गिलास था तथा वो शराब की चुस्कियां लेने के साथ–मछली का पकोड़ा भी खा रहा था।

उसकी बगल में गुलाबी रंग की झीनी-सी नाइटी पहने हुये रोमा बैठी हुई थी तथा वो भी गिलास से मदिरा की घूंट भर रही थी।

राम माहेश्वरी की आंखें सिकुड़ चलीं।

वो समझ नहीं पा रहा था कि बिग स्क्रीन पर से मंच का दृश्य कैसे गायब हो गया तथा उस पर कौन-सा सीन उभर आया है—क्यों, कैसे उभर आया है?

जब स्क्रीन पर काला कम्बल ओढ़े हुये राघव राजवंशी फ्रेम में आया तो राम माहेश्वरी की सिकुड़ी हुई आंखें फैलने लगीं तथा इसी के साथ मुंह भी सुरसा के मुंह की मानिन्द खुलने लगा।

चेहरा पीला पड़ने लगा।

"ब...बन्द करो इसे...।" वह बौखलाकर चींख-सा पड़ा, "ये...ये क्या हो रहा है...?"

❑❑❑

❑❑❑

बिग स्क्रीन पर राम माहेश्वरी रोमा के गले में बांह डालकर तथा गिलास से रेड वाइन की घूंट भरकर सामने खड़े काले कम्बल वाले से बोला—"क्या हाल हैं तेरे राघव राजवंशी? ऑटो रिक्शा में बैठकर और स्वयं को काले कम्बल में छिपाकर यहां आया है तू। आना ही था। किसी को चेहरा दिखलाने के काबिल जो नहीं रहा है। मीरा देशाई के बयान और उस वीडियो फिल्म ने तेरी इज्जत का फालूदा कर दिया है। तेरी बनी-बनाई इज्जत, सम्मान, प्रतिष्ठा...सब मिट्टी में मिल गये। पूरे जोश में आकर नई पार्टी बनाई थी। बड़े-बड़े वादे और बड़े-बड़े दावे किये थे। लग भी रहा था कि तेरी पार्टी कामयाबी हासिल करेगी। लेकिन सब गुड़-गोबर हो गया रे...।"

"मैं राघव राजवंशी नहीं हूं राम जी...।" उसनके मुंह से निकलने वाली आवाज राघव राजवंशी की नहीं थी।

"कौन...?" राम माहेश्वरी आंखों को सिकोड़कर बोला, "कौन हो तुम—?"

"मैं ओमप्रकाश हूं...।"

"ओ...ओमप्रकाशऽऽऽ!"

बुरी तरह चौंका राम माहेश्वरी।

वो झटके के साथ उठ खड़ा हुआ।

रोमा भी बुरी तरह चौंकी।

"क्यों...चौंक क्यों गये आप...?" व्यंगपूर्ण भाव से बोला वह, "क्या मेरे यहां आने की उम्मीद नहीं थी आपको? कहीं...आप ये तो नहीं

सोच रहे थे कि मेरा जब कत्ल हो गया है तो मैं जिन्दा होकर कैसे आपके सामने आ गया हूं—?"

"क...क्या...क्या बकते हो तुम? हम तो इसलिये चौंके कि तुम अपने वास्तविक रूप में ना आकर राघव राजवंशी के रूप में आये हो...।"

"नहीं, राम जी...नहीं...।" कड़वाहट भरे लहजे में बोला वह, "आप सच नहीं बोल रहे हैं। आपने तो मंगू दादा को मेरे कत्ल की सुपारी दे दी थी। ये मेरा नसीब ही रहा कि मैं बच गया...।"

"क...क्या बकते हो—?"

"बक नहीं रहा हूं रामजी...एकदम सच बोल रहा हूं मैं! मुझ पर चाकू का वार करने से पहले मंगू दादा ने बतलाया कि मुझे कत्ल करने के लिये आपने उसको दस लाख रुपये की सुपारी दी है...।"

"ये...ये झूठ है...।" राम माहेश्वरी नजरें चुराते हुये बोला, "बकवास है। भला हम तुम्हें कत्ल क्यों करवाने लगे? तुम तो हमारे काम आये थे। तुम ना सिर्फ फेसमास्क, विग बनाने के साथ बढ़िया किस्म का मेकअप करने में एक्सपर्ट हो—बल्कि स्टेज आर्टिस्ट होने के नाते बढ़िया एक्टिंग भी कर लेते हो और किसी की भी आवाज की बढ़िया नकल कर लेते हो। तुम हमारे कहने पर राघव राजवंशी बने। उसकी आवाज में मीरा देशाई को होटल 'राघव पैलेस' में रात को नौ बजे बुलाया। फिर तुम राघव बनकर रात को होटल में पहुंचे। होटल का स्टाफ भी धोखा खा गया। तुम्हें राघव समझकर मैनेजर ने उसका रूम खुलवा दिया था। तुमने शराब पी और मीरा देशाई के साथ बदतमीजी की। मीरा ने तुम्हारी बात नहीं मानी तो तुमने उसके साथ जबरदस्ती करने का नाटक किया और उसे उठाकर बेड पर पटक दिया। जहां जानबूझकर एक गुलदान रखा गया था। मीरा तुम्हारे सिर पर गुलदान से वार करके वहां से भाग निकली। उसकी समझ में तो उसके साथ वो सब राघव ने ही किया था। तभी तो वो पुलिस स्टेशन पहुंच गई थी...।"

"वीडियो फिल्म का भी बढ़िया रोल था। उस कमरे में मैंने ही वीडियो कैमरा आपके कहने पर पर फिट किया था। लेकिन टी०वी० पर पेश किया गया राजेश पुरोहित को...?"

"वो हमारा ही बन्दा है। उसे हमने पांच लाख रुपये दिये थे। हमारे कहने पर उसने मीरा से कहा था कि उसे राघव की नीयत ठीक नहीं लग रही है, वो रात को होटल में ना जाये—चूंकि उसकी बीवी की ऑपरेशन

से डिलिवरी होनी है, इसलिये वो उसके साथ होटल नहीं जा पायेगा। मीरा को नहीं मानना था—सो वह टिकिट के लालच में होटल गई थी। हमसे वो वीडियो फिल्म लेकर राजेश पुरोहित न्यूज चैनल वालों के पास पहुंचा और उसी ने मीरा को पुलिस स्टेशन जाकर राघव के खिलाफ शिकायत करने को उकसाया था और बेचारा राघव निर्दोष होते हुये भी हमारे जाल में फंस गया। चला था ससुरा, चुनाव में हमसे मुकाबला करने के लिये...खैर, ये कामयाबी तुम्हारी मदद से मिली है ओम प्रकाश—फिर भला हम तुम्हारा कत्ल क्यों कराने की सोचेंगे—?"

"मंगू दादा ने मुझे बतलाया था कि आपको ये डर था कि मैं आपकी पोल खोल ना दूं—या आपको ब्लैकमेल ना करने लगूं—इसीलिये आपने मुझे कत्ल कराने की...।"

"नहीं—ये सच नहीं है ओमप्रकाश। मंगू दादा ने तुमसे झूठ बोला है। शायद किसी ने साजिश की है। हम इस साजिश का पर्दाफाश करके हकीकत को तुम्हारे सामने लेकर आयेंगे। हम पर विश्वास करो तुम ओम प्रकाश! बैठो और ड्रिंक लो...।"

"नहीं। मुझे घर जाना है। बाकी की रकम मिल जाये तो...।"

"हां—क्यों नहीं! रोमा डार्लिंग...ओम प्रकाश को बाकी के पांच लाख रुपये लाकर दे दो...।"

रोमा गई।

वो लौटी तो उसके हाथों में हजार-हजार के नोटों वाली पांच गड्डियां थीं, जिन्हें उसने राम माहेश्वरी को दी और राम माहेश्वरी ने वो पांचों गड्डियां ओम प्रकाश को देते हुये कहा—"लो, अपनी बाकी की रकम। तुमने अपना काम बखूबी किया। तुम्हें ध्यान में रखकर ही हमने राघव को फंसाने का प्लान बनाया था। सुना है कि उसने नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या करनी चाही थी। मर जाता तो बढ़िया ही होता...।"

पैन्ट की जेबों में पांचों गड्डियों को ठूंसकर राघव राजवंशी रूपी ओम प्रकाश वहां से जाने के लिये पलटा तो राम माहेश्वरी बौखलाकर बोला, "क्या गजब करते हो तुम ओम प्रकाश! राघव के भेष में जाओगे क्या? कहीं पकड़े गये तो हमें लेने के देने पड़ जायेंगे। अपने वास्तविक रूप में ही यहां से वापिस लौटो यार।"

वह पलटा तथा उसने कम्बल हटाकर सिर से विग उतारने पर चेहरे पर चढ़ा मास्क भी उतार दिया—अब वो राघव नहीं था, बल्कि अपने वास्तविक रूप में था।

"इस विग और फेसमास्क को हमें देते जाओ। ये बेमतलब में ही फंसवा सकते हैं...।"

"आप चिन्ता मत करिये। मैं विग और मास्क को बाहर निकलकर नष्ट कर दूंगा। चलता हूं। आप रोमा जी के साथ मौज-मस्ती कीजिये...।"

बस, इतना ही था उस मूवी में—जो कि मैदान में लगी बिग स्क्रीन पर चल रही थी।

अचानक ही वो मूवी विलुप्त हो गई और फिर उस पर मंच का दृश्य उभर आया।

हाथ में माइक लिये हुये राम माहेश्वरी की दशा बहुत ही खराब थी। पसीने से इस कदर भीगा हुआ था कि मानो किसी ने ड्रम भरकर उस पर पानी उंडेल दिया हो।

चेहरे का रंग मुल्तानी मिट्टी के जैसा सफेद पड़ा हुआ था उसका—जिस्म पर मानो ढेर सारे कौओ उड़ रहे थे।

मानो उसको रंगे हाथों चोरी करते पकड़ लिया गया था और नंगा कर दिया गया था।

मंच पर उपस्थित अन्य नेता भी लुटे-पिटे से दिखलाई पड़ रहे थे।

मैदान में उपस्थित हजारों की भीड़ भी हतप्रद थी...स्तब्ध थी।

जो राम माहेश्वरी के पक्के समर्थक थे, वो अधिक हैरान-परेशान थे—

ये क्या देख लिया हम लोगों ने?

क्या बिग स्क्रीन पर चली फिल्म सच्ची है?

क्या राम माहेश्वरी ने ही ओम प्रकाश के माध्यम से राघव राजवंशी को फंसाने की चाल चली थी?

❑❑❑

❑❑❑

अचानक ही मृत माइक में जीवन का संचार होने लगा तो बौखलाया-सा राम माहेश्वरी चींख-चींखकर बोलने लगा—"ये...ये सब बकवास है...झूठ है। बहुत बड़ी साजिश रची गई है हमारे खिलाफ। डुप्लीकेट लोगों से एक्टिंग करवाकर हमें फंसाने और राघव राजवंशी को निर्दोष साबित करने की कुचेष्टा की गई है। हम...हम भला ऐसा क्यों करेंगे? हम ना तो शराब पीते हैं...सिगरेट भी नहीं पीते हैं। हमारी सेक्रेटरी रोमा भी ऐसी नहीं है। वो तो देवी है और हमारी बेटी के जैसी है। समझ में नहीं आता कि ये झूठी फिल्म किसने बनाई है और क्यों हमारे प्रोग्राम

को काटकर बिग स्क्रीन पर चलायी है? हमारी समझ में नहीं आता है कि ये शरारत किसकी है...किसने ये जुर्रत की है–?"

"ये जुर्रत मैंने की है राम माहेश्वरी...।"

लाउडस्पीकर पर उभरी वो आवाज।

हर किसी ने आवाज की दिशा में देखा।

मैदान में पीले रंग की वैन प्रविष्ट हुई–जिसके अगले हिस्से में एक लाउडस्पीकर लगा हुआ था। उसकी छत पर नेवी ब्लू कलर का कोट-पैन्ट पहने केशव खड़ा था, जिसके हाथ में कार्डलेस माइक था।

ड्राइव कर रहा करतार सिंह वैन को भीड़ से बचाते हुये मंच के ठीक सामने ले गया। मीडिया वालों के कैमरे भी वैन की छत पर चढ़े केशव पर फोकस करने लगे।

वैन से छलांग लगाकर केशव स्टेज पर पहुंच गया तथा हाथ में पकड़े माइक पर बोला, "अभी आप लोगों ने बिग स्क्रीन पर जो वीडियो फिल्म देखी है, उसे मेरे कहने पर ही मेरे असिस्टेन्ट राजन शुक्ला ने चलाया था। राजन ने पहले से ही उस वीडियो फिल्म को बिग स्क्रीन पर चलाने की व्यवस्था की हुई थी। हालांकि उस फिल्म ने आपको सच्चाई बतला ही दी होगी–लेकिन आप लोगों को बहुत से प्रश्न परेशान कर रहे होंगे। सो मैं आप सभी को बतला दूं कि आखिर सारा मामला क्या है। मैंने टी०वी० पर मीरा देशाई, राजेश पुरोहित के बयान को सुना और वीडियो फिल्म को भी देखा था, जिसे कथित रूप से राजेश पुरोहित ने बनाया था। फिर मुझे ये जानकारी मिली कि राघव जी को बेहोशी की दशा में नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया है। मैं नर्सिंग होम पहुंचा था। क्योंकि मैं वास्तविकता जानना चाहता था। मुझे मालूम हुआ कि राघव जी ने नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या करनी चाही थी। उन्होंने स्वयं को निर्दोष बतलाया। लेकिन यूं किसी पर विश्वास करने वाला नहीं हूं मैं। एक वकील तथा इन्वेस्टीगेटर होने के कारण मैं सबूतों के आधार पर ही निर्णय पर पहुंचता हूं। मैंने राघव जी के सिर की कैप उतरवाई थी तो पाया था कि उनके सिर के बीचो-बीच टेनिस बॉल के आकार का गूमड़ उभरा हुआ था तथा उस पर खून भी जमा हुआ था...।"

"होटल में मीरा देशाई ने अपनी इज्जत बचाने के लिये राघव के सिर पर गुलदान मारा था–वो उसी की चोट थी...।" हाथ में लिये माइक पर बोला राम माहेश्वरी, "वो फिल्म एकदम सच्ची थी। मीरा ने राघव पर झूठा आरोप थोड़े ही लगाया था...।"

"नहीं, मीरा देशाई झूठ नहीं बोली थी...।" बोला केशव, "उसने वही बयान दिया, जो होटल में उसके साथ हुआ था। लेकिन होटल में उसके साथ जो कुछ भी हुआ था, वो राघव जी ने नहीं, बल्कि राघव का रूप धारण करके ओमप्रकाश ने ही किया था...।"

"ये झूठ है...अभी बिग स्क्रीन पर दिखलाई गई फिल्म एकदम झूठी है...।"

"नहीं, वो फिल्म एकदम असली है।" कहा केशव ने।

"असली फिल्म वो थी, जिसे होटल के कमरे में रखे गये कैमरे ने शूट किया था। अभी आपने ही बताया कि राघव राजवंशी के सिर पर गुलदान के प्रहार की चोट खून से सने गूमड़ के रूप में थी...।"

"मैंने राघव जी से पूछा था कि उनके सिर पर वो चोट कैसे लगी? तो उन्होंने बतलाया था कि रात को सो रहे थे तो उनके सिर पर वार हुआ था। उनकी आंखें खुलीं तो एक काली पोशाक तथा काली नकाब वाला दिखलाई पड़ा, जिसके हाथ में पीतल का गुलदान था। उन्होंने शोर मचाया तो वो हमलावर खिड़की के रास्ते भाग निकला था। शोर-शराबा सुनकर उसका नौकर, बेटा और बहू भी आ गये थे। हालांकि कुछ चोरी नहीं हुआ था, लेकिन उन्होंने फोन करके पुलिस को बुला लिया था। उस एरिया के इन्सपैक्टर अनिल यादव ने निरीक्षण किया तो ये पाया था कि कोई कोठी के पिछले हिस्से में लगे रेन वाटर पाइप से चढ़कर खिड़की के रास्ते राघव जी के कमरे में पहुंचा था और उसी रास्ते से भाग गया था। उस इलाके के चौकीदार ने भी काली पोशाक तथा काली नकाब वाले को भागते देखकर शोर मचाया था–सीटी बजाई थी।"

"इससे क्या होता है भला...?" अपने माइक से बोला राम माहेश्वरी, "होटल के कमरे में अपनी इज्जत बचाते हुये मीरा देशाई ने राघव राजवंशी के सिर पर गुलदान का वार किया था। राघव को डर था कि मीरा उसके खिलाफ पुलिस में कम्पलेन्ट करेगी और वो अपने सिर की चोट की वजह से फंस जायेगा। सो उसने अपने किसी बन्दे को काली पोशाक, काली नकाब पहनाकर पाइप और खिड़की के रास्ते अपने कमरे में बुलवाया था। इस बात को साबित करने के लिये उसने शोर मचाया और पुलिस को भी बुला लिया था। लेकिन तब वो ये बात नहीं जानता था कि राजेश पुरोहित ने उसके होटल के कमरे में कैमरा लगा दिया था, जिसने उसकी काली करतूत की फिल्म बना डाली थी। मुझे आपकी सोच पर आश्चर्य हो रहा है पण्डितजी। आप तो दिमाग के जादूगर हैं। समझ में नहीं आता कि आप राघव राजवंशी के झांसे में कैसे आ गये...?"

❑❑❑
❑❑❑

"क्या लगता है तुम्हें राम माहेश्वरी...!" माइक हाथ में थामे हुये केशव उसके करीब पहुंचकर तथा उसकी आंखों में झांकते हुये बोला, "मैं किसी के झांसे में आने वाला बन्दा हूं? मेरी किसी के साथ कोई दुश्मनी नहीं थी, ना ही मैं किसी से दोस्ती निभाने चला था। मैं सिर्फ वास्तविकता जानने का इच्छुक था। मैंने जब राघव राजवंशी के सिर पर चोट का निशान देखा तो मैं समझ गया था कि उस वीडियो फिल्म में गड़बड़ी थी, जिसे राजेश पुरोहित ने पेश किया था, जो होटल 'राघव पैलेस' के रूम में बनी थी...।"

"कै...कैसी गड़बड़ी...?" राम माहेश्वरी थोड़ा विचलित दिखलाई पड़ा।

"उस फिल्म में मीरा देशाई ने राघव राजवंशी के माथे से थोड़ा ही ऊपर यानि सिर के आगे वाले हिस्से पर गुलदान से वार किया था। जबकि राघव राजवंशी के सिर पर जो चोट थी, वो सिर के बीचो-बीच थी। सिर के अगले हिस्से पर कोई चोट नहीं थी। मुझे लगा कि कोई-ना-कोई गड़बड़ी तो है। थोड़ा दिमागी कसरत करने पर मैं इस निर्णय पर पहुंचा कि होटल के कमरे में जिस राघव राजवंशी ने मीरा देशाई के साथ बदतमीजी की थी, वो नकली यानि डुप्लीकेट था। मैंने अपने शिष्यों राजन शुक्ला और करतार सिंह को कहा कि वो ऐसे लोगों की जानकारी निकालें, जो किसी का भी फेसमास्क, विग वगैराह तैयार करने में एक्सपर्ट हों? पता चला कि मुम्बई में इस काम को करने वाले तीन लोग हैं...ओम प्रकाश, रमेश ठाकरे और बसन्त पाण्डे। इनमें ओम प्रकाश रंगमंच का कलाकार भी था और मिमिक्री आर्टिस्ट भी। वो किसी की भी आवाज बनाने में माहिर था। सबसे बड़ी बात ये कि ओम प्रकाश के सिर के अगले हिस्से में चोट लगी थी—यानि इस बात की पूरी सम्भावना थी कि राघव राजवंशी का रोल करने वाला ओम प्रकाश हो सकता है...।"

"ऐसा...ऐसा कुछ नहीं था...।"

"ऐसा ही था राम माहेश्वरी। ओम प्रकाश को तुमने ही दस लाख रुपये का लालच देकर नकली राघव राजवंशी बनकर मीरा देशाई के साथ वो सब करने के लिये कहा था और कमरे में वीडियो कैमरा भी लगा दिया था—ताकि राजेश पुरोहित के जरिये उस वीडियो फिल्म को राघव राजवंशी के खिलाफ इस्तेमाल कर सको। लेकिन तुम्हें डर था कि ओम प्रकाश की

वजह से कोई गड़बड़ी ना हो जाये—इसलिये तुमने ओम प्रकाश का कत्ल करने के लिये मंगू दादा को दस लाख रुपये की सुपारी दी थी। मंगू दादा ने ओम प्रकाश को कत्ल कर ही दिया होता—लेकिन राजन और करतार सिंह ने हमला होते ही मंगू दादा को दबोच लिया था। थोड़ी ठुकाई होते ही मंगू दादा ने जो बात बतलाई थी, उसकी वीडियो फिल्म तुम भी देखो राम माहेश्वरी और यहां पर मौजूद लोग भी बिग स्क्रीन पर देखेंगे...राजन, वो वीडियो फिल्म तो प्ले करना...जरा...।"

राम माहेश्वरी कुर्ते की आस्तीन से चेहरे पर उभर रहे पसीने को पोंछने लगा।

हालात की गम्भीरता को भांपते हुये मंच पर मौजूद बाकी नेता दुम दबाकर खिसकने लगे।

जबकि मैदान में मौजूद लोग बिग स्क्रीन की तरफ देखने लगे—इस उत्सुकता के साथ कि क्या देखने को मिलता है?

❑❑❑
❑❑❑

बिग स्क्रीन पर केशव, राजन, करतार सिंह व ओम प्रकाश के साथ काला-कलूटा मंगू दादा भी दिखलाई पड़ा, जो कि सड़क पर बैठा मारे पीड़ा के कराह रहा था।

उसका चेहरा सूजा हुआ था। बायीं आंख तो बन्द ही थी—निचला होंठ भी सूजकर अन्डे के जैसा हो गया था।

"मैं नहीं चाहता कि राजन और करतार सिंह को दोबारा तेरी खातिरदारी करनी पड़े। शराफत के साथ बतला दे कि तू ओम प्रकाश को कत्ल क्यों करने चला था—?"

"अपुन एकदम सच-सच बोलेगा बाप...।"

कराहते हुये बोला मंगू, "अपुन कू राम माहेश्वरी ने ओम प्रकाश कू टपकाने का वास्ते सुपारी दियेला था...दस पेटी...दस पेटी बोले तो...दस लाख रुपे। राम माहेश्वरी ने ओमप्रकाश से काम करवाया था। उसकू डर था कि इसकी वजह से वो फंस नेई जाये—या उसके ब्लैकमेल नेई करने लगे—इसी वास्ते अपुन कू बोला कि ओम प्रकाश कू ठोक डालने का...पन अपुन इसकू ठोक डालता...तुम्हेरे चलों ने अपुन की वाट लगा दी। बहोत ठोका अपुन कू...आह...मर गयेला...।"

चारमीनार की सिगरेट में कश लगाकर मुंह व नथुनों से धुआं उगलने पर केशव ने पूछा—"क्या तू राम माहेश्वरी के लिये ये पहला ही काम करने चला था?"

"नेई बाप। अपुन उसके वास्ते पैले बी काम कर चुका है...।"

"कत्ल किये होंगे–?"

मंगू ने अन्डे जैसे होंठ पर जिव्हा फेरी।

"तू चाहकर भी कुछ छिपा नहीं सकेगा मंगू। मैं तुझे हिप्नोटाइज करूंगा तो अपने सारे जुर्मों का ब्यौरा दे देगा और तेरे इकबाल-ए-जुर्म की वीडियो फिल्म बनाई जायेगी। जैसे अभी मेरी शिष्या श्वेता गुप्ता पोर्टेबिल कैमरे से शूट कर रही है। मेरे सवाल का जवाब दे मंगू।"

"हां–अपुन ने राम माहेश्वरी के वास्ते मर्डर कियेले हैं बाप! वो पांचों इच लड़कियां थीं। उन पांचों कू अपनी हवस का शिकार बनाने के वास्ते राम माहेश्वरी ने उनकू किडनेप करायेला था–अपुन के चेलों ने इच किडनेप कियेला। राम माहेश्वरी ने उन लड़कियों के साथ रेप करके अपुन के हवाले किया। अपुन ने उनका मर्डर कियेला और लाश कू ठिकाने लगा दियेला...।"

"कौन थीं वो अभागी लड़कियां–?"

"उनके नाम वर्षा, पायल, बिंदिया, राखी और मयूरी थे। वो सब्बी राम माहेश्वरी के इच इलाके की रहने वाली थीं। राम माहेश्वरी ने उनकू अपनी हवस का शिकार बनाया–अपुन ने उनके कत्ल करके उनकी लाशों कू ठिकाने लगा दियेला...।"

केशव ने मंगू को गिरेबान से पकड़कर उठाया तथा राजन व करतार सिंह के हवाले करके बोला, "ये छंटा हुआ मुजरिम है। इससे इसके सारे जुर्मों को कबूलवाना पड़ेगा। इसको इन्सपैक्टर अनिल यादव के हवाले कर दो। मैं अब ओम प्रकाश से थोड़ी गुफ्त-गू कर लेता हूं...।"

"ये राम माहेश्वरी राम के भेष में रावण है...।" बिग स्क्रीन से फिल्म के गायब होते ही भीड़ में से एक युवक रोष भरे भाव से चीख-चींखकर बोला, "मंगू दादा ने जिन लड़कियों के नाम लिये हैं, वो मेरे इलाके की थीं। वो गायब हो गई थीं। लास्ट में मयूरी गायब हुई थी। इस माहेश्वरी ने मयूरी की मां को अपने साथ लेकर पुलिस स्टेशन के बाहर धरना-प्रदर्शन किया था। ये घोषणा भी की थी कि अगर मयूरी का पता नहीं चला तो ये भूख हड़ताल...आमरण अनशन करेगा।"

"बहुत ही बड़ा ड्रामेबाज है ये तो। इस कमीने को हमारे हवाले कर दिया जाये...।"

"मार डालो...इस शैतान को...।" कोई चिल्लाया।

मंच पर जूते-चप्पल तथा पत्थर फेंके जाने लगे, जिनसे बचने के लिये राम माहेश्वरी भागने के लिये रास्ता देखने लगा, लेकिन...?

❑❑❑

❑❑❑

लेकिन केशव ने उसको पकड़कर मंच के फर्श पर गिरा दिया तथा फिर माइक को मुंह के करीब करके बोला–"कृपया आप लोग शान्त रहें–। आप लोग शान्ति के साथ मेरी बात सुनने की कृपा करें...।"

उसकी वाणी ने जादू का-सा काम किया।

चींखते-चींखते लोग यूं ही शान्त हो गये, जैसे रो रहा नवजात शिशु मां का दूध मिलते ही मौन हो जाता है।

केशव ने दाहिना हाथ हवा में उठाकर हवा में मुट्ठी बांधकर इशारा किया तो वैन के भीतर से करतार सिंह मंगू दादा तथा ओम प्रकाश का हाथ पकड़े हुये बाहर निकला और दोनों को लेकर स्टेज पर पहुंच गया।

केशव ने मंगू के चेहरे के सामने माइक करके उसे बोलने का इशारा किया तो उसने बतलाया कि उसने ही राम माहेश्वरी के कहने पर उन पांचों लड़कियों को कत्ल करके उनकी लाशों को ठिकाने लगा दिया था, जिन्हें राम माहेश्वरी ने किडनेप करके अपनी वासना का शिकार बनाया था।

फिर केशव ने माइक ओम प्रकाश को थमा दिया–। वैन पर लगे लाउड स्पीकर के माध्यम से ओमप्रकाश की आवाज गूंजने लगी–"आप लोगों ने बिग स्क्रीन पर मेरी, रामजी और रोमा की जो फिल्म देखी थी, वो एकदम सच्ची है–जिसे पण्डितजी के असिस्टेन्ट राजन शुक्ला जी ने छिपकर तैयार किया था। पण्डितजी के कहने पर ही मैं राघव जी के भेष में राम जी के घर गया था। वहां राम जी ने मुझे बाकी के पांच लाख रुपये दिये थे। वहां शुक्ला जी खिड़की के रास्ते पहले ही पहुंच गये थे और फिल्म शूट कर रहे थे। मैं आप लोगों के सामने ये बात स्वीकार करता हूं कि राम जी के कहने पर ही राघव बनकर मैंने ही मीरा देशाई को फोन करके कहा था कि होटल राघव पैलेस में टिकिट फाइनल करने हैं, सो वह रात को नौ बजे होटल के रूम नम्बर वन में चली आये। मैं राघव जी के भेष में होटल गया। होटल के मैनेजर और बाकी स्टाफ ने मुझे राघव जी समझा था और कमरा खोल दिया था। फिर वहां मीरा पहुंची। वहां मैंने जो किया...वो आपको मालूम ही है। बाद में राजेश पुरोहित के माध्यम से रामजी ने वो फिल्म न्यूज चैनल पर भिजवा दी थी। बेचारे राघव जी तो निर्दोष हैं...।"

भीड़ पुनः उत्तेजित होने लगी।

लोग राम माहेश्वरी के खिलाफ नारे लगाने लगे।

केशव ने ओमप्रकाश से माइक लेकर उत्तेजित लोगों को शान्त किया तथा फिर बोला—"आप लोगों को एक बात और बतला दूं कि इस राम माहेश्वरी के कहने पर जेठा लाल नामक एक चोर ने ही राघव जी के घर में घुसकर उनके सिर पर चोट मारी थी और भाग गया था। राम माहेश्वरी के प्लान में गड़बड़ी ये हो गई थी कि मीरा देशाई ने राघव जी बने ओम प्रकाश के सिर के अगले हिस्से पर गुलदान से वार किया था—जबकि जेठालाल ने राघव जी के सिर के बीच वाले हिस्से पर चोट मार दी थी—इसी वजह से मुझे लगा कि कोई गड़बड़ी है। इन्वेस्टीगेशन करने पर वास्तविकता सामने आ गई। ये सारा खेल इस...राम माहेश्वरी का ही था। ये शख्स भेड़ की खाल में छिपा भेड़िया हैं। नाम तो इसका राम है लेकिन इसके कर्म रावण वाले हैं। दिखावे में तो ये महिलाओं की मदद करता रहा, लेकिन रात में ये लड़कियों को किडनेप करा लेता था। उनकी इज्जत लूट लेता था और उनकी हत्या करवा कर उनकी लाशों को ठिकाने लगवा देता था। लेकिन अब इसका भान्डा फूट चुका है। इसे इसके काले कारनामों की सजा मिलेगी। इसे अभी पुलिस के हवाले करूंगा मैं और अदालत में इसके तमाम जुर्मों को साबित करके सजा दिलाऊंगा...।"

तभी मैदान में पुलिस के कई वाहनों ने प्रवेश किया। उनमें एक वाहन पुलिस कमिश्नर का, एक वाहन एस०पी० का तथा एक इन्सपैक्टर अनिल यादव का था।

बेचारा राम माहेश्वरी।

उसकी दशा उस बादशाह के जैसी हो चली थी, जिसे सिंहासन से उतारकर सड़कर पर फेंक दिया गया हो तथा उसके हाथों में भीख मांगने वाला कटोरा थमा दिया गया हो।

"ये, ये क्या कर रहे हो तुम पण्डित...?" वह उठा तथा रुआंसा-सा होकर बोला, "तुमने तो हमें एकदम से नंगा कर दिया है। ये सब करने से पहले तुम्हें हमसे बात कर लेनी चाहिये थी ना भाई। हम बैठकर सौदा कर लेते। खैर, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। तुम चाहो तो बात को सम्भाल सकते हो। तुम जो भी कीमत मांगोगे...मिल जायेगी। बोलो, कितने करोड़ चाहिये तुम्हें...?"

❑❑❑

❑❑❑

केशव का हाथ हवा में लहराया—

ऐसी आवाज हुई कि मानो गैस से भरा कोई बड़ा बल्ब टूटा हो—इसी के साथ राम माहेश्वरी के गाल पर पंजाब का नक्शा छप गया।

थप्पड़ के प्रचण्ड वेग को बर्दाश्त ना कर पाने पर राम माहेश्वरी घुटी-घुटी सी चींख के साथ गिर पड़ा।

"मा...मारा...तुमने हमें थप्पड़ मारा...केशव पण्डित...?"

"हां, मारा...।" केशव ने उसके कुर्ते का गिरेहबान पकड़कर उसे खड़ा किया तथा उसे झूला-सा झुलाते हुये बोला, "क्योंकि तूने केशव पण्डित को...मुझे खरीदने की कल्पना की है। तू एक बार को चांद-सूरज को खरीद सकता है, लेकिन मुझे नहीं। तू गया माहेश्वरी...बारह के भाव से गया तू। बहुत पाप किये तूने। सारे जुर्मों की सजा मिलेगी तुझे।"

"सजा...और हमें...?" अपना गिरेहबान छुड़ाकर राम माहेश्वरी ने कुर्ते की सिलवटें दुरुस्त की तथा फिर बोला--"ना जाने कौन-सी दुनिया में जी रहे हो तुम केशव पण्डित! हमें दुनिया की कोई शक्ति सजा नहीं दे सकती है...।"

"ओहो...इतनी बड़ी तोप है तू? कानून और अदालत से भी बड़ा हो गया है तू—? तू इस खुशफहमी में तो नहीं है कि तू अपनी दौलत का इस्तेमाल करके खुद को निर्दोष साबित करने में कामयाब हो जायेगा?"

"नहीं, ऐसी कोई खुशफहमी नहीं है हमें। क्योंकि हम जानते हैं कि तुम जिसके भी पीछे हाथ धोकर पड़ जाते हो...उसको सजा दिलाकर ही मानते हो। तुम्हारे पास हमारे खिलाफ सबूत भी हैं और गवाह भी हैं। तुम कमाल के वकील हो। अगर सबूत और गवाह ना भी होते...तो भी तुम कुछ भी करके ढूंढ ही लेते। हमें मालूम है कि तुम हमें अदालत में मुजरिम साबित कर दोगे...।"

"फिर भी तुझे ये खुशफहमी है कि तुझे सजा नहीं मिलेगी—?"

"अदालत में बैठे जज के सजा सुनाने से आम मुजरिमों को सजा भुगतनी पड़ती है—हमें नहीं। दुनिया की ऐसी कोई जेल नहीं है, जो हमें कैद कर सके। ऐसा कोई फन्दा नहीं है, जो हमारे गले पर फिट हो सके। हमें छुड़ा लिया जायेगा और इस देश से बाहर भेज दिया जायेगा—जहां पर इस देश का कानून काम नहीं करता है।"

"किन लोगों की बात कर रहा है तू—?"

"हम बतलाना जरूरी नहीं समझते हैं। लेकिन एक बात याद रखना केशव पण्डित...।" चेहरे पर खूंखार किस्म के भाव समेटकर किंग कोबरा-सा फुंफकारा राम माहेश्वरी, "जैसे ही तुम्हें खबर मिले कि हम जेल

से फरार हो चुके हैं—अपनी खैर मनाना। उस साले राघव राजवंशी को भी बोल देना कि वो अपने भगवान को याद करना शुरू कर दे—क्योंकि उसकी वजह से भी हमें ये दिन देखना पड़ा है। भले ही वो इलैक्शन जीतकर विधायक बने—या मुख्यमन्त्री भी बन जाये—तो भी वो हमारे कहर से ना बच पायेगा। हम तुम दोनों से इन्तकाम लेंगे...।"

"चल बे...।" केशव ने उसके सीने पर हाथ मारकर गिरा दिया तथा कहा, "बड़ा आया इन्तकाम लेने वाला। कुछ भी नहीं कर पायेगा तू। वर्दी वाले आ रहे हैं। जो कल तक तुझे सलाम करते थे, आज तुझे गिरफ्तार करके ले जायेंगे। फिर देखना तू...तेरा क्या अन्जाम होता है—!"

❑❑❑
❑❑❑

राम माहेश्वरी की गिरफ्तारी के पश्चात् सत्ताधारी पार्टी ने उसका टिकिट कैंसिल करके उसको पार्टी से निकाल दिया तथा उसके क्षेत्र से दूसरे नेता को टिकिट दे दिया।

राघव राजवंशी, उसके बेटे अजय तथा बहू करिश्मा के साथ नजीर हुसैन तथा रमाकान्त ने भी केशव का आभार व्यक्त किया, उसको साधुवाद दिया।

इलैक्शन में राघव राजवंशी ने पूरे प्रदेश में जा-जाकर अपनी पार्टी के प्रत्याशियों के लिये प्रचार किया। उसके क्षेत्र की जिम्मेदारी उसके बेटे, बहू, रमाकान्त ने सम्भाल ली थी।

चुनाव के पश्चात् जब परिणाम घोषित हुआ तो राघव राजवंशी अपने प्रतिद्वन्द्वी को एक लाख वोटों से हराकर विजयी हुआ तथा उसके सामने लड़ने वाले सभी प्रत्याशियों की जमानत जब्त हो गई।

लेकिन...राघव राजवंशी की पार्टी सत्ता में नहीं आ सकी। हालांकि उसकी पार्टी के बहुत से प्रत्याशी विजयी हुये लेकिन पार्टी को बहुमत प्राप्त नहीं हो पाया। हालांकि पार्टी राज्य की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी लेकिन सत्ताधारी पार्टी ने एक अन्य पार्टी के साथ मिलकर सरकार बनाने का दावा पेश कर दिया।

जबकि राघव ने जोड़-तोड़ की राजनीति करने से साफ मना कर दिया—उसने कहा कि उसकी पार्टी ने बाकी सभी पार्टियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, इसलिये किसी भी पार्टी के साथ गठबन्धन करने का प्रश्न ही नहीं उठता है—उसकी पार्टी अपराध, महंगाई तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग लड़ती रहेगी तथा अगले चुनाव में सत्ता में आने की चेष्टा करेगी।

और फिर ये खबर आई कि राम माहेश्वरी जेल से फरार हो गया है।

❑❑❑
❑❑❑

शाम के समय जेल के खुले आंगन में एक मेडिकल कैम्प लगा था, जिसमें दो डॉक्टर कैदियों का चेकअप कर रहे थे।

तब राम माहेश्वरी का चेकअप चल रहा था, जब वायुमंडल में हेलीकॉप्टर के इंजिन तथा उसके पंखों की गड़गड़ाहट गूंजी।

हर कोई नजरें उठाकर सफेद व नीले रंग के उस हेलीकॉप्टर को देखने लगा।

हेलीकॉप्टर मैदान के ऊपर ही मंडराने लगा तथा फिर काफी नीचे आ गया।

धुम...धुम...की आवाज के साथ हेलीकॉप्टर से गिराये गये बम जमीन पर गिरते ही फटे और उनसे तेजी से धुआं निकलकर तेजी के साथ चारों तरफ फैलने लगा।

इसी के साथ हेलीकॉप्टर की खुली खिड़की से मशीनगन से फायरिंग होने लगी।

पहला शिकार जेलर ही हुआ—वो गोलियों से छलनी-छलनी होकर जमीन पर जा गिरा।

जेल के सुरक्षाकर्मियों ने अभी अपने हथियार सम्भाले ही थे कि उन पर भी गोलियां बरसने लगीं।

मैदान में हड़कम्प मच गया।

सुरक्षाकर्मी, कैदी तथा डॉक्टर घबराकर चीखते-चिल्लाते हुये इधर-उधर भागने लगे।

हेलीकॉप्टर से डोरियों व बांस के टुकड़ों से बनी सीढ़ी गिराई गई।

राम माहेश्वरी दौड़ा तथा सीढ़ी के डन्डे को पकड़कर लटक गया।

हेलीकॉप्टर ने ऊपर उठना शुरू कर दिया।

देखते-ही-देखते हेलीकॉप्टर उड़ते हुये छोटा होता चला गया और फिर आंखों से ओझल हो गया।

अन्तिम सांस ले रहे जेलर ने पुलिस को फोन पर राम माहेश्वरी के हेलीकॉप्टर से फरार होने की सूचना दे दी तथा फिर प्राण त्याग दिये।

चूंकि पुलिस को समय पर इन्फॉर्मेशन मिल गई तो पुलिस एलर्ट

हो गई। तुरन्त ही मुम्बई की तमाम सीमायें सील कर दी गईं तथा प्रत्येक सड़क पर बेरीकेटिंग लगाकर वाहनों की तलाशी शुरू कर दी गई।

पुलिस के दो हेलीकॉप्टर भी उस हेलीकॉप्टर की तलाश में उड़े थे।

बाद में वो हेलीकॉप्टर एक कॉलेज के मैदान में खड़ा मिल गया, जिसे एक उद्योगपति के हेंगर पर से लूटा गया था—काली पोशाक व काली नकाब वाले चार लोगों ने अन्धाधुन्ध फायरिंग करके वहां उपस्थित चार सुरक्षाकर्मियों को मारकर हेलीकॉप्टर लूटा था तथा उसे उड़ा ले गये थे।

सम्भावना यही थी कि राम माहेश्वरी मुम्बई से बाहर नहीं निकला था—वो मुम्बई में ही कहीं पर छिपा हुआ था।

सो पुलिस तथा पुलिस के मुखबिर पता लगाने की जी-तोड़ मेहनत कर रहे थे कि वो कहां छिपा हुआ है!

❑❑❑

❑❑❑

"हैलो, कौन—?"

"हम बोल रहे हैं...केशव पण्डित...हम—।"

"ओह...राम माहेश्वरी...।" सोफिया, चांदनी, राजन व श्वेता के साथ ड्राइंगरूम में बैठा केशव फोन कान से लगाये हुये मुस्कुराकर बोला, "क्या हाल हैं तेरे रणछोड़ दास—?"

"चारों तरफ से खतरे मंडरा रहे हों तो वहां से निकल भागने वाले को बहादुर कहते हैं। यूं ही मर जाने वाला हमारी नजरों में शहीद नहीं, बुजदिल होता है। हम भागे नहीं हैं—हमला करने के लिये हमने कुछ कदम पीछे हटाये हैं। होशियार, केशव पण्डित! उस साले राघव राजवंशी को भी होशियार कर देना। आज वो अपनी विजय का जश्न मना रहा होगा—लेकिन बहुत जल्द ही हम उसके जश्न को बर्बादी में बदल देंगे। उसके होंठों से मुस्कान के फूलों को कुचलकर नुकीले कांटे चुभो देंगे। उसकी तमाम खुशियों को उसकी बदनसीबी की कब्र में दफन कर देंगे। उसकी जिन्दगी में अब जश्न नहीं, मातम ही होंगे। उसको मरते दम तक खून के आंसू रोने पड़ेंगे। कोई नहीं बचा पायेगा उसको...तुम भी नहीं...।"

"तुमने वो कहावत तो सुनी ही होगी...?"

"कौन-सी—?"

"जब गीदड़ की मौत आती है तो वो शहर की ओर भागता है और जब किसी मुजरिम की शामत आती है तो वो केशव पण्डित से पंगा मोल

ले लेता है। तू क्या समझता है...तू मेरे खिलाफ कुछ कर पायेगा—?"

"क्यों नहीं? हम जिस तरह से जेल से फरार हुये हैं...उससे हमारी ताकत व पहुंच का अन्दाजा नहीं हुआ है तुम्हें—? हमें जेल से निकालने के लिये हेलीकॉप्टर आया था। बम बरसाये गये। अन्धाधुन्ध गोलियां दागी गईं। सुना है कि इस आतिशबाजी में सात लोग मारे गये हैं। क्या कोई आलतू-फालतू आदमी हेलीकॉप्टर की व्यवस्था कर सकता है केशव पण्डित? जानना नहीं चाहेगा कि हमारे साथ कौन-सी ताकत है—?"

"तू अगर बतलाने के लिये मरा जा रहा है तो...बतला सकता है—।"

"आई०एस०आई०।"

"आई०एस०आई०...?" केशव की नीली आंखें थोड़ा सिकुड़ गईं।

"हां—पाकिस्तान की सबसे शक्तिशाली संस्था। जिसने वर्षों से हिन्दुस्तान की नाक में दम किया है। उसी आई०एस०आई० ने हमें जेल से मुक्त कराया है। हमने इसी आई०एस०आई० के दम पर तुमसे कहा था कि हमें कोई भी सजा नहीं दे पायेगा।"

"ओह...यानि तू आई०एस०आई० से बावस्ता है...।" कहते हुये केशव ने जेब से पेन निकालकर मेज पर रखे अखबार पर कुछ लिखा और उस अखबार को राजन के सामने सरका दिया। राजन ने अखबार पर लिखे शब्द पढ़े—

"मालूम करो...वो कहां से बात कर रहा है? उसका फोन नम्बर है...डबल सेवन डबल नाइन ट्रिपल थ्री ट्रिपल टू।"

राजन उठकर बाहर चला गया।

"हां—उसी आई०एस०आई० की बात कर रहे हैं हम पण्डित...।" केशव के कान के पर्दे से राम माहेश्वरी की नाग की फुंफकार-सी टकराने लगी, "उसी से बावस्ता हैं हम केशव पण्डित। आई०एस०आई०में हमें बहुत बड़ा मुकाम...ओहदा हासिल है। इसलिये तू अन्दाजा लगा ले कि हम कितने शक्तिशाली और पहुंच वाले हैं। क्यों...हालत खराब हो गई ना तेरी—?"

"तू बेवकूफी भरी बातें कर रहा है राम माहेश्वरी...।" केशव जानबूझकर राम माहेश्वरी को उलझाये रखना चाहता था, ताकि राजन उसके फोन को सर्विलांस पर डलवाकर उसकी लोकेशन मालूम कर सके, "तेरे लिये आई०एस०आई० होगी कोई बड़ी तोप। मेरे लिये वो कुछ भी नहीं है। कई बार आई०एस०आई० वालों और उनके आकाओं को उनकी

औकात बतला चुका हूं मैं। उनकी मांद में घुसकर ही उन्हें चोटिल कर चुका हूं। शायद तुझे मालूम नहीं है कि...।"

"हां—मालूम है हमें कि तू क्या है—।"

"फिर भी भौंक रहा है—?"

"काटूंगा भी...।"

"दांत टूट जायेंगे—।"

"स्टेनलेस स्टील के बने हुये हैं—।"

"मेरे सामने पड़ेगा तो तेरा ये भ्रम भी टूट जायेगा प्यारे लाल। मुझसे पंगा लेने से पहले अपने आकाओं से सलाह-मशविरा कर लेना। वो भी तुझसे यही कहेंगे कि अगर आत्महत्या करनी है तो केशव पण्डित से उलझना—।"

"यूं सीधे-सीधे तो नहीं उलझेंगे हम तुझसे। हम अन्डरग्राउन्ड रहते हुये तुझ पर हमले करेंगे। लेकिन पहले हमारे टारगेट पर वो ससुरा राघव राजवंशी है। उसको तो हम ऐसी चोट मारेंगे कि वो मरने के बाद भी बिलबिलाता रहेगा। उसके कारण ही हमारी इज्जत का कबाड़ा हुआ है—देखना कि हम उसकी इज्जत और जिन्दगी का कैसा कबाड़ा करते हैं। पहले राघव राजवंशी...उसके बाद ही तेरा नम्बर लगेगा। कुल मिलाकर तू कुछ दिन रिलेक्स कर सकता है। फिर अचानक ही तुझ पर हमले होंगे। ऐसे हमले कि तेरी चूलें तक हिल जायेंगी...।"

"तू अपनी चूलों की चिन्ता कर। कानून का हथौड़ा तो तेरे सिर पर है ही...मेरे तीरों के निशाने पर तू है...।"

"तेरे तीर सिर्फ अन्धेरे में ही चलेंगे—हम तक कभी नहीं पहुंच पायेंगे...।"

"तू उस कबूतर की तरह ही है माहेश्वरी, जो आंखें मूंदकर इस गलतफहमी का शिकार हो जाता है कि बिल्ली उसको देख नहीं पायेगी। अपनी बेवकूफी का जब तक उसको आभास होता है, वो बिल्ली के हत्थे चढ़ चुका होता है। तू तो ऐसी बेवकूफी बब्बर शेर के सामने कर रहा है। हैलो...हैलो...।"

लेकिन दूसरी तरफ से राम माहेश्वरी फोन काट चुका था, बल्कि उसने स्विच ऑफ कर दिया था।

केशव ने चारमीनार ब्रान्ड वाली धूम्रपान दंडिका गोल्डन कलर के लाइटर की नीली लौ से सुलगाई ही थी कि राजन लौट आया।

"मालूम पड़ा राजन...राम माहेश्वरी कहां से फोन कर रहा था—?"

❑❑❑
❑❑❑

रेलवे लाइन के करीब ही वो थर्ड क्लास-सा होटल था, जिसमें राम माहेश्वरी ठहरा हुआ था।

चूंकि उस होटल का मालिक भी आई०एस०आई० से वाबस्ता था, इसलिये ही राम माहेश्वरी वहां ठहरा हुआ था।

तब वो होटल की छत पर था तथा छज्जे से नीचे झांकते हुये सिगरेट का धुआं उड़ा रहा था, जब लाल रंग की टाटा सफारी गाड़ी होटल के मेन गेट पर आकर रुकी।

ड्राइविंग साइड से करतार सिंह तथा दूसरी तरफ से राजन शुक्ला बाहर निकले तो पीछे का दरवाजा खोलकर केशव बाहर निकला।

"ये क्या...?" बुरी तरह चौंककर बुदबुदाया राम माहेश्वरी, "ये कम्बख्त यहां पर कैसे पहुंच गया? इसे कैसे मालूम पड़ा कि मैं यहां पर हूं—?"

उसी वक्त बिजली की तार पर बैठे कौओ ने 'बीट' कर दी, जो कि करतार सिंह की हथेली के पृष्ठ-भाग पर गिरी।

सरदार जी ने अचकचाकर ऊपर की तरफ देखा तो छज्जे से झांकते राम माहेश्वरी पर दृष्टि पड़ी--"ओ तेरे की...ओ वेखो प्राहवा जी...ओ माहेश्वरी ओत्थे खड़ा है...।"

राजन व केशव ने भी ऊपर खड़े राम माहेश्वरी को देखा और होटल की तरफ दौड़ पड़े—उनके पीछे करतार सिंह भी दौड़ा।

"मारे गये...।" सिगरेट को नीचे फेंककर बुदबुदाया राम माहेश्वरी, "ये लोग तो मुझे पकड़ने के लिये आ रहे हैं। नीचे तो जा नहीं सकता। क्या करूं मैं? हथियार तो कमरे में हैं। वहां पहुंचने से पहले ही केशव पण्डित ने मुझे पकड़ लिया तो खेल ही बिगड़ जायेगा। क्या करूं? कैसे बचूं इस शैतान से?"

कुछ सोचकर वो छत पर दौड़ा तथा पिछले हिस्से पर पहुंचकर नीचे झांककर देखा।

कोई तीस फुट नीचे छोटी-सी गली थी।

छत से दीवार के सहारे बरसाती पानी वाला पाइप नीचे तक गया हुआ था।

बाउन्ड्री वाल पर चढ़कर राम माहेश्वरी दूसरी तरफ लटका तथा पाइप को पकड़कर किसी बन्दर की मानिन्द ही नीचे उतरने लगा।

गली की सड़क पर जूतों समेत पैर टिकते ही उसने ऊपर की तरफ देखा, फिर दौड़ लगा दी।

उसी समय राजन तथा करतार सिंह के साथ केशव होटल की छत पर पहुंचा तथा नीचे झांकते हुये बोला, "माहेश्वरी भाग रहा है। वो शायद उस सड़क पर पहुंचेगा, जो रेलवे लाइन के किनारे जा रही है। मैं इस पाइप के सहारे नीचे उतरकर माहेश्वरी के पीछे जा रहा हूं। तुम दोनों गाड़ी में सवार होकर वहां पहुंचो–।"

राजन तथा करतार सिंह सीढ़ियों की तरफ दौड़े। जबकि केशव रेन वाटर पाइप के सहारे किसी लंगूर की मानिन्द ही फुर्ती के साथ नीचे गली में उतरा तथा उस दिशा में दौड़ा, जिधर राम माहेश्वरी दौड़ा था।

गली का मोड़ मुड़ने पर राम माहेश्वरी को लाल रंग की बाइक खड़ी दिखलाई पड़ी, जिसके इग्नीशन में चाबी लगी हुई थी।

बाइक पर सवार होकर उसने चाबी घुमाई तो सेल्फ स्टार्ट वाली बाइक स्टार्ट हो गई।

"अबे ओ...।" दीवार से लगी नाली के किनारे लघु शंका कर रहा युवक हड़बड़ाकर चींखा, "मेरी बाइक कहां ले जा रहा है तू? ठहर, तेरी तो...।"

पैन्ट की जिप बन्द किये बिना ही वो दोनों हाथों को फैलाकर खड़ा हो गया–लेकिन राम माहेश्वरी ने बायें पैर से उसके पेट पर 'किक' जड़कर उसको गिरा दिया तथा उसकी बगल से होकर आगे बढ़ गया।

बाइक की स्पीड बढ़ाते हुये बुदबुदाया वह–"राम माहेश्वरी को पकड़ना आसान नहीं है केशव पण्डित। मैं भी देखता हूं कि तू मुझे कैसे पकड़ पाता है–?"

❑❑❑

❑❑❑

गली के मोड़ पर पहुंचने पर केशव को सड़क पर गिरा युवक तथा बाइक पर सवार राम माहेश्वरी दिखलाई पड़ा तो उसने फर्राटा दौड़ लगा दी।

लेकिन सत्तर-अस्सी की स्पीड से भाग रहे व्यक्ति को पकड़ पाना मुमकिन नहीं था और उसका पीछा करने के लिए कोई वाहन उपलब्ध नहीं था–फिर भी केशव पूरी जी-जान से दौड़ रहा था।

वह उस सड़क पर पहुंच गया, जो रेलवे लाइन के किनारे स्थित थी। बाइक पर दौड़ता राम माहेश्वरी दिखलाई तो पड़ रहा था, लेकिन

वो कम-से-कम आधा किलोमीटर की दूरी पर था तथा उसकी दूरी निरन्तर बढ़ रही थी।

"गुरुवर...गुरुवर...।" पीछे से राजन की आवाज सुनाई पड़ने पर केशव ने पीछे की तरफ नहीं देखा।

टाटा सफारी उसकी बगल में आई तो उसने दौड़ लगाते हुये पिछला दरवाजा खोला तथा भीतर प्रविष्ट होकर बोला, "गाड़ी की स्पीड बढ़ाओ करतार सिंह...।"

करतार सिंह ने एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ाकर स्पीड बढ़ा दी।

लगभग उसी वक्त एक एक्सप्रेस ट्रेन शोर मचाते हुये वहां से गुजरने लगी।

राम माहेश्वरी के माथे पर तब शिकन पड़ी, जब उसने पाया कि आगे ट्रेफिक जाम था। वाहनों की चार कतारें लगी हुई थीं तथा सड़क के दोनों तरफ ही बाइक के निकलने की कतई भी गुंजाईश नहीं थी।

राम माहेश्वरी की आंखों में खून-सा उतर आया तथा जबड़े चक्की के पाटों की मानिन्द ही कसने लगे।

बाइक को सड़क से उतारकर वो उबड़-खाबड़ जमीन से होते हुये रेलवे लाइन की तरफ बढ़ने लगा।

पीछे से सुनाई पड़ती ट्रेन की आवाज पर वो खतरनाक निर्णय कर चुका था।

रेलवे लाइन के करीब पहुंचकर उसने बाइक पर से छलांग लगा दी तथा जमीन पर गिरते ही उठकर ट्रेन के साथ दौड़ने लगा।

दौड़ते-दौड़ते उसने खुले दरवाजे के बगल में लगे लोहे के पाइप को पकड़ा और निचले पायदान पर पैर रखने में सफल हो गया।

लेकिन ये क्या?

उसके सीने पर राइफल की नाल आ टिकी।

❑❑❑

❑❑❑

रेलवे पुलिस का कांस्टेबिल राम माहेश्वरी पर राइफल ताने हुये बोला, "चलती ट्रेन में चढ़ने का क्या मतलब हुआ? ट्रेन में लूटपाट करने का इरादा है क्या–?"

"नहीं भाई। हम तुम्हें लुटेरे या बदमाश मालूम पड़ रहे हैं क्या? हम बहुत ही शरीफ इन्सान हैं। हम उद्योगपति हैं...बिजनेसमैन। कुछ गुन्डों

ने हथियारों के दम पर हमें किडनेप कर लिया था। मौका मिलने पर हम किसी तरह भागे। गुन्डों ने गोलियां चलाईं...लेकिन हम भगवान की कृपा से बाल-बाल बचे। जान बचाने के लिये हमने रिस्क उठाया और इस ट्रेन में सवार हुये। कृपया हमें ऊपर आने दो भाई...।"

"बिना टिकिट कोई इस ट्रेन में सफर नहीं कर सकता है...।"

"अगले स्टेशन तक का सफर करना तो अपनी विवशता है दरोगा जी। कृपा करके हमें भीतर आने दीजिये। बदले में हम आपको चाय-पानी के लिये पांच सौ का नोट दे देंगे...।"

कांस्टेबिल की आंखों में लालच की चमक उभरी—उसने राम माहेश्वरी के रूप में अपनी मौत को हाथ पकड़कर ऊपर खींच लिया।

गिरगिट की मानिन्द ही रंग बदलकर राम माहेश्वरी ने उसको भस्म कर देने वाली दृष्टि से घूरा तथा फिर उसकी कनपटी पर घूंसा मारकर उसकी राइफल छीन ली तथा उसके पेट पर दायें पैर से जोरदार ठोकर मारकर उसे दरवाजे से बाहर फेंक दिया। राम माहेश्वरी ने सिर बाहर निकालकर कांस्टेबिल को लुढ़कते हुये एक गहरे खड्डे में गिरते देखा—फिर उसने सिर घुमाकर पीछे की तरफ देखा तो बुरी तरह चौंका।

चौंकने का कारण था केशव पण्डित—जो कि खिड़की की ग्रिल को पकड़कर लटका हुआ था तथा दूसरी खिड़की की ग्रिल पकड़ने की चेष्टा कर रहा था। अचानक ही राम माहेश्वरी की आंखों में चमक भरती चली गई तथा होंठों पर पोटेशियम सायनाइड जैसी घातक मुस्कान थिरकने लगी।

पीठ, कमर, नितम्बों व पैरों को दरवाजे से सटाकर वो धीरे-धीरे बाहर की तरफ थोड़ा निकला तथा राइफल को केशव पर तानकर चिल्लाया—"लगता है कि ऊपर वाले ने तेरी मौत हमारे हाथों ही लिखी है दिमाग के जादूगर! तू हमारे रूप में यमदूत का ही पीछा कर रहा है। वाह...क्या सिचुवेशन है। तू खिड़की को पकड़े हुये हवा में लटका हुआ है। दरवाजे से काफी दूर होने के कारण ट्रेन के भीतर नहीं जा पायेगा तू। ट्रेन की स्पीड सौ किलोमीटर प्रति-घंटा तो होगी ही। खिड़की छोड़ेगा तो नीचे गिरते ही मर जायेगा। सो बेहतर यही होगा कि तू हमारी गोली खाकर मर जाये। तो तू मरने के लिये तैयार है ना पण्डित...?"

चूंकि वह आधा बाहर निकला हुआ था—सो हवा के तेज झोंके उसके आधे जिस्म को तेज थपेड़े मार रहे थे। इसी के साथ ट्रेन हिल भी रही थी—सो वह बैलेंस बनाते हुये केशव पर राइफल से निशाना लगाने की चेष्टा करने लगा।

इतनी ही देर में केशव ने सिर्फ बायें हाथ से खिड़की की ग्रिल पकड़े हुये दायें हाथ को मुक्त किया और कोट की जेब से रिवॉल्वर निकालकर ट्रिगर दबा दिया...धांयऽऽऽ।

कन्धे पर गोली खाकर चीखा राम माहेश्वरी।

हाथों से राइफल छूट गई तथा उसका शरीर हवा में उड़ने पर कटी पतंग की मानिन्द ही चकराते हुये छपाक...की आवाज के साथ तेज बहाव वाली नदी के पानी से टकराकर पानी के भीतर समा गया।

केशव ने भी खिड़की छोड़ दी तथा नदी में कूद गया।

नदी के पानी तक पहुंचने से पहले ही वो अपनी रिवॉल्वर को कोट की जेब में रख चुका था।

उसने काफी देर तक राम माहेश्वरी को खोजने की चेष्टा की, लेकिन सफलता नहीं मिल सकी।

भगवान ही जाने कि राम माहेश्वरी की लाश तेज बहाव में बह गई थी, या वो गोली खाने पर भी जीवित था और नदी से निकलकर कहीं छिप गया था!

❑❑❑
❑❑❑

दुल्हन बनी रेशमा ने जब दूल्हे रूपी श्याम को कमरे में प्रवेश करते देखा तो मारे लाज के अपने आप में ही सिमटकर गठरी-सी बन गई।

भीतर से दरवाजा बन्द करके श्याम फूलों से सजे बिस्तर तक पहुंचा और धीरे से बेड के किनारे बैठकर सुर्ख रंग की गठरी को बांहों में भर लिया।

"ये...ये क्या करते हो...?" वह लजाकर फुसफुसाई।

"आज से पहले हम दोनों ने कभी भी अपनी मर्यादा भंग नहीं की रेशमा...।" सफेद गुलाब से सुन्दर चेहरे को दीवानावार चूमते हुये फुसफुसाया श्याम, "हाथों को थामने का गुनाह तो किया...इसके सिवाय कुछ नहीं। एक-दूसरे की बांहों में नहीं समाये...कभी चुम्बन भी ना लिया। लेकिन आज हमने शादी कर ली है। पति-पत्नी बन गये हैं हम। अब हमें नई जिन्दगी की शुरूआत करनी है। मन से मन का...तन से तन का मिलन होना ही चाहिये। यूं ही एक हो जाना है हमें, जैसे फूल में खुशबू समायी रहती है और दूध में पानी घुल जाता है। ना रेशमा ना...आज नहीं...शर्मो-हया के तमाम पर्दे गिराने ही होंगे। इन आंखों को बन्द ना करो...मुझे मयखानों में डूबना-उतरना है। इन होंठों की थोड़ी नरमी, थोड़ी

उपन्यास जगत के सुपर–डुपर स्टार...दिमाग के जादूगर

केशव पण्डित

का एक और सुपर–डुपर हिट उपन्यास

सेहरा



बांधकर आयेगा

कातिल

"कुछ वर्षों पहले तुम लोग एक घर में सेहरा बांधकर आये थे और कुछ हंसती-खेलती जिन्दगियों को खून के आंसुओं में डुबोकर उन्हें मौत का कफन ओढ़ा गये थे। अब बारी मेरी है। मैं सेहरा बांधकर और तबाही के भैंसे पर सवार होकर आ रहा हूं। अपने इन्तकाम के हथियार से तुम लोगों की खुशियों की बोटी-बोटी करके तबाही के तेजाब में डुबो दूंगा। अपने पैने दांतों से तुम्हारी जिन्दगियों को चबा-चबाकर अपने पेट में पहुंचाऊंगा और ऐसी डकार मारूंगा कि अगला जन्म भी नहीं ले सकोगे ! दुनिया की कोई ताकत...यहां तक कि भगवान भी तुम लोगों की रक्षा नहीं कर पायेगा।"

तुलसी | साहित्य | पब्लिकेशन्स

में प्रकाशित हो रहा है

सेहरा



बांधकर आयेगा

कातिल

कौन है वो, जो सेहरा बांधकर बनेगा कातिल?
क्यों उसने कानून को अपने हाथों में ले लिया है
और क्यों वह इन्तकाम की डगर पर निकल पड़ा

दिमाग के जादूगर *केशव पण्डित* ने आपके लिये इस बार रचा है रहस्यों का ऐसा ताना–बाना, जो आपको रोमांच के झूले झुलायेगा और आपकी उत्सुकता को सातवें आसमान पर पहुंचा देगा।

सेहरा



बांधकर आयेगा

कातिल

आदि से अन्त तक रोचक, तेज रफ्तार व अविस्मरणीय उपन्यास।

नक्कालों से सावधान

आप सभी को आगाह करते हैं कि नकलचियों से सावधान रहिये। दिमाग के चैम्पियन *आशीर्वाद पण्डित* के नये उपन्यास केवल दो फर्म धीरज पॉकेट बुक्स एवं तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स से प्रकाशित होते हैं। अन्य कहीं से नहीं।
और 142 उपन्यासों के रचयिता, दिमाग के जादूगर *केशव पण्डित* के पूर्व प्रकाशित 142 उपन्यास तथा सभी नये उपन्यास केवल दो फर्म धीरज पॉकेट बुक्स एवं तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स से प्रकाशित हो रहे हैं–अन्य कहीं से नहीं।

लाली और थोड़ा शहद चुराना है। इन दहकती...महकती सांसों में खो जाना है। चलो, इश्क की नैया में सवार होकर मुहब्बत के दरिया में उतर जायें हम...अरे, तुम इतना उदास क्यों हो? आज हमारी सुहागरात है पगली...। क्या बात है-?"

"मैं आने वाले कल की चिन्ता कर रही हूं श्याम...।" रेशमा उसके कन्धे पर कश्मीरी सेब जैसा कपोल रखकर बोली, "हमारे घरवाले हमारी मुहब्बत के खिलाफ थे। क्योंकि मैं मुसलमान हूं और तुम हिन्दू हो। वैसे भी हमारे और तुम्हारे गांवों के बीच पुरानी दुश्मनी चली आ रही है। दोनों गांवों के हिन्दू या मुसलमान भी आपस में रिश्ता नहीं करते हैं। ये तो हमारा बढ़िया नसीब ही था कि दोनों गांव वालों के हाथ नहीं लगे थे-वरना बुरी मौत मार दिये जाते। धर्मपुरी के लोग मुझे और अकबरपुर के लोग तुम्हें मारने पर तुले हुये थे। वो लोग हमारी तलाश कर रहे होंगे। जैसे ही उन्हें हमारा पता चलेगा...हमें छोड़ेंगे नहीं वो...।"

"तुम तो बेमतलब ही घबरा रही हो रेशमा। हम लोग अपने गांवों से सौ किलोमीटर दूर हैं। वो लोग यहां नहीं पहुंच सकेंगे। यहां हम एकदम सुरक्षित हैं। यहां पर रोजगार भी बहुत हैं। मुझे कोई-ना-कोई काम मिल ही जायेगा। मेरे दोस्त संजय ने काम दिलवाने का वादा किया है। उसने किराये का ये घर तो दिलवा ही दिया है। उसी ने हमें आर्य समाज मन्दिर में ले जाकर हमारी शादी करवाई है। यहां हम दोनों मजे की जिन्दगी गुजारेंगे। तमाम चिन्ताओं को अभी खिड़की से बाहर फेंक दो-ताकि हम दोनों सुहागरात मना सकें...।"

बाहर खिड़की के बाहर खड़े काले ओवरकोट वाले ने कान लगाकर भीतर चल रहे वार्तालाप को सुना और कोट की जेब से फोन निकाल लिया। कोई नम्बर लगाकर तथा फोन कान से सटाकर धीमी आवाज में बोला-"मैं बोल रहा हूं कमाण्डर साहब। आपको एकदम ठीक इन्फॉर्मेशन मिली थी। गौतम नगर में हिन्दू लड़का और मुसलमान लड़की भागकर आये हैं। लड़का धर्मपुरी गांव का है और लड़की अकबरपुर गांव की है। उनके नाम श्याम और रेशमा हैं। दोनों ने शादी कर ली है और सुहागरात मनाने की तैयारी में हैं। अब बतलाइये आगे क्या करना है कमाण्डर साहब-?"

❑❑❑

❑❑❑

आधी रात का समय था।

सारा अकबरपुर गांव सोया हुआ था।

चारों तरफ नीरवता व्याप्त थी, जिसे बिना नम्बर प्लेट वाली सलेटी रंग की जीप की आवाज ने ही भंग किया।

सोये पड़े कुत्ते जागे तथा भौंककर अपनी उपस्थिति का आभास कराने लगे।

गांव के दूसरे छोर वाले कुत्तों ने सुना तो वो भी एकजुट होकर भौंकने लगे।

कुछ कुत्ते जीप के पीछे भी भौंकते हुये दौड़े।

मस्जिद के सामने वाले पीले रंग के दो मंजिला मकान के सामने जीप रुकी तथा काले कम्बल वाला एक व्यक्ति बाहर निकलकर उस मकान की तरफ लपका-उसकी पीठ पर राइफल लटकी हुई थी। उसने बन्द दरवाजे की कुन्डी को जोर-जोर से बजाया।

"कौन...कौन है-?" भीतर से किसी ने पूछा।

"दरवाजा खोलो हैदर अली। मुस्लिम फ्रन्ट वाले हैं हम...।"

"ठहरो...खोलता हूं...।"

कुछ देर पश्चात् एक दाढ़ी वाले अधेड़ ने दरवाजा खोला, जो कि काले कुर्ते व चार खाने वाले तहमद में था।

"सलाम...क्या तुम्हीं हो हैदर अली-?"

"सलाम। मैं ही हूं हैदर अली। लेकिन आप लोग इतनी रात को...।"

"मुस्लिम फ्रन्ट के एरिया कमाण्डर जावेद अली जी तशरीफ लाये हैं और तुमसे मिलने के ख्वाहिशमन्द हैं-। चलो तो जरा...।"

काले कम्बल वाला हैदर अली की बांह पकड़कर जीप के करीब ले गया तथा ड्राइविंग सीट पर बैठे लम्बी दाढ़ी वाले अधेड़ की तरफ इशारा किया, जिसने काले रंग का पठानी सूट पहना हुआ था तथा सिर पर सफेद रंग की जालीदार टोपी ओढ़ी हुई थी।

"अस्सलामु व अलैकुम, कमाण्डर साहब...।"

"व अलैकुम अस्सलामु...हैदर मियां...।" कमाण्डर जावेद अली भारी व कड़क आवाज में बोला।

"जीप में क्यों बैठे रह गये हुजूर! इस नाचीज के गरीबखाने पर तशरीफ लाइये ना। कल मस्जिद में मौलवी साहब तशरीफ लाये थे और उन्होंने बतलाया था कि मुसलमानों की इमदाद, रहनुमाई और मदद के वास्ते मुस्लिम फ्रन्ट की बुनियाद रखी गई है। इस नाचीज को थोड़ी मेहमान नवाजी करने का मौका तो दीजिये हुजूर...।"

"नहीं, फिर कभी...हैदर भाई। हमें खबर लगी कि धर्मपुरी गांव

का कोई हिन्दू लड़का तुम्हारी बेटी रेशमा को ले भागा है–?"

यूं लगा कि हैदर अली रो ही देगा, वो भीगी-सी आवाज में बोला–"रेशमा ने उस काफिर के साथ भागकर मुझे जलील कर दिया–मेरी और मेरे खानदान की नाक काट डाली है कमाण्डर साहब। कल से पागलों की तरह उसको ढूंढता फिर रहा हूं मैं। मेरे बेटे और खानदान के लोग अभी भी उस कम्बख्त की तलाश में लगे हुये हैं। मारे सदमे के उसकी अम्मी को दिल का दौरा पड़ गया था। ना जाने बचेगी भी कि नहीं। उस लड़की ने जाने कौन-से जन्म की दुश्मनी निभाई...।"

"तुम्हारी लड़की का कोई कसूर नहीं है हैदर अली...।" कमाण्डर गुर्राकर बोला, "हमारी बच्चियां तो पर्दों में रहने वाली होती हैं और अपने दीन-ईमान पर चलने वाली होती हैं। उस काफिर लड़के ने ही बेचारी रेशमा को बरगलाया होगा। उसकी मासूमियत का फायदा उठाते हुये उसको बहलाया...फुसलाया होगा। मुहब्बत के झूठे जाल फैलाये होंगे। कहने को ही ये मुल्क हमारा है–वरना यहां पर हमें पूरे हक भी हासिल नहीं हैं। सियासी पार्टियां हमें बेवकूफ बनाती रहती हैं। आजादी के इतने सालों बाद भी हमें आरक्षण नहीं मिला है। हम सबसे ज्यादा गरीब, बेरोजगार और अनपढ़ हैं। कोई मुसलमान इस मुल्क का प्रधानमन्त्री क्यों नहीं बनाया गया? मौका मिलने पर हम पर जुल्मो-सितम ढाये जाते हैं। कभी मुरादाबाद, कभी मेरठ, कभी मुजफ्फरनगर, कभी मुम्बई तो कभी गुजरात में दंगे कराके हमें गाजर-मूली की मानिन्द काटा जाता है–हमारा लहू नालियों में बहाया जाता है। हिन्दू का लड़का अपनी बच्ची को भगाकर ले गया कि किडनेप करके ले गया? डर है कि उसकी इज्जत खराब ना कर दे...।"

"खुदा के वास्ते कुछ कीजिये कमाण्डर साहब। मेरी बच्ची को बचा लीजिये...।"

"इसी वास्ते तो आये हैं हम यहां पर। खबर लगते ही हमें रेशमा की फिक्र हो गई थी। अपने फ्रन्ट के लोगों को चारों तरफा दौड़ा दिया था। बड़ी मुश्किल से पता चला कि वो दोनों कहां पर हैं–।"

"सच? कहां हैं वो दोनों–?"

"पक्का पता तो एक-दो घण्टे में लगेगा। फोन आ जायेगा। लेकिन वो दोनों गौतम नगर नामक कस्बे में हैं। मुझे डर है कि वो हिन्दू लड़का रेशमा के साथ शादी ना कर ले और उसको जबरदस्ती हिन्दू ना बना डाले...।"

"या अल्लाह! रहम...।" रोने लगा हैदर अली।

"यू औरतों की मानिन्द आंसू बहाने बन्द करो तुम हैदर अली। अपने सीने में बदले की आग पैदा करो। रेशमा को तो जिन्दा छुड़ाकर लाना है–लेकिन उस गुस्ताख लड़के को सजा देनी है। खानदान की नककटी का इन्तकाम नहीं लोगे क्या? तुम्हारा खून पानी तो नहीं बन गया है–?"

"न...नहीं–कैसी बात करते हैं कमाण्डर साहब?"

"तो फिर ठीक है...।" होंठों पर उभरी विजयी किस्म की मुस्कान को छिपाकर बोला कमाण्डर, "अपने खानदान के लोगों को इकट्ठा करो। तुम्हारे पास मैटाडोर तो है ना–?"

"हां, है। उसी मैटाडोर से मेरे बेटे और खानदान के लोग रेशमा को तलाश करने गये हुये...।"

"फोन करके उन्हें वापिस बुला लो। फिर तुम्हें गौतम नगर जाना है। हम फोन पर तुम्हें उनका पता बतला देंगे। लेकिन अपने साथ कोई हथियार मत ले जाना। ना ही वहां पर जोश में होश खोने की जरूरत है। वरना पुलिस और कानून के लफड़े में पड़ जाओगे।"

"लेकिन उस काफिर लड़के से इन्तकाम...?"

"वहां पर दिल से नहीं, दिमाग से काम लेना। दोनों को कहना कि उनकी मुहब्बत के सामने झुक गये हो। दोनों की गांव पहुंचकर शादी कर दी जायेगी। लड़के से बोलना कि उसको इस्लाम कबूल करके मुसलमान बनना होगा। उसने रेशमा से बड़े-बड़े वादे किये होंगे–रेशमा के सामने वो मना नहीं कर पायेगा। एक बार वो दोनों गांव में आ जायें। उस काफिर को काट डालना और उसकी लाश के टुकड़ों को उसके गांव की सरहद पर फिंकवा देना। अगर तुम ये काम ना कर सको तो...हम आ जाते हैं। बोलो, कर सकोगे ये सब...या फिर हम लोग आयें–?"

"न...नहीं–हम कर लेंगे कमाण्डर साहब...।"

"तो फिर ठीक है। अपने लोगों को बुलाकर गौतम नगर पहुंचो। अपना फोन नम्बर बतला दो। तुम्हें एक घन्टे बाद बतला दिया जायेगा कि वो दोनों कहां पर हैं–।"

❑❑❑

❑❑❑

"मुझे अपने लाल की बहुत चिन्ता हो रही है जी...।" वह अधेड़ा रोते-सुबकते हुये बोली, "ना जाने वो उस मुसलमानी के साथ कहां गया होगा? कुछ खाया-पीया होगा कि नहीं? अकबरपुर के लोग उनकी जान लेने को दौड़े थे। दौड़े तो अपने गांव के लोग भी थे–राम जी की कृपा

रही कि वो दोनों किसी के हाथ ना लगे थे। हाय, मेरा श्याम...तू कहां है मेरे बच्चे–?"

"ये टसुए बहाने बन्द कर तू प्रेमवती...।" मोटी-मोटी मूछों वाला देवेन्द्र लाल-लाल आंखें निकालकर चिल्ला पड़ा, "कोई नहीं है वो अपना। कम्बख्त ने हमारा धर्म भ्रष्ट कर दिया है। इश्क करने को मुसलमान की लड़की ही मिली थी उसे? हिन्दुओं की बेटियां नहीं रही थीं क्या? ना जाने कब से उसके साथ इश्क लड़ा रहा था। पता चला भी तो तब जब अकबर पुर की मस्जिद से ऐलान किया गया कि अकबरपुर की एक मुस्लिम लड़की को धर्मपुरी के एक हिन्दू लड़के के साथ नदी पार वाले खन्डहर में देखा गया है। उधर अकबरपुर वाले हथियार लेकर दौड़े तो इधर हम धर्मपुरी वाले दौड़े। वो दोनों अकबरपुर वालों के हाथ लग जाते तो...श्याम की बोटी-बोटी कर डालते। हमारे हत्थे चढ़ते तो उस लड़की का कीमा बनाकर रख देते। गांव के लोगों में इतना गुस्सा था कि श्याम को भी मार डालते–एक तो मुस्लिम लड़की...दूसरे वो दुश्मनों के गांव की है। दोनों ने वापिस लौटने की गलती की तो...मार दिये जायेंगे। कलेजे पर पत्थर रख ले और श्याम को भूल जा–।"

"कैसे भूल जाऊं जी...? नौ महीने तक अपनी कोख में रखा था और दो सालों तक अपनी छातियों का दूध पिलाकर पाला था उसे। इकलौता बेटा है। उसी से तो हमारा वंश आगे बढ़ेगा जी। क्या एक बाप इतना निष्ठुर हो सकता है? अपने बेटे से जरा-सा भी मोह नहीं रहा आपको–?"

"मोह भी है और प्यार भी है पगली...।" वह सर्फ के झागों की मानिन्द बैठते हुये तथा ठन्डी आह-सी भरकर बोला, "खून है वो मेरा...जिगर का टुकड़ा है। लेकिन हमें इसी गांव में रहना है। यहीं जन्म लिया है...यहीं मरना है। अकबरपुर वालों से पुरानी दुश्मनी है। मेरे पिता जी और बड़े भाई को बड़ी ही बेरहमी के साथ कत्ल कर दिया था अकबर पुर वालों ने। गांव के भी बहुत से लोग मारे जा चुके हैं। अगर वो लड़की अकबरपुर की ना होती तो...मैं अपने बेटे के लिये अपना धर्म भ्रष्ट कर लेता और उसे बहू के रूप में स्वीकार कर लेता...लेकिन रेशमा को नहीं...दोनों को यहां से दूर ही रहना होगा। बस, भगवान से यही प्रार्थना है कि वो दोनों भूले से भी कभी लौटकर यहां पर ना आयें। बाद में उनका पता मालूम पड़ेगा तो वहीं जाकर मिल आया करेंगे...।"

"उन दोनों की रक्षा करना प्रभु...।" मां हाथों को जोड़कर बोली, "ना जाने दोनों कैसे होंगे...किस हाल में होंगे–!"

❑❑❑
❑❑❑

गांव से बाहर निकलने पर काले कम्बल वाले ने ड्राइविंग कर रहे कमाण्डर जावेद अली से पूछा–"आपने हैदर अली को रेशमा और श्याम का पता क्यों नहीं बतला दिया कमाण्डर–?"

जीप को अस्सी किलोमीटर प्रतिघन्टा की रफ्तार से दौड़ाते हुये बोला वह–"कभी-कभार दिमाग का भी इस्तेमाल कर लिया करो तुम नौशाद! श्याम और रेशमा शादी कर चुके हैं और दोनों ने सुहागरात भी मना ली होगी। पता बतलाने पर हैदर अली हमसे बाद में सवाल कर सकता था कि हमें उन दोनों का पता मालूम था तो उनकी शादी क्यों होने दी–सुहागरात क्यों मनाने दी? अब हम उसको एक घन्टे बाद ही उन दोनों का पता बतायेंगे। जब हैदर अली गौतम नगर पहुंचेगा तो मालूम पड़ेगा कि शादी हो गई और सुहागरात भी मन गई। उसका दिमाग खराब हो जायेगा। हो सकता है कि वो वहीं पर दोनों को...या श्याम को मार डाले। अगर उसने सब्र से काम लिया तो गांव पहुंचकर तो श्याम को कत्ल कर ही देगा–।"

"अगर नहीं किया तो...?"

"ऐसा तो मुमकिन ही नहीं है प्यारे। अगर हैदर अली ऐसा नहीं करेगा तो...गांव के लोग मार देंगे श्याम को। क्योंकि वो हिन्दू है और उनके दुश्मनों के गांव का है। श्याम का कत्ल तो होना ही है।"

"फिर–?"

"फिर वही होगा, जो कमाण्डर साहब चाहते हैं...। एक सिगरेट सुलगाकर दो मुझे...।"

नौशाद ने सिगरेट सुलगाकर कमाण्डर को दी तथा फिर बोला, "अब हम कहां जा रहे हैं–?"

"गौतम नगर।"

"लेकिन...वहां क्यों–?"

"जब अपने खानदानियों के साथ हैदर अली श्याम और रेशमा के पास पहुंचेगा तो हमें छिपकर देखना है कि वहां क्या होता है–!"

❑❑❑
❑❑❑

सुहागरात मनाने पर दोनों ही थककर चूर हो गये थे–सो एक-दूजे की बांहों में समाये हुये घोड़े बेचकर सो गये।

दरवाजे को जोरों से पीटा गया तथा कुन्डी को भी जोरों से बजाया गया तो रेशमा हड़बड़ाकर उठ बैठी।

जिस्म पर कोई वस्त्र ना पाकर वो स्वयं से ही लजा गई। फिर वो बिस्तर से उतरी तथा फर्श पर से अपने वस्त्र उठाकर जल्दी-जल्दी पहनने लगी।

दरवाजा लगातार पीटा जा रहा था, कुन्डी बजाई जा रही थी।

श्याम ने कुनमुनाकर आंखें खोलीं तथा हाथों को फैलाकर अंगड़ाई ली तथा उनींदे स्वर में बोला—"इतनी रात को कौन है भई—?"

"शायद सुबह हो चुकी है श्याम!" सुर्ख रंग के कुर्ते के बटन बन्द करते हुये बोली रेशमा, "खिड़की के कांच से रोशनी आ रही है। शायद तुम्हारा दोस्त संजय होगा। उठो, दरवाजा खोलो...अरे...ये क्या...शरम नहीं आती तुम्हें...पहले कपड़े तो पहन लो...बेशर्म कहीं के...।"

श्याम ने झटपट वस्त्र पहने तथा पैरों में चप्पलें डालकर दरवाजे की तरफ बढ़ा।

दरवाजा खुला।

वह हड़बड़ाकर दो कदम पीछे हट गया।

चेहरा फक्क पड़ गया तथा मस्तक पर पसीने की नन्हीं-नन्हीं बुंदकियां छलछला उठीं।

अपने चार बेटों तथा तीन भतीजों के साथ हैदर अली श्याम को धकेलते हुये कमरे में प्रविष्ट हुआ तो उन्हें देख रेशमा के मुंह से घुटी-घुटी सी चींख निकल पड़ी।

वह यूं ही थर-थर कांपने लगी कि मानो नन्हीं-मुन्नी हिरणी को कई खूंखार भेड़ियों ने घेर लिया हो तथा उसे खूनी नजरों से घूरते हुये गुर्राने लगे हों।

❑❑❑

❑❑❑

हैदर अली ने बामुश्किल अपने बेटों तथा भतीजों को अपनी कसमें देकर श्याम तथा रेशमा से अलग किया।

तब तक श्याम काफी चोटिल हो चुका था और रेशमा को भी कई लात-घूंसे पड़ चुके थे। दोनों फर्श पर बैठे कराह रहे थे।

"बहुत गलत किया तुम लोगों ने...।" दोनों को घूरते हुये कहा हैदर अली ने, "इश्क में पड़ने से पहले एक-दूसरे की जात नहीं देखी, मजहब नहीं देखा। कम्बख्तों, ये भी नहीं सोचा कि तुम दोनों दुश्मन गांवों से ताल्लुक

रखते हो। नहीं, तुम दोनों का रिश्ता किसी भी कीमत पर नहीं हो सकता...तुम्हें अलग होना पड़ेगा...।"

"न...नहीं...ये नहीं हो सकता अब्बू...।" डरी होने के बावजूद रेशमा श्याम की पीठ से चिपककर बोली, "हम दोनों की शादी हो चुकी है। हम तन और मन से एक हो चुके हैं। हमें अब मौत ही जुदा कर सकती है। हम दोनों मौत को गले लगा सकते हैं लेकिन एक-दूसरे से जुदा नहीं हो सकते हैं...।"

"हम दोनों एक-दूसरे से सच्ची मुहब्बत करते हैं...।" कराहते हुये कहा श्याम ने, "इसीलिये हमने एक-दूसरे का गांव नहीं देखा—मजहब नहीं देखा...।"

"मेरी बेटी खूबसूरत है। इसीलिये तूने इसे मुहब्बत के झूठे जाल में फांस लिया है। मतलब निकल जाने पर तू इसका साथ छोड़ देगा...।"

"नहीं, बड़े मियां...ऐसा कभी नहीं होगा...।" पूरी दृढ़ता के साथ बोला वह, "मेरी मुहब्बत एकदम पवित्र और सच्ची है। जिन्दगीभर रेशमा का साथ निभाऊंगा। इसकी खुशी के लिये कुछ भी कर सकता हूं मैं...।"

"जरा मैं भी तो सुनूं कि तू रेशमा के लिये क्या कर सकता है? बोल...क्या कर सकता है...रेशमा के लिये—?"

"कुछ भी...अपनी जान तक दे सकता हूं मैं...।"

"जान देने से भला क्या होता है—?"

"तो आप ही बतलाइये कि मैं रेशमा के लिये क्या कर सकता हूं...?"

हैदर अली ने श्याम की आंखों में झांकते हुये पूछा—"मजहब बदल सकता है? रेशमा के वास्ते क्या मुसलमान बन सकता है तू—?"

"नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं है...।" तपाक से बोली रेशमा, "मैं हिन्दू बन गई हूं। पण्डित जी ने मन्दिर में हमारी शादी की है।"

"चल, तू तो इसके वास्ते हिन्दू बन गई। लेकिन क्या ये तेरे वास्ते मुसलमान बन सकता है...?"

"हां—बन सकता हूं। मैं अभी मस्जिद में चलकर मुसलमान बन जाता हूं। अपनी रेशमा के लिये कुछ भी कर सकता हूं मैं...।"

"तो फिर ठीक है...।" रेशमा का बड़ा भाई बोला, "अभी हमारे साथ गांव चल और मजहब बदलकर मुसलमान बन जा। तेरे घरवाले और गांव वाले तो तुझे मुसलमान के रूप में कबूलेंगे नहीं—अकबरपुर में ही रहना। वहीं खेती-बाड़ी करना। तुम दोनों के वास्ते एक मकान भी बनवा देंगे! बोल, क्या कहता है—?"

"मुझे स्वीकार है भाईसाहब! मैं अकबरपुर चलकर इस्लाम कबूल कर लेता हूं। आप लोग जहां भी कहेंगे, वहीं रहूंगा। जो भी काम करने के लिये बोलेंगे, कर लूंगा...।"

"तो फिर ठीक है...।" कुछ सोचकर बोला हैदर अली, "तुम दोनों यहीं रहो। कभी भी अकबरपुर या धर्मपुरी का रुख मत करना।"

चौंका श्याम, चौंकी रेशमा।

हैदर अली के बेटे व भतीजे भी चौंके।

"ये...ये क्या बोल रहे हो तुम अब्बू...?" बड़ा बेटा नाराजगी के साथ बोला, "इन दोनों को यहीं पर रहने के लिये क्यों कह रहे हो? इन दोनों को हमें अकबरपुर लेकर चलना है कि नहीं?"

"नहीं रे इजहार...।" हैदर अली ठन्डी आह-सी भरकर बोला, "पागल हैं हम लोग...जो सच्ची मुहब्बत की कद्र करना नहीं जानते हैं। देखो, इस लड़के को...ये अपनी रेशमा से कितनी मुहब्बत करता है। रेशमा के वास्ते अपना गांव, घरवाले और मजहब छोड़ने को तैयार है। हमारे गांव में रहने को तैयार है। क्या हम रेशमा के वास्ते इससे ज्यादा मुहब्बत करने वाला लड़का ढूंढकर ला सकते थे? दुनिया का कोई भी लड़का अपनी रेशमा को उतना खुश नहीं रख पायेगा, जितना ये लड़का रखेगा। गांवों की दुश्मनी और मजहब के वास्ते हमें इन दोनों बच्चों की खुशियों का गला घोटने का क्या हक है? रेशमा मुझे और तेरी अम्मी को ही प्यारी नहीं थी, बल्कि ये तुम लोगों की भी लाड़ली बहन थी। इसने एक हिन्दू लड़के से मुहब्बत की तो...हमें इससे नफरत क्यों हो गई? नहीं, मैं अपनी बेटी को गांव की दुश्मनी और मजहब के नाम पर कुर्बान नहीं होने दूंगा। इन दोनों को गांव ले गया तो...इन्हें मार दिया जायेगा। सुनो, बच्चों...।" वह रेशमा तथा श्याम से सम्बोधित होकर बोला, "तुम दोनों को यहां पर भी खतरा हो सकता है। क्योंकि मुस्लिम फ्रन्ट वालों को यहां का पता मालूम है। उन्होंने ही हमें यहां का पता बतलाया है। वो लोग तुम दोनों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसीलिये तुम दोनों यहां से कहीं दूर निकल जाओ। मुम्बई ठीक रहेगा। वहां पर रोजगार भी है। तुम दोनों को वहां गृहस्थी जमाने में दिक्कत ना होगी...।"

"अ...अब्बू...।" रेशमा उसके सीने से लगकर रोने लगी।

"ना...रोते नहीं बेटा...।" हैदर अली उसके सिर पर स्नेह से हथेली फेरते हुये बोला, "खुदा तुम दोनों को खुश रखे। जहां भी रहना...खुश रहना। भूलकर भी अकबरपुर या धर्मपुरी का रुख मत करना बच्चों। हम

लोग गांव पहुंचकर बोल देंगे कि तुम दोनों हमें नहीं मिले—पहले ही यहां से कहीं चले गये थे। तुम लोग भी यहां से फौरन निकल जाओ। अभी फैसला कर लो कि यहां से कहां पर जाना है...।"

❑❑❑

❑❑❑

"मैं बोल रहा हूं इकराम, कमाण्डर...। यहां पर तो गड़बड़ी हो गई है...

"कैसी गड़बड़ी?"

"गांव की दुश्मनी और मजहब पर बाप की मुहब्बत भारी पड़ गई है कमाण्डर...।"

"श्याम रेशमा के वास्ते अकबरपुर जाकर मुसलमान बनने को राजी हो गया तो हैदर अली मोम की माफिक पिघल गया। उस ससुरे ने श्याम और रेशमा से कहा कि मुस्लिम फ्रन्ट वालों की वजह से वो दोनों यहां पर भी खतरे में पड़ सकते हैं—इसलिये फौरन ही यहां से कहीं दूर चले जायें और भूले से भी अकबरपुर का रुख ना करें...।"

"ओह...क्या उसके बेटे और भतीजों ने मुखालफत नहीं की?"

"आते ही उन्होंने श्याम को ठोक दिया था—रेशमा को भी थोड़ा पीटा था। लेकिन बाद में वो हैदर अली का खास विरोध नहीं कर पाये...।"

"क्या वो लोग अभी भी वहीं पर हैं?"

"नहीं, वो तो चले गये। हैदर अली बोल रहा था कि वो लोग गांव जाकर बोल देंगे कि रेशमा और श्याम उन्हें नहीं मिले—उनके पहुंचने से पहले ही दोनों कहीं चले गये थे। वो कम्बख्त तो बेटी और दामाद के खर्चे-पानी के वास्ते पचास हजार रुपये भी दे गया है..."

"ओ शिट..." कथित जावेद अली कमरे की दीवार पर घूंसा मारकर क्रोधित भाव से बोला, "बेटी के प्यार में बुड्ढे की अक्ल सठिया गई। उसके बेटे और भतीजे भी छक्के साबित हुये। कम्बख्तों ने सारा प्लान ही चौपट कर डाला है। खैर, श्याम और रेशमा कहां हैं?"

"अभी तो अपने कमरे पर ही हैं। श्याम ने अपने दोस्त संजय को बुलाया है। दोनों ने मुम्बई जाने का प्रोग्राम बनाया है और संजय किराये की गाड़ी लेने के लिये जाने वाला है।"

"नहीं...नहीं...।" जावेद अली आग-बबूला होकर बोला, "वो दोनों मुम्बई नहीं...जा सकते—हम उन्हें मुम्बई नहीं पहुचने देंगे...।"

"तो हुक्म दीजिये कमाण्डर! संजय के जाते ही उन दोनों को गोली मार देता हूं मैं...।"

"दिमाग का इस्तेमाल मत कर लेना तू उल्लू के पट्ठे...।" फोन कान से लगाये हुये जावेद अली पगलाये हाथी-सा चिंघाड़ उठा, "...वैसे बोलता है कि मैं जब कमाण्डर बन जाऊं तो तुझे अपनी जगह एरिया कमाण्डर बनवा दूं। क्या हमारा मकसद सिर्फ श्याम और रेशमा को कत्ल करने का है? अगर ऐसा ही होता तो हमें आधी रात को अकबरपुर जाकर हैदर अली से मिलने की क्या जरूरत थी? मालूम तो था ही कि वो दोनों गौतम नगर में हैं। उन्हें उनके सुहागरात वाले कमरे में ही कत्ल कर डालते। तू एरिया कमाण्डर तो क्या...मुस्लिम फ्रन्ट का सोल्जर बनने के भी काबिल नहीं है। ट्रेनिंग कैम्प में रहकर तूने हथियारों और बमों का इस्तेमाल करना तो सीख लिया है--लेकिन दिमाग का इस्तेमाल करना नहीं सीख पाया है।"

"म...माफी चाहता हूं कमाण्डर! आप हुक्म करिये...मुझे क्या करना है?"

"अभी तो कुछ नहीं करना है, वहां पर उन पर हमला करना ठीक नहीं होगा। वो दोनों किराये की गाड़ी में सवार होकर गौतम नगर से निकलेंगे तो रास्ते में हमला बोल दिया जायेगा। बस तुम उन्हें वाच करते रहो और उनको फॉलो करते हुये मुझे फोन पर उनकी लोकेशन बताते रहना। अभी फोन बन्द कर तू...।"

जावेद अली ने फोन काटकर मेज पर रखा तथा वहां से सिगरेट की डिब्बी उठा ली।

नहीं, वो सिगरेट की डिब्बी नहीं, बल्कि डिब्बी के खोल में ट्रांसमीटर था, जिसका एरियल बाहर खींचकर तथा उसके भीतरी हिस्से में उंगली डालकर नॉब को घुमाते हुये वो किसी से सम्पर्क स्थापित करने की चेष्टा करने लगा–

"एरिया कमाण्डर जे०ए० कॉलिंग...जे०ए० कॉलिंग...ओवर...ओवर...!"

"यस...कमाण्डर स्पीकिंग...।" खुरदुरी-सी आवाज उभरी डिब्बी नुमा ट्रांसमीटर के स्पीकर से, "बोलो एरिया कमाण्डर जे०ए० क्या रिपोर्ट है...ओवर।"

"थोड़ा गड़बड़ी हो गई कमाण्डर...।"

"हम सुन रहे हैं...बतलाओ...ओवर।"

जावेद अली बतलाने लगा कि हैदर अली, उसके बेटे तथा भतीजे

श्याम व रेशमा को बहला-फुसला कर अपने साथ नहीं ले गये हैं, बल्कि उन्हें मुस्लिम फ्रन्ट से आगाह करके कहीं दूर चले जाने को बोलकर पचास हजार रुपये भी दे गये हैं और रेशमा व श्याम किराये की गाड़ी से मुम्बई जाने की तैयारी कर रहे हैं।

"हताश होने की कोई जरूरत नहीं है जे०ए०। बड़े मिशन में ऐसी छोटी-मोटी अड़चनों का सामना करने के लिये तैयार रहना ही चाहिये हमें। तुम्हें क्या करना है...तुम्हें मालूम है ही। चूंकि तुमने हमसे कॉन्टेक्ट किया है तो...हम बतला देते हैं कि अब तुम्हें क्या करना चाहिये...।"

दूसरी तरफ से कमाण्डर जावेद अली को बतलाने लगा कि उसको क्या करना है।

❑❑❑

❑❑❑

"सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा–हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलिश्ता हमारा...।"

सुबह-सवेरे केशव पूजा-पाठ करके पूजाघर से बाहर निकला ही था कि ड्राइंग रूम की मेज पर रखे उसके मोबाइल फोन से घण्टी के रूप में उक्त मधुर गीत उभरने लगा।

सोफिया, चांदनी, श्वेता तथा राजन भी पूजाघर से बाहर निकले, और ड्राइंगरूम में ही बैठ गये।

"हैलो...।" केशव ने कुर्सी पर बैठकर मेज पर रखे फोन को उठाने की बजाय उसके स्पीकर फोन वाला बटन दबा दिया, ताकि फोन उठाये बिना बात कर सके।

"हाय...पण्डित...क्या हाल हैं तेरे?"

"राम माहेश्वरी...।" कहने पर हंसा केशव, जबकि राजन, सोफिया, चांदनी व श्वेता चौंके–क्योंकि वो ये मान बैठे थे कि केशव की गोली का शिकार होने पर राम माहेश्वरी नदी में डूबकर मर चुका है।

"मुझे जिन्दा पाकर चौंका नहीं तू पण्डित?" फोन के स्पीकर से निकलने वाली वो आवाज राम माहेश्वरी की ही थी।

"इसमें भला चौंकने जैसी क्या बात है? तेरी लाश तो मिली नहीं थी। गोली भी तेरे कन्धे पर लगी थी। तू नदी से निकलकर भाग निकला होगा। चल, शुरू हो जा...जो भी गीदड़ भभकियां देनी हैं, दे डाल–मैं सुन रहा हूं, लेकिन ज्यादा बोलकर मुझे बोर मत करना।"

"गीदड़ भभकियां गीदड़ देता है ओये पण्डित...।"

"तू भी तो गीदड़ ही है–तभी तो मुकाबला करने की बजाय दुम दुबाकर भाग निकला था...।"

"जिस्मानी लड़ाई छोटे-मोटे लोग लड़ते हैं केशव पण्डित! हम आई०एस०आई० के खास ओहदेदार हैं। हमें तो दिमागी जंग लड़ने में मजा आता है। तेरे साथ दिमागी जंग ही होगी...।"

"चल, तू अपनी ये हसरत भी पूरी करके देख ले राम माहेश्वरी। तो कब से तू दिमाग की जंग शुरू कर रहा है?"

केशव ने हाथों, आंखों व होंठों का इस्तेमाल करके राजन को इशारे करके ये पता लगने के लिये कहा कि राम माहेश्वरी कहां से फोन कर रहा है।

"ऐसी जंग बतलाकर शुरू नहीं की जाती है केशव पण्डित...।" फोन के स्पीकर से राम माहेश्वरी की आवाज उभरी, "मौका देखकर तुझसे जंग की जायेगी। अभी तो तुझसे पहले राघव राजवंशी की बारी है। उसको खून के आंसू रुलाने हैं हमें। तू उसका बहुत बड़ा हिमायती है ना? तो बचाकर दिखलाना उसको। समझ कि अपनी जंग शुरू हो चुकी है। हमें राघव को बर्बाद करना है और तुझे उसकी रक्षा करनी है। हमने उसको बर्बाद कर दिया तो हम जीते और तू हारा। तूने उसको कोई नुकसान नहीं होने दिया तो हम हारे और तू जीता...हिच...हिच...।"

"ओह, मदिरा का सेवन किया हुआ है रामजी?"

"अब हम भेड़ की खाल ओढ़े हुये थोड़े ही हैं। हमारे सारे राज तो तूने खोल ही दिये हैं–हमें बेपर्दा कर दिया है। पहले रात होने पर बन्द कमरे में पीते थे। हमें अब कौन-सा राम होने का नाटक करना है...हिच...जब भी मूड बनेगा...पीयेंगे और ऐश करेंगे। क्या है कि शराब पी लेने पर अपना दिमाग चीते की गति से दौड़ता है। तभी तो हम राघव राजवंशी को बर्बाद करने का कोई बढ़िया-सा प्लान बना पायेंगे...।"

"मनिहारी का भेष बनाया...श्याम चूड़ी बेचने आया...।"

फोन के स्पीकर से उक्त भजन की पंक्तियां उभरीं।

"देखो, रोमा डार्लिंग–कौन आया है? बाय, पण्डित...। राघव की बर्बादी के बाद तेरी बारी, तब हम मिलेंगे...।"

इसी के साथ फोन काट दिया गया।

केशव ने फोन उठाकर उस नम्बर को देखा, जिससे राम माहेश्वरी बात कर रहा था–

"बेसिक फोन नम्बर है...जीरो बाईस से शुरू होने वाला...ये मुम्बई

का ही नम्बर है। यानि राम माहेश्वरी मुम्बई में ही कहीं पर है। उसके साथ उसकी सेक्रेटरी रोमा भी है। शायद वो रोमा के घर पर हो...।"

"भजन सुनाई दिया था गुरुजी...।"

"कालबेल बजी थी श्वेता–तभी तो राम ने रोमा से पूछा था कि...कौन आया है?"

"वो राघव जी के पीछे भी हाथ धोकर पड़ा है केशव...।" चिन्तित भाव से कहा सोफिया ने, "...तुम, राजन, करतार सिंह और श्वेता इतने बिजी रहते हो कि रात-दिन तो राघव जी की रखवाली नहीं कर सकते हो।"

"मैं राघव जी से बात कर लूंगा सोफी! उन्हें राम माहेश्वरी से सावधान करते हुये सलाह दूंगा कि वो अपनी, अपने बेटे-बहू की सिक्योरिटी की व्यवस्था कर लें। हो सकता है कि इसकी कोई आवश्यकता ही ना पड़े। अगर राम का पता लग गया तो उसको पकड़कर कानून के हवाले कर दूंगा।"

कहने पर केशव ने चारमीनार वाली सिगरेट को गोल्डन कलर के लाइटर से सुलगा लिया तथा कश लगाते हुये राजन की प्रतीक्षा करने लगा।

कोई पांच मिनट पश्चात् राजन लौटा तथा कागज का टुकड़ा केशव के सामने रखकर बोला–"बेसिक फोन से बात कर रहा था राम माहेश्वरी। चैम्बूर इलाके में है ये फोन। कनेक्शन रोमा गोवानी के नाम से है। कहीं ये राम माहेश्वरी की सेक्रेटरी तो नहीं है गुरुवर...?"

"वो ही है...।" केशव पर्चे पर लिखे एड्रेस को पढ़कर बोला, "राम माहेश्वरी रोमा के घर पर ही है। इससे पूर्व कि वो वहां से निकल जाये...चलकर उसको दबोच लेते हैं...।"

"मैं भी चलूं गुरुजी?" श्वेता ने पूछा।

"तुम्हारे पैर में मोच है श्वेता। तुम रेस्ट करो। मैं और राजन जा रहे हैं। चलो, राजन! गैराज से गाड़ी निकालो। मैं तब तक कपड़े पहन लेता हूं। रोमा के घर चलकर देखें तो सही कि राम माहेश्वरी कौन-सी लीला कर रहा है।"

❑❑❑

❑❑❑

भगवान शिव का मन्दिर धर्मपुरी गांव के बीचों-बीच था, जिसके प्रांगण में डेढ़ सौ के लगभग मर्द एकत्रित थे।

दो तख्तों को जोड़कर एक छोटा-सा मंच बनाया गया था और उन पर चार कुर्सियां रखी गई थीं।

"प्रधान जी...!" एक पगड़ीधारी ग्रामीण ने पूछा, "मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि ये हिन्दू मोर्चा क्या है?"

"थोड़ा सब्र करो रामकरण भाई... ।" बड़ी-बड़ी मूछों वाला गांव का प्रधान बोला, "हिन्दू मोर्चा के लोग आते ही होंगे, फोन पर आठ बजे का समय दिया था। आठ बज चुके हैं। वो लोग आते ही होंगे। वो ही हमें अपने मोर्चे के बारे में बतलायेंगे। वैसे मुझे फोन पर ये बतलाया गया था कि हिन्दुओं की भलाई के लिये ही हिन्दू मोर्चा का गठन किया गया है...आओ, भई देवेन्द्र...मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था। फोन पर हिन्दू मोर्चा के प्रचारक ने कहा था कि प्रान्तीय अध्यक्ष जी खास तौर से तुमसे मिलने के लिये आ रहे हैं। उनका नाम स्वामी सोमानन्द जी बतलाया गया है। आओ, बैठो... ।"

मोटी-मोटी मूछों वाला देवेन्द्र प्रधान जी की बगल में बैठ गया।

"एक जीप से कुछ लोग आये हैं प्रधान जी... ।" एक युवक ने आकर बतलाया, "शायद हिन्दू मोर्चा वाले ही होंगे।"

"लाओ भई...फूल मालायें दो और तीन-चार लोग मेरे साथ चलो। उन लोगों का स्वागत करके ही भीतर लायेंगे... ।"

प्रधान गांव के तीन लोगों के साथ बाहर गया और फूल मालायें पहनाकर हिन्दू मोर्चा के पांच लोगों को ले आया। चार लोगों ने काले रंग की पैन्ट-शर्ट पहनी हुई थी तथा वो काफी लम्बे-चौड़े जवान थे–उनके कूल्हों पर होलेस्टर्स झूल रहे थे। जबकि पांचवां केसरिया रंग की पैन्ट व बन्द गले के कोट में था तथा सिर पर केसरिया रंग की पगड़ी बांधे हुये था।

उसके गोरे-चिट्टे चेहरे पर काले रंग की घनी दाढ़ी-मूंछ थी।

कुर्सी पर बैठे-बैठे ही उसने पूछा–"आप लोगों में से देवेन्द्र पाल कौन है?"

"मैं हूं जी... ।" उठ खड़ा हुआ देवेन्द्र पाल।

"श्याम तुम्हारा ही बेटा है?"

"जी, मेरा ही नालायक बेटा है। गैर धर्म की लड़की से मुहब्बत करके उसने मेरा सिर शर्म से झुका दिया है... ।"

"कैसी शर्म...ये तो श्याम ने बहादुरी वाला काम किया है।"

"जी...?"

"क्या...क्या?"

देवेन्द्र तथा बाकी ग्रामीण बुरी तरह चौंके तथा एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

उठा कुर्सी से केसरिया वस्त्रों वाला तथा कड़क आवाज में बोला, "...वो लड़की मुस्लिम है और तुम्हारे दुश्मन गांव की है। श्याम उसको भगा ले गया है। उसके साथ शादी करेगा और उसे हिन्दू बना देगा। इसमें नककटी तो अकबरपुर वालों की हुई है–आप लोगों का तो सीना चौड़ा हो जाना चाहिये और गर्व से सिर तन जाना चाहिये। समय को पहचानो और अपने विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाओ।

होना तो ये चाहिये था कि आप लोग श्याम और रेशमा की शादी इसी मन्दिर में धूमधाम के साथ करते। जबकि आप लोग हथियार उठाकर उन दोनों को मारने के लिये दौड़े थे। हथियार ही उठाने थे तो अकबर पुर वालों के खिलाफ उठाते ना। हमें छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, वीर हकीकत राय, पृथ्वीराज चौहान के जैसा ही वीर योद्धा बनना चाहिये। इस गलत-फहमी में मत रहो कि ये देश हमारा है और यहां पर हमारी हुकूमत चल रही है और चलेगी।"

थोड़ा रुककर स्वामी सोमानन्द ने सामने बैठे ग्रामीणों पर दृष्टिपात किया, फिर बुलन्द आवाज में बोला, "राजा-महाराजाओं वाला युग तो रहा नहीं है। प्रजातन्त्र के नाम पर राजनैतिक पार्टियां अदल-बदल कर शासन कर रही हैं। वोटों के लालच में ही सही...लेकिन अधिकांश पार्टी वाले मुसलमानों की बात करते हैं–उनकी ही सुनते हैं। उन्हीं को सुविधायें दे रहे हैं। हम हैं कि जात-पात के चक्कर में पड़कर अलग-अलग पार्टियों के समर्थक बनकर बंट रहे हैं और कमजोर पड़ रहे हैं। यूं ही चलता रहा तो इस देश पर मुसलमानों का राज हो जायेगा। हम उनके गुलाम हो जायेंगे। हमसे हमारी जमीन, जायदाद, नौकरियां, फैक्ट्री, रोजगार छीन लिये जायेंगे। हमारी बहू-बेटियों को बेइज्जत किया जायेगा। दंगे या झगड़े होने पर हरेक पार्टी वाले उनकी ही बात करते हैं–उनकी ही मदद करते हैं। अगर पुलिस और सेना नहीं हो तो...वो हमें मार-काट डालें। वो अपने धर्म के लिये मरने-मारने को तैयार रहते हैं। उनके घरों में खूब हथियार मिलेंगे। जबकि हमारे घरों में लाठियां भी मुश्किल से मिलेंगी... ।"

"ये बात तो है स्वामी जी... ।" एक ग्रामीण उठकर बोला, "...हम लोग खाने-कमाने और बच्चों को पढ़ाने में ही लगे हुये हैं, दंगा-फसाद होने

पर हम पुलिस या सेना का मुंह देखते हैं। हमारे पास अगर हथियार हों भी तो...कौन से चलाने आते हैं।"

"हिन्दू मोर्चा की तरफ से जल्दी ही गांव-गांव में प्रशिक्षण कैम्प लगाये जायेंगे, जिनमें मर्दों के साथ महिलाओं को भी अस्त्र-शस्त्र की ट्रेनिंग दी जायेगी। हथियार भी दिये जायेंगे। वैसे हमारा मोर्चा अपनी भी सेना तैयार कर रहा है। ताकि आवश्यकता पड़ने पर हिन्दुओं की रक्षा की जा सके। बस, आप लोगों को हिन्दू मोर्चा के साथ जुड़ना है और तन-मन-धन से सहयोग करना है। दबकर नहीं रहना है हमें, ईंट का जवाब पत्थर से देना है। अपने दम-खम पर अपनी हुकूमत जमानी है। आजकल में ही हिन्दू मोर्चा के पदाधिकारी इस गांव में भी आयेंगे, वो आप लोगों को सदस्य बनायेंगे और कुछ सामग्री भी बांटेंगे। अभी तो आप लोग पता करें कि श्याम और रेशमा कहां पर हैं? उन्हें गांव लेकर आइये। उन्होंने शादी ना की हो तो...उनकी शादी कराइये। अकबरपुर वालों से डरने की कोई जरूरत नहीं है। आप लोगों की मदद के लिए हिन्दू मोर्चा वाले आ जायेंगे और डटकर जंग लड़ेंगे। स्वयं को कमजोर और अकेला मत समझना।"

लब्बो-लुआब ये कि स्वामी सोमानन्द ग्रामीणों को मुस्लिमों के खिलाफ भड़का रहा था और उन्हें हिंसक होने को प्रेरित कर रहा था—उन्हें कानून को हाथ में लेने के लिये कह रहा था।

ये कोई नहीं जानता था कि उसका असल मकसद क्या था।

❑❑❑

❑❑❑

राम माहेश्वरी अपनी सेक्रेटरी रूपी रखैल रोमा के घर पर ही था। दोनों ने रेड वाइन के तीन-तीन पैग पीये—फिर राम माहेश्वरी ने नशे में धुत्त होकर केशव को फोन किया तथा उसको धमकियां दीं।

कालबेल के बजने पर उसने रोमा से कहा कि वो देखे कि कौन है?

केशव से बात करने पर उसने फोन रखा तो पीछे खड़ी रोमा बोली—"कोरियर कम्पनी वाला था, मेरी पुणे वाली सहेली नमिता है ना? उसकी शादी का इन्वीटीशन कार्ड आया है। नाश्ता करेंगे आप?"

"नहीं, डार्लिंग...।" वह पलटा तथा रोमा को बांहों में भरकर बोला, "शराब के साथ मछलियों के पकौड़े खाये हैं ना, सो नाश्ते की जरूरत ही कहां रह गई है। हां, दूसरे वाली भूख जरूर लगी है। जिसके लिये हमें बिस्तर पर चलना होगा...।"

"बिस्तर कहां भागा जा रहा है बॉस, लेकिन पहले अपने बारे में

तो सोचिये आप, पुलिस आपके पीछे पड़ी हुई है। केशव पण्डित से भी आपने पंगा ले लिया है। वैसे तो आपका ही दिया हुआ घर है, लेकिन आपको यहां पर खतरा हो सकता है। पुलिस आये ना आये, लेकिन केशव पण्डित कभी भी यहां पहुंच सकता है। वो दिमाग का जादूगर है। वो किसी ना किसी तरीके से आपका पता मालूम कर ही लेगा।"

"हमने ट्रांसमीटर पर किंग कोबरा जी से बात की थी। वो बोल रहे थे कि हमारे रहने की व्यवस्था करा रहे हैं। व्यवस्था होते ही हमें बतला देंगे। उनके मैसेज की प्रतीक्षा है हमें...लो, आ गया उनका मैसेज...।"

"आपको कैसे पता चला? मैंने तो कोई आवाज सुनी ही नहीं है...।"

"आवाज हुई ही नहीं तो सुनोगी कैसे डार्लिंग? ट्रांसमीटर हमारे गले में पड़े लॉकेट में है ना। लॉकेट के भीतरी हिस्से में लगी नन्हीं-सी सुई निकलकर चुभने लगती है तो हमें मालूम हो जाता है कि किंग कोबरा जी हमसे कॉन्टेक्ट करना चाहते हैं। हम उनसे अभी बात करते हैं...।"

रोमा को बांहों से मुक्त करके राम माहेश्वरी ने गले में पड़े लॉकेट को गले से निकालकर उसमें लगे सुई के साइज का एरियल बाहर खींचा तथा बोला—"एरिया कमाण्डर आर०एम० स्पीकिंग...।"

"हम किंग कोबरा बोल रहे हैं आर...एम...।" लॉकेट के भीतर मानो कोई कोबरा बैठा हुआ था और वो फुंफकारकर बोल रहा था, "तुम्हें फौरन ही रोमा का घर छोड़ना होगा आर०एम०। तुम्हारे रहने की व्यवस्था कर दी गई है...ओवर...।"

"धन्यवाद...किंग कोबरा जी। बतलाइये, मुझे कहां पहुंचना है? ओवर...।"

"तुम ऐसा करो कि इसी इलाके के नेहरू पार्क में चले जाओ। हम तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं...।"

"आप?" वह चौंककर बोला, "...आप मुम्बई में ही हैं? ओवर...।"

"हां—एक जरूरी काम था हमें। मुम्बई आये तो सोचा कि तुमसे भी मिल लें हम। अब मुम्बई में रहना तो तुम्हारे वास्ते खतरे से खाली नहीं है। सो तुम्हें दूसरी जगह पर एडजस्ट किया जायेगा। पार्क में हमारे कुछ आदमी भी हैं। वो पहले तुम्हारा हुलिया चेंज करेंगे। तुम्हें सिख या मौलवी का रूप दे देंगे और फिर तुम्हें मुम्बई से निकालकर नये ठिकाने पर पहुंचा देंगे वो। कितनी देर में पहुंच रहे हो तुम आर०एम०? ओवर।"

"बस दो पैग खींचकर आ रहा हूं किंग कोबरा जी। नेहरू पार्क यहां से चन्द कदमों की दूरी पर ही है। वैसे मेरी आपसे रिक्वेस्ट है कि आप अभी मुझे मुम्बई में ही रहने दें।"

"केशव पण्डित से बदला लेने के चक्कर में तुम मारे जाओगे आर०एम०। केशव पण्डित से हिसाब किताब किया जायेगा—लेकिन अभी नहीं। उसके वास्ते बढ़िया प्लान बनाना होगा...।"

"केशव पण्डित से अभी बदला लेने का इरादा नहीं है मेरा किंग कोबरा जी। अभी तो मैं उस साले राघव से बदला लेने को तड़प रहा हूं। जब तब राघव को बर्बाद नहीं कर देता हूं...मुझे चैन नहीं मिलेगा। तब तक मुम्बई छोड़कर नहीं जाऊंगा मैं। राघव से बदला लेने के लिये मैं कोई भी रिस्क उठाने को तैयार हूं। कृपया मुझे आप रोकना नहीं—आपकी बहुत कृपा होगी किंग कोबरा जी...।"

"ठीक है आर०एम०, तुम फौरन ही यहां पहुंचो। फिर सोचते हैं कि क्या करना है। पैग लगाने की छोड़ो। हमारे पास वक्त नहीं है। हमें दिल्ली वापिस लौटना है, तुम्हें पांच मिनट के भीतर यहां पहुंचना ही होगा। ओवर एण्ड ऑल...।"

लॉकेट रूपी ट्रांसमीटर को बन्द करके गले में डालकर रोमा से बोला राम माहेश्वरी—"हमें तुरन्त ही जाना होगा डार्लिंग। तुम तो जानती ही हो कि हम तुम्हारे बिना नहीं रह सकते हैं। हम जहां भी जायेंगे, तुम्हें बुलवा लेंगे। हम तुम्हें फोन पर बतला देंगे कि तुम्हें कहां पर आना है। हम तुरन्त ही निकल रहे हैं।"

"क्यों ना मैं भी आपके साथ चलूं?"

"नहीं, किंग कोबरा नाराज हो सकता है। उसकी परमिशन लेकर तुम्हें अपने पास बुलवा लेंगे हम। हम चलते हैं। देखते हैं कि किंग कोबरा ने हमारे लिये कौन से नये ठिकाने की व्यवस्था की है।"

❑❑❑

❑❑❑

"कौन? कौन है?"

"गैस वेन्डर, मेडम जी। रोमा गोवानी के कनेक्शन का सिलैण्डर आया है।"

रोमा ने सिटकनी खोलकर बड़े दरवाजे के दोनों पल्ले खोल दिये। वह यूं ही चिहुंकी कि मानो दरवाजे पर भूत खड़े देख लिये हों। राजन तथा केशव थे वो।

"हैलो, रोमा...।" मुस्कराकर कहा केशव ने, "राम माहेश्वरी से मिलना है। ये मत बोलना कि वो यहां नहीं आया था। क्योंकि मुझे मालूम है कि उसने यहीं से...तुम्हारे बेसिक फोन पर मुझसे बातें की थीं।"

"वो...वो...।" बौखला उठी रोमा पसीने से नहा उठी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि केशव इतनी जल्दी वहां कैसे पहुंच गया। रोमा को एक तरफ करके राजन भीतर प्रविष्ट हुआ। उसने सावधानीवश रिवॉल्वर निकाल ली।

"तुमने जवाब नहीं दिया रोमा...," केशव रोमा की आंखों में झांकते हुये बोला, "...मेरे यहां पहुंच जाने से ही तुम्हें समझ जाना चाहिये कि तुम झूठ बोलकर बच नहीं सकती हो। ना ही राम माहेश्वरी को बचा सकती हो। तुम्हारे लिये बेहतर यही होगा कि मुझे को-ऑपरेट करो। कानून के शिकंजे में तो तुम फंस ही चुकी हो। क्योंकि तुम राम माहेश्वरी की सेक्रेटरी हो—उसके तमाम जुर्मों की सहायक रही हो तुम। वो सिर्फ मुजरिम ही नहीं है—बल्कि देशद्रोही भी है। आई०एस०आई० से वाबस्ता है वो।"

"वो...वो यहां नहीं है। मे...मेरा मतलब है कि वो यहां पर सुबह पांच बजे आये थे—लेकिन वो आधा घण्टा पहले ही चले गये...।"

"कहां गया वो?"

"ने...नेहरू पार्क...।"

"वो ही...जो इसी क्षेत्र में है? हॉस्पिटल के सामने?"

"हां—वो ही...।"

"वहां क्यों गया वो?"

"वो...वो...।"

"छिपाने से कुछ फायदा ना होगा रोमा...।" केशव उसकी आंखों में झांकते हुये सर्द से लहजे में बोला, "...तुम अगर को-ऑपरेट करोगी तो...तुम्हारी सजा कुछ कम हो जायेगी।"

"कि...किंग कोबरा ने बुलाया था...।"

"कौन किंग कोबरा?"

"आई०एस०आई० का इण्डियन कमाण्डर।"

"फोन आया था उसका?"

"नहीं। ट्रांसमीटर पर बातें हुई थीं। राम माहेश्वरी के गले में एक लॉकेट रहता है, जोकि असल में ट्रांसमीटर है।"

"क्या कहा किंग कोबरा ने राम माहेश्वरी से?"

"यही कि वो किसी काम से दिल्ली से मुम्बई आया है। उसके साथ

कुछ लोग हैं, वो राम माहेश्वरी का हुलिया चेंज कर देंगे और उसको नये ठिकाने पर ले जायेंगे...लेकिन वो नया ठिकाना कहां पर है...ये मुझे नहीं मालूम है। माहेश्वरी मुझे बोलकर गया कि वो जल्दी ही मुझे अपने पास बुलवा लेगा...।"

"अनिल भाई...!"

इन्सपैक्टर अनिल यादव तुरन्त ही सामने आया।

"मुझे अभी नेहरू पार्क जाना है। तुम रोमा को हिरासत में ले लो। इससे बाद में पूछताछ की जायेगी...।"

"राम माहेश्वरी भीतर नहीं है गुरुवर...।" तभी राजन भी वहां आ गया।

"चलो मेरे साथ...।" केशव ने कहा तथा सड़क पर खड़ी गाड़ी की तरफ लपक लिया।

राजन भी उसके पीछे-पीछे लपक लिया।

अनिल यादव के कहने पर लेडी कांस्टेबिल ने रोमा को हथकड़ी लगा दी थी।

ड्राइविंग सीट सम्भाली केशव ने तथा कार को फुल स्पीड से दौड़ा दिया। राजन उसकी बगल वाली सीट पर बैठा हुआ था।

आनन-फानन में ही वो दोनों नेहरू पार्क पर पहुंच गये, जोकि सिटी हॉस्पिटल के सामने था।

पार्क के बाहर पुलिस की जीप खड़ी थी तथा काफी लोग भी जमा थे।

माथा ठनका राजन का, बोला, "पुलिस की गाड़ी! काफी लोग भी जमा हैं गुरुवर! लगता है कि कोई वारदात हुई है।"

केशव ने कुछ बोले बिना कार को पुलिस की जीप के पीछे ले जाकर रोका।

वो बाहर निकला तो एक सब-इन्सपैक्टर लपका हुआ आया तथा हाथ जोड़कर बोला, "नमस्कार, पण्डित जी! आप...और यहां?"

"हां...ऐसे ही इन्सपैक्टर वर्मा। व्हाट हेपन? क्या हुआ है?"

"मर्डर हुआ है किसी का। नकाबपोश गुण्डों ने अन्धाधुन्ध फायरिंग करके किसी को उड़ा दिया है। गोलियों से चेहरे के चीथड़े से उड़ा दिये। मरने वाले का चेहरा तो बचा ही नहीं, जो उसकी शिनाख्त की जा सके...।"

"चलो...।" राजन से बोला केशव, "भीतर चलकर देख लेते हैं कि...कौन है।"

❑❑❑
❑❑❑

श्याम तथा रेशमा!

दोनों एक नीम अन्धेरे वाले कमरे में कैद थे। उन्हें अलग-अलग कुर्सियों पर आमने सामने बैठाकर नायलोन की डोरियों से जकड़ दिया गया था।

"ये लोग कौन हो सकते हैं श्याम?"

"कुछ कहा नहीं जा सकता है रेशमा। टैक्सी को हथियारों के दम पर रोककर ड्राइवर को गोलियां मार दी थी और हमें कुछ सुंघाकर बेहोश कर दिया था। होश आया तो हम इस कमरे में कैद थे। बाहर कुछ लोग आपस में बातें कर रहे हैं। लेकिन पुकारने पर भी कोई भीतर नहीं आया है, इन लोगों का मकसद क्या है...कुछ समझ में नहीं आ रहा है। कोई भीतर आये तो कुछ मालूम...कुन्डी खोली जा रही है...शायद कोई भीतर आ रहा है...।"

दरवाजा खुला तो पहले दो व्यक्ति भीतर प्रविष्ट हुये।

एक कथित कमाण्डर जावेद अली।

तो दूसरा स्वामी ओमवेश!

जावेद अली काले रंग के पठानी सूट में था तो स्वामी केसरिया रंग की पोशाक में था।

"कौन लोग हैं आप...?" पूछा श्याम ने, "...हम दोनों को किडनेप करके यहां क्यों लाया गया है?"

"इन दोनों से क्या पूछता है बच्चे...? तेरे सवालों के जवाब हम देंगे ना...।"

भारी-भरकम आवाज के साथ भारी-भरकम व्यक्ति भीतर प्रविष्ट हुआ, जिसे देखकर रेशमा बुरी तरह आतंकित हो चली—श्याम भी सहम उठा। वह कोई छः फुट ऊंचा तथा काफी तंदुरुस्त था। वह काले रंग के पठानी सूट में कैद काला-कलूटा इन्सान था, जिसके चेहरे पर 'मुल्ला-कट' दाढ़ी थी तथा उसके सिर पर एक फुट लम्बी बालों की मोटी-मोटी ऐसी जटायें थीं कि मानो सिर पर सांप उगे हुये हों।

उसकी एक आंख इतनी सुर्ख थी कि मानो दहकता हुआ अंगारा ही हो—जबकि दूसरी आंख बन्द थी।

"हनीफ काना...।" श्याम तथा रेशमा को देखकर मुस्कराया वो तथा भारी व कड़क आवाज में बोला, "...टी०वी० पर न्यूज चैनल्स पर

तो देखा ही होगा मुझे तुम दोनों ने? पांच साल पहले इस देश के सुपर हीरो केशव पण्डित ने मुझे कश्मीर में पकड़ा था और मेरी एक आँख फोड़कर कानून के हवाले कर दिया था। खूंखार आतंकी था–सो अदालत ने फांसी की सजा सुनाई थी, लेकिन दो साल पहले मैं जेल से निकल भागा था और अपने मुल्क पाकिस्तान चला गया था। अब आतंकी संगठन 'ब्लास्ट' का कमाण्डर बनकर हिन्दुस्तान लौटा हूं–तबाही का खेल खेलने के वास्ते–लेकिन सिर्फ हथियारों और बमों का खेल खेलने नहीं...दिमाग का खेल खेलने भी। मेरे बॉस आई०एस०आई० के इन्डियन कमाण्डर किंग कोबरा का कहना है कि दिमाग के जादूगर केशव पण्डित के मुल्क में अगर कामयाबी के साथ गेम खेलना है तो जोश नहीं, होश से काम लो–हथियारों के साथ दिमाग का भी इस्तेमाल करो... ।"

"ले...लेकिन... ।" डरा-सहमा सा श्याम बोला, "आप लोगों ने हम दोनों के किडनेप क्यों किया है?"

❑❑❑

❑❑❑

केशव ने फोन किया तो इन्सपैक्टर अनिल यादव रोमा को पुलिस स्टेशन ले जाने की बजाय जीप को वापिस मोड़कर नेहरू पार्क ले आया।

नेहरू पार्क में गुलमोहर के वृक्ष के नीचे गोल्डन कलर की शर्ट व सफेद पैन्ट वाले व्यक्ति की लाश पड़ी थी...खून से लथपथ।

लाश के सीने व पेट पर तो गोलियां लगी ही थीं, गोलियों से उसके चेहरे के परखच्चे-से उड़ा दिये गये थे।

अनिल यादव के साथ आई रोमा से कहा केशव ने–

"लाश को ध्यान से देखो रोमा और बतलाओ कि ये कौन है?"

"न...नहीं... ।" चींख मारकर रोमा भरभराकर जमीन पर गिरने को हुई ही थी कि करीब खड़े राजन ने उसको सम्भाल लिया तथा उसको उठाकर करीब की लकड़ी की बेंच पर लिटा दिया।

अनिल यादव ने एक कांस्टेबिल से पानी की बोतल मंगाकर ठण्डे पानी की छींटें बेहोश रोमा के चेहरे पर मारे।

कुनमुनाकर रोमा ने आंखें खोलीं तथा उठ बैठी। फिर वो लाश को देखकर रोने लगी।

"क्या ये राम माहेश्वरी ही है?" पूछा केशव ने।

"जी...ये राम जी ही हैं पण्डित जी... ।"

"तुम्हें वस्त्रों से धोखा तो नहीं हो रहा है?"

"नहीं...बिल्कुल नहीं...जूते वो ही, हाथों में वो ही अंगूठियां...गले में जो लॉकेट पड़ा है, वो ट्रांसमीटर ही है। आप चैक कर सकते हैं पण्डित जी! लेकिन इनकी हत्या किसने की है? ये तो यहां किंग कोबरा से मिलने के लिये आये थे।"

"किंग कोबरा ने ही मरवाया है रोमा।"

"न...नहीं...ऐसा नहीं हो सकता। रामजी तो किंग कोबरा जी के खासम खास थे। भला किंग कोबरा इनकी हत्या क्यों... ?"

"इस किस्म के लोगों का कोई दीन-ईमान तो होता नहीं है रोमा। किंग कोबरा जैसे लोग बहुत ही मतलबी होते हैं। शायद किंग कोबरा को लगा होगा कि रामजी उसके गले की हड्डी साबित हो सकता है। क्यों कि राम माहेश्वरी का भाण्डा फूट चुका था। इसके पीछे पुलिस के साथ मैं भी पड़ा हुआ था। किंग कोबरा को लगा होगा कि राम माहेश्वरी की वजह से वो भी खतरे में पड़ सकता है। शायद इसीलिये राम माहेश्वरी को मरवा दिया। उसका इरादा कत्ल कराने का ही था–इसीलिये उसने राम माहेश्वरी को इस पार्क में बुलवाया था। एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार काली पोशाक और काली नकाबों वाले दो लोगों ने स्वचालित हथियारों से राम माहेश्वरी पर अन्धाधुन्ध गोलियां चलाई थीं। गोलियां चलाने से पहले एक नकाबपोश ने राम माहेश्वरी को बतलाया था कि उसको किंग कोबरा के ऑर्डर पर ही कत्ल किया जा रहा है।"

"ओह नो... !" रोमा ने हथेलियों से सिर पकड़ लिया। तभी वहां नजीर हुसैन छड़ी के सहारे चलते हुये आ पहुंचा।

सफेद चुस्त पाजामे के ऊपर लाल रंग का बन्द गले वाला कोट पहने हुये था वो और सिर पर उसी कोट के कपड़े से बनी टोपी भी लगाये हुये था। केशव, राजन ने हाथ जोड़कर उसका अभिवादन किया तो अनिल यादव तथा बाकी पुलिस वालों ने भी नजीर हुसैन का अभिवादन किया।

"नजीर साहब, आप?" बोला केशव, "आप यहां कैसे?"

"पार्टी के काम से इस इलाके में आया था मैं केशव बेटा। पार्क के बाहर काफी भीड़ थी और जाम लगा हुआ था। पूछने पर पता चला कि किसी का कत्ल हो गया है और तुम भी यहां पर हो। खास तौर से तुमसे मिलने के वास्ते चला आया। ये...किसकी लाश

"राम माहेश्वरी की... ।"

"क...क्या...?" बुरी तरह चौंककर बोला नजीर हुसैन, "राम...माहेश्वरी? लेकिन इसको किसने मार डाला...?"

"किंग कोबरा ने।"

"ये क्या नाम हुआ...किंग कोबरा? ये किंग कोबरा कौन है? खों...खों...।"

"आई०एस०आई० का इण्डियन कमाण्डर है नजीर साहब, राम माहेश्वरी भी आई०एस०आई० से वाबस्ता था। ये तो किंग कोबरा ही जाने कि उसने राम माहेश्वरी की हत्या क्यों कराई। राम माहेश्वरी का अन्तकाल आ ही गया था। किंग कोबरा ना मरवाता तो...इसे फांसी पर लटककर मरना था। ऐसे लोग समाज, कानून और देश के लिये बोझ होते हैं।"

"हां–ये बात तो है केशव बेटा! एक तरह से अच्छा ही हुआ कि माहेश्वरी मारा गया, मुजरिम तो था ही...देशद्रोही भी था। आई०एस०आई० वालों के हाथों अपना दीन-ईमान, अपनी वतन परस्ती बेच डाली थी इस कम्बख्त ने। ये आई०एस०आई० वाले बाज नहीं आयेंगे। किंग कोबरा का खात्मा भी तुम्हें ही करना होगा केशव बेटा! तुम उसको ढूंढ सकते हो। उसको पकड़कर फांसी पर चढ़वा दो। अगर उसको अपने हाथों से बुरी मौत मार डालोगे तो...और भी बढ़िया होगा। हाथ धोकर किंग कोबरा के पीछे पड़ जाओ तुम।"

"जरूर...नजीर साहब! अब मेरे टारगेट पर किंग कोबरा ही है। चेष्टा करूंगा कि जल्द-से-जल्द किंग कोबरा तक पहुंच सकूं और उसको सजा दिलवा सकूं। वैसे उस तक पहुंचने की कड़ी राम माहेश्वरी हो सकता था–शायद स्वयं को बचाने के लिये ही किंग कोबरा ने राम माहेश्वरी को मरवाया हो। लेकिन कोई बात नहीं। किंग कोबरा बचेगा नहीं। बकरे की मां आखिर कब तक खैर मनायेगी? मैं किंग कोबरा तक पहुंचने का रास्ता खोज ही लूंगा। क्या आपके पास अपनी गाड़ी है नजीर साहब?"

"नहीं, मैं तो टैक्सी में था। जाम लगा हुआ था तो ड्राइवर को किराया देकर टैक्सी छोड़ दी थी मैंने, खो...खो।"

"तो फिर हमारे साथ चलिये आप! आपको पार्टी के कार्यालय पर छोड़ देंगे। फिर वहां से कोर्ट चले जायेंगे, कोर्ट में थोड़ा काम है।"

"अभी मेरा काम हुआ कहां है केशव बेटा। इस इलाके के हमारी पार्टी के अध्यक्ष के भाई का इन्तकाल हो गया था। उसके घर जाना है मातम पुरसी के वास्ते! मैं टैक्सी करके या ऑटो से चला जाऊंगा। तुम लोग कोर्ट जाकर अपना काम करो...।"

"हम आपको उस नेता के घर पर छोड़ देते...।"

"नहीं, शुक्रिया। मैं चला जाऊंगा बेटा।"

और फिर नजीर हुसैन को टैक्सी में सवार कराके केशव तथा राजन अपनी कार में सवार होकर चल दिये।

ड्राइविंग की जिम्मेदारी राजन ने सम्भाली।

'सारे जहां से अच्छा,' वाला गीत बजने पर केशव ने फोन निकाला तथा उसकी स्क्रीन पर दृष्टिपात किया तो अजनबी नम्बर पाया।

"हैलो...।"

"मैं बोल रहा हूं...किंग कोबरा...।"

❑❑❑

❑❑❑

मुस्कराते हुये हनीफ काने ने ट्रिपल फाइव की सिगरेट सुलगा ली तथा एक कुर्सी खींचकर श्याम व रेशमा के सामने बैठकर कश लगाकर धुऐं के छल्ले छोड़ने लगा।

जावेद अली तथा स्वामी ओमवेश जरखरीद गुलामों की मानिन्द सिर झुकाये हुये चुपचाप खड़े थे।

"मैंने बतलाया था कि किंग कोबरा के हुक्म पर मैं दिमाग से गेम खेल रहा हूं। गेम तो पुराना है–लेकिन खेलने का तरीका नया है। हमारे हुक्मरानों, आकाओं का मकसद ये है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों को भड़काकर बगावत करने को मजबूर करो–ताकि वो पाकिस्तान के साथ खड़े हो जायें और हिन्दुस्तान को अपना दुश्मन समझने लगें। इसका सबसे आसान तरीका ये है कि हिन्दू-मुसलमानों के बीच दंगे करा दो–दोनों के बीच नफरत की आग को भड़काये रखो। इस गेम को खेलने के लिये हमने मुसलमानों के वास्ते मुस्लिम फ्रन्ट बनाया है और हिन्दुओं के लिये हिन्दू मोर्चा बनाया है। हमारे आदमी हिन्दू मोर्चा के जरिये हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ भड़का रहे हैं तो मुस्लिम फ्रन्ट के जरिये मुसलमानों को हिन्दुओं के खिलाफ भड़काने के काम में लगे हुये हैं।"

"लेकिन इससे हम दोनों के किडनेप का क्या ताल्लुक है?"

"ताल्लुक है ना बच्चे, अभी तेरी समझ में आ जायेगा। हमें मालूम पड़ा कि धर्मनगरी का एक हिन्दू लड़का अकबरपुर की मुस्लिम लड़की को भगा ले गया है और दोनों गांवों के बीच पुरानी दुश्मनी है। तुम दोनों का पता लगाने पर मुस्लिम मोर्चा का एरिया कमाण्डर जावेद अली हैदर अली के पास आया। उसको भड़काया कि तुम्हें बहला-फुसलाकर अकबरपुर

ले जायें और वहां तुझे कत्ल कर दें, लेकिन हैदर अली ने ऐसा नहीं किया। कोई बात नहीं...। उसका काम हम कर देंगे ना...।"

"क...क्या मतलब?" बुरी तरह घबरा गया श्याम। रेशम भी चिन्तित हो चली।

"मतलब ये बच्चे...," श्याम के सिर पर हाथ फेरते हुये बोला हनीफ, "तुझे कत्ल करके तेरी लाश को धर्मपुरी के करीब फेंक दिया जायेगा।"

"न...नहीं...!"

"नहीं...!"

"स्वामी सोमवेश ने धर्मपुरी के लोगों पर अपना रंग चढ़ा दिया है, तेरी लाश देखकर तेरा बाप और तेरे गांव वाले भड़क जायेंगे। हमारे आदमी भी आग में पैट्रोल डालेंगे। धर्मपुरी वालों को हथियार बांटेंगे। इसी के साथ एक काम और होगा, वो ये कि...हम इस खूबसूरत रेशमा के साथ बलात्कार करेंगे और फिर इसकी नंगी लाश को अकबरपुर में फिंकवाकर ये जतायेंगे कि रेशमा के साथ वो सब धर्मपुरी वालों ने किया है। दोनों गांव वाले लड़ेंगे। हम लड़वायेंगे ना। उनका तो सिर्फ नाम ही होगा। हमारे आदमी ही मार-काट करेंगे, फिर इस आग को आस-पास के गांवों, कस्बों और शहरों में भी फैला दिया जायेगा। अब मैं ये सोच रहा हूं कि पहले श्याम का कत्ल किया जाये—या पहले रेशमा के खूबसूरत जिस्म से हवस का खेल खेलना चाहिये?"

❑❑❑

❑❑❑

"किंग कोबरा...!" मुस्कराकर बोला केशव, "इस नाचीज़ की कैसे याद आ गई किंग कोबरा?"

"तेरी वजह से हमें बहुत नुकसान हो रहा है केशव पण्डित...।" किंग कोबरा किंग कोबरा की मानिन्द ही फुंफकारकर बोल रहा था, "...हमने स्वामी रामशरण दास को तेरी वजह से खो दिया। तूने उसको अपाहिज करके कानून के हवाले कर दिया। उसे हमारे मतलब का छोड़ा ही नहीं तूने। अब हमें राम माहेश्वरी को भी कत्ल करना पड़ा।"

"मेरी वजह से क्यों? मैंने तो नहीं कहा था कि तू उसका कत्ल कर डाल।"

"भले ही नहीं कहा—लेकिन मुझे तेरी वजह से ही खों...खों...माहेश्वरी को मारना पड़ा क्योंकि मुझे लग रहा था कि उसकी वजह से मुझे नुकसान

उठाना पड़ सकता है। तू ठीक नहीं कर रहा है। अपनी खैर चाहता है तो आई०एस०आई० से दूर ही रह—वरना तेरे वास्ते ठीक नहीं होगा...खों...खों।"

"मुझे धमकाने की बजाय अपनी खांसी का इलाज करवा—कहीं टी०बी० ना हो जाये तुझे। डॉक्टर गुप्ता से मिलकर इलाज करा अपना, मेरा नाम लेगा तो तुझे फीस में फिफ्टी परसेन्ट का डिस्काउंट मिल जायेगा।"

"अभी मैंने तेरे खिलाफ कुछ नहीं किया है ना इसीलिये इतना इतरा रहा है केशव पण्डित। मुझे तू आई०एस०आई० के दूसरे कमाण्डर्स के जैसा मत समझना...।"

"क्यों...क्या तेरे जिस्म पर बेर की झाड़ियां उगी हुई हैं। तेरी बगलों में मकड़ी के जाले लगे हुये हैं? तेरे मुंह में दांतों की बजाय खरबूजे के बीज लगे हुये हैं? तू रोटी-चावल की बजाय भैंस का गोबर खाता है? पानी की बजाय तेजाब पीता है तू? चिता पर लेटकर कफन ओढ़कर सोता है? तेरे सिर पर भैंस के सींग उगे हुये हैं? तेरी कोई पूंछ निकली हुई है? चार टांगों वाला है तू? जमीन की बजाय हवा में चलता है तू?"

"वो लोग दिमाग से काम नहीं लेते थे—जबकि मैं दिमाग से काम लेता हूं...मेरे सिर में कई लोमड़ियों के दिमाग हैं केशव पण्डित।"

"तो फिर जंगल में ही रह ना तू, शहर का रुख करेगा तो गीदड़ की मौत ही मारा जायेगा प्यारे...।"

"अपने वास्ते कफन खरीदकर रख ले पण्डित! अर्थी और चार कन्धों की व्यवस्था कर ले। श्मशान में अपने अन्तिम संस्कार की बुकिंग करा ले। कभी भी मौत चील बनकर तुझ पर झपट्टा मार सकती है।"

"जब मैंने अपना नाता देशभक्ति से जोड़ा था तो सिर पर कफन लपेट लिया था। श्मशान का क्या है...वहां तो मैं बचपन से ही जाता हूं और वहां की लकड़ियों को खिलौने समझकर खेलता रहा हूं। नींद आती है तो चिता पर लेट जाता हूं, चिता की आग पर हाथों को सेंकता हूं और चिता की राख से मालिश कर लेता हूं। मौत तेरे लिये हौव्वा होगी—अपनी तो सहेली है। जब भी मूड होता है तो खतरे की बांसुरी बजाते हुये मौत के साथ रासलीला खेल लिया करता हूं। यमदूतों से भी मित्रता है—वो अपने लंगोटिया यार हैं। जब कभी स्पेशल सवारी करने का मूड बनता है तो यमराज जी के भैंसे पर सवार होकर यमलोक की सैर पर निकल जाता हूं। तू मछली को पानी से हटाने की बेवकूफी कर रहा है। पंछी को ऊंचाई से डरने को बोल रहा है। लगता नहीं कि तेरे पास लोमड़ी का दिमाग है।

मुझे तो ऐसा लगता है कि तेरी बुद्धि की शाख पर उल्लू बैठा हुआ है।"

"केशवऽऽऽ!"

"चींख मत! फेफड़े फट जायेंगे—गले की नसें पिचक जायेंगी, नाग की फुंफकार गधे की ढेंचू...ढेंचू में बदल जायेगी। फोन पर भभकियां देना छोड़ और सामने आकर मुकाबला कर...मर्द का बच्चा बन...गीदड़ का बच्चा नहीं। जब आमने-सामने होंगे, तभी तो फैसला होगा कि कौन कितने पानी में है। किसने कितना दूध पीया है अपनी मां का। फोन पर बकवास करके तू खुद को बहादुर साबित नहीं कर सकता है। वैसे भी कुत्तों के भौंकने से बिल्ली के बच्चे तो डर सकते हैं—वीर योद्धा को तो हंसी ही आयेगी। तुझे जो भी करना है, बोल मत...करके दिखला। कुछ करके दिखलायेगा...तो ही तेरे आका खुश होकर तेरे सामने हड्डी डालेंगे। कुछ भी करने से पहले बस ये बात याद रखना कि तू जब भी मेरे हत्थे चढ़ेगा...बुरी मौत मरेगा...तेरे आका भी तेरी मदद ना कर पायेंगे...।"

किंग कोबरा ने झुंझलाकर दूसरी तरफ से फोन काट दिया।

मुस्कराने लगा झील-सी नीली आंखों वाला।

"किंग कोबरा था गुरुवर।" राजन भी मुस्कराकर बोला, "क्या बकवास कर रहा था...?"

❑❑❑

❑❑❑

बड़ा ही दर्दनाक मंजर था वो।

धर्मपुरी गांव के बाहर वाले तालाब के किनारे श्याम की लाश के टुकड़े यूं सजाकर रखे गये थे कि वहां मानो कोई प्रदर्शनी लगी हुई हो।

कटे हुये सिर को एक पत्थर पर रखा गया था तथा दूसरे पत्थर पर धड़ था। बाकी चार पत्थरों पर कटे हुये हाथ-पैर रखे गये थे।

एक पत्थर पर खून से उंगली भिगो-भिगोकर लिखा गया था—

धर्मपुरी वालों! अकबरपुर की बेटी की इज्जत से खेलने वाले का ऐसा ही अन्जाम होगा। आईन्दा, हमारी बहू-बेटियों पर गन्दी नजरें डाली तो सारे धर्मपुरी वालों की आंखें फोड़ दी जायेंगी।

तुम्हारा जानी दुश्मन—हैदर अली

श्याम के मां-बाप ने जब अपने जिगर के टुकड़े के टुकड़ों को देखा तो मानो उन पर आकाशीय बिजली ही टूट पड़ी। मां प्रेमवती का कलेजा ऐसा चाक हुआ कि वो कभी ना उठ पाने के लिये जमीन पर गिर पड़ी।

पिता देवेन्द्र को दिल का दौरा पड़ गया। उसको कुछ गांव वाले ट्रेक्टर ट्रॉली में लादकर करीबी कस्बे के हॉस्पिटल में ले गये।

श्याम की लाश के टुकड़ों को देखकर व पत्थर पर खून से लिखे गये भड़काऊ सन्देश को पढ़कर धर्मपुरी वालों का खून खौल रहा था—भुजायें फड़क रही थीं, आंखों से चिंगारियां छुट रही थीं।

लेकिन कुछ बड़े-बूढ़े ये समझाने में लग गये कि कानून को हाथों में लेना उचित नहीं है—जोश में होश खोकर हिंसा करोगे तो पुलिस तथा अदालत के चक्कर में पड़ जाओगे और लड़ाई में स्वयं भी तो घायल होओगे, जान भी जा सकती है।

"तो फिर?"

"पुलिस में रिपोर्ट करो ना—कानून श्याम के हत्यारों को सजा देगा।"

लेकिन...!

हिन्दू मोर्चा के कथित एरिया कमाण्डर स्वामी ओमवेश ने आकर वातावरण बिगाड़ दिया। गांव वालों को खूब जली-कटी सुनाई। कहा कि कुछ हिन्दू इतने कायर हैं कि उनके कारण हिन्दू लगातार पिट रहे हैं और दुश्मन हावी होते जा रहे हैं। यदि ऐसा ही चलता रहा तो गुलाम हो जाओगे। दुश्मनों को शरण देने वाले तो पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, इराक, ईरान जैसे कई मुल्क हैं—लेकिन तुम लोग कहां जाओगे? चूड़ियां उतार फेंको और राम-कृष्ण के वंशज बनकर हथियार उठा लो—राम-कृष्ण के वंशज बनकर टूट पड़ो। दुश्मनों पर कहर बनकर टूट पड़ो।"

दो जीपों में काफी हथियार लाये गये थे, जोकि धर्मपुरी वालों को बांटे गये तथा उन्हें विश्वास दिलाया गया कि आवश्यकता पड़ने पर हिन्दू मोर्चा के लड़ाके उनकी मदद तथा रक्षा को आ जायेंगे।

चिंगारियों में खूब घी और पैट्रोल डालकर शोलों को भड़का दिया गया।

धर्मपुरी के ढाई सौ लोग हथियारों से लैस होकर अकबरपुर की तरफ कूच कर गये।

❑❑❑

❑❑❑

अकबरपुर गांव के बाहरी हिस्से में एक मस्जिद थी, जिसके बाहर रेशमा की निःवस्त्र लाश डाली गई थी।

जिस्म पर दांतों व नाखूनों के गहरे निशान थे, जो इस बात की चुगली खा रहे थे कि रेशमा के साथ पाशविक ढंग से बलात्कार किया गया था।

लाश की आंखें निकाल ली गई थीं तथा स्तन काट दिये गये थे। साथ ही मस्जिद की दीवार पर खून से लिखा गया था—

हमारे गांव के भोले-भाले लड़के को इस चरित्रहीन लड़की ने बहला-फुसला कर भ्रष्ट कर दिया था—उसको अपने साथ भगा ले गई थी। इसको इसकी करनी की सजा दे दी गई है।

ये तो सिर्फ शुरूआत ही है। तुम्हारी बाकी की बहू-बेटियों के साथ भी ऐसा करेंगे। हम पूरी तैयारियों के साथ आ रहे हैं, देखते हैं कि तुम अपनी बहू-बेटियों को कैसे बचा पाते हो!

धर्मपुरी के शेर के बच्चे

वहां आग लगाने के लिये मुस्लिम मोर्चा का एरिया कमाण्डर जावेद अली आ पहुंचा। उसने ऐसा दर्शाया कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों पर सरकार, पुलिस तथा मिलिट्री वाले भी जुल्मो-सितम करते हैं। उनकी सपोर्ट मिलती है, इसलिये हिन्दू भी जब-तब अत्याचार करते रहते हैं। हिन्दू का लड़का उनकी बेटी को बहला-फुसला कर भगा ले गया। ऊपर से सितम ये कि हिन्दुओं ने रेशमा को ही सजा दी—उसके साथ सामूहिक बलात्कार करके उसकी लाश की दुर्गति की—ऊपर से अकबरपुर की बाकी बहू-बेटियों के साथ भी बलात्कार करने की धमकी देकर उनको ललकारा गया है। अगर हथियार ना उठाये तो दी गई धमकी को पूरा कर डालेंगे दुश्मन और वो लोग किसी को भी मुंह दिखलाने के काबिल ना रहेंगे।

वहां पर भी हथियार बांटे गये।

मस्जिद में नमाज पढ़कर रेशमा की लाश का कब्रिस्तान में अन्तिम-संस्कार किया गया और फिर वो लोग हथियार उठाकर निकल पड़े।

❑❑❑

❑❑❑

अकबरपुर तथा धर्मपुरी के बीचों-बीच दोनों गांव वालों का आमना-सामना हो गया। खून जोश मारने लगा।

हथियार लहराये जाने लगे।

"नारा-ए-तदबीर...अल्लाह हो अकबर...!"

"जयकारा वीर बजरंगी...हर-हर महादेव!"

"नारा-ए-तदबीर...अल्लाह हो अकबर...!"

"जयकारा वीर बजरंगी...हर-हर महादेव...!"

धांय...धांय...।

धांय...धांय!

दोनों तरफ से गोलियां चलने लगीं।

एक-दूसरे पर तलवारों, बल्लम, कुल्हाड़ी इत्यादि से भी वार होने लगे।

वायुमण्डल में चीखें गूंजने लगीं।

लाशें बिछने लगीं।

घायल चाहे धर्मपुरी वाले हो रहे हों, या फिर अकबरपुर वाले—लेकिन खून मानव का ही बह रहा था।

दो सौ लोग मारे गये, जबकि साढ़े तीन सौ घायल थे तथा मारे पीड़ा के चीख रहे थे, कराह रहे थे।

दो जीपों में हिन्दू मोर्चा वाले तथा दो जीपों में मुस्लिम फ्रन्ट वाले वहां आ पहुंचे।

पांचवी जीप भी आई—उसमें से हफीज काना उतरा...आतंकी संगठन 'ब्लास्ट' का कमाण्डर!

"देखते क्या हो...?" वह बुलन्द आवाज में बोला, "जितने भी जख्मी लोग पड़े हैं, उनको भी हलाक कर दो! कोई भी जिन्दा नहीं बचना चाहिये...।"

बस, फिर क्या था!

हथियार निकल आये—गोलियां चलने लगीं।

मरने से पूर्व गोलियों का शिकार होने वाले ये देखकर आश्चर्यचकित हुये कि हिन्दू मोर्चा तथा मुस्लिम फ्रन्ट के लोग मिलजुलकर उन लोगों की जान ले रहे थे।

आसमान की तरफ चेहरा उठाकर हफीज काना ने बुलन्द किस्म का ठहाका लगाया तथा फिर मरने वालों से बोला, "बेवकूफ हो तुम हिन्दुस्तान वालों। दूसरों के बहकावे में आ जाते हो, और अपना भला-बुरा नहीं सोचते हो। धर्म या मजहब के नाम पर तुम लोगों के दिलों में नफरत के बीज बोना कितना आसान है। तभी अंग्रेजों ने तुम पर दो सौ सालों तक हुकूमत की थी। हा...हा...हा...।"

❑❑❑

❑❑❑

हफीज काना के बनाये प्लान के मुताबिक ही 'ब्लास्ट' के लोगों ने धर्मपुरी तथा अकबरपुर की घटना को बढ़ा-चढ़ाकर आस-पास के गांवों में फैला दिया।

हिन्दुओं की बस्ती में हिन्दू मोर्चा वाले बनकर उन लोगों ने प्रचारित किया कि अकबरपुर के मुसलमानों ने धर्मपुरी वालों के साथ जमकर मार-काट की थी। मुस्लिम बस्तियों में मुस्लिम मोर्चा वाले बनकर ये प्रचारित किया कि अकबरपुर के लोगों को धर्मपुरी वालों ने जमकर कत्ल किया तथा उनकी बहू-बेटियों की इज्जत के साथ भी खिलवाड़ किया।

ये भी प्रचारित किया कि हिन्दुओं ने मुसलमानों को सबक सिखाने के लिये बाहर से आदमी तथा हथियार मंगवाये हैं—या मुसलमानों ने हिन्दुओं से लड़ने के लिये कश्मीर से आतंकी और हथियार मंगवाये हैं—उन लोगों ने कमर नहीं कसी तो उनका संहार कर दिया जायेगा।

और फिर आतंकियों ने हिन्दू बनकर खेतों में काम कर रहे मुस्लिमों पर हमले बोले तो मुस्लिम बनकर हिन्दुओं पर भी हमले बोले।

बसों तथा ट्रेक्टर ट्रॉलियों से उतारकर निर्दोष हिन्दू-मुस्लिमों की हत्याएं की गई।

परिणाम स्वरूप हिन्दू-मुस्लिमों ने हथियार उठा लिये तथा एक-दूसरे पर हमले करने लगे।

जिन लोगों की दूसरे सम्प्रदाय के मुकाबले संख्या कम थी, वो अपने घर-बार छोड़कर दूर-दराज की रिश्तेदारियों में या शहरों में भाग गये।

पुलिस से स्थिति नहीं सम्भली तो सरकार ने सेना की भी मदद ली।

सेना ने गांवों की स्थिति सम्भाली तो दंगों की आग कस्बों व शहरों में पहुंच गई।

मुम्बई भी साम्प्रदायिक दंगों की चपेट में आने से बच नहीं पाया। मुम्बई के उन चार क्षेत्रों में कर्फ्यू लगा दिया गया, जिनमें हिन्दू-मुस्लिमों की मिश्रित आबादी थी।

एक क्षेत्र में तो सेना ने देखते ही गोली मार देने की घोषणा कर दी।

राघव राजवंशी तथा उसका परिवार भी दंगाइयों की चपेट में आ गया।

❑❑❑

❑❑❑

हुआ ये था कि क्षेत्र में तनाव होने पर राघव राजवंशी के पड़ोस में रहने वाले मिर्जा अली के घर पर पथराव हुआ था तथा भीड़ ने उसके घर में आग लगाने की भी चेष्टा की थी—लेकिन राघव ने वहां पहुंचकर तथा हाथ-पैर जोड़कर उत्तेजित युवकों की भीड़ को वहां से भेजा। मिर्जा अली इतना भयभीत था कि वो परिवार के साथ घर छोड़कर कहीं और चले जाना

चाहता था—लेकिन राघव ने कहा था कि दूसरे क्षेत्रों में काफी हिंसा हो रही है, इसलिये वो बाहर जाने का खतरा ना उठायें और उसके घर चलकर रहें। राघव मिर्जा अली, उसकी बीवी, बेटे, बहू तथा बेटी को अपने घर पर ले आया था।

रात के दो बजे शोर-शराबा हुआ।

केसरिया रंग के कुर्ते-पाजामे वाले दो दर्जन हथियारबन्द युवक थे। उन्होंने स्वयं को हिन्दू मोर्चा के कार्यकर्ता बतलाया तथा राघव से मांग की कि वो मुसलमान परिवार उनके हवाले कर दें—वर्ना वो दरवाजे तोड़कर भीतर घुसेंगे और राघव के परिवार को भी खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

राघव ने मिर्जा अली परिवार को कोठी के गुप्त तहखाने में पहुंचा दिया तथा बेटे अजय, बहू करिश्मा व नौकर वंशी को बोल दिया कि...कुछ भी हो जाये, लेकिन मिर्जा अली परिवार का पता नहीं देना है।

दरवाजे तोड़कर दंगाई भीतर आये तो सभी ने एक सुर में यही कहा कि मिर्जा अली का परिवार शाम को ही उनके घर में चला गया था, लेकिन दंगाइयों ने पूरी कोठी की तलाशी ली तथा किसी के ना मिलने पर राघव, अजय, करिश्मा व वंशी पर ये कहकर हमला बोल दिया कि उन्होंने मुस्लिम परिवार को शरण देने का जुर्म किया है। पुलिस आ गई तो वो चारों बचे तथा दंगाई भाग .नकल—लेकिन एक दंगाई को इन्सपैक्टर अनिल यादव ने दबोच ही लिया।

फिर ऐसी घटना घटीं कि अनिल यादव ने केशव को फोन पर बतलाया।

केशव राजन व करतार सिंह के साथ पुलिस स्टेशन आ पहुंचा।

पुलिस स्टेशन के प्रांगण में केसरिया कुर्ता-पाजामा वाले युवक की लाश रखी हुई थी।

"ये ही है वो?" पूछा केशव ने।

"जी...पण्डित जी... ।" विल्स की सिगरेट में कश मारकर बोला अनिल यादव, "बाकी हमलावर तो फायरिंग करते हुये भाग निकले थे—लेकिन मैंने इसके कन्धे पर गोली मारी थी तो इसकी रिवॉल्वर छूट गई थी और इसको गिरते ही दबोच लिया था। लेकिन पुलिस स्टेशन आकर देखा तो ये जीप में मरा बैठा था। इसके हाथों को पीठ पीछे करके हथकड़ियां लगा दी थीं, इसके कन्धे पर मैंने जो गोली चलाई थी, वो मांस को छीलते हुये निकल गई थी। दंगों की वजह से जीप में फर्स्ट एड बॉक्स रखा हुआ था और एक डॉक्टर भी साथ में था। उसने इसकी मल्हम-पट्टी कर दी थी। डॉक्टर ने ये दावा किया था कि कन्धे की मामूली चोट के कारण

इसकी जान नहीं जा सकती। उसने इसका एग्जामिन किया था, लेकिन वो बतला नहीं पाया कि ये क्यों मरा? चौंकने वाली बात ये है कि...ये मुस्लिम है...।"

"मुस्लिम...?" चौंककर बोला राजन, "लेकिन राघव जी के घर पर तो हिन्दू मोर्चा के लोगों ने हमला बोला था?"

"ये की चक्कर है प्राहवा जी...?" करतार सिंह भी केशव से बोला, "हिन्दू मोर्चा का कोई बन्दा मुस्लिम कैसे हो सकता है?"

केशव ने झुककर युवक को चैक किया, फिर सीधे खड़े होकर बोला, "हां...ये मुस्लिम ही है। इसके माथे पर काले रंग का गोल निशान भी है, जो कि नियमित रूप से नमाज अदा करने वाले के माथे पर बन जाता है। गड़बड़ी तो है। क्योंकि धारावी इलाके में पुलिस मुठभेड़ में मुस्लिम फ्रन्ट का एक युवक मारा गया है और वो हिन्दू निकला है। यानि कोई खेल खेला जा रहा है—साजिश रची गई है। हिन्दू मोर्चा और मुस्लिम फ्रन्ट को कोई एक ही दिमाग संचालित कर रहा है। हिन्दू और मुस्लिमों का इस्तेमाल किया जा रहा है। कहीं पर हिन्दू युवकों को मुस्लिम फ्रन्ट वाला बना दिया जाता है तो कहीं पर मुस्लिम युवकों को हिन्दू मोर्चा वाला बना दिया जाता है। इस मुस्लिम युवक को हिन्दू मोर्चा वाला बनाया गया था। इस साजिश की गहराई में उतरकर सच्चाई को पकड़ना ही होगा।"

"ये काम तो आप ही करेंगे पण्डित जी...।" बोला अनिल यादव, "लेकिन ये युवक मरा कैसे?"

"इसके मुंह में पोटेशियम सायनाइड जहर का कैप्सूल था। गिरफ्तारी के बाद इसने कैप्सूल चबाकर आत्महत्या कर ली। शायद ट्रेनिंग के वास्ते ये पाकिस्तान गया होगा। वहां आई०एस०आई० के कैम्प में इसको फिदायीन यानि आत्मघाती बनाया गया होगा। ताकि पकड़े जाने पर ये आत्महत्या कर ले और कोई राज न उगले। या जरूरत पड़ने पर ये लोग सूसाइड बम बनकर धमाका करें और अपने साथ दूसरे लोगों की भी जान ले सकें। हालात गम्भीर हैं। कुछ ना कुछ तो करना ही होगा। कोशिश करो अनिल भाई कि इस युवक की शिनाख्त हो सके। पता लगाने की चेष्टा करो कि ये कौन है, कहां का रहने वाला है?"

❑❑❑

❑❑❑

बाईस वर्षीय रुकैया ने हाथों को जोड़कर अनिल यादव के साथ आये केशव, राजन तथा करतार सिंह का अभिवादन किया तथा उन लोगों को पूरे सम्मान के साथ बिठाया।

फूटे-फूटे व पुराने फर्नीचर वाला कमरा था वो। केशव एक पुरानी कुर्सी पर, तो राजन, करतार सिंह व अनिल यादव गन्दे बिस्तर वाली ढीली-ढाली चारपाई पर बैठे तो चारपाई यूं ही चरमराई कि मानो टूट ही जायेगी।

अपने दो वर्षीय बेटे को अपनी बूढ़ी सास के हवाले करके रुकैया ने उससे दबी आवाज में कहा कि वो चाय व नाश्ते के लिये पड़ोस की जरीना भाभी को बुलवा ले।

"आप तो अपने मुल्क की बहुत बड़ी हस्ती हैं पण्डित जी...।" वह बोली, "मैंने आपके कई नॉवेल पढ़े हैं। उनमें शुक्ला जी और सरदार जी का भी जिक्र है। यकीन नहीं होता कि आप लोग हमारे गरीबखाने पर तशरीफ लाये हैं। इन्सपैक्टर साहब ने मुझे मेरे शौहर के बारे में बतलाया था तो मुझे कोई हैरत नहीं हुई थी, क्योंकि वो जिस राह पर चल निकले थे, उसकी मन्जिल मौत और तबाही ही हो सकती है। मैंने और मेरी सास ने उन्हें बहुत समझाया था, लेकिन वो नहीं सुनते थे। आप चारमीनार वाली सिगरेट नहीं पी रहे हैं पण्डित जी। उपन्यासों में तो आप खूब पीते हैं—गोल्डन कलर के लाइटर से सुलगाकर...आप पी सकते हैं, मेरे शौहर चेन स्मोकर थे। ससुर भी बीड़ी पीते हैं। मायके में अब्बू और ताया भी पीते हैं। मुझे कोई परेशानी ना होगी...।"

केशव ने मुस्कराते हुये चारमीनार की डिब्बी व गोल्डन कलर का लाइटर निकाल लिया।

अनिल यादव ने भी विल्स की सिगरेट सुलगा ली।

"मुझे नासिर की मौत का दुख है रुकैया...।" सिगरेट में कश लगाकर कहा केशव ने, "उसने गिरफ्तार होने पर पोटेशियम सायनाइड वाला कैप्सूल चबाकर खुदकुशी कर ली। मुझे बतलाओगी कि वो आई०एस०आई० के साथ कैसे जुड़ा था?"

"वो रईश बनना चाहते थे। ऑटो रिक्शा चलाकर काफी कमा लेते थे, लेकिन उन्हें तो रईश बनना था। हाजी इस्लाम ने बहला-फुसलाकर उन्हें आई०एस०आई० से जोड़ दिया था और उन्हें घर के खर्चे के वास्ते दो लाख रुपये देकर ट्रेनिंग के वास्ते पाकिस्तान भेज दिया था...।"

"ये हाजी इस्लाम वो ही है ना...जो छह महीने पहले ट्रेन से कटकर मर गया था?"

"हां, वो ही पण्डित जी... उसके पीछे कुछ लोग पड़े थे—उस पर फायरिंग कर रहे थे। उनसे बचने के वास्ते वो रेलवे ट्रेक पार कर रहा था

कि ट्रेन की चपेट में आकर मर गया था। खैर, मेरे शौहर ने पाकिस्तान में सालभर तक ट्रेनिंग ली थी। वो एक महीना पहले ही लौटे थे। उन्हें बतलाया गया था कि उन्हें आई०एस०आई० से जुड़े 'ब्लास्ट' के वास्ते काम करना है, जिसका कमाण्डर हफीज काना है। वो हफीज काना के अन्डर में काम कर रहे थे। हफीज काना आई०एस०आई० के इंडियन कमाण्डर किंग कोबरा के बनाये प्लान पर अमल कर रहा है। प्लान बहुत ही खतरनाक है...।"

"क्या प्लान है रुकैया?"

"हफीज काना ने हिन्दू मोर्चा और मुस्लिम फ्रन्ट बनाये हैं। उसके आदमी हिन्दू मोर्चा वाले बनकर हिन्दुओं को भड़काते हैं और मुस्लिम फ्रन्ट वाले बनकर मुस्लिमों को भड़काते हैं। मकसद है दोनों के बीच नफरत पैदा करके दंगे कराना। वैसे हिन्दू-मुस्लिम के हुलिये में 'ब्लास्ट' के लोग ही हिन्दू मोर्चा या मुस्लिम फ्रन्ट वाले बनकर दंगे करवा रहे हैं। वो कहीं पर भी वारदात को अन्जाम देकर रफूचक्कर हो जाते हैं—भुगतान पड़ता है हिन्दू-मुसलमानों को! हफीज काना के कहने पर ही वो हिन्दू मोर्चा वाले बनकर गये होंगे और पकड़े जाने पर खुदकुशी कर ली होगी...।"

"क्या तुम हफीज काना का पता जानती हो रुकैया...?"

"सॉरी...मैं नहीं जानती।"

"नासिर से सम्पर्क कैसे होता था?"

"कोई मिलने आता था और बतला जाता था कि उन्हें कहां पर पहुंचना है। वो वहां जाते थे तो कोई उन्हें बतलाता था कि उन्हें क्या करना है या उन्हें किसी खुफिया जगह पर पहुंचने को कहा जाता था—जहां पर उन्हें प्लान दिया जाता था। उन्होंने मुझे ये बतलाया था कि हफीज काना ने हिन्दू मोर्चा की जिम्मेदारी किसी सलीम को और मुस्लिम फ्रन्ट की जिम्मेदारी किसी अतीक को सौंपी है। सलीम ने स्वामी ओमवेश का हुलिया बनाया है और अतीक ने जावेद अली का। वो दोनों उनके बचपन के दोस्त हैं और आपस में सगे भाई हैं। वो हाशिमपुरा के रहने वाले हैं...।"

"शुक्रिया, रुकैया...बहुत-बहुत शुक्रिया...तुमने ये बहुत ही काम की जानकारी मुहैया कराई है।"

"नहीं, शुक्रिया की जरूरत नहीं है पण्डित जी। मेरे शौहर ने खुदकुशी करने की धमकी देकर मुझे चुप रहने पर मजबूर कर दिया था। लेकिन वो खुदकुशी कर चुके हैं तो मैं चाहती हूं कि हफीज काना, उसके 'ब्लास्ट' और पाकिस्तान के हाथों बिककर हिन्दुस्तान के साथ वतन फरोशी...गद्दारी

करने वालों को सजा मिले। ताकि दंगों की आग बुझे और अपने मुल्क में चैन-ओ-अमन कायम हो। अपना हिन्दुस्तान दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करे, ये कारनामा आपको ही अन्जाम देना है पण्डित जी। मैं खुदा से दुआ करती हूं कि वो आपको इस नेक मकसद में कामयाबी अदा करे...।"

केशव, राजन, करतार सिंह तथा अनिल यादव रुकैया के आभारी हुये तथा चाय-नाश्ता लेने पर वहां से रुखसत हुये।

अब उन लोगों के निशाने पर सलीम और अतीक थे—जो कि हाशिमपुरा के रहने वाले थे।

❑❑❑

❑❑❑

सलीम स्वामी ओमवेश के भेष में था तो अतीक जावेद अली के भेष में था। दोनों एक साथ पुराने किले में पहुंचे।

हालांकि आधी रात का समय था—लेकिन आसमान में खिले चन्द्रमा ने दिल खोलकर दूधिया चांदनी बिखेरी हुई थी।

चूंकि आधी रात का समय था, इसलिये किले में कोई भी नहीं था...चहुं ओर सन्नाटा पसरा हुआ था।

"क्या वो आयेगा?" फुसफुसाया सलीम।

"क्यों नहीं आयेगा? हमने ट्रांसमीटर पर हफीज काना को बोला है कि मामला बहुत गम्भीर है और हमारा उससे मिलना बेहद जरूरी है...।"

"कू...कूऽऽऽ।"

कूऽऽऽ।

तभी आसपास ही कोई कोयल कूकी।

"हनीफ काना आ गया है, उसे सिग्नल दो...।"

अतीक ने कहा तो सलीम भी मुंह से कोयल के कूकने जैसी आवाज निकालने लगा।

एक टूटी हुई दीवार के ऊपर हफीज काना किसी जिन्न की मानिन्द ही नमूदार हुआ और फिर चोट लगने की परवाह किये बिना ही पन्द्रह फुट की ऊंचाई से नीचे कूद गया।

मानो कोई बिल्ली ही कूदी हो...उसके पैर जूतों समेत जमीन से टकराये, लेकिन कोई आवाज उत्पन्न नहीं हुई।

वह काले रंग की पैन्ट के साथ काले रंग का ही ओवरकोट पहने हुये था।

"क्या बात है...? तुमने ट्रांसमीटर पर कहा कि बहुत ही जरूरी बात करनी है–जिसके वास्ते मुलाकात होनी लाजिमी है। बोलो, क्या बात है?"

सलीम ने अतीक को बोलने का इशारा किया तो अतीक गला खंखार कर बोला, "नासिर तो खुदकुशी करके मर गया कमाण्डर–लेकिन अपनी नादानी से वो हम दोनों के वास्ते मुसीबत खड़ी कर गया है।"

"क्या मतलब?"

"मतलब ये कि आपके हुक्म पर मैं नासिर के घर पर एक लाख रुपये देने गया था तो वहां मैंने दिमाग के जादूगर केशव पण्डित को उसके शागिर्दों राजन शुक्ला और करतार सिंह के साथ देखा–साथ में इन्सपैक्टर अनिल यादव भी था। तब मैं काले बुर्के में था। मैंने एक खिड़की से कान लगाकर भीतर चल रही बातें सुनीं। नासिर ने अपनी बीवी रुकैया को हम दोनों के बारे में बतला दिया था और रुकैया ने ये बात केशव पण्डित, राजन शुक्ला, करतार सिंह और अनिल यादव को बतलाई। ये भी बतलाया कि सलीम स्वामी ओमवेश के भेष में हिन्दू मोर्चा सम्भाल रहा है तो मैं जावेद अली के रूप में मुस्लिम फ्रन्ट सम्भाल रहा हूं और हम दोनों हाशिमपुरा के रहने वाले हैं...सगे भाई हैं।"

"हरामजादा...।" हफीज काना हथेली पर घूंसा मारकर क्रोधित भाव से बोला, "ट्रेनिंग के दौरान ही सभी को ताकीद की जाती है कि कोई भी बात अपने घरवालों को नहीं बतलानी है–लेकिन नासिर ने अपनी बीवी से कोई पर्दा नहीं रखा था। रुकैया ने केशव पण्डित को तुम दोनों के बारे में जानकारी दे दी...।"

"मुझे अन्दाजा हो गया था कि केशव पण्डित अपनी टीम के साथ हाशिमपुरा पहुंचेगा–मुझे और सलीम को दबोचने के इरादे से। मैंने फौरन ही सलीम को फोन करके सारी बातें बतला दीं। हम दोनों अपने घर नहीं गये। केशव पण्डित नाम की मुसीबत हम दोनों के पीछे पड़ चुकी है कमाण्डर साहब! इसीलिये हम दोनों आपसे मिलना चाहते थे। अब आप ही हमें बतलायें कि हमें क्या करना चाहिये?"

❑❑❑

❑❑❑

कोई पांच सेकेण्ड तक सोचने पर हफीज काना ने काले ओवरकोट की जेब से रिवॉल्वर निकालकर सलीम तथा अतीक पर तान दी।

दोनों हड़बड़ाये, सकपकाये, गड़बड़ाये तथा घबराये।

"न...नहीं...!"

"ये...ये क्या...?"

"मुझे मजबूरी में ही ये कदम उठाना पड़ रहा है। तुम मेरे काम के बन्दे हो। तुम दोनों ने हिन्दू मोर्चा और मुस्लिम फ्रन्ट बढ़िया जिम्मेदारी से सम्भाला हुआ है, लेकिन क्या करूं? तुम दोनों केशव पण्डित की नजरों में आ गये हो। वो तुम दोनों को पाताल से भी खोदकर निकाल लेगा और सारे प्लान की ऐसी की तैसी कर डालेगा। तुम दोनों का शहीद होना जरूरी हो गया है। डोन्ट वरी...तुम्हारे घरवालों को मोटी रकम दे दी जायेगी। आंखें बन्द करके खुदा को याद करो और फिर जन्नत नशीं हो जाओ...।"

धांयऽऽऽ।

"अ...आह...।"

कलाई पर गोली लगने पर हफीज चींखा।

उसके हाथ से निकली रिवॉल्वर को अतीक ने हवा में ही कुशल फील्डर की मानिन्द कैच कर लिया तथा फिर हफीज पर तान दिया।

जख्मी कलाई को दबोचे हुये हफीज काना कराहते हुये बोला, "धोखा दिया तुम दोनों ने...किसने चलाई मुझ पर गोली?"

"मैंने...।"

रिवॉल्वर की नाल में फूंक मारते हुये केशव सामने आ गया।

"त...तुम...?"

पहले...चौंका हफीज...फिर उसकी इकलौती आंख उस अंगारे की मानिन्द ही दहकने लगी, जिसे जोर-जोर की फूंक मारी जा रही हो।

"पहचाना मुझे काने?"

हफीज काने का चेहरा इलैक्ट्रिक हीटर की मानिन्द ही सुर्ख पड़कर दहकने लगा, तपने लगा–"तुझे कैसे भूल सकता हूं मैं केशव पण्डित...?" मानो वह प्रत्येक शब्द को हथौड़े से पीट-पीटकर मुंह से बाहर फेंक रहा था, "मेरी ये आंख तूने ही फोड़ी थी और मुझे पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया था, मुझे जेल से छुड़ा ना लिया गया होता तो...फांसी पर लटका दिया जाता, लेकिन तू यहां कैसे? सलीम और अतीक ने गद्दारी की है क्या?"

"नहीं, वो दोनों तो मेरे टॉर्चर रूम में कैद हैं। उनका ब्रेन वाश किया गया है...।"

"क्या मतलब? फिर ये दोनों कौन हैं?"

"सलीम उर्फ स्वामी ओमवेश के रूप में सरदार जी हैं...करतार

सिंह। जबकि अतीक उर्फ जावेद अली के रूप में राजन शुक्ला है।"

"ओह...!" हफीज काना चकित भाव से स्वामी ओमवेश बने करतार सिंह तथा जावेद अली उर्फ अतीक बने राजन को देखने लगा। दोनों ने मुस्कराते हुये नकली विग, फेसमास्क व दाढ़ी-मूंछ उतारकर अपने वास्तविक रूप के दर्शन करा दिये।

रिवॉल्वर करतार सिंह को थमाकर केशव ने चारमीनार की सिगरेट सुलगा ली तथा फिर कश लगाकर लुटे-पिटे से खड़े हफीज काना की परिक्रमा करते हुये कहा—"सलीम और अतीक को उसके घर से दबोचा था हमने, दोनों सो रहे थे। दरवाजे के 'की-हॉल' से गैस छोड़कर उन्हें बेहोश कर दिया था। उनके मुंह से पोटेशियम सायनाइड वाले कैप्सूल निकाल लिये थे और लोहे की कुर्सियों पर बांधकर तेज करंट दे दिया गया तो सारे कस-बल निकल गये। उन्हें जहरीले सांप से कैंचुअे बनने में समय नहीं लगा। उन्हें हिप्नोटाइज करके सारी जानकारी ली गई। पुराने साबुन के गोदाम पर गैस छोड़कर चार दर्जन आतंकियों को बेहोश करके पकड़ लिया गया। उनके भी पोटेशियम सायनाइड वाले कैप्सूल निकाल लिये गये। भारी मात्रा में हथियार और बम बरामद किये गये हैं। फिर सलीम और अतीक की आवाज बनाकर उनके ट्रांसमीटर पर मैंने तुझसे बात की थी और तुझे यहां बुलवा लिया। कुल मिलाकर तेरे संगठन 'ब्लास्ट' का खात्मा हो गया है। हिन्दू मोर्चा और मुस्लिम फ्रन्ट वाले बनकर हिंसा करने वालों को पकड़ लिया गया है। उनका ब्रेनवाश किया जा रहा है। कल सुबह उन्हें मीडिया के सामने पेश किया जायेगा। न्यूज चैनल्स के माध्यम से वे लोग बतलायेंगे कि ब्लास्ट के कमाण्डर हफीज काना के कहने पर वे लोग 'हिन्दू मोर्चा' और 'मुस्लिम फ्रन्ट' वाले बनकर हिन्दू-मुस्लिमों को भड़का रहे थे—हिंसा फैला रहे थे। बेचारा तू...बेचारा किंग कोबरा। खैर, किंग कोबरा की बारी तो बाद में आयेगी। पहले तेरी बारी है काने। तेरा खेल खत्म और पैसा हजम...।"

"केशव...मेरा खेल खत्म हो चुका है केशव पण्डित...।" चोटिल नाग-सा फुंफकार उठा-हफीज काना, "लेकिन अपने साथ-साथ मैं तेरा भी खेल खराब कर दूंगा। हम तो डूबेंगे सनम...तुमको भी ले डूबेंगे।"

इतना कहने पर हफीज काना ने एक झटके के साथ कोट के बटन खोल दिये तथा पेट पर बन्धी आर०डी०एक्स० बम वाली बैल्ट पर लगे लाल रंग के बटन पर तर्जनी उंगली रखकर बोला, "...ये बहुत ही

शक्तिशाली बम है पण्डित। इस बटन के दबते ही जोरदार धमाका होगा...धड़ाम...कम से कम सौ मीटर के घेरे में सब कुछ उड़ जायेगा...तबाह हो जायेगा, मेरे साथ तेरे और तेरे इन दोनों चेलों के भी परखच्चे उड़ जायेंगे...।"

केशव ने उंगलियों के बीच फंसी सिगरेट को जमीन पर गिरा दिया तथा बायें हाथ में थमे लाइटर को दिखलाकर हफीज काना से बोला, "ये देख रहा है तू—क्या है ये?"

"लाइटर है, थोड़ी देर पहले तूने इससे सिगरेट सुलगाई थी। लेकिन तू मुझे बातों में मत उलझा केशव पण्डित। मैं तेरी किसी चाल में फंसने वाला नहीं हूं। मैं तो इस दुनिया से जा ही रहा हूं—लेकिन अपने साथ तुझे और तेरे इन दोनों चेलों को भी साथ लेकर मारूंगा, मैं बटन दबाने जा रहा...!"

बस, इतना ही बोल पाया हफीज काना।

चैन-सा से काट दिये गये वृक्ष की मानिन्द ही वो गिरने को हुआ तो बला की फुर्ती के साथ केशव ने आगे बढ़कर उसको बायें हाथ से सम्भाल लिया तथा दायें हाथ से उसके हाथ को बम वाली बेल्ट से अलग कर दिया।

राजन ने भी बला की फुर्ती के साथ आगे बढ़कर हफीज के पेट पर बन्धी बम वाली बैल्ट को सावधानी बरतते हुये खोला तथा अपने कब्जे में ले लिया।

तब केशव ने हफीज काना की लाश को जमीन पर गिरा दिया।

"ऐ की होया...?" चकित करतार सिंह कौतूहलता में फंसा हुआ बोला, "...ये काना अचानक ही कैसे फ्यूज हो गया?"

"गुरुवर की कृपा से...।" उत्तर दिया राजन ने, "इन्होंने अपने लाइटर में लगा एक नन्हा-सा बटन दबाया तो लाइटर से निकली नन्हीं-सी पिन हफीज काना के गले में धंस गई। पिन दुनिया के सबसे घातक जहर पोटेशियमय सायनाइड से सनी हुई थी। पिन अन्दर...काने का दम बाहर...।"

"धन-धन वाहे गुरु! ये तो कमाल ही हो गया। मैं तो डर रहा सी...हफीज काना बटन दबाने जा रहा है...हुण की होगा? मान गये तुहान्नु प्राहवा जी...तुस्सी ग्रेट हो। काने ने सोच्चा वी नी होगा कि ओहदे नाल ऐसा वी हो सकता है। काना तो गया। हुण बारी है किंग कोबरा दी। देखो, ओहदी बैन्ड कब तक बजती है!"

❑❑❑
❑❑❑

सुबह के आठ बजे तक अखबारों तथा न्यूज चैनल के रिपोर्टर्स पुलिस हैडक्वार्टर के एक बड़े हॉल में पहुंच गये—जिनमें केशव के गुरु रमाकान्त की बेटी तथा इण्डिया न्यूज की रिपोर्टर माधवी चोपड़ा भी थी।

सभी मीडिया वाले दुविधा तथा सस्पेंस में फंसे हुये थे—क्योंकि उन्हें पुलिस हैडक्वार्टर पर किसी पुलिस अधिकारी ने नहीं, बल्कि केशव ने बुलाया था।

केशव की इच्छा पर न्यूज चैनल्स वालों के कैमरे सैटेलाइट के माध्यम से वहां की रिकॉर्डिंग अपने चैनल्स तक पहुंचा रहे थे तथा उनके चैनल्स उस प्रोग्राम का लाइव टेलीकास्ट कर रहे थे।

पुलिस के कई बड़े अधिकारियों के साथ बैठे केशव ने सर्वप्रथम सभी मीडिया वालों का आभार व्यक्त किया, फिर उन्हें बतलाने लगा कि आई०एस०आई० के इण्डियन कमाण्डर किंग कोबरा के अन्डर में आतंकी संगठन 'ब्लास्ट' कम कर रहा था—जिसका कमाण्डर हफीज काना नामक खूंखार आतंकी था, जो कि कल रात मारा गया है।

केशव ने बतलाया कि हफीज काना ने हिन्दू मोर्चा तथा मुस्लिम फ्रन्ट नामक दो छद्म संगठन बनाकर उनकी कमान सलीम उर्फ स्वामी ओमवेश तथा जावेद अली उर्फ अतीक को सौंपी थी—जोकि हिन्दू-मुस्लिमों को भड़का रहे थे और गांवों, कस्बों तथा शहरों में हिंसा व ताण्डव करा रहे थे—लेकिन एक आतंकी नासिर ने गिरफ्तारी होने पर खुदकुशी कर ली थी तथा उसकी बेबा रुकैया ने उसे सलीम तथा अतीक के बारे में जानकारी दी थी। उसने राजन, करतार सिंह के साथ मिलकर सलीम व अतीक को पकड़ा और उनसे जानकारियां निकालकर तीन दर्जन आतंकियों को भी पुलिस के साथ मिलकर पकड़ लिया गया।

फिर केशव ने सलीम तथा अतीक को पेश किया—जिनका ब्रेन वाश कर चुका था केशव। दोनों भाइयों ने कबूला कि वो पहले आई०एस०आई० से जुड़े थे तथा उन्होंने पाकिस्तान जाकर ट्रेनिंग ली थी। फिर उन्हें 'ब्लास्ट' में भर्ती करके हिन्दुस्तान भेजा गया। वो दोनों स्वामी ओमवेश तथा जावेद अली के रूप में हिन्दू मोर्चा तथा मुस्लिम फ्रन्ट सम्भाल रहे थे और उन्होंने अपने मिशन की शुरूआत धर्मपुरी गांव के श्याम तथा अकबरपुर की रेशमा से की थी। दोनों भाइयों ने सब कुछ सविस्तार बतलाया। फिर केशव ने कुछ आतंकियों को भी मीडिया वालों के सामने पेश किया, जिन्होंने बतलाया

कि वो मुस्लिमों के क्षेत्रों में हिन्दू भेष में तथा हिन्दुओं के क्षेत्र में मुस्लिमों के रूप में हिंसा का ताण्डव करते थे।

अन्त में केशव ने न्यूज चैनल्स के माध्यम से देशवासियों को बाहरी ताकतों से सावधान रहने तथा आपस में मिलकर रहने की अपील की। मीडिया वाले केशव की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे तो उधर टी०वी० पर एक न्यूज चैनल्स पर वो सब देखकर किंग कोबरा अंगारों पर लेट रहा था, चोटिल भाव से फुंफकारें मार रहा था।

❑❑❑
❑❑❑

मुम्बई के सेन्ट मेरी स्कूल पर काली पोशाक तथा काली नकाब वाले लोगों ने हमला बोला और स्वचालित हथियारों से सभी छः सिक्योरिटी गार्डस् को मार दिया।

उन्होंने दस फुट ऊंची चाहर दीवारी के बीच लगे लोहे के मजबूत व बड़े मेन गेट को भीतर से बन्द कर दिया तथा दो आतंकी वहीं पर तैनात हो गये। बाकी दस आतंकियों ने हवाई फायरिंग करके स्कूल के सभी टीचर्स, प्रिंसिपल तथा बाकी के स्टाफ समेत तीन सौ बच्चों को बन्धक बना लिया और स्कूल के सभी दरवाजे व खिड़कियां भीतर से बन्द कर दिये।

चूंकि मेन गेट के बाहर तैनात छह गार्ड्स को मारा गया था—सो बहुत से लोगों ने देखा था।

भगदड़ मच गई थी।

पुलिस तक खबर पहुंची।

बड़े अधिकारियों के साथ पुलिस फोर्स आ गई। लेकिन मेन गेट के भीतर तैनात दोनों आतंकियों ने दीवार के ऊपर से दो ग्रेन्ड फेंककर चेतावनी दे डाली कि अगर फोर्स ने भीतर घुसने की चेष्टा की तो स्कूल को बमों से उड़ा दिया जायेगा।

सो हड़कम्प मच गया।

मीडिया वालों ने वहां पहुंचकर न्यूज देनी शुरू की तो स्कूल के स्टाफ व स्टूडेन्टस् के परिजनों में घबराहट फैल गई—वो सभी स्कूल पर पहुंचकर सभी को सही-सलामत छुड़ाने की मांग करने लगे। प्रशासन के हाथ-पैर फूल गये।

सरकार भी बौखला गई।

होम मिनिस्टर ने स्कूल पर पहुंचकर मेन गेट के भीतर मौजूद दोनों आतंकियों से बात की तो उन्होंने कहा कि मुम्बई जेल में बन्द एक दर्जन

आतंकियों को रिहा करके सौ करोड़ रुपये के साथ विशेष विमान से अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में पहुंचाया जाये। उन लोगों को स्कूल की छत पर चार हेलीकॉप्टर चाहिये, जिनमें सवार होकर वो पैराशूट से किसी घने जंगल में उतर जायेंगे।

होम मिनिस्टर ने प्रधानमन्त्री, रक्षा मन्त्री तथा केन्द्रीय गृहमन्त्री से बात करने के लिये बारह घन्टे का समय ले लिया तथा प्रार्थना की कि किसी स्टूडेन्ट या टीचर्स को कोई नुकसान ना पहुंचाया जाये।

❑❑❑

❑❑❑

व्यवधान के लिये क्षमा करें!

हम केशव पण्डित एवं आशीर्वाद पण्डित के उपन्यासों में उच्च कोटि का कथानक व प्रकाशन देते आये हैं। हमारी मेहनत व लगन तथा आपके सहयोग व आशीर्वाद के फलस्वरूप ही आज 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' का नाम उपन्यास जगत में डंका बजा रहा है। आप 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यासों को पढ़कर सराहते हैं तथा आगामी उपन्यास की बेचैनी के साथ प्रतीक्षा करते हैं।

इसका कारण क्या है?

कारण बड़ा ही स्पष्ट है। जब आप उपन्यास पढ़ते हैं तो समय व पैसा खर्च करते हैं तथा बदले में अच्छे व उच्च कोटि के कथानक की आशा रखते हैं। 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के सभी उपन्यास आपकी कसौटी पर सदैव ही खरा सोना साबित हुए हैं।

तभी तो उपन्यास जगत में आज 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' एवं 'धीरज पॉकेट बुक्स' तथा 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' का स्थान सर्वोच्च है।

हमारी सफलता से बौखलाकर अन्य प्रकाशक लंगड़े घोड़े पर सवार होकर सफलता की मन्जिल स्पर्श करने के लिये निम्न स्तरीय तरीके अपनाने पर विवश हो गये हैं।

'केशव पण्डित' के नाम का लाभ उठाने के लिये वे छद्म नामों को जन्म देकर आपको धोखा देने के प्रयास में लीन हैं।

परन्तु 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' तथा उन मिलते-जुलते नामों वाले लेखकों में कितना अन्तर है, ये उन लोगों की सफलता से ही स्पष्ट हो गया है। परन्तु फिर भी यदा-कदा कुछ पाठक

भ्रम का शिकार हो जाते हैं। वो 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के भुलावे में दूसरे किसी भी उपन्यास को पढ़ सकते हैं तथा फिर अपना माथा पीट लेने पर विवश हो सकते हैं।

सो हमने आपकी सुविधा के लिये 'केशव पण्डित' के उपन्यासों के टाइटल-कवर के ऊपर भी 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम देना शुरू कर दिया है। कृपया आप 'केशव पण्डित' का उपन्यास लेते समय उपन्यास के कवर पर 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम अवश्य देख लें, ताकि आप माथा पीटने से बचे रहें।

आपका प्यार व आशीर्वाद ही 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' तथा 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' की सफलता की गारन्टी है। आप 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' व 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' देखकर उपन्यास खरीदेंगे तो आपको निराश नहीं होना पड़ेगा। हम दावे के साथ आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके पैसे व समय का समुचित प्रतिफल मिलेगा।

बस इतना ध्यान रखें कि दिमाग के जादूगर 'केशव पण्डित' के पूर्व प्रकाशित तथा नये उपन्यास अब केवल दो फर्म 'धीरज पॉकेट बुक्स' एवं 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से प्रकाशित होते हैं, अन्य कहीं से नहीं।

तथा आपके चहेते 'आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यास भी दो फर्म 'धीरज पॉकेट बुक्स' एवं 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से ही प्रकाशित होते हैं। अन्य कहीं से नहीं।

धन्यवाद!

प्रकाशक
धीरज पॉकेट बुक्स एवं
तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स

❑❑❑

❑❑❑

टी०वी० पर सेन्ट मेरी स्कूल वाली घटना की न्यूज सुनने पर केशव ने हफीज काना से बरामद ट्रांसमीटर पर किंग कोबरा से सम्पर्क करने की चेष्टा की तो...सफलता मिली—

"हां, बोल पण्डित...कैसे याद किया मुझे?"

लॉकेट-नुमा ट्रांसमीटर के मुंह को करीब रखकर बोला केशव, "तूने

आतंकियों से सेन्ट मेरी स्कूल पर हमला कराके घटिया हरकत की है किंग कोबरा...।"

"ये सब तेरी ही वजह से हुआ है केशव पण्डित...!"

लॉकेट के नन्हें स्पीकर से मानो किसी जहरीले व चोटिल नाग की ही फुंफकारें शब्दों में परिवर्तित होकर उभर रही थीं, "बहुत बड़ी चोट पहुंचाई है तूने मुझे और आई०एस०आई० को। हफीज कराने को मार दिया तूने। तीन दर्जन आतंकियों को पकड़कर ब्लास्ट का खात्मा ही कर दिया है। तुझे ही मानसिक पीड़ा पहुंचाने के लिये मैंने जेल में बन्द आतंकियों को मुक्त कराने का निर्णय लिया है। तेरी जानकारी के लिये बतला दूं कि सेन्ट मेरी स्कूल पर कब्जा करने वाले सारे आतंकी फिदायीन हैं। वो स्वयं को उड़ाने में और दूसरों को उड़ाने में संकोच नहीं करेंगे। उन्हें मैंने हुक्म दिया है कि जरा-सी गड़बड़ी होते ही सारे स्कूल को बमों से उड़ा डालें। इसलिये तू अपना दिमाग चलाने की बेवकूफी मत करना...भारत सरकार को मेरी डिमांड पूरी करनी ही होगी, उन दर्जनभर आतंकियों को सौ करोड़ रुपयों के साथ काबुल पहुंचाना ही होगा...।"

जब किंग कोबरा बोल रहा था तो एक बहुत ही धीमी आवाज सुनाई पड़ी।

केशव ने आंखें सिकोड़कर उस आवाज को ध्यान से सुना तो समझ में आया कि वो अनूप जलोटा का गाया हुआ भजन है..."कभी-कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े, जाना था गंगा पार प्रभु केवट की नाव चढ़े...।"

"इस बात का निर्णय तो आने वाला समय ही करेगा किंग कोबरा कि...क्या होता है।" केशव बोला, "बस तू इतना समझ ले कि जब किसी दीये का तेल खत्म होने लगता है तो उसकी लौ फडफड़ाने लगती है। तूने ये तो हरकत की है ना...समझ ले कि ये तेरी जिन्दगी की आखिरी मूवमेंट है। तेरा अन्त समय निकट है प्यारे...।"

बोलने पर केशव ने ट्रांसमीटर बन्द कर दिया और चारमीनार की सिगरेट सुलगाकर कमरे में चहलकदमी करने लगा।

"क्या बात है केशव...?" कमरे में चांदनी व श्वेता के साथ उपस्थित सोफिया बोली, "तुम अचानक ही इतने गम्भीर क्यों हो गये हो...?"

केशव ने अपने गुलाबी होंठों पर तर्जनी उंगली रखकर सोफिया को

खामोश रहने का इशारा किया तथा सिगरेट फूंकते हुये चहलकदमी-सी करने लगा।

उसके चौड़े मस्तक पर तीन सिलवटें उभरी हुई थीं—स्पष्ट था कि वो गहराई के साथ कुछ सोच रहा था।

मामले की गम्भीरता को समझते हुये सोफिया ने चांदनी व श्वेता को इशारा किया और उन दोनों के साथ उठकर बाहर चली गई—ताकि केशव की सोचों में कोई व्यवधान न आने पाये।

लगभग दस मिनट के विचार-मंथन के पश्चात् केशव ने कुर्सी पर बैठकर अपने मोबाइल फोन पर कोई नम्बर लगाया, लेकिन उस नम्बर का इस्तेमाल नहीं किया। उसने लॉकेट रूपी ट्रांसमीटर पर पुनः किंग कोबरा से कॉन्टेक्ट किया—

"केशव पण्डित कॉलिंग...केशव पण्डित कॉलिंग...।"

"हां, बोल पण्डित...!" किंग कोबरा की आवाज उभरी, "दोबारा क्यों याद किया मुझे? शायद धमकी या चेतावनी देने के लिये, लेकिन मैं तेरी धमकी से डरने वाला नहीं हूं पण्डित। तेरे देश की सरकार को मेरे दर्जनभर आतंकियों को छोड़ना ही होगा और सौ करोड़ रुपये भी देने होंगे। वरना सेन्ट मेरी स्कूल को सभी विद्यार्थियों और बाकी लोगों के साथ उड़ा दिया जायेगा। तू भी कुछ नहीं कर पायेगा...चाहे तो कुछ भी कोशिश कर सकता है केशव पण्डित...।"

केशव ने अपने फोन का ग्रीन रिसीवर वाला बटन दबा दिया और लॉकेट को अपने कान के करीब करके बोला, "हां, कोशिश तो करूंगा ही किंग कोबरा! मैं हाथ-पर-हाथ रखकर बैठने वालों में से नहीं हूं। ना तो किसी आतंकी को छोड़ा जायेगा—ना ही सौ करोड़ रुपये दिये जायेंगे... ना ही तेरे आतंकी सेन्ट मेरी स्कूल में ही कोई वारदात कर पायेंगे...।"

"ओहो! बहुत बड़ी बात बोल रहा है तू तो पण्डित...ऐसा कौन-सा जादू करेगा तू? हमें भी तो बतला दे...।"

'कभी-कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े...।'

"बतलाने की जरूरत नहीं है किंग कोबरा...।" केशव मुस्कराकर बोला, "क...कुछ करके दिखलाऊंगा न...।"

'जाना था गंगा पार प्रभु केवट की नाव चढ़े...।'

"क्या करेगा तू?"

"सब्र से काम ले! आज ही अपनी मुलाकात होने वाली है न...।" ट्रांसमीटर पर किंग कोबरा की आवाज के साथ 'भजन' सुनने पर केशव

ने फोन बन्द कर दिया तथा बोला, "...जब हम आमने-सामने होंगे तो...तब बातें करेंगे न...।"

"तू शायद मेरे साथ दिमाग का खेल, खेल रहा है केशव पण्डित--लेकिन मैं तेरे जाल में फंसने वाला नहीं हूं। तू सात जन्मों तक भी मुझ तक नहीं पहुंच पायेगा। तू कुछ भी करके ये पता नहीं लगा पायेगा कि किंग कोबरा कौन है।"

"इस बात का निर्णय आज ही हो जायेगा प्यारे! पलक-पावड़े बिछाने को तैयार रह। मैं आ रहा हूं...स्वागत की तैयारी कर...।"

❑❑❑

❑❑❑

राघव राजवंशी के क्षेत्र के लोगों ने राघव तथा इलैक्शन जीतकर विधायक बनने वाले सभी विधायकों के सम्मान का कार्यक्रम रखा था, जिसमें दावत का भी प्रबन्ध किया गया था।

क्षेत्र के इन्टर कॉलेज के बड़े मैदान में बड़ा पण्डाल व मंच बनाया गया था तथा उमड़ने वाली भीड़ का ख्याल करके कई टी०वी० सैट तथा एक बिग स्क्रीन भी लगाई गई थी--ताकि लोग उनके माध्यम से कार्यक्रम को साफ-साफ देख सकें। बाद में स्कूल में बड़े हॉल में दावत होनी थी। स्टेज पर अधिकांश विधायक बैठे हुये थे और वो एक-एक करके मीडिया वालों के माध्यम से अपने क्षेत्र के मतदाताओं तथा पार्टी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद कह रहे थे।

राघव राजवंशी की प्रतीक्षा हो रही थी।

राघव अपनी कार से नजीर हुसैन के साथ आया तो क्षेत्र के लोग तीनों को जिद करके चाय व नाश्ते के लिये स्कूल के एक कमरे में ले गये।

राजन तथा करतार सिंह के साथ केशव को कमरे में प्रविष्ट होते देखकर नजीर हुसैन चौंका। हाथ जोड़कर दोनों का अभिवादन करके बोला केशव, "आप मुझे देखकर चौंक क्यों गये नजीर साहब...?"

बन्द गले के लाल कोट की आस्तीन से माथे का पसीना पोंछने पर नजीर ने चाय की घूंट लेकर खाली कप मेज पर रखा तथा बोला, "क्योंकि मुझे पता लगा है कि सेन्ट मेरी स्कूल पर कुछ आतंकियों ने हमला बोला है, मैं सोच रहा था कि तुम वहीं पर गये होंगे केशव बेटे, लेकिन तुम तो यहां आये हो।"

"बैठो, केशव बेटा...," बोला राघव, "हमारे साथ नाश्ता करो...।"

राजन व करतार सिंह के साथ केशव कुर्सियों पर बैठा तो नजीर हुसैन उठकर बोला, "हम दोनों का इन्तजार हो रहा होगा राघव जी, मैं वहां जा रहा हूं। प्रोग्राम के संचालन की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई है। मैं स्टेज सम्भालता हूं। तुम नाश्ता करके स्टेज पर चले आना, मैं जा रहा हूं...।"

वह लपकते हुये कमरे से बाहर चला गया। केशव ने एक बर्फी खाई तथा थोड़ी चाय पी, फिर चारमीनार वाली सिगरेट सुलगाकर कश लगाया तथा कसैले धुएं का गोला-सा राघव के चेहरे पर दागकर बोला, "स्वागत नहीं करोगे किंग कोबरा...उर्फ राघव?"

यूं ही चिहुंका राघव कि मानो अचानक ही उसकी कुर्सी में करंट प्रवाहित होने लगा हो।

चेहरे पर एक भाव जा रहा था तो दूसरा आ रहा था, आंखों में आश्चर्य व अविश्वास के भाव लिये बोला, "ये क्या कह रहे हो तुम केशव बेटा? किस किंग कोबरा की बात कर रहे हो...ओह...आह...।"

केशव ने ऐसा शक्तिशाली घूंसा जड़ा कि राघव कुर्सी समेत उलटकर फर्श पर जा गिरा और उसने मुंह से खून के साथ दो दांत भी थूक दिये।

उठा केशव तथा उसके सीने पर जूते समेत दायां पैर रखकर बोला, "बावला बनकर दिखला रहा है तू किंग कोबरा...मुझे...केशव पण्डित को? पूरी तसल्ली करके ही तेरे गिरेहबान पर हाथ डाला है। जब मैं तुझसे ट्रांसमीटर पर दोबारा बात कर रहा था तो तेरे फोन की घन्टी बजी थी। घन्टी नहीं वो एक भजन था...कभी-कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े, जाना था गंगा पार प्रभु केवट की नाव चढ़े। तूने तब फोन की स्क्रीन पर नजर मारी होती तो मेरे फोन का नम्बर मिलता। मैंने किंग कोबरा से ट्रांसमीटर पर बात करते हुये उसको फोन किया था...।" केशव ने थोड़ा झुककर राघव के कोट की जेब से उसका फोन निकाला तथा उसके बटनों को दबाकर राघव के फोन की स्क्रीन दिखलाकर बोला, "ये देख! बारह बजकर तेरह मिनट पर तेरे फोन पर मेरे फोन से मिस कॉल आई थी कि नहीं? जरा देखूं तो...।" केशव ने उसके कोट के ऊपरी दो बटन खोले तथा उसके गले में पड़े लॉकेट को निकालकर बोला, "सबसे बड़ा सबूत ये है...लॉकेट रूपी ट्रांसमीटर। अब ये मत बोलना कि तू आई०एस०आई० का इण्डियन कमाण्डर किंग कोबरा नहीं है--वर्ना मार-मारकर तेरी हड्डियों का आटा पीस डालूंगा और तेरे जिस्म को गीले कपड़े की तरह निचोड़कर सारा खून जमीन पर बहा दूंगा...।"

"व...वो क्या है कि...।" इतना कहने पर राघव ने कोट की जेब से एक कैप्सूल निकालकर मुंह में डालना चाहा, लेकिन केशव ने उसकी कलाई पकड़कर उमेठ दी तथा कैप्सूल छीन लिया।

"ये...ये कैप्सूल हमें दे दो पण्डित...।" हाथों को जोड़कर गिड़गिड़ाया राघव, "...बहुत मान-सम्मान है मेरा इस इलाके में। वैसे भी अब मेरे लिये कुछ नहीं बचा है। क्योंकि तुम अदालत में साबित कर ही दोगे कि मैं ही किंग कोबरा हूं। मुझे मर जाने दो...प्लीज! तुम भी तो यही चाहते होंगे कि मुझ जैसा देशद्रोही एक पल भी जीवित ना रहे...मुझे कैप्सूल दे दो...।"

"इतनी जल्दी क्या है मरने की किंग कोबरा...?" केशव उसके सीने से पैर हटाकर बोला, "अभी तो तुझे बहुत आवश्यक काम करना है।"

"कौन सा काम?"

❑❑❑

❑❑❑

राघव ने ट्रांसमीटर पर किंग कोबरा बनकर सेन्ट मेरी स्कूल में कब्जा जमाये आतंकियों के लीडर से बात की तथा उसको हुक्म दिया कि वो अपने सभी साथियों के साथ स्कूल से निकलकर बाहर मौजूद पुलिस के आगे सरेंडर कर दें।

केशव ने उससे ट्रांसमीटर ले लिया तथा फोन पर पुलिस कमिश्नर से बात की तो कमिश्नर ने बतलाया कि आतंकियों ने स्कूल से बाहर निकलकर सरेंडर कर दिया है।

"मैंने तुम्हारे हुक्म का पालन कर दिया केशव...।" गिड़गिड़ाते हुये बोला राघव, "कैप्सूल दे दो मुझे ताकि मैं शर्मिन्दगी से बच सकूं...।"

"कौन-सी शर्मिन्दगी की बात कर रहा है तू राघव? जिस दिन तूने लालच और स्वार्थ में पड़कर अपने देश के साथ गद्दारी की थी और आई०एस०आई० का कमाण्डर किंग कोबरा बन गया था, अपना दीन-ईमान, अपना जमीर बेचते हुये शर्म नहीं आई थी? अब तेरा भाण्डा फूट गया है तो शर्म आ रही है? नहीं, तुझे कैप्सूल नहीं मिलेगा। तूने जब बबूल का पेड़ बोया था तो उसके कांटों से क्यों घबरा रहा है? बबूल बोने वाले को आम थोड़े ही मिला करते हैं। वाह...क्या खूब खेल, खेल रहा था तू! तूने तो एक्टिंग करने में राजकपूर, राजकुमार, दिलीप कुमार और अमिताभ बच्चन को भी पीछे छोड़ दिया। यूं जताता था कि मानों दुनिया

में तुझसे बड़ा धर्मात्मा, दानवीर, गरीबों का हमदर्द कोई और है ही नहीं। राघव नाम है तेरा...राघव! जानता है ताकि राघव किसका नाम है?"

शर्मिन्दगी के साथ नजरें झुकाकर बोला राघव—"राम का...।"

"तूने राम जी के नाम की भी लाज नहीं रखी। कर्म करता रहा रावण का! कैसे जुड़ा तू आई०एस०आई० से?"

"वो...आई०एस०आई० के एक ओहदेदार इजहार खान ने मुझे लालच दिया था। हर महीने मोटी रकम मिलती थी—सो मैं आई०एस०आई० से जुड़ गया था। आई०एस०आई० वाले ऐसे लोगों की खोज कर रहे थे, जिन पर कोई संदेह नहीं कर सके। मेरी समाज में काफी इज्जत थी, मान-सम्मान था। मुझे दूसरे लोगों से ज्यादा पैसा मिलता था। कानून से बचने के लिये मैंने समाज सेवी का रूप धारण कर लिया था। फिर राजनीति में भी आ गया था। अगर मेरी पार्टी सत्ता में आ जाती और मैं मुख्यमन्त्री बन जाता तो आई०एस०आई० की तरफ से मुझे पांच सौ करोड़ रुपये मिलते। लेकिन मैं अपने मिशन में कामयाब ना हो सका। ये सोचा था कि अगले इलैक्शन में जरूर कामयाब हो जाऊंगा—लेकिन तुमने तो मेरा खेल ही खराब कर दिया। तुम्हें कैसे पता चला कि मैं ही किंग कोबरा हूं?"

"इत्तफाक से ही। मैंने तुझसे ट्रांसमीटर पर बात की तो तेरे फोन पर भजन बजा था। मैंने वो भजन पहले भी तेरे फोन पर सुना था। लेकिन मैं एकदम से विश्वास नहीं कर सकता था कि तू किंग कोबरा हो सकता है। वैसे भी वो भजन किसी दूसरे के फोन पर भी बज सकता था। मैंने कुछ देर तक तेरे बारे में सोचा था। सत्तार टुण्डा नामक आतंकी ने तेरी बीवी सुजाता को किडनेप किया। वो अपने साथियों के साथ तेरे आश्रम में आकर रहने लगा था। मैंने सोचा कि तू अगर किंग कोबरा है तो भला तू मदद के लिये मेरे पास क्यों आया था? मेरी वजह से सत्तार टुण्डा और उसके साथी पकड़े गये थे और तेरी बीवी सुजाता भी मारी गई थी। फिर मैंने सोचा कि तू अगर किंग कोबरा है तो तुझ जैसा देशद्रोही अपनी बीवी की हत्या करा सकता है—लेकिन तूने आतंकियों को भी पकड़वाया था। फिर मुझे याद आया कि कुछ दिन पहले ही सत्तार टुण्डा कैंसर की बीमारी से जेल में मर गया था। मैंने सोचा कि तुझे पहले से ही मालूम था कि सत्तार टुण्डा को कैंसर है और उसको मरना तो था ही—शायद तूने उसकी कुर्बानी दी थी—शायद इसलिये कि तू खुद को रिजर्व कर सके। कोई कल्पना भी ना कर सके कि तू किंग कोबरा हो सकता है...। चूंकि गुरुजी की

वजह से मैं तेरे नजदीक आने लगा था, या तुझसे नजदीकी हो गई थी—सो तेरे मन में ये डर था कि मैं तेरी वास्तविकता ना जान जाऊं। मुजरिम के मन में चोर होता है ना...।"

"कुछ ऐसी ही बात थी केशव पण्डित...।" नजरें झुकाये हुये बोला राघव, "अपनी बीवी सुजाता से मेरा मन भर गया था...बूढ़ी हो गयी थी वो! मैं किसी जवान और खूबसूरत विधवा से समाज सुधार के नाम पर शादी करना चाहता था। इसीलिये किंग कोबरा के रूप में सत्तार टुण्डा को कहा था कि वो सुजाता को किडनेप कर ले और अपने कुछ साथियों के साथ मेरे वृद्ध आश्रम में रहे। फिर मैंने तुमसे मदद मांगी थी। तुमने सत्तार टुण्डा और उसके साथियों को पकड़ लिया था। सो सुजाता को मार दिया गया था। सत्तार को तो कैंसर से मरना ही था—सो उसकी भी कुर्बानी दे दी थी मैंने। ये सच है कि मैं तुमसे डरा हुआ था कि तुम मेरी वास्तविकता ना जान जाओ—इसीलिये वो खेल खेला था मैंने।"

चारमीनार की नई सिगरेट सुलगा ली केशव ने तथा बोला—"तूने राम माहेश्वरी की हत्या करवाई थी राघव। मैं समझ नहीं पा रहा था कि किंग कोबरा ने अपने मतलब के आदमी की हत्या क्यों करवाई है? जब मुझे तुझ पर संदेह हुआ तो मैंने राम माहेश्वरी की हत्या के बारे में सोचा। माहेश्वरी पर तुझे बर्बाद करने का भूत सवार था। वो ये तो जानता नहीं था कि तू ही किंग कोबरा है। तू उसे किंग कोबरा के रूप में बोलता कि वो राघव से बदला लेने का विचार त्याग दे...तो वो सोचता कि किंग कोबरा राघव की पैरवी क्यों कर रहा है? वो भले ही तुझे किंग कोबरा के रूप में ना पहचानता—लेकिन वो इतना तो अनुमान लगाता ही कि तेरा किंग कोबरा के साथ कनेक्शन है—यानि तू भी आई०एस०आई० से वाबस्ता है। सो तूने उसकी हत्या करा दी थी। क्यों?"

"हां—यही बात थी। वो हरामजादा मुझे बर्बाद करने पर तुला था। वो मुझे नुकसान पहुंचा सकता था। इसीलिये मैंने उसकी हत्या करा दी थी। वैसे भी वो तुम्हारी नजरों में आ चुका था।"

"बस, यही बातें सोची थीं मैंने राघव उर्फ किंग कोबरा! मैंने अपने शक को यकीन में बदलने के लिये ही तुझसे दोबारा ट्रांसमीटर पर कॉन्टेक्ट किया था और फोन पर तेरे फोन का नम्बर लगाया था। तेरे फोन पर वो भजन बजा तो मुझे पक्का विश्वास हो गया था कि तू ही किंग कोबरा है, खैर! तू कबूल करता है ना कि तू ही आई०एस०आई० का इण्डियन कमाण्डर किंग कोबरा है?"

"हां—मैं कबूल करता...।"

दरवाजे पर खड़ी श्वेता को देखकर राघव चौंका—क्योंकि श्वेता के हाथों में वीडियो कैमरा था।

केशव ने राघव का गिरेहबान पकड़ा और उसे खींचते हुये बाहर की तरफ चल दिया तथा बोला, "इस वीडियो कैमरे का कनेक्शन पण्डाल में लगे सभी टी०वी० और बिग स्क्रीन से किया गया है—यहां पर हमारे बीच जितनी भी बातें हुई हैं—उन्हें तेरे क्षेत्र के लोगों और मीडिया वालों ने भी देखा है—देख रहे हैं। सभी पर तेरा राज खुल चुका है कि तू राम के भेष वाला रावण है जिसे वो देवता समझते रहे हैं, वो एक राक्षस है...मुजरिम और देशद्रोही।"

"न...नहीं...मुझे बाहर मत ले जाओ...।" बुरी तरह आतंकित होकर चींखने-चिल्लाने लगा राघव, "मेरी सच्चाई जानकर लोग गुस्से से पागल हो रहे होंगे...वो मेरा बुरा हाल करेंगे...मुझे पीछे के रास्ते से निकालकर पुलिस के हवाले कर दो...मैं अपने तमाम जुर्म कबूल कर लूंगा...वो...वो लोग इधर ही आ रहे हैं...म...मुझे बचा लो केशव बेटा...पण्डित जी...मुझे उन लोगों से बचा लो...।"

वास्तव में ही सैंकड़ों लोग हाथों में लाठी, डन्डे, ईंट-पत्थर लिये उसी तरफ दौड़े चले आ रहे थे। वो क्रोधवश चींख-चिल्ला रहे थे।

"वो रहा...किंग कोबरा...!"

"मार डालो इस देशद्रोही को...!"

"जिन्दा मत छोड़ना इस शैतान को...!"

"हिन्दुस्तान में जन्म लेकर पाकिस्तान के वास्ते काम करने वाले इस गद्दार को बुरी मौत मार डालो...!"

राजन, करतार सिंह तथा श्वेता को पीछे हट जाने का इशारा करके केशव भी राघव को छोड़कर एक तरफ हो गया।

भीड़ में घिरे राघव की चींखें उभरने लगीं।

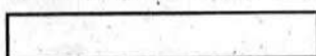
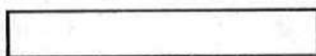
आक्रोश से भरे लोग उसे लाठी, डन्डों, ईंट, पत्थरों तथा लात-घूंसों से मार रहे थे।

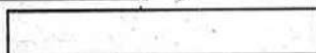
"ऐ...खबरदार...कोई भी राघव को हाथ नहीं लगायेगा...।" लाठी को बला की फुर्ती से चारों तरफ घुमाते हुये नजीर हुसैन चींख-चींखकर बोला—"पीछे हटो सब...छोड़ो...राघव को छोड़ो...।"

"न...नजीर...मेरे दोस्त...।" खून से लथपथ राघव कराहते हुये

बोला, "ब...बचा लो...आह...मुसीबत की घड़ी में दोस्त ही काम आता है... ।"

"चुप साले...दोस्ती के नाम पर कलंक... ।" नजीर हुसैन उसके सिर पर लाठियों से दनादन वार करते हुये चिल्लाया, "वतन फरोश है तू...राघव नहीं, किंग कोबरा है तू...तुझ जैसे नाग से दोस्ती की...ये मेरे लिये शर्मिन्दगी की बात है...तुझे मारकर मैं भी तो थोड़ा शबाब कमा लूं...ऐ भाइयों...देखते क्या हो...तुम लोग भी मारो इसे...ये फांसी पर चढ़ने के काबिल नहीं है...इसका गन्दा खून यहीं पर बहा दो...पास में गन्दी नाली भी है...गांधी के देश में इस जैसे रावण के लिए कोई जगह नहीं है...मारो इस जहरीले नाग को...!"



"गांधी तेरे देश में रावण राम के भेष में...ये तूने ही कहा था ना? तब तो मुझे नहीं पता था लेकिन अब पता है कि गांधी के देश में राम के भेष वाला रावण तू ही है। क्या सजा दूं मैं तुझे ओये भेड़ की खाल में छिपकर रहने वाले भेड़िये? तूने लोगों के विश्वास को छला है-इसलिये तेरे जिस्म को अनगिनत सूराख करके छलनी बना दूं? शराब को गंगाजल बताकर पीता रहा तो तुझे ढेर सारा तेजाब पिला दूं? मासूम अबलाओं के जिस्म में वासना के पैने दांत गड़ाता रहा-तो तेरे इस पापी जिस्म में बड़े साइज की नुकीली कीलें ठोक दूं? भले ही ये देश गांधी जी का है-लेकिन मैं हिटलर बनकर तेरी जिन्दगी के साथ तानाशाही करना चाहता हूं-तेरी सांसों को मौत के तेजाब में घोलकर तेरी गन्दी आत्मा को नरक की किसी खूंटी पर टांग देने का ख्वाहिशमन्द हूं मैं...।"



₹60

धीरज पॉकेट बुक्स